



**ZANÎNGEHA BÎNGOLÊ
ENSTÎTUYA ZIMANÊN JÎNDAR
ŞAXA MAKEZANISTA ZIMAN Ê EDEBIYATA KURDÎ**

**'UNSÛRÊN DÎNÎ-TESEWUFÎ DI DÎWANA HÂFİZÊ
ŞÎRÂZÎ Ê MELÂYÊ CIZÎRÎ DA**

Amadekar

Nurettin ERTEKÎN

TEZA DOKTORAYÊ

**ŞÊWIRMENDÊ TEZÊ
Prof. Dr. Hasan ÇİFTCÎ**

Bîngol – 2022



**BİNGÖL ÜNİVERSİTESİ
YAŞAYAN DİLLER ENSTİTÜSÜ
KÜRT DİLİ VE EDEBİYATI ANABİLİM DALI**

**HÂFİZ-I ŞÎRÂZÎ VE MELÂYÊ CİZÎRÎ'NİN
DİVANLARINDA DİNİ-TASAVVUFİ UNSURLAR**

**Hazırlayan
Nurettin ERTEKİN**

DOKTORA TEZİ

**TEZ DANIŞMANI
Prof. Dr. Hasan ÇİFTÇİ**

Bingöl – 2022

NAVEROK

| | |
|--------------------------------|-------|
| BİLİMSEL ETİK BİLDİRİMİ | V |
| TEZ ONAY FORMU | V |
| KURTE | VII |
| ÖZET | VIII |
| ABSTRACT | X |
| GENİŞLETİLMİŞ ÖZET | XI |
| PÊŞGOTIN | XV |
| LÎSTEYA TABLOYAN | XVI |
| KURTKIRIN | XVII |
| ALFABEYA TRANSKRÎPSİYONÊ | XVIII |
| DESTPÊK | 1 |

BEŞA YEKEM

1 JİYAN Û ŞÊWAZA EDEBÎ YA HÂFİZÊ ŞİRÂZÎ Û MELÂYÊ CİZİRÎ

| | |
|--|----|
| 1.1 Jîyan û Şêwaza Edebî ya Hâfizê Şîrâzî | 11 |
| 1.1.1 Jîyana Hâfizê Şîrâzî | 11 |
| 1.1.2 Navê wî | 12 |
| 1.1.3 Mexlesa wî | 13 |
| 1.1.4 Welatê wî | 14 |
| 1.1.5 Dîroka Wiladeta wî | 14 |
| 1.1.6 Malbata wî | 15 |
| 1.1.7 Xwendina wî | 16 |
| 1.1.8 Pişe û Aboriya wî | 16 |
| 1.1.9 Têkilîyên Wî bi Dêrdorê | 17 |
| 1.1.10 Wefata wî | 18 |
| 1.1.11 Berhemên wî | 19 |
| 1.2 Şêwaza Edebî ya Hâfizê Şîrâzî | 20 |
| 1.2.1 Asta Ziman | 21 |
| 1.2.2 Asta Ferhengî | 24 |
| 1.2.3 Asta Hizrî | 25 |
| 1.2.4 Asta Edebî | 27 |
| 1.2.5 Rewşa Sosyo-kulturî ya Serdema Hâfizê Şîrâzî | 30 |
| 1.3 Jîyana Melâyê Cizîrî û Şîwaza Wî ya Edebî | 34 |
| 1.3.1 Jîyana Melâyê Cizîrî | 34 |
| 1.3.2 Navê Wî | 35 |
| 1.3.3 Mexlesên Wî | 35 |
| 1.3.4 Welatê Wî | 37 |
| 1.3.5 Dîroka Wiladeta Wî | 38 |
| 1.3.6 Malbata Wî | 38 |
| 1.3.7 Xwendina Wî | 39 |
| 1.3.8 Pişe û Aboriya Wî | 39 |
| 1.3.9 Têkilîyên Wî bi Dêrdorê | 40 |
| 1.3.10 Wefata Wî | 40 |
| 1.3.11 Berhemên Wî | 41 |
| 1.4 Şêwaza Edebî ya Melâyê Cizîrî | 42 |
| 1.4.1 Asta Ziman | 44 |
| 1.4.2 Asta Ferhengî | 49 |
| 1.4.3 Asta Hizrî | 51 |
| 1.4.4 Asta Edebî | 54 |
| 1.4.5 Rewşa Sosyo-kulturî ya Serdema Melâyê Cizîrî | 57 |

BEŞA DUYEM

2 'UNSÛRÊN DÎNÎ DI DÎWANA HÂFİZÊ ŞİRÂZÎ Û MELÂYÊ CİZİRÎ DA

| | |
|---|----|
| 2.1 Navên Xweda Yên Zatî | 62 |
| Ellâh (الله) (Xwedâ (خودا), Āmurzigār (امرzigar), Īzed (ایزد), Kirdigār (کردگار), Rebb (رب), Yezdān (یزدان), Bāxwê (باخوی), Īlāh (إله)) | 62 |
| 2.1.1 Ellāh (الله) | 62 |
| 2.1.2 Xudā (خدا), Xwedā (خودا), Xwedê (خودی), Xudāwend (خداوند), Xudāwendigār (خداوندگار) | 63 |
| 2.1.3 Āmurzigār (امرzigar) | 65 |

| | | |
|--------|---|-----|
| 2.1.4 | Īzed (ایزد)..... | 66 |
| 2.1.5 | Kirdigār (کردگار)..... | 66 |
| 2.1.6 | Rebb (رب)..... | 66 |
| 2.1.7 | Yezdān (یزدان)..... | 67 |
| 2.1.8 | Bāxwê (باخوی)..... | 67 |
| 2.1.9 | Ilāh - Ileh (إله - إله)..... | 67 |
| 2.1.10 | Berawird û Nirxandin..... | 68 |
| 2.2 | Nav û Sifetên Xweda..... | 71 |
| 2.2.1 | Cebbār (جبار)..... | 71 |
| 2.2.2 | Celāl- Zū'l-celāl (جلال-ذوالجلال)..... | 72 |
| 2.2.3 | Cemāl (جمال)..... | 73 |
| 2.2.4 | Celīl (جليل)..... | 75 |
| 2.2.5 | Ezel (أزل) – Lā-yezāl (لا يزال) – Lem-yezal (لم يزل)..... | 75 |
| 2.2.6 | Reḥmān (رحمان)..... | 77 |
| 2.2.7 | Rezzāq (رزاق)..... | 78 |
| 2.2.8 | Şemed (صمد)..... | 78 |
| 2.2.9 | Eḥed (احد) – Wāḥid (واحد)..... | 79 |
| 2.2.10 | Wedūd (ودود)..... | 81 |
| 2.2.11 | Wehhāb - Wāhib (وهاب - واهب)..... | 81 |
| 2.2.12 | Xāliq (خالق) Bārī (باری) Muşewwir (مصور)..... | 82 |
| 2.2.13 | Xellāq (خلاق)..... | 83 |
| 2.2.14 | Āfūr (غفور) – Āffār (غفار)..... | 84 |
| 2.2.15 | Ewwel (أول) - Āxir (آخر)..... | 85 |
| 2.2.16 | Zāhir (ظاهر) – Bāṭin (باطن)..... | 85 |
| 2.2.17 | Me'būd (معبود)..... | 86 |
| 2.2.18 | Meşhūd (مشهود)..... | 86 |
| 2.2.19 | Ḥeqq (حق)..... | 87 |
| 2.2.20 | Qeyyūm (قَيُّومٌ)..... | 88 |
| 2.2.21 | Deyyūm (دَيُّومٌ)..... | 88 |
| 2.2.22 | Fāṭir (فاطر)..... | 88 |
| 2.2.23 | Qāḍiyi Ḥacāt (قاضى حاجات)..... | 89 |
| 2.2.24 | Subḥān (سبحان)..... | 89 |
| 2.2.25 | Subbūḥ (سُبُّوحٌ)..... | 90 |
| 2.2.26 | Mecid (مجيد)..... | 91 |
| 2.2.27 | Berawird û Nirxandin..... | 92 |
| 2.3 | Firişte..... | 98 |
| 2.3.1 | Melek (ملك) – Firişte (فرشته)..... | 98 |
| 2.3.2 | Surūş (سروش)..... | 101 |
| 2.3.3 | Hātif (هاتف)..... | 103 |
| 2.3.4 | Cibr'ıl (جبرئيل), Cibrilê Emîn (جبرئيل امين), Rūḥu'l-emîn (روح الامين), Rūḥu'l-qudus (روح القدس)..... | 104 |
| 2.3.5 | Riḍwān (رضوان) Xāzinê Cennet (خازن جنت)..... | 106 |
| 2.3.6 | Kirāme'l-kātibîn (كرام الكاتبين)..... | 107 |
| 2.3.7 | Subbūḥī (سُبُّوحِي)..... | 108 |
| 2.3.8 | Quddūsī (قُدُّوسِي)..... | 108 |
| 2.3.9 | Berawird û Nirxandin..... | 109 |
| 2.4 | Berhemên Pîroz..... | 112 |
| 2.4.1 | Qur'ān (قرآن)..... | 112 |
| 2.4.2 | Zebūr (زبور)..... | 115 |
| 2.4.3 | Berawird û Nirxandin..... | 116 |
| 2.5 | Pêxember..... | 117 |
| 2.5.1 | Nebī (نبي) – Resūl (رسول)..... | 117 |
| 2.5.2 | Berawird û Nirxandin..... | 119 |
| 2.6 | Jîyana Axretê..... | 119 |
| 2.6.1 | Āxiret (آخرة)..... | 119 |
| 2.6.2 | Āxirzemān (آخر زمان)..... | 121 |
| 2.6.3 | Qiyāmet (قيامة) – Restāxiz (رستاخيز)..... | 122 |
| 2.6.4 | Ḥeşir (حشر) – Meḥşer (محشر)..... | 124 |

| | | |
|-------|--|-----|
| 2.6.5 | Cennet (جنة) – Behişt (بهشت) (Xuld (خلد), Me'wā (مأوى), Firdews (فردوس), Bāxê Ne'im (باغ نعيم), Dāru's-selām (دارالسلام), Rewḍe-i Riḍwān (روضه رضوان), Bāxê Riḍwān (باغ رضوان), Gulşen-i Riḍwān (گلشن رضوان), ('Edin (عدن), Behiştā İrem (بهشتا ارم), Bāxê İrem (باغ ارم)..... | 125 |
| 2.6.6 | Cehennem (جهنم) (Düzex (دوزخ), Seqer (سقر))..... | 128 |
| 2.6.7 | Berawird û Nirxandin..... | 129 |
| 2.7 | Hin 'Unsûrên Dîni yên Girîng..... | 133 |
| 2.7.1 | Dîn (دين)..... | 133 |
| 2.7.2 | Şeytân (شَيْطَان), Iblîs (إبليس), 'Ezâzîl (عزازيل), Ehrimen (أهرمن), Ebyed (أبيض), Dêw/Dîv (ديو)..... | 135 |
| 2.7.3 | Berawird û Nirxandin..... | 138 |
| 2.8 | 'Unsûrên Îbadetê..... | 139 |
| 2.8.1 | Nimêj - Nemâz (نماز)..... | 139 |
| 2.8.2 | Rojî (روژی) - (Şiyâm (صيام) - Rûze (روزه))..... | 140 |
| 2.8.3 | Ḥec (حج)..... | 142 |
| 2.8.4 | Zekât (زكاة)..... | 143 |
| 2.8.5 | Berawird û nirxandin..... | 144 |
| 2.9 | Çar Xelîfe..... | 145 |
| 2.9.1 | Hezretî Ebûbekir (ابوبكر)..... | 145 |
| 2.9.2 | Hezretî 'Umer (عمر)..... | 146 |
| 2.9.3 | Hezretî 'Uşmân (عثمان)..... | 146 |
| 2.9.4 | Hezretî 'Elî (على) - (Ebu'l Ḥesen (أبوالحسن), Heyderê Kerrâr (حيدر كزاز), Şêrê 'Elî (شري على)..... | 147 |
| 2.9.5 | Berawird û Nirxandin..... | 149 |

BEŞA SÊYEM

3 NAVÊ PÊXEMBERAN DI DÎWANA HÂFIZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ DA

| | | |
|------|---|-----|
| 3.1 | Hezretî Âdem (آدم)..... | 150 |
| 3.2 | Hezretî Nûḥ (نوح)..... | 153 |
| 3.3 | Hezretî Ibrâhîm (إبراهيم) (Xelîlullâh - خليل الله)..... | 155 |
| 3.4 | Hezretî Ye'qûb (يعقوب) (Pîrê Ken'an - پير کنعان)..... | 156 |
| 3.5 | Hezretî Yûsif (يوسف)..... | 158 |
| 3.6 | Hezretî Şu'eyb (شعيب)..... | 160 |
| 3.7 | Hezretî Mûsâ (موسى)..... | 161 |
| 3.8 | Hezretî Xidîr (خضر)..... | 163 |
| 3.9 | Hezretî Ilyâs (إلياس)..... | 166 |
| 3.10 | Hezretî Dawûd (داوود)..... | 166 |
| 3.11 | Hezretî Suleymân (سليمان)..... | 167 |
| 3.12 | Hezretî 'Îsâ (عيسى), Mesîḥ (مسيح)..... | 171 |
| 3.13 | Hezretî Muḥemmed (محمد) (Eḥmed (احمد)– Muştefâ (مصطفى)..... | 172 |
| 3.14 | Berawird û Nirxandin..... | 174 |

BEŞA ÇAREM

4 KESAYETÊN TESEWUFÎ Û KESAYETÊN TESEWUFÎ YÊN DÎROKÎ DI DÎWANA HÂFIZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ DA

| | | |
|--------|---|-----|
| 4.1 | Derbarê Tesewufê..... | 180 |
| 4.1.1 | Rayeka Bêjeya Sofî û Pênaseya Tesewufê..... | 180 |
| 4.1.2 | Derketina Tesewufa Islâmê..... | 182 |
| 4.2 | Kesayetên Tesewufî..... | 183 |
| 4.2.1 | Âbid (عابد)..... | 183 |
| 4.2.2 | 'Ârif (عارف)..... | 184 |
| 4.2.3 | 'Âşiq (عاشق)..... | 185 |
| 4.2.4 | Derwîş (درويش)..... | 189 |
| 4.2.5 | Meczûb (مجنوب)..... | 190 |
| 4.2.6 | Murîd (مرید)..... | 191 |
| 4.2.7 | Murşid (مرشد)..... | 193 |
| 4.2.8 | Sâlik (سالک)..... | 194 |
| 4.2.9 | Şeyx (شيخ)..... | 195 |
| 4.2.10 | Zâhid (زاهد)..... | 197 |
| 4.2.11 | Pîr (پير)..... | 198 |
| 4.2.12 | Şofî (صوفی)..... | 202 |
| 4.2.13 | Berawird û Nirxandin..... | 206 |

| | | |
|-------|--|-----|
| 4.3 | Kesayetên Dîrokî yên Tesewufî | 211 |
| 4.3.1 | Ebâ Yezîdê Bistâmî (ابا یزید بسطامی) | 211 |
| 4.3.2 | Me'rûfê Kerxî (معروف کرخی) | 212 |
| 4.3.3 | He'llacê Mensûr (حلاج منصور) | 213 |
| 4.3.4 | Ebûbekir eş-şiblî (أبو بكر الشبلي) | 215 |
| 4.3.5 | Se'diyê Şîrâzî (سعدی) | 215 |
| 4.3.6 | 'Ebdurrehmân Câmî (عبد الرحمن جامی) | 216 |
| 4.3.7 | Berawird û Nirxandin | 217 |

BEŞA PÊNCEM

5 TÊGIH Î 'UNSÛRÊN TESEWUFÊ DI DÎWANA HÂFİZÊ ŞÎRÂZÎ Î MELÂYÊ CİZÎRÎ DA

| | | |
|--------------|---|-----|
| 5.1 | Têgihên Tesewufê | 221 |
| 5.1.1 | Âbê He'yât (آب حیات) | 221 |
| 5.1.2 | Xerâbât (خرابات) | 224 |
| 5.1.3 | Xirqe, Delq (خرقه - دلق) | 225 |
| 5.1.4 | Tewbe (توبه) | 227 |
| 5.1.5 | Şebr (صبر) | 229 |
| 5.1.6 | Cezbe (جذبہ) | 231 |
| 5.1.7 | Zuhd (زهد) | 232 |
| 5.1.8 | Şeṭṭ û Ṭāmāt (شطح - طامات) | 235 |
| 5.1.9 | Xâneqāh (خانقاه) | 236 |
| 5.1.10 | Şewme'e (صومعه) | 237 |
| 5.1.11 | Riḍā (رضا) | 238 |
| 5.1.12 | Beqā- Bāqî û Fenā- Fānî (بقا - باقی - فنا - فانى) | 239 |
| 5.1.13 | Melāmet (ملامت) | 242 |
| 5.1.14 | Şāhid (شاهد) | 243 |
| 5.1.15 | Sāqî (ساقى) | 245 |
| 5.1.16 | Tecellî (تجلی) | 247 |
| 5.1.17 | Rind û Rindî (رند و رندى) | 251 |
| 5.1.18 | Berawird û Nirxandin | 254 |
| 5.2 | 'Unsûrên Tesewufê | 263 |
| 5.2.1 | Ene'l-Heq (انا الحق) | 263 |
| 5.2.2 | Ene'l-lāh (أنا الله) | 265 |
| 5.2.3 | Kenzā Mexfî (کنز مخفی) | 266 |
| 5.2.4 | Lewlāke (لولاك) | 267 |
| 5.2.5 | Işrāq (اشراق) | 268 |
| 5.2.6 | Weḥdetî Muṭleq (وحدت مطلق) | 270 |
| 5.2.7 | Berawird û Nirxandin | 271 |
| ENCAM | | 275 |
| JÊDER | | 279 |

BİLİMSEL ETİK BİLDİRİMİ

Doktora tezi olarak hazırladığım *Hâfız-ı Şîrâzî ve Melâyê Cizîrî'nin Divanlarında Dini-Tasavvufî Unsurlar ('Unsûrên Dînî-Tesewufî di Dîwana Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da)* adlı çalışmanın öneri aşamasından sonuçlanmasına kadar geçen süreçte bilimsel etiğe ve akademik kurallara özenle uyduğumu, tez içindeki tüm bilgileri bilimsel ahlak ve gelenek çerçevesinde elde ettiğimi, tez yazım kurallarına uygun olarak hazırladığım bu çalışmamda doğrudan veya dolaylı olarak yaptığım her alıntıya kaynak gösterdiğimi ve yararlandığım eserlerin kaynakçada gösterilenlerden oluştuğunu beyan ederim.

13/10/ 2022

Nurettin ERTEKİN

BİNGÖL ÜNİVERSİTESİ
YAŞAYAN DİLLER ENSTİTÜSÜ MÜDÜRLÜĞÜNE

Nurettin ERTEKİN tarafından hazırlanan ‘**Unsûrên Dînî-Tesewifî di Dîwana Hafizê Şîrazî û Melayê Cizîrî da** başlıklı bu çalışma, 14.10.2022 tarihinde yapılan tez savunma sınavı sonucunda [*oybirliği/oy çokluğuyla*] başarılı bulunarak jürimiz tarafından *Kürt Dili ve Edebiyatı* Anabilim Dalı’nda Doktora tezi olarak kabul edilmiştir.

TEZ JÜRİSİ ÜYELERİ (Unvanı, Adı ve Soyadı)

Başkan, Danışman : Prof. Dr. Hasan ÇİFTCİ İmza:

.....

Üye : Doç. Dr. Ayhan TEK İmza:

.....

Üye : Doç. Dr. Ahmet KIRKAN İmza:

.....

Üye : Doç. Dr. Bedrettin BASUĞUY İmza:

.....

Üye : Dr. Öğr. Üyesi Hemin Omar AHMAD İmza:

.....

ONAY

Bu Tez, Bingöl Üniversitesi Yaşayan Diller Enstitüsü Yönetim Kurulunun/...../20..... tarih ve sayılı oturumunda belirlenen jüri tarafından kabul edilmiştir.

Dr. Öğr. Üyesi Abdullah BEDEVA
Enstitü Müdürü

KURTE

'UNSÛRÊN DÎNÎ Û TESEWUFÎ DI DÎWANA HÂFIZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ DA

Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî du şa'irên berceste yên zimanên xwe ne. Hâfizê Şîrâzî bi farsî û Melâyê Cizîrî bi kurdî dîwana xwe nivîsandî ye. Dîwanên her dû şa'iran ji aliye qewareya wan ne wekî hev bin jî, şerh li ser van hatine nivîsîn û bûne mijarên berhem û xebatên akademik. Ev yek, qîmet û grîngîya dîwanên herdû şa'iran dide ber çavan.

Li ser dîwana Hâfizê Şîrâzî gelek xebatên ciyawaz têne dîtin. Li ser dîwana Melâyê Cizîrî xebatên ku hatine kirin bi gelemperî layê wî yên tesewufî hatiye sekinandin. Heta niha di asta tezeke doktorayê de, xebateke berawirdî ji bo herdu şa'iran nayê dîtin. Herweha *'unsûrên dînî û tesewufî* yên dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî nehatîye Nirxandin. Di hinek berhemên li ser Hâfizê Şîrâzî hatine amadekirin de, derbarê 'unsûr û tîgehên tesewufî bi kurtasî xebat hebin jî, ev mijar bi tena serê xwe nehatîye xebitandin. Ji bo Melâyê Cizîrî jî heman rewş derbasdar e.

Xebatên li ser du berhemên ziman cuda dikevin qada edebiyata berawirdî. Bi gelemperî em dikarên bibêjin armanca sereke ya edebiyata berawird tesîra edebiyata netewekî li ser edebiyata netewekî din û tesîra şa'ir / nivîskarekî li ser şa'ir / nivîskarekî din kiriye mijara xwe. Ku ev rêbazek ji rêbazên ekola fransîzî ye di edebiyata berawirdî da.

Mebest ji vê xebatê peyîtandina 'unsûrên dînî û tesewufî di dîwana herdû şa'iran da ye. Piştî tespîta 'unsûrên dînî û tesewufî nirxandina wan û derxistina vekhevî û cudahîyên navbera herdû şa'ira û bi vî rengî gihaştina encamê ye.

Wekî encam bi asanî em dikarin bibêjin ku di navbera herdû şa'iran da gelek 'unsûrên dînî û tesewufî hevpar in. Herwiha 'unsûrên ciyawaz jî ne kêr in. Rewşa civakî, sîyasî û kulturî eşkera di dîwana Hâfizê Şîrâzî da rû daye. Herdû şa'ir jî xwedî şêwazek takekesî ne. Di biwara 'unsûrên dînî û tesewufî da tesîrek ber bi çav ya Hâfizê Şîrâzî li ser Melâyê Cizîrî nehate peyîtandin. Lewra herdû şa'iran jî ji 'unsûrên hîzrî yên edebiyata klasîk sûd wergirtine.

Peyvên Sereke: Hafîzê Şîrâzî, Melâyê Cizîrî, Edebîyata Berawird, Edebîyata Farsî, Edebîyata Kurdî, Tesewuf.

ÖZET

HÂFIZ-I ŞİRÂZÎ VE MELÂYÊ CİZİRÎ'NİN DİVANLARINDA

DİNÎ-TASAVVUFİ UNSURLAR

Hâfız-ı Şîrâzî, 14. yüzyılda İran'da yaşamış ve Fars edebiyatının en büyük temsilcileri arasında yer alan bir şairdir. Divanında yer verdiği aşk ve tasavvuf konuları ile yaşadığı dönemdeki şairleri etkilediği gibi kendisinden sonra gelen pek çok şairi de etkisi altına almıştır. Melâyê Cizîrî ise 16. yüzyıl sonları ile 17. yüzyıl başlarında yaşamış ilk Kürtçe mürettep divanın sahibidir. Bu yönüyle bir ilk olmanın yanında divanında işlediği aşk, felsefe ve tasavvuf konuları ile kendisinden sonra gelen Kürt şairlerini etkilemiştir.

Hâfız-ı Şîrâzî'nin divanı üzerine değişik konularda akademik birçok çalışma bulunmaktadır. Melâyê Cizîrî'nin divanı üzerine yapılan çalışmalar ise Hâfız-ı Şîrâzî ile kıyaslanmayacak kadar azdır. Yapılan bu çalışmalara bakıldığında her iki şairin divanlarında geçen ve klasik edebiyatın ana temalarından olan birçok dinî ve tasavvufî müşterek unsurların bulunduğu tespit edilmiştir. Aynı şekilde Hâfız-ı Şîrâzî ve Melâyê Cizîrî'nin divanlarını muhteva yönünden doktora düzeyinde karşılaştırmalı olarak ele alan bir çalışma da bulunmamaktadır.

Farklı iki dilde yazılan eserleri incelemek karşılaştırmalı edebiyat sahasına girmektedir. Kısaca denilebilir ki karşılaştırmada temel amaç bir milletin edebiyatının başka bir milletin edebiyatına etkisine veya bir şairin / yazarın etkisinin başka bir şair / yazar üzerindeki etkisine ilave olarak müşterek ve farklı yönleri araştırmaktır.

Bu çalışmanın temel amacı her iki şairin divanlarında bulunan dinî ve tasavvufî unsurları ve oluşturulan mazmunları tespit edip, ortak veya farklı yönlerini incelemek ve böylece bir sonuca varmaktır.

Hafız-ı Şirâzî ve Melâyê Cizîrî'nin Divanlarında Dini-Tasavvufi Unsurlar adlı bu doktora çalışması giriş, beş bölüm ve sonuçtan oluşmaktadır. Birinci bölümde Hâfız-ı Şîrâzî ve Melâyê Cizîrî'nin hayatları ve edebi kişilikleri ele alınmaktadır. İkinci bölümde dini unsurlar, üçüncü bölüm ise dini unsurların bir konusu olan peygamber isimleri incelenmektedir. Dördüncü bölümde tasavvufî kişilikler ve son bölümde de tasavvufî terimler ve unsurlar değerlendirilmektedir. Sonuç bölümünde

ise karşılaştırmalı olarak incelenen dinî ve tasavvufî unsurların değerlendirilmesi yapılmıştır.

Sonuç olarak; her iki şairin divanında birçok ortak dinî ve tasavvufî unsurun yanında farklı unsurlar da tespit edilmiştir.

Anahtar Kelimeler: Hâfız-1 Şîrâzî, Melâyê Cizîrî, Karşılaştırmalı Edebiyat, Fars Edebiyatı, Kürt Edebiyatı, Tasavvuf.

ABSTRACT

RELIGIOUS AND MYSTICAL ELEMENTS OF THE DIVANS OF HÂFIZ-I ŞÎRÂZÎ AND MELÂYÊ CIZÎRÎ

Hâfiz-1 Şîrâzî was a 14th century Iranian poet and one of Persian literature's greatest authors. His mystical and madrigal divan influenced several poets both in his time and later on. Melâyê Cizîrî was the author of the first Kurdish divan anthology and lived in the late 16th and early 17th centuries. Thus, besides being a first, he influenced later Kurdish poets with his divan on love, philosophy and mysticism.

There are several academic studies on different aspects of the Hâfiz-1 Şîrâzî divan. However, studies examining Melâyê Cizîrî's divan are too few when compared to Hâfiz-1 Şîrâzî. This literature review reveals that the divans of both poets share several religious and mystical themes, which were also main themes in classical literature. Furthermore, no other studies to date have compared the content of the divans of Hâfiz-1 Şîrâzî and Melâyê Cizîrî at the dissertation level.

The field of comparative literature tackles the analysis of works written in different languages. In short, it could be suggested that the main aim of comparison is to determine similarities and differences between works, cross-national effects and the impact of a poet/author on another.

The main aim of this study is to determine the religious and mystical elements and metaphors in the divans of both poets, and to determine similarities and differences.

This study includes the introduction, five chapters and conclusion. In the first section, the lives and literary personalities of Hâfiz-1 Şîrâzî and Melâyê Cizîrî are discussed. In the second section, religious elements are examined and the names of prophets are addressed in the third section. In the fourth section, mystical personalities and mystical terms and elements are analyzed in the final chapter. In the conclusion, the comparative analysis of the above-mentioned religious and mystical elements is conducted.

Overall, several religious and mystical similarities and differences are identified in the divans of both poets.

Keywords: Hâfiz-1 Şîrâzî, Melâyê Cizîrî, Comparative Literature, Persian Literature, Kurdish Literature, Mysticism.

GENİŞLETİLMİŞ ÖZET

HÂFİZ-I ŞİRÂZÎ VE MELÂYÊ CİZİRÎ'NİN DİVANLARINDA

DİNÎ-TASAVVUFÎ UNSURLAR

Hâfız-ı Şîrâzî İran Edebiyatı'nın, Melâyê Cizîrî ise Kürt Edebiyatı'nın en önemli temsilcileri arasında yer almaktadırlar. İran edebiyatının en büyük şairleri arasında yer alan Hâfız-ı Şîrâzî 14. yüzyılda yaşamıştır. Hâfız, yaşadığı bölgenin ve kullandığı dilin sınırlarını aşarak dünya edebiyatına mal olmuş oldukça önemli bir şairdir. Bu nedenle hem İran'da, hem dünyanın farklı ülkelerinde birçok araştırma ve akademik incelemeye konu olmuştur. Ayrıca divanı değişik dillere çevrilerek şerh edilmiş ve üzerinde bir kütüphane oluşturacak kadar eser vücuda getirilmiştir. Melâyê Cizîrî'nin ise 16. yüzyıl sonları ile 17. yüzyıl başlarında yaşadığı düşünülmektedir. Kaynakların işaret ettiği bulgular çerçevesinde Cizîrî, Kürt edebiyatında ilk mürettep divanı geride bırakan şair olarak bilinmektedir. Cizîrî'nin divanı, Kürtçe ve Arapça yazılan birkaç küçük şerh dışında bir elin parmaklarını geçmeyecek çalışmalara konu olmuştur. Son yıllarda hazırlanan birkaç tez dışında Cizîrî'nin daha çok sempozyum bildirileri ve makalelere konu olduğu görülmektedir. Dinî ve tasavvufî düşünceler klasik edebiyatın temel kaynakları arasında yer almaktadırlar.

Klasik edebiyatın iki temsilcisi olarak Hâfız-ı Şîrâzî ve Melâyê Cizîrî'nin divanlarını daha iyi anlamak için bu divanlarda geçen dinî ve tasavvufî unsurların incelenmesi gerekmektedir. Bu çalışmanın temel amacı karşılaştırmalı edebiyat çerçevesinde iki farklı dille şiir yazan iki Müslüman şairin divanlarında geçen dinî ve tasavvufî unsurları incelemektir. Bu inceleme ile her iki şairin kullandığı ortak ve farklı dinî ve tasavvufî unsurların ortaya çıkması umulur. Her iki şairin bu unsurları hangi anlamlarda kullandıkları, ne tür mazmunlar oluşturdukları ve bu konularda birbirlerine ne kadar benzedikleri ve hangi noktalarda ayrıldıkları gibi hususlara değinilmiştir. Ayrıca kuşak, dönem farklılığı nedeniyle Hâfız-ı Şîrâzî'nin Melâyê Cizîrî'yi etkileyip etkilemediği, etkilemiş ise etki derecesine dair bulgular ifade edilecektir.

Akademik olarak, birbirinden farklı olarak ele alınmış oldukça önemli iki şairin eserlerindeki “ortak”ları irdeleyen bir çalışma bulunmamaktadır. Tezin yazılmasına kaynaklık eden düşünce bu eksikliğin giderilmesine dönük halisane bir

uğraştır. Farklı iki dilde şiir yazmış olsalar da; her iki şairin aynı dine, hemen hemen aynı felsefî görüşe, kültür ve edebiyat geleneğine mensup olmalarından hareketle doğal olarak *Hâfız ve Cizîrî'nin birçok ortak dinî ve tasavvufî unsur ve kavramları kullandıkları anlaşılmaktadır*. Bununla birlikte söz konusu dinî ve tasavvufî unsurlardan istifade ederek şiirsel yetenekleriyle ne tür mazmunlar ürettikleri ve bu mazmunlarda ortak, benzer ve farklılıkları tesbit etmek oldukça önem arz etmektedir. İlave olarak Hâfız'ın hakikaten Cizîrî'yi ne derecede etkilediği de öteden beri tartışma konusu olmuştur. Çalışma iki şairle ilgili bu hususları aydınlatmaya odaklanmıştır.

Tez, yazılış maksadına hizmet eden her türlü duygu ve düşünce ile yazınsal hafızaya ait nitel verilere dayanmaktadır. Tespit, kanaat ve karşılaştırmaya dönük her türlü bilgiye erişmek için birinci derecede iki şairin divanları ve genel anlamda da ikincil kaynaklar olan araştırma-inceleme eserlerden yararlanılmıştır.

Çalışmada Hâfız-ı Şîrâzî'nin divanından alınan örnek beyitler Farsça olarak yazıldıktan sonra altında Kürtçe anlamları verilmiştir. Melâyê Cizîrî'nin divanından alınan örnek beyitler ise Latin harfleri ile yazılmıştır. Tezde Kürtçe dil fonetiğinin gereği kullanılan harflerin dışında *DİA* transkripsiyon sisteminden yararlanılmıştır.

Bu çalışma giriş ve beş ana bölümden oluşmaktadır. Giriş bölümünde çok kısa edebiyat ve toplumlararası etkileşim ele alındıktan sonra tezin konusu, amacı, önemi, yöntemi, faydalanılan temel kaynaklar gibi konulara değinilmiştir.

Birinci bölümde Hâfız-ı Şîrâzî ve Melâyê Cizîrî'nin hayatları kısaca ele alınmıştır. Bu bölümde ayrıca her iki şairin edebi kişilikleri ile eserlerindeki dil, cümle, düşünce ve içerik analizlerini kapsayan alt başlıklara yer verilmiştir. Yaşanılan dönem ve bu dönemdeki siyasî, sosyal, ekonomik gelişmelerin şairlerin duygu dünyalarına etki ettiği muhakkaktır. Bu nedenle bölüm sonunda her iki şairin yaşadığı dönemin siyasi, kültürel ve sosyal durumu kısaca ele alınmıştır.

Tezin ikinci bölümü şairlerin divanlarındaki dinî unsurlara ayrılmıştır. Bu bölüm Allah'ın Zâtî isimleri, Allah'ın isim ve sıfatları, melekler, kutsal kitaplar, peygamberler, ahiret hayatı; ibadetle ilgili namaz, zekât, hac vb. unsurlar ve dört halife şeklinde dokuz alt başlıktan oluşmaktadır. Her alt başlık için iki şairin divanında geçen unsurların sayıları ve yüzdeler oranları (yüzdeler oranı bir şairin divanında geçen unsurun o şairin divanındaki beyit sayısına bölünmesi ile elde

edilmiştir.) tablolar yardımıyla gösterilmiş ve karşılaştırmalı edebiyat teorisi bağlamında "Karşılaştırma ve Değerlendirme" alt başlığı altında ele alınmıştır.

Üçüncü bölümde her iki şairin divanında geçen peygamber isimleri incelenmiştir. Bölüm sonunda tabloda isimleri geçen peygamberler ve bunların yüzdelik oranları verilerek karşılaştırma ve değerlendirilmeleri yapılmıştır.

Dördüncü bölümde iki şairin divanlarında geçen sûfi şahsiyetler ele alınmıştır. Bölümün başında kısaca "sofi" ve "tasavvuf" kelimeleri hakkında bilgi verildikten sonra İslam tasavvufunun doğuşu ile ilgili kısaca bilgi verilmiştir.

Tezin son bölümünü oluşturan beşinci bölümde ise her iki şairin divanında geçen tasavvufî unsur ve kavramlar ele alınmıştır. Bu bölüm iki alt başlıktan oluşmaktadır. Bunlardan birincisi şairlerin divanında geçen 'ârif, âbid, şeyh, dervîş, sâlik vb. anonim tasavvufî unvan ve kavramlar incelenmiştir. İkinci kısımda ise iki şairin divanlarında yer alan Hallâc-ı Mansûr, Bâyezîd-i Bistâmî, Câmî vb. en ünlü sûfilerle ilgili mazmunları içeren beyitler üzerinde durulmuştur. Her iki alt başlık dâhilinde oluşturulan veriler tablolar şeklinde karşılaştırmalı olarak değerlendirilmiştir.

Ezcümle Allah'ın Zâti isimlerinin Hâfız-ı Şîrâzî'nin divanında fazla yer aldığı görülmekle beraber, anlamlandırma noktasında her iki şairin bu isimleri çoğunlukla yemin amaçlı kullandıkları görülmektedir. Bu isimlerin tercihi noktasında Hâfız-ı Şîrâzî'nin *Kur'ânî* isimler ile beraber Fars kültüründen de faydalandığı, Melâyê Cizîrî'nin ise İslamî terminoloji ve Fars kültürünün yanında Kürt kültüründen de istifade ettiği anlaşılmaktadır.

Melâyê Cizîrî, Allah'ın isim ve sıfatlarını kullanırken sözlük ve kavramsal anlamlarındaki uygunluğu şiirsel bir kabiliyetle ele alarak şairlik maharetini sergilemiştir. Hâfız-ı Şîrâzî'nin ise buna ilave olarak daha ziyade edebî sanat kaygısı güttüğü görülmektedir. Aynı şekilde peygamber isimleri ve bu çerçevede üretilen mazmunlar sayı ve kullanım sıklığı yönüyle Hâfız-ı Şîrâzî, Melâyê Cizîrî'nin önünde yer almaktadır. Ancak her iki şairin söz konusu peygamberlerin öne çıkardıkları özellikleri yer yer farklı olmuştur. Hâfız-ı Şîrâzî'nin divanında Hazret-i Âdem aldanmanın ve cezalandırmanın, Hazret-i Nuh gam ve dertlerin, Hazret-i İbrahim sıkıntıdan mucizevî şekilde kurtulmanın, Hazret-i Yakub ayrılık, dert ve gamın, Hazret-i Yusuf sevgiliye kavuşamamanın sembolü iken; Melâyê Cizîrî'nin divanında Hazret-i Âdem bilgelğin, Hazret-i Nuh uzun ömür ve fırsatları değerlendirmenin,

Hazret-i İbrahim sevgilinin nazının, Hazret-i Yakub sevgiliye kavuşmanın mutluluğunun, Hazret-i Yusuf sevgiliye olan hasretin işaretidir. Yine dört halifenin isimleri Melâyê Cizîrî'nin divanında yer alırken ve bunlardan Hazret-i Ali'nin isim ve sıfatları büyük bir yer tutarken, Hâfız-ı Şîrâzî'nin sadece bir yerde Hazret-i Ali'ye işaret etmesi oldukça dikkat çekicidir.

Hâfız-ı Şîrâzî'nin divanında tasavvufî kavram ve kişiler menfî ya da müspet özellikleri ile ele alınmakta ve bu özelliklerini şairin yaşadığı dönemin siyasal, sosyal ve kültürel ortamından kaynaklanmaktadır. Melâyê Cizîrî'nin divanında ise bütün tasavvufî kişilikler müspet olarak yer almakta ve âşıkane tasavvufun çerçevesinde ele alınmaktadır.

Tarihte yaşamış tasavvufî simaların tercihinde Melâyê Cizîrî'nin divanında daha fazla kişiliklere rastlanılmaktadır. Her iki şair arasında Hallâc-ı Mansur ortak bir sima olarak gözüke de şairlerin bu simaya bakış açılarında farklılık gözükmektedir. Hallâc-ı Mansur, Hâfız-ı Şîrâzî'de sadakati ve asılması hatırlanırken Melâyê Cizîrî'de darağacına çekilmesine neden olan Ene'l-hak sözüyle dile getirilmiştir.

Tezin sonuç kısmında iki şairin konuyla ilgili şiirlerinin karşılaştırılmasıyla elde edilen somut veriler; ortak ve farklı hususlar analiz edilmeye çalışılmıştır.

Anahtar Kelimeler: Hâfız-ı Şîrâzî, Melâyê Cizîrî, Karşılaştırmalı Edebiyat, İran Edebiyatı, Kürt Edebiyatı, Tasavvuf.

PÊŞGOTIN

Melâyê Cizîrî, di edebiyata kurdî da li gorî jêderên berdest xwedî yekem dîwana murettêb e. Herwiha di edebiyata kurdî da wekî kanoneke edebî tê hesibandin. Heta niha wekî kanonên edebî yê milletên din bi şayesteyî li ser dîwana wî xebatên akademîk nehatîne kirin. Ji ber vê baş nehatîye nasin û cihê xwe di edebiyata cîhanê da bi şayesteyî wernegirtîye.

Hâfîzê Şîrâzî, yek ji pêşengê edebiyata farsî ye. Hem li Îranê û hem li welatên din gelek xebat li ser wî û li ser helbestên wî hatine kirin û wekî şa'irek navnetewî di edebiyata cîhanê da cihê xwe girtîye.

Di vê xebatê da me jî xwest ku em helbestên Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî ji aliyê 'unsûrên dînî û tesewufî va binirxînin. Armanca sereke ya vê xebatê ev e ku di dîwana Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da 'unsûrên dînî û tesewufî werin vekolîn. Heqîqet ev e ku heta niha ev mijar ji bo Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî nebûye mijara xebateke serbixwe. Bi vê vekolînê Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî di peywenda 'unsûrên dînî û tesewufî da ew ê werin nasîn û helsengandin. Di heman demê da ev xebat têkiliya Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî vedikole ka wekî ku tê îddiakirin tesîra Hâfîzê Şîrâzî li ser Melâyî heye yan na û eger hebe jî heta çi radeyekê ye.

Di pêvajoya vê xebatê da, ji bo bidestxistina materyalên teze, berehvkirina berhemana gelek kesan alîkarî dan me. Di pêşîyê da, di amadekirina vê teze da ji bo alîkarî, teşwîqa şewirmendê xwe birêz Prof. Dr. Hasan ÇİFTCİ ra spas dikim. Endamên lijneya şopandina teze birêz Doç. Dr. Ayhan TEK û Dr. Hêmin Omer EHMED bi nirxandin û rênîşandayînen xwe piştgirî dane me, em ji wan jî ra spasîye xwe peşkeş dikin. Ji aliyê rastnivîsînê teza me ji serî heta dawîyê ji teref Dr. Zafer AÇAR va hate xwendin. Ji bo cenabê wî em spasîyên xwe peşkeş dikin. Ji zanîngeha Colemêrgê birêz Dr. Mesut ALGÜL teşwîqên te nayên jibîrkirin. Dostê hêja mala te ava be.

Sipasîya herî mezin ji bo kufletên malê û dayika zarokan e. Ji bo sebr, tehemmul û teşwîqa wan zor zor spas dikim.

Nurettin ERTEKİN

Colemêrg-2022

LÎSTEYA TABLOYAN

| | |
|---|-----|
| Tablo 1: Behrên 'Erûzê di Şi'rên Hâfizê Şîrâzî da | 21 |
| Tablo 2: Behrên 'Erûzê di Şi'rên Melâyê Cizîrî da | 44 |
| Tablo 3: Navên Xweda yê Zatî | 68 |
| Tablo 4: Nav û Sifetên Xweda | 91 |
| Tablo 5: Melek-Firişte | 108 |
| Tablo 6: Berhemên Pîroz | 116 |
| Tablo 7: Pêxember | 118 |
| Tablo 8: Jîyana Axretê | 129 |
| Tablo 9: 'Unsûrên Dînî yê Giring | 138 |
| Tablo 10: 'Unsûrên 'Îbadetê | 144 |
| Tablo 11: Çar Xelîfe | 148 |
| Tablo 12: Navê Pêxemberan | 174 |
| Tablo 13: Kesayetên Tesewufê | 205 |
| Tablo 14: Kesayetên Dîrokî yê Tesewufê | 216 |
| Tablo 15: Têgihên Tesewufê | 253 |
| Tablo 16: 'Unsûrên Tesewufê | 269 |

KURTKIRIN

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| amd | : Amadekar |
| Bnr | : Binêre |
| b | : Bin |
| c, ċ | : Cild |
| DîA | : Diyanet Vakfî İslâm Ansiklopedisi |
| hb | : Heman berhem |
| HŞ | : Hâfizê Şîrâzî |
| MC | : Melâyê Cizîrî |
| MCD | : Melâyê Cizîrî nusxeya Doskî |
| j | : Jimar |
| Tez | : Teza li ber dest |
| r-s-ص | : Rûpel |
| صص | : Di navbera wan rûpelan da |
| (s.a.s.) | : Silavên Xweda li ser Wî be |
| w | : Wefat |
| wd | : Wekî din |
| w. | : Wekî wan |
| yd | : Yên din |
| & | : Û |

ALFABEYA TRANSKRÎPSÎYONÊ

| | |
|---|--------|
| آ | : ā, â |
| ء | : ’ |
| ث | : ṯ |
| خ | : x |
| ح | : ḥ |
| ذ | : ḏ |
| ص | : ṣ |
| ض | : ḏ |
| ط | : ṭ |
| ظ | : ṭ |
| ع | : ’ |
| غ | : ġ |
| ف | : v |
| ق | : q |
| ی | : ê |
| ي | : î, î |
| و | : ū, o |

1. Di tezê da û bi taybet di bêje û terkîbên 'erebî û farsî da bi piranî me sîstema transkripsîyona *DÎA (Diyanet Vakfı İslâm Ansiklopedisi)* bi kar anî. Tevî vê herfên alfabeya kurdî jî cih girtin. Wekî li jor hat destnîşankirin herfên xasî fonetîka kurdî wekî fê ya sê nuqte fe (ف) bi sembola "v", dengê hî (خ) bi sembola "x", qâf (ق) bi "q"yê, ji bo dengê gayin (غ) ê ji hî (خ) were veqetandin bi "x"yê hate transkiribe kirin.

2. Herekeyên herfên bêjeyên farsî û 'erebî bi şiklê ku di wî zimanê da tên bilêvkirin hatin latinîzekirin:

Fethe, bi şiklê **e**; **esre**, bi şiklê **i/ı** û carîna li gorî fonetîka zimanê kurdî, di cihê ku pêwîst bû bi şiklê **ê**; **utre**, bi şiklê **u** hatin nivîsandin. Di **cezme** û **şeddeyan** da rî'ayeta şiklê wan yê orjînal hate kirin.

3. **Elîfa** bi hereke (ا), li gorî herekeya ku di bêjeyê da wergirtîye hate teleffuz kirin. Lê dema ku **elîf** sakin be û li gorî herfa berîya xwe dengê **ā** ya dirêj bide bi şiklê **ā** hate nivîsandin.

4. **Ya** (ی) ya bi hereke, li gorî herekeya ku di bêjeyê da wergirtîye hate teleffuz kirin. Lê dema ku **ya** sakin be û herfa berîya wê dengê **î** ya dirêj dide bi şiklê **î** ya dirêj hate dest nîşan kirin. Tevî vê li gorî fonetîka zimanê kurdî **ya** yê sakin di gelek cihan da bi şiklê **ê** tê teleffuz kirin. Ji ber vê di cihên pêwîst da **ya** ya sakin bi şiklê **ê** hatin nivîsandin

5. **Waw** (و) a bi hereke, li gorî hereke ya ku di bêjeyê da wergirtîye hate teleffuzkirin. Encax dema **waw** sakin bû û bi herfa berîya xwe ra dengê **û** ya dirêj dida bi şiklê **û** ya dirêj hate destnîşankirin. Di bêjeyên wekî **روز** da bi şiklê herfa **o** hate teleffuz kirin. Dîsa li gorî fonetîka zimanê kurdî di bêjeyên ku **waw** a bi hereke di wan da hebû carîna wekî **v** ya zirav, carîna jî wekî **w** ya stûr hate teleffuz kirin. Di tezê da hetanî ji destê me hat me rî'ayeta vê rêbazê kir.

6. Veqatandekên kurdî wekî yên farsî cuda nehatin nivîsandin, bi bêjeyê zeliqandî hatin nivîsandin.

7. Mînakên ku ji Dîwana Hafîzê Şîrazî hatin dayin ji ber ku bi zimanê resen hatin nivîsandin pêdivî bi transkrîbê nehat ditîn.

8. **Elîf lâm** (ال) ên di serê bêjeyên ji 'erebî hatine yan di nava terkîbên 'erebî da cih girtine wekî ku di 'erebî da cih girtine hatin latînîkirin. Mînak, **elîf lâm** a di serê bêjeyên ku bi herfên qemerî dest pê dikin wekî di bêjeya **القمر** da, di tezê da bi şiklê **el-qemer** û **elîf lâm** a di serê bêjeyên ku bi herfên şemsî dest pê dikin wekî di bêjeya **الشمس** da bi şiklê **eş-şems** hatin qeydkirin. Di nivîsandina bêjeya yekem ya terkîban jî ev rêbaz hat şopandin.

Rūhu'l-emīn (روح الامين)

Rūhu'l-quds (روح القدس)

Dāru's-selām (دارالسلام)

el-Ḥemdu li'l-lāh الحمد لله

9. Jêderên ku ji wan hatin istîfadekirin, bi taybet yên 'erebî, farsî û kurdîya soranî ji ber ku bi şiklê resen hatin nivîsandin pêdivî bi transkrîbê nehat ditîn.

DESTPÊK

Zanist û pîşe bi gelemperî bi cism û bedena însan ve girêdayî ne. Edebiyat, ji hiş û rihê însan derketiye û tesîra xwe li ser rih û hişê însan dike. Ji ber vê, asane bandora li ser rih û hiş, ji bandora li ser cism û bedenê berfirehtir û payîdartir be. Ev kartêkirîna edebiyatê li ser rih û hişê însan di têkiliyên civakî da derdikeve holê. Civak, bi hemû rexên xwe li ser van têkiliyan ava dibe û dibe karektera civakê ku ev karakter di tekiliyên navneteweyî da jî derbasdar e.

Çawa zehmet e ku kesek bi tena serê xwe jiyana xwe bidomîne, her wusa civakek jî ne pêkan e ji xwe ra sînorekî qewîn di navbera xwe û civakên din da ava bike û bi tena serê xwe jiyana xwe bidomîne. Neçar e, divê di navbera netewan da ger bi erênî û ger bi neyînî têkilî bên avakirin.

Ji hemû zanistên din bêtir edebiyat dikare di navbera netewan da peywendiyê û di navbera bawerîyan de têkiliyan ava bike. Bi avakirina vê têkiliyê, milletên cihanê dikarin hevûdû binasin û têkiliyan di navbera xwe de ava bikin.

Tu netewek nîne ku xwedî kulturek xalis û bakir be. Her kultur, îmtîzaca ji çend kulturên din e, lê ast û pîvana îmtîzacê li gorî her kulturekê cuda ye. Edebiyata cihanê hem bi hokarên giştî wek; koç, şer, dîn, bazirganî, desthilatdarî û hem bi hokarên taybet wek; bajarvanî, werger, rexne, komele û civakan dikare bandorê li hev bike û bikeve bin tesîra hevûdû ji gelek aliyan ve, wek; teşe, mijar, şêwe û wd.

Edebîyat, hest, raman, hizir, aşopî, û xwestekên mirovan ên di qonaxên jiyane de derdixe holê û tîne zimên. Ji ber hindê tixûbê edebîyatê gelek berfireh e, nayê sînorkirin. Edebîyat bi du cureyên sereke; 'pexşan û nezmê tê dabeşkirin. Ev dabeşkirin hem ji bo edebiyata devkî û hem ji bo edebiyata nivîskî derbasdar e. Şi'r, hem di edebiyata devkî û hem di edebiyata nivîskî cihê girîng û taybet digire.

Şi'r, ku cûreyek ji cûreyên nezmê ye bi gelek hêlên xwe wek; form, teşe, ritim, muzîk, deng, wate ji bo gelek armancan wek amrazekî sereke hatiye bikaranîn. Evîn û evîndarî, penaberî û xerîbî, karesatên xwezayî, şer û pevçûn, siruştî û jiyana bi siruştîyê re, jandarî û xemgînî, bêdadî û zordarî, lehengî û qehremanî...û wd. bûne mijarên şî'rê.

Şa'ir, bi qabilîyeta xwe ya takekesî û siruştî û pêkanîna rê û rêbazên avakirina şî'rê, hin hevok û risteyan ava dike ku yek misreya wan cihê qesîdeyekê digire û yek

xezeleke wan wekî dîwanekê berfireh û bibandor e. Helbet ev taybetî bi bikaranîna hunerên edebî û 'unsûr, têgih û mezmûnên edebî pêk tê.

Helbet di berhemên şa'iran da gelek 'unsûrên dînî û tesewufî hatine bikaranîn ku paşxaneyê fikr û ramanên wan, kultura neteweyên wan û kanîya zimanên wan derdixe holê. Herwiha şa'irên sofî jî rewşên xwe yên tesewufî, felsefeyên xwe yên tesewufî û kelamî bi mezmûnên ku bi kar anîne, ragihandine xwendevanên xwe.

Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî du şa'irên mezin in, ku yek ji nav Farisan û yek ji nav Kurdan derketîye û bi honandina şî'rên xwe êdî bûne malê edebîyata cihanê. Ne pêkane ku herdû şa'ir di şî'rên xwe da 'unsûrên dînî û tesewufî bi kar neanîbin. Hem dîsa ne pêkan e ku mezmûnên tesewufî di şî'rên xwe da bi kar neanîbin. Lewra herdû şa'irên navdar jî tesewufî şopandine. Wihareng mezmûnên 'îşqê jî ew ê bi kar anîbin lewra şa'irên 'âşiq in.

Di vê xebata xwe da me xwest ku em di dîwana Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî da li ser 'unsûrên dînî û tesewufî rawestînin, vekolînin û xalên wan yên hevbeş û cuda derxînin holê.

Mijara Tezê

Mijara teza me di dîwana Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da vekolîna 'unsûrên dînî û tesewufî ye ku em dixwazin bizanin ka herdû şa'iran di helbestên xwe da cih dane kîjan 'unsûrên dînî û tesewufî. Ji ber ku mijar vekolîn û nirxandina 'unsûrên dînî û tesewufî ye, bi peywendîya mijarê, me cih da her çar xelîfeyên dînê Îslamê, qisse û navên pêxemberan, kesayetên dîrokî yên tesewufê û 'unsûrên tesewufî ku wekî ekolên felsefî hatine pejirandin jî. Herwiha hejmar û rêjeyên 'unsûr û têgihên hatin nirxandin me di tabloyan da destnîşan kir. Ev xebat ji bo ku dixwaze tesîra navbera herdû şa'iran derxîne der, her 'unsûr û têgihên dînî û tesewufî cuda cuda hate nirxandin.

Armanca Tezê

Di edebîyata rojhilat da Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî, bi du zimanê cuda; kurdî û farsî şî'r honandine. Herdû şa'ir jî di edebiyata gelê xwe da wekî kanonek edebî cih digirin. Hâfîzê Şîrâzî berîya Melâyê Cizîrî bi nêzî dused salî jîyaye û di honandin û hunera şî'rê da tesîrek mezin hem li edebiyata farsî kirîye û hem li edebiyata cîranan kirîye. Wekî nêrînek giştî hatîye pejirandin ku Melâyê Cizîrî jî di

bin tesîra Hâfizê Şîrâzî da maye. Armanca me di vê tezê da, di çarçoveya edebiyata berawirdî de nirxandina 'unsûrên dînî û tesewufî yê dîwana Melâyê Cizîrî û Hâfizê Şîrâzî ye. Bi vê xebat û nirxandina navbera herdû şa'iran ku peyrewên heman dînî ne, şopînerên heman felsefeyê ne, nûnerên şêwaza Sebka 'Iraqî ne û pêşewayê edebîyata gelên xwe ne, armanca me bersiva pirsên li jêr e;

- ✓ Herdû şa'iran çî 'unsûrên dînî tesewufî bi kar anîne?
- ✓ Her 'unsûr û istilaheke dînî û tesewufî di dîwanên herdû şa'iran da çend caran û bi kîjan rêjeyî derbas dibe?
- ✓ Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî 'unsûr û istilahên dînî û tesewufî bi çî wateyê û bi çend wateyan di helbestên xwe da bi kar anîne?
- ✓ Xalên hevbeş û xalên hevpar di bi kar anîna 'unsûrên dînî û tesewufî da, di diwanên herdû şa'iran da çî ne?
- ✓ Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî çî kiras li 'unsûr û istilahên dînî û tesewufî kirine û di bin wan kirasan da fikr û ramanên xwe yê evînî, tesewufî û felsefî çawa anîne ziman.
- ✓ Şert û mercên serdema herdû şa'iran çî tesîr li şî'ra wan kirîye û ev tesîr di bikaranîna 'unsûrên dînî û tesewufî da çawa derdikeve holê?
- ✓ Şexsîyet, zanebûn, jîyan û nasnameyên herdû şa'iran çî tesîr li helbesta wan kirîye, û di 'unsûrên dînî û tesewufî da çawa xwe daye der?
- ✓ Di bikaranîna 'unsûrên dînî û tesewufî da tesîra Hâfizê Şîrâzî li ser Melâyê Cizîrî heye yan tune ye?
- ✓ Melâyê Cizîrî tesîr wergirtibe ev tesîr di çî astê da ye?

Girîngiya Tezê

Li ser dîwana Melâyê Cizîrî pir kêma xebat hatine kirin. Xasma bi zaravayê Kurmancî, ji bilî 2-3 şerhan, berhemên lêkolînerî pir kêma in. Di vê mijarê da, ji berheman bêtir gotarên akademîk û teblîxên ku di sempozyûm û konferansan da hatine pêşkêşkirin tên dîtin. Bi zimanê tirkî di deh salên dawî da 5-6 berhem hatine nivîsîn ku ev berhem li ser mijarek hevpar, li ser tesewifa Melâyê Cizîrî amade bûne. Di vê mijarê da xebatên Nesîm Doru derdikeve pêş. Herwiha xebatek bi navê Rengvedana Sofîgerîyê di Helbestên Melâyê Cizîrî da ji teref Wehîd Sindî amade

bûye. Derbarê Melâyê Cizîrî da bi zimanê kurdî qederê deh tezên mastirê bi tirkî, farsî û soranî amade bûne. Di warê tezên doktorayê da, di vê sala dawî da, beriya teza me li Zanîngeha Dicleyê li ser edîsyonkrîtîka dîwana Melâyê Cizîrî û berawirdîya teşeyên nezma dîwana Melâyê Cizîrî û Fizûlî bi zimanê tirkî tezeke doktorayê amade bûye.¹ Li Zanîngeha Bingolê li ser Ciwanînasîya Melâyê Cizîrî tezeke doktorayê hatîye pejirandin.² Yek ji girîngîya teza me ev e; di zanîgehên me da li ser Melâyê Cizîrî teza doktorayê ya sêyem e û bi zaravê kurmançî teza doktorayê ya duyem e.

Di edebiyata kurdî da derbarê 'unsûr û têgihên dînî û tesewufî yên dîwana Melâyê Cizîrî da tu xebatên serbixwe nehatine kirin. Li ser bêjeyên tesewufî yên dîwana Melâyê Cizîrî berhemek amade bûye. Ev berhem ku ji teref Ibrâhîm Ehmed Şivan bi zaravayê Soranî bi navê "*Ferhengî Sofîyaney Dîwanî Cizîrî û Mehwi*" amade bûye³, berawirdîyekê di navbera bêjeyên tesewufî yên Melâ û Mehwi da dike.

Yek ji girîngîya teza me ev e ku 'unsûr û istilâhên dînî tevî yên tesewufî cara yekem dibe mijara lîkolînê û dibe mijara tezeke doktorayê. Xasma bi zaravayê kurmançî.

Hâfîzê Şîrâzî keseyatekî gelekî girîng e di edebîyata farsî da û herwiha kesayetekî navnetewî ye di edebîyata cihanê da. Bi çendîn zimanan li ser Hâfîzê Şîrâzî berhemên zanistî amade bûne. Lê di akademîya kurdî da kêma xebatên serbixwe hatine kirin, nexasim bi zaravayê Kurmançî û li zanîgehên me. Ev tez, bi zaravayê kurmançî, ew ê bibe yekem xebatek akedemîk li ser jîyan, berhem, kesayet û ramanên Hâfîzê Şîrâzî.

Di edebiyata farsî da li ser Hâfîzê Şîrâzî di çendîn mijaran da xebat hatine kirin. Tiştêkî balkêş e ku, wekî xebatên li ser 'unsûrên dînî û tesewufî yên Mewlânâ Celâleddînê Belxî (w. 672/1273)⁴ û hinek şa'îrên din yên edebiyata farsî hatine kirin, derbarê wan da ferheng û berhemên serbixwe hatine amadekirin, li ser Hâfîzê Şîrâzî

¹ Azarkan, Muhammed Şerif, *Melâyê Cizîrî'nin Dîwanî'nin tenkitli metni ve Fuzûlî'nin Türkçe Dîwanî ile şekil bakımından karşılaştırılması*, Dicle Üniversitesi, Sosyal Bilimler Enstitüsü, İslam Tarihi ve Sanatları Ana Bilim Dalı, Türk İslam Edebiyatı Bilim Dalı, Doktora Tezi, Diyarbakır 2021.

² Eminoğlu, Nevzat, *Estetik Di Helbestên Melâyê Cizîrî De*, Zanîngeha Bingolê, Enstîtuya Zimanên Jîndar, Şaxa Makezanîsta Ziman û Edebiyata Kurdî, Teza Doktorayê, Bingol 2022.

³ Şوان، ئیبراهیم ئەحمەد، فەرھەنگی سۆفیانەیی جزیری و مەحوی، چاپخانەی حاجی ھاشم، ھەولێر ۲۰۱۰.

⁴ کیمنش، عباس، پرتو عرفان: شرح اصطلاحات عرفانی کلیات شمس، انتشارات سعدی، تهران ۱۳۶۶.

nehatîye kirin.⁵ Girîngîyek xebata me ev e ku 'unsûrên dînî û tesewufî yên dîwana Hâfîzê Şîrâzî cara yekem tê xebitandin û hejmar û rêjeyên wan têne derxistin.

Di qada edebiyata berawirdî da xebatên li ser Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî gelek kêr in. Li ser kêşa 'erûza şî'rên herdû şa'iran ji teref Helîma Xurşîd tezeke mastarê hatîye amadekirin.⁶ Di van salên dawî da li ser têgihên xemrîyatên dîwana herdû şa'iran li Îranê tezek amade bûye. Dîsa di navbera 50 helbestên herdû şa'iran da bi navê tehlîl û tetbîqa teswîra me'sûqê di şî'rên Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî da tezek mastirê amade bûye.⁷ Li ser xemrîyata dîwana Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî jî em rastî tezek mastirê dihên.⁸

Girîngîyek xebata me ev e ku cara yekem Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî, bi hev ra, di çarçoweya edebiyata berawirdî dibe mijara tezeke doktorayê. Herwiha bi vê xebatê jî alîyê 'unsûrên dînî û tesewufî hebûn yan nebûna tesîra Hâfîzê Şîrâzî li ser Melâyê Cizîrî ew ê derkeve holê.

Rêbaza Tezê

Ji ber ku edebîyat zanistêke civakî ye me di teza xwe da Rêbaza Lêkolînên Çêbarî (Kalîtatîv) şopand. Ji bo bidestxistina daneyan jî me dokument bikaranîn ku ji wan ra çavkanîyên duyem jî tê gotin. Hemû keresteyên nivîskî yên derbarê mijarê da ji bo me dokument bûn. Ev keresteyên nivîskî çî berhem û beşên berhemana, çî tezên akademîk, çî gotar û teblîx ji bo vê xebatê dibûn hatin bikaranîn. Lê heta ji destê me hat me piştî xwe da berhemana.

Di xebata xwe da ji bilî dîwanên herdû şa'iran ku keresteyên sereke ne, materyalên nivîskî wekî; berhemên lêkolînê, şerhên dîwanan, ferhengên lûxetan û ferhengên istilahan jî hatin bikaranîn. Di vê tezê da me xebatek naverokî pêk anî. Lewra mijara tezê li ser naveroka du dîwanan e, lê ne naverokeke bi giştî, tenê ji

⁵ Elbette lazim e were gotin berhema Xurremşâhî bi navê *Hâfîznâme* ne berhemek serbixwe ye derbarê 'unsûrên dînî û tesewufî yên dîwana Hâfîzê Şîrâzî. Di vê berhemê da gelek 'unsûrên dînî û tesewufî jî cih nagirin. Herwiha berhema 'Elî Recâ'î Buxârâyî, *Ferheng-ê Eş'ârê Hâfîz*, tenê hinek, ne hemû istîlâhên tesewufî yên dîwana Hâfîzê Şîrâzî pênase kirî ye. Hâfîzê Şîrâzî istîlâhên tesewufî bi çî şiklî bi kar anîye di vê berhemê da nehatîye nirxandin.

⁶ عبداللا، حلیم خورشید، برآوردهای کتبخانه‌های کتبخانه‌های عراق و ایران، دهوک، ۲۰۱۱.

⁷ عثمان، نیروز موسی، تحلیل تطبیقی تصویر معشوق در اشعار حافظ و ملای جزیری با تکیه بر تشبیه (مطالعه موردی: ۵۰ شعر از هر شاعر)، دانشگاه کردستان، دانشکده ی زبان و ادبیات، گروه زبان و ادبیات فارسی، سنندج ۱۴۰۰.

⁸ محمد صالح، هیمن کریم، مطالعه تطبیقی خمریات در دیوان حافظ شیرازی و دیوان ملای جزیری، دانشگاه کردستان، دانشکده ی زبان و ادبیات، گروه زبان و ادبیات فارسی، سنندج ۱۴۰۰. (Pêgihîn: 26.08.2022)

<https://research.uok.ac.ir/Pages/Researcher.aspx?ID=268&Tab=16>

beşên naverokê 'unsûrên dînî û tesewufî hatin nîrxandin. Ev xebat di heman demê da ji bo ku nîrxandineke di navbera du şa'îrên zimancuda da ye dikeve qada edebiyata berawirdî jî.

Edebiyata berawird, li ser rehên kevnare ava bûbe jî ji aliyê îcra û karbordiyê gelek ciwan e. Li Ewrûpa, bi edebiyata Yewnaniya kevin re yekem mînakên edebiyata berawirdî tînin. Piştî di serdema Ronasansê da li Ewrûpa berfireh dibe. Ji bo destpêka edebiyata berawird di nav netewên Ewrûpî da gengeşiyek hebe jî, li gorî gelek dîrokzan û edebiyatnasan Fransa dayika fikra edebiyata berawirdî ye û wek zanistekî di bin beşa edebiyatê da yekem car li Fransa edebiyata berawirdî rû daye.

Pêşî li Fransa wek ekola Fransî ekola edebiyata berawirdî derdikeve holê. Piştî Fransa li Emerîka, Almanya û li hin netewên din jî ekolên edebiyata berawirdî hatin damezirandin. Ji bo edebiyata berawirdî ekolên cuda cuda hebin jî du ekolên mezin derdikevin pêşberî me. Ekola Fransî û Ekola Amerîkî. Di ekola Fransî da derxistina tesîra di navbera du edebîyan/ du berhemên zimancuda rêbaza sereke ye.⁹ Ji ber vê, teza me di qada edebiyata berawird da li ser ekola Feransa meşîya.

Di xebata xwe da me ji amaran jî sîd wergirt. Her 'unsûr û tîgehên dinî û tesewufî hatin hejmartin û di tabloyan da hatin nîşandayîn. Her 'unsûr û tîgehek li hejmara malikên helbestên şa'îran hatin parvekirin û rêjeyên wan di dîwanan da hate peyîtdandin.

Xebata me ji destpêk, pênc beşên serekî û encamê pêk tê. Di beşa yekem da me jîyana herdû şa'îran û şewaza wan ya edebî bi şeweyek asan û kurt vekola. Piştî me rewşa sîyasî, civakî û kulturî nîrxand.

Di beşa duyem da 'unsûrên dînî hatin nîrxandin. Navên Xweda yên Zafî, nav û sîfetên Xweda, fîrişte, berhemên pîroz, pêxember, jîyana axretê, hinek 'unsûrên dînî, 'unsûrên îbadetê û her çar xelîfeyên dînê Îslamê wekî binbeş di beşa duyem da cih girtin. Ji bo her 'unsûrekî pêşî wateya ferhengî û piştî wateya 'ilmî hate dayîn. Bi malikên herdû şa'îran mînakên ku bi kar anîne hatin pêşkêşkirin. Ji bo her binbeşekê tabloya 'unsûran hate amadekirin û piştî her 'unsûr yek bi yek di navbera herdû şa'îran da hate nîrxandin.

⁹ Aytaç, Gürsel, *Karşılaştırmalı Edebiyat Bilimi*, Say Yayınları, 3. Baskı, İstanbul 2013, s 88.

Di beşa sêyem da em li ser nav û qisseyên pêxemberan rawestîyan. Ev beş jî di çarçoweya beşa duyem da amade bû.

Di beşa çarem da kesayetên tesewifî û kesayetên tesewifî yên dîrokî di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da hatin nirxandin. Di pêşîyê da bi kurtasî derbarê tesewifê da me agahî da. Piştî kesayetên tesewifî û kesayetên dîrokî yên tesewifî di beşê da cihê xwe girtin. Heman rêbaza amadekirin û nirxandina 'unsûran di vê beşê da jî hate pêkanîn.

Di beşa pêncem da em li ser têgih û 'unsûrên tesewufê sekinîn. Têgihên tesewufê û 'unsûrên tesewifê wekî du binbeşan bi heman rêbazê di vê beşê da cih girtin.

Di encamê da kurteya tezê hate dayîn, tesbît û pêşniyarên me hatin pêşkêşkirin.

Jêderên Serekî yên Tezê

Di vê teza xwe de me ji gelek jêderên ciyawaz, hem ji jêderên 'erebî, hem jêderên farsî, hem jêderên tirkî û hem jêderên kurdî îstifade kir. Helbet di teza me da dîwanên herdû şa'iran jêderên yekem bû. Ji bo Hâfizê Şîrâzî, daneya Huseyîn 'Elî Yûsifî ku li ser nusxeya Qezwînî û Xanlerî amade kiribû hate hilbijartin.¹⁰ Sebeba hilbijartina vê nusxeyê ev bû ku qit'e û ruba'iyên Hâfizê Şîrâzî di xwe da digirt. Di teza me da ji bo nîşandayîna malikên Hâfizê Şîrâzî di nava kevanekan da pêşî sehîfeya berhemê û paşê hejmara malikan hat destnîşankirin. Wekî (HŞ 13-5). 13 hejmara sehîfeya berhemê û 5 hejmara malikê ye.

Ji bo Melâyê Cizîrî nusxeya weşanxaneya Nûbiharê hate hilbijartin.¹¹ Sebeba hilbijartina vê nusxeyê ev bû ku heta niha berfirehtirîn dîwana Melâyê Cizîrî ye. Heta niha hemû helbestên Melâyê Cizîrî ku hatine tesbîtandin di vê nusxeyê da tene dîtî. Ev nusxe ji ber nusxeya Tehsîn Îbrahîm Doskî ku li 'Iraqê çap bûye hatiye wergirtin. Lazim e were gotin di nusxeya Nûbiharê da helbestek Melâyê Cizîrî ya bi misraya; *Meşşâtee Husnâ Ezel* dest pê dika cih nagire. Ev helbest hem di nusxeya Doskî da û hem di nusxeyên din da cih digirin. Weşanxaneyê ji bo nebûna vê helbestê di nusxeya wan da 'jibîrkirin' wekî sebeb nîşan dan. Ji ber vê di teza me da

¹⁰ یوسفی، حسین علی، دیوان حافظ، بر اساس نسخه قزوینی و خانلری با مقابله نسخه ها و شرحای معتبر، نشر روزگار، تهران ۱۳۸۱.

¹¹ مه‌لایی جزیری، دیوان، آماده کار: ته‌حسین ئیبراهم دۆسکئی، نوبهار، ستنبول ۲۰۱۹.

malikên ku ji vê helbestê hatin dayin bi; (MCD ...-....) hatin nîşandayin.¹² Yê mayî bi (MC 14-5) pêşî reqema rûpelê û paşê hejmara malikan hatin destnîşankirin.

Ji xeyrê van herdû jêderên sereke, berhemên navên wan û nivîskarên li jêr hatin rêzkirin jî bi berfirehî me ji wan sûd wergirt.

Loxetnâme, Dihxodâ,

Mufredât, Raxib el-Isfehânî

Meqsedu'l-esna fî şerhi esmâ'l-lâhî'l-husnâ, Îmamê Xezalî

Qisesu'l-enbîyâ, Îbn Kesîr,

Hâfiznâme, Bahâeddîn Xurremşâhî

Dersê Hâfizê Şîrâzî, Muhemmedê Istî'lâmî

Şax-ê Nebat-ê Hâfiz, Muhemmed Rizâ Berzger Xâliqî

Şerha Dîwana Melâyê Cizîrî, Tehsîn Îbrahîm Doskî

Şerha Dîwana Melâyê Cizîrî, Melâ Ehmed Zivîngî

Melâyê Ciziri Divanı ve Şerhi, Abdalbaki Turan

Dîwana Melâyê Cizîrî, Şerha Hejar

Şerha Dîwana Melâyê Cizîrî, Melâ 'Ebdusselam Cizîrî

Ferheng-ê Îstîlâhât û Te'bîrât-ê 'Irfânî, Seyid Ce'fer Seccadî

Ferheng-ê Eş'ârê Hâfiz, Ehmed 'Elî Recâî Buxârâyî

Şerh-ê Camî'-ê Mesnewî-yê Me'newî, Kerîm Zemanî

Ferheng-ê 'Îşârât, Sîrus Şemîsâ

Ferheng-ê Telmîhât, Sîrus Şemîsâ

Faraziyeya Tezê û Pirsên wê yên Serekî

Edebîyatên gelan kartêkirinê li hev dikin, ji hev sûd werdigirin. Ev kartêkirin û sûd wergirtin dibe bi sedema destpêkirina nûxwazîyê be di nav edebiyata netewekî di asta ruxsar yan naverokê da be, dibe bi sedemên derbederî û mişextîbûn û koça nivîskarek yan komek ji nivîskaran ji welatekî diçin welatekî din, yan ji netewekî bi

¹² مه‌لایی جزیری، دیوانا مه‌لایی جزیری، هلیژارتن و بهر هفکرنا ته‌حسین ئیبراهیم دۆسکی، کتیبخانا جزیری، ده‌وک ۲۰۲۰.

bal netewekî din be û dibe bi sedemên wekî şer, desthilatdarîya sîyasî û bindestbûnî, dîn û bazirganîyê be.

Gelê Faris û gelê Kurd jiyanek hevmerzî domandine û didomînîn, tevî ku di çend hêrêman da jîyanek hevpar meşandine û dimeşînin. Herdû gel ji layê zimên va gelekî nêzî hev in. Zimanên kurdî û farsî ji zimanên Rojhelata Navîn in. Di nav rêza malbata zimanên Hîndî-Awropayî da ji şaxê Zimanên Asyayî ji zimanê Îranî ne. Bi vê sedemê ji aliyê zimên va herdû gel di bin bandora hev de mane. Hem di farsî de tîrêjên zimanê kurdî û hem di kurdî de tîrêjên zimanê farsî tê ditin.

Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî du kesayetên ku li ser heman dînî tevgerîyane. Dîsa li ser heman mezhebî (Ehlê Sunnet û Cemaet) meşîyane. Ji layê tesewufî jî peyrewên Muhyiddînê 'erebî ne û bi çarçoveyek giştî felsefeya Wehdetu'l-wucûdê diparêzin. Ji layê mijarên dîwanê jî xalên wan ên hevbeş gelek in ku xala herî mezin 'îşq e. Ango herdû şa'ir jî heman çavkaniyê îstifade kirine. Ji ber hindê tişteki gelekî asayî ye ku mijar, bêje, tîgeh, 'unsûr û mezmûnên wan bişibihin hev.

Ji ber van sedemên ku li jor hatin dest nîşan kirin faraziyeya xebata me ev e;

Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî tê payîn ku gelek 'unsûr û tîgehên dînî û tesewufî yên hevpar bi kar anîbin.

Meraq, sebaba pêşveçûna 'ilm û zanistan e. Tetmînkirina meraqê bi lêgerîn û peydakirina bersîva hin pirsan pêk tê. Xebat û lêkolînên akademik rêya herî rast e ji bo tetmînkirina meraqan. Ev pirsên li jêr bû sebaba amadekirina vê tezê.

- ✓ Kîjan 'unsûrên tesewufî û dînî di dîwana Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da hevpar in?
- ✓ Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî 'unsûrên tesewufî û dînî bi heman şeweyê di dîwanên xwe da bi cih kirine?
- ✓ Hâfîzê Şîrâzî di bi kar anîna 'unsûrên dînî û tesewufî da tesîr li Melâyê Cizîrî kirî ye yan nekirî ye?
- ✓ Melâyê Cizîrî tesîrek ji Hâfîzê Şîrâzî wergirtibe, ev tesîr di çi astê da ye?

Astengî û Zehmetiyên Tezê

Di eslê xwe da ev tez, tezek berawirdî ye. Ji ber ku ev tez du diwanan miqayese dike çawa girîngîya wê mezin dike ewqas jî zehmetîyan bi xwe ra diîne. Lewra divê mijarê da li ser dîwana her şa'irekî tezek dikare were amadekirin.

Xala herî girîng ya vê tezê, miqayeseya diwanên du şa'irên di edebîyata xwe da kanonên edebî ne. Derketina ji binê tezeke wusa, hinek pêdiviyên zehmet bi xwe ra tîne. Di serî da pêdiviya zanebûna zimanê farsî, kurdî û paşê zanebûna zimanê 'erebî yek ji zehmetîyên vê tezê ne.

Herdû şa'ir li welatên xwe heman 'eleqe nedîtine. Li ser Hâfîzê Şîrâzî li Îranê û li gelek welatên cihanê xebatên ku hatine kirin eger werin berhevkirin ew ê pirtûkxaneyekê dagire. Melâyê Cizîrî 'eleqeyek bi vî rengî nedîtîye. Ji xeyrê çend şerhên biçûk, ji bo fehm û derkkirina hizr û ramanên Melâyê Cizîrî û têgihîştina helbestên wî tu xebatên ber bi çav nayên dîtin. Ji aliyekî ev zehmetîya tezê ye ji aliyê din resenbûna teza me derdixe pêş.

Sînorên Tezê

Teza me di edebiyata farsî û kurdî da bi dîwana Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî hate sînordayîn. Ji bo dîwanên herdû şa'iran nusxeyên ku li jor hatin nîşandayîn wekî dane hatin pejirandin. Ev jî sînordayîneke din e. Dîwanên herdû şa'iran ji aliyê naverokê gelek zengîn û rengîn e. Me ji naveroka herdû dîwanan tenê 'unsûrên dînî û tesewufî hilibijart û em li ser wan xebitîn.

BEŞA YEKEM

JİYAN Û ŞÊWAZA EDEBÎ YA HÂFİZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ

1.1 Jîyan û Şêwaza Edebî ya Hâfizê Şîrâzî

1.1.1 Jîyana Hâfizê Şîrâzî

Hâfizê Şîrâzî, yek ji şa'irên Îranê ye ku hem tesîr li edebiyata Îranê hem jî tesîr li edebiyata Islâmê û dinyayê kiriye. Hâfizê Şîrâzî di sedsala 13-14ê koçî da jîyaye. Tevî ku di nav gelê Îranî da û di dinyayê da bi xezelên xwe nav daye, derbarê jîyana wî da agahîyên berfireh nehatine bidestxistin. Agahîyên nivîskî yên herî kevn di destpêka dîwana wî ya ku ji teref dostê wî Muhemmed Gulendam va hatiye berhevkirin, derbas dibin.¹³ Agahîyên derbarê jîyana Hâfizê Şîrâzî da – ji bilî yên devkî ku wekî efsaneyan di nava gel da belav bûne – bingeha xwe ji pêşgotina Gulendam, ji berhema Nûreddîn 'Ebdurrehmân Câmî (w. 898/1492) *Nefehâtu'l-uns*¹⁴ û *Tezkiretu's-Şu'erâya* Dewletşâh b. Baxtişah Semerqendî (w. 900/1494-95 [?]) hatine wergirtin. Ev agahîyên hatine dayîn jî, ji bo têgihiştina jîyana Hâfizê Şîrâzî gelek hindik in.

Ji ber hindê lêkolînerên Hâfizê Şîrâzî bawerîya xwe zêde bi van agahîyên berhemên navborî neanîne. Lêkolîneran, ji bo jiyana Hâfizê Şîrâzî, bêtir berê xwe dane şî'rên wî û bûyerên dema wî yên sîyasî. Lewra Hâfizê Şîrâzî di hin şî'rên xwe da hin bûyer û navê kes û kesayetên dema xwe anîye ziman.

Derbarê evîn û evîndarîya wî da jî agahîyên bi bingeh nihatine bidestxistin. Di hin berhemên da hatiye gotin ku Hâfizê Şîrâzî dil daye keça melâyê taxa xwe ku navê wê *Şaxînebat* bûye. Destpêka helbestvanîya Hâfizê Şîrâzî bi sedema vê evînê bûye. Lê Melâ keça xwe dizewicîne û ev evîn her di dilê Hâfizê Şîrâzî da wekî birîneke bê derman dimîne.¹⁵ Lê ev agahî jî nehatîye peyîtandin.

Di derbarê fikr û ramanên Hâfizê Şîrâzî da jî di nava lêkolîneran da lihevkirinek nayê dîtin. Kesên ku wî bi tesewufê û sofitîyê girê didin û wî wekî pîrê tesewufê dinasînîn û dixin nav rêza mezinên tesewufê ne kêman in. Wekî numûne di *Nefehâtu'l-uns* a Mewlana Câmî û di *Tezkiretu's-Şu'erâ* ya Devletşâh¹⁶ û *Tezkîre-ê*

¹³ صفا، ذبیح الله، *تاریخ ادبیات در ایران*، انتشارات فردوس، چاپ هفتم، تهران ۱۳۶۹، جلد ۳، ص ۱۰۷۰.
¹⁴ جامی، نورالدین عبد الرحمن بن أحمد بن محمد، *نقحات الانس من حضرات القدس*، مقدمه، تصحیح و تعلیقات: محمود عابدی، سخن، تهران ۱۳۸۶، ص ۳۸۳.

¹⁵ قنادی، حامد حامد، *گام به گام با رند شیراز*، موسسه فرهنگی و اطلاع رسانی تبیان، قم ۱۳۹۵، ص ۳.
¹⁶ زریاب خوبی، عباس، *آئینه جام (در باب شرح اصطلاحات و تعبیرات اشعار حافظ)*، چاپ دوم، تهران ۱۳۷۴، ص ۱۷.

*Rîyâdu'l-Ârifîn*¹⁷ da bi vî rengî cih girtîye. Herwiha hin lêkolîner jî di vê bawerîyê da ne û heman hizrê ji bo Hâfizê Şîrâzî dipejirînin.¹⁸ Hin lêkolîner jî li dijî vê bawerîyê ne. Li gorî van kesan; Hâfizê Şîrâzî heqîqet bi mecazê neanîye ziman, ji vexwarina şerabê hezkirîye û tu têkilîyên wî bi tesewufê ra çênebûye, çendîn ku di şî'rên wî da hin mijarên tesewufê werin dîtin jî.¹⁹ Dîsa lêkolîner dibêjin; *Hâfizê Şîrâzî şexsîyetekî zana û şaraze ye, di zanista şî'rê da, di avakirina hunerên edebî û serwayê da ustad e lê ji layê naverokê va jî, şî'rên Hâfizê Şîrâzî ji bo civaka Misilmanan bi xeter e. Lewra tinazê xwe bi muqeddesatê Îslamê dike.* Bi vî rengî ew bi bêdînî tewanbar kirine. Li ser vê ramanê berhemên serbixwe hatine nivîsîn ku yek ji wan *Guftûgoyî Bâ Hâfiz* e.²⁰ Wisa xuya dibe ku lêkolînerên Hâfizê Şîrâzî, wî li gorî têgihîştina xwe, fikr û ramana xwe û li gorî bîr û bawerîya xwe şîrove kirine.

1.1.2 Navê wî

Hâfizê Şîrâzî, di nusxeya Îskendername, Heşt Bihişt, Xusrew û Şîrîn²¹ a Emîr Xusrewê Dihlewî (w.725/1325) da ku di sala 756/1355an îstinsax kirîye wekî nivîskarê istinsaxê navê xwe "محمد بن محمد بن محمد الملقب بشمس الحافظ الشيرازى" *Muhemmedê kurê Muhemmedê kurê Muhemmed bi leqeba Şemsê Hâfizê Şîrâzî* danîye.²² Bi vî rengî eşkera dibe ku navê wî *Muhemmed* e û leqeba wî ya eslî jî *Şemsuddîn* e. Lê mexlesa wî ya şî'rê ketîye pêşîya navê wî û hem li Îranê û hem li welatên din bi *Hâfizê Şîrâzî* tê naskirin. Herçend leqeba Hâfizê Şîrâzî ya eslî *Şemsuddîn* be jî gelek leqeb li wî hatine kirin. Di hin berheman da wekî *Nefehâtu'l-uns*²³ û di *Tezkiretu's-Şu'era* da ji bo Hâfizê Şîrâzî leqeba *Lisânu'l-xeyb* û *Tercumânu'l-esrâr* hatîye bikaranîn.²⁴ Ango Hâfizê Şîrâzî xeyb anîye ziman, terciman û dîyarkerê sir û razan e û bi xeybê ra têkildar e. Kesên ku ev bernav li Hâfizê Şîrâzî kirine bingeha xwe ji xezelên wî stendine. Hâfizê Şîrâzî bi xwe têkilîya

¹⁷ رضاقلی خان هدایت، محمد هادی، تذکره ریاض العارفین، بکوشش: سید رضی واحدی و سهراب زارع، پژوهشگاه علوم انسانی و مطالعات فرهنگی، تهران - ایران ۱۳۸۵، ص ۲۱۵.

¹⁸ افراسیاب پور، علی اکبر، عرفانی جمالی، انتشارات ترفند، تهران ۱۳۷۶، ص ۱۱۴.

¹⁹ Gölpınarlı, Abdülbaki, *Hâfizê Şîrâzî Divanı*, Milli Eğitim Bakanlığı Yayınları, İstanbul 1992, r. XIV-XV.

²⁰ برقعی، سید ابوالفضل، گفتگوی با حافظ: حافظ شکن، مترجم: سید جمال الدین هروی، موسسه فرهنگی و اطلاع رسانی تبیان، قم ۱۳۹۵.

²¹ Emîr Xusrewê Dihlewî (w. 725/1325) hem pexşan û hem menzûm gelek berhem nivîsandîye. Yek ji berhemên wî jî *Xemse* ye. Wekî ku tê zanîn *Xemse*; ew berhem e ku di wê berhemê da pênc menzûme yan mesnewîyên kesekî cih digirin. (شریفی، محمد، فرهنگ ادبیات فارسی، انتشارات معین، چاپ دوم، تهران ۱۳۸۷، ص ۵۹۶ (شریفی، جلد ۱، ص ۲۰۵-۲۰۶). Ev hersê berhem ji xemseya Emîr Xusrewê Dihlewî ne.

²² صفا، جلد ۳، ص ۱۰۶۵.

²³ جامی، ص ۳۸۳.

²⁴ زریاب خوبی، ص ۱۷.

xwe û xeybê di xezelên xwe da anîye ziman. Di malika xezelê da vê têkilîyê wiha dîyar dike:

مرا به رندی و عشق آن فضول عیب کند که اعتراض بر اسرار علم غیب کند

Ew zimandirêjên ku min bi rindî û evîndarîya min şermezar dikin, di rastîyê da rexneyan li razên 'ilmê xeybê dikin. (HŞ 312-1)

Leqebekî Hâfizê Şîrâzî jî Xwâce ye. Xwâce, hem bi wateya emîr û wezîr û hem bi wateya şa'ir û 'arif û kesên qenc tê bikaranîn.²⁵ Di dewra Hâfizê Şîrâzî da mezinên dîn bi Xwâce dihatin leqebkirin. Ji bo Hâfizê Şîrâzî; *Bulbulê Şîraz, Meczûbê sâlik, Xwâceê 'irfân, Şeker zebân*²⁶ jî hatiye gotin bi sedema zîrekî û hişmendîya wî, jê ra *Rindê Şîrâz*²⁷ jî hatiye gotin.

1.1.3 Mexlesa wî

Mexlesa wî di şî'rê da *Hâfiz* e. *Hâfiz*, bêjeyeke 'erebî ye. Wateya wê ya ferhengî; parêzker û ezberker e. Wekî têgih *Hâfiz*, ji bo wan kesan tê gotin ku ew Qur'âna Pîroz bi tevahî ji ber dîkin.²⁸ Herwiha *Hâfiz* bi wateya *mutrib* û *awazxwan* jî di ferhenga da cih girtîye²⁹. Mexlesa wî wekî li jor jî hate gotin ketîye pêşîya navê wî û bi mexlesa xwe navdar bûye û tê nasîn. Ji bo vê mexlesê du îhtîmal derdikevin pêş. Yek bi sedema ku Qur'âna Pîroz ji ber kirîye. Di çavkanîyan da derbas dibe ku Hâfizê Şîrâzî di heman demê da zanyarê xwendina Qur'âna Pîroz (Qurra) bûye.³⁰ Di şî'rên xwe da Hâfizê Şîrâzîtiya xwe ya Qur'âna Pîroz û zanebûna xwendina wê bi rêbazên zanista tecwîdê wiha tîne ziman.

عشقت رسد به فریاد ار خود به سان حافظ قرآن ز بر بخوانی در چارده روایت

Hetta eger wekî Hâfiz Qur'ânê bi çarde şeweyan ji ber bixwînî, dîsa jî tenê 'îşq tê hewara te. (HŞ 186-6)

Îhtîmala duyem jî bi sedema ku mûsîqîşinas û xezelxwan bûye. Li gorî hinek lêkolîneran Hâfizê Şîrâzî di 'ilmê mûsîqîyê da mahir bû û de heman demê da newazende bû.³¹ Tişteki asayî ye ew kesên ku bikaribin Qur'âna Pîroz li gorî zanista tecwîdê bixwînin û di heman demê da dengê wan jî xweş bin û qesîde û xezelan jî pir xweş bixwînin. Pêkan e ku herdu taybetî jî bi Hâfizê Şîrâzî ra hebin. Hâfizê Şîrâzî, taybetîya dengxweşîya xwe di malikeke xwe da wiha dîyar dike.

²⁵ معین، محمد، حافظ شیرین سخن، بنگاه بازرگانی پروین، تهران ۱۳۱۹، ص ۷۹.

²⁶ معین، حافظ شیرین سخن، ص ۸۰-۸۱.

²⁷ قنادی، ص ۳.

²⁸ دهخدا، علی اکبر، لغت‌نامه دهخدا، مؤسسه انتشارات و چاپ دانشگاه تهران ۱۳۷۷، ج ۶، ص ۸۵۲۱.

²⁹ خالقی، محمد رضا برزگر، شاخ نیات حافظ، زوار، چاپ پنجم، تهران ۱۳۸۹، ص ۱۰.

³⁰ طباطبایی، محمد محیط، چگونه حافظ را باید شناخت، (مجموعه مقالات و پژوهش درباره حافظ)، تهران ۱۳۶۷، ص ۳۸.

³¹ خالقی، ص ۱۰.

سخندانی و خوش خوانی نمی ورزند در شیراز بیا حافظ که تا خود را به ملکی دیگر اندازیم
Ey Hâfizê Şîrâzî, di Şîrazê da kes rêzdarîyê nade edîb, şa'ir û xweşawazan,

were em herin welatekî din. (HŞ 567-3)

1.1.4 Welatê wî

Derbarê eslê Hâfizê Şîrâzî da ku ji kîjan welatî ye, du nêrîn derdikevin pêşberî me. Li gorî hin lêkolîneran Hâfizê Şîrâzî bi eslê xwe ji Kûpaya Îsfehânê ye.³² Di nêrîneke din da jî di binyada xwe da ji Tûyserânê ye.³³ Ji şî'rên wî tê famkirin ku Hâfizê Şîrâzî li Şîrazê jîyaye û gelekî ji Şîrazê hez kirîye. Lewra di şî'rên wî da navên gelek deverên Şîrazê derbas dibin û pesnê Şîrazê tê kirin. Di xezeleke xwe da ji bo Şîrazê wiha dibêje: *Çi xweş e Şîraz û rewşa wê ya bêhempa, Xweda! tu biparêze ji wêranbûnîyê. Sed aferîn ji Ruknâbâd³⁴ ra û çavên xerab jê dûr be, ku temenê Xidir (bê dawî) dide ew ava şêrîn. Nesîmê ku di navbera Ce'ferâbâd û Mûsellâ³⁵ tê bêhn xweş û bi bihn e. Were Şîrazê û ji zîlamên 'ârîf xwedî kemal lutf û ciwanmerdîya ruhulqudus bixwaze.* (HŞ 440-1,2,3,4) Di gelek malikên şî'rên wî da pesnên deverên bajarê Şîrazê hatiye kirin, û bi zelalî mirov têdigihêje ku jîyana xwe li Şîrazê borandiye.

1.1.5 Dîroka Wiladeta wî

Hâfizê Şîrâzî di kîjan salê da hatiye dinê bi zelalî ne dîyar e. Di vî warî da di navbera lêkolîneran da û kesên ku ev mijar xistine berhemên xwe yekîtîyek nayê dîtin. Li jêr em ê nêrînen hin lêkolîneran destnîşan bikin. Li gorî Zerrînkûb di sala 720/1320î da welidîye. Li gorî Qenadî di sala 716/1316an da welidîye.³⁶ Di berhema bi navê *Meyxane* da sala ji dayikbûna Hâfizê Şîrâzî ê Şîrâzî 727/1327 hatiye nivîsandin ku li gorî vê berhemê Hâfizê Şîrâzî 65 sal jîyaye.³⁷ Nivîskarê berhema *Şaxî Nebatê Hâfizê Şîrâzî* ji bo çêbûna Hâfizê Şîrâzî salên 726-727/1324-1325 destnîşan dike.³⁸ Di *Tarîxê Edebîyatê Îran* da sala ji dayikbûna Hâfizê Şîrâzî 728/1324 hatiye nivîsandin.³⁹ Sefa, ne bi teqez, bi guman sala 727/1327an destnîşan dike û vê agahîyê

³² قنادی، ص ۳.

³³ معین، حافظ شیرین سخن، ص ۸۴.

³⁴ Navê çemê Şîrazê ye navdar e. (خالقی، ص ۷)

³⁵ Ce'ferabad, navê gund an taxek biçûk li kêleka Şîrazê ye. Mûsella jî navê seyrangehek Şîrazê ye ku vêga gora Hâfizê Şîrâzî jî li wê derê ye. (خالقی، ص ۲۷۹)

³⁶ قنادی، ص ۳.

³⁷ همایی، جلال الدین، مقام حافظ، کتاب فروشی فروغی، ایران ۱۳۴۳، ص ۲۰.

³⁸ خالقی، مقدمه یک.

³⁹ شفق، صادق رضازاده، تاریخ ادبیات ایران، وزارت فرهنگ، تهران ۱۳۴۱، ص ۳۲۸.

li ser dîroka wefata wî ava dike.⁴⁰ Ji van agahîyan tê famkirin ku Hâfizê Şîrâzî, beriya sala 700/1320î nehatîye dinê û di destpêka sedsala XIV da welidiye.

1.1.6 Malbata wî

Derbarê malbata wî da wekî hemû agahîyên jîyana wî agahîyên tekûz nihatine bidestxistin. Navê bapîrê Hâfizê Şîrâzî, *Şêx Xîyasuddîn* e.⁴¹ Hin kes dibêjin ku navê bavê wî *Bahaeddîn Muhemmed* e û ji Kûpaya Isfehanê hatiye Şîrazê.⁴² Hin jî dibêjin navê bavê wî *Kemaleddîn* e û ji Tûyseranê hatine Şîrazê.⁴³ Derbarê pîşeya bavê Hâfizê Şîrâzî da jî agahîyên cîyawaz hene. Hin kes dibêjin ku bavê wî 'âlîmek bû û hin kes jî dibêjin ku bavê wî bazirgan bûye.⁴⁴ Dayika wî ji Kazerûnê ye. Piştî bavê wî wefat dike tevî du birayên xwe sêwî dimîne.⁴⁵ Hemû çavkanî di vî warî da heman agahîyan didin.

Tiştên ku ji çavkanîyan tê famkirin du birayên Hâfizê Şîrâzî yên ji wî mezintir hebûne. Herdû birayên Hâfizê Şîrâzî piştî mirina bavê xwe terka mala xwe kirine. Dibe ku sedema terkkirina wan ji ber xizanîyê be. Herdû birayên Hâfizê Şîrâzî jî beriya wî çûne ser dilovanîya Xwedê. Lewra Hâfizê Şîrâzî li ser mirina herdû birayên xwe şî'r honaye û di qit'eyek maddeya tarîxê da sala wefata yekî ji wan daye û navê wî wek *Xwace Xelil 'Adil* nivîsandîye. (HŞ 752) Tenê di berhemekê da bê nav behsa xûşkeke wî hatiye kirin.⁴⁶ Eger em vê bipejirînîn sê kur û keçeke bavê Hâfizê Şîrâzî hebûye.

Di şî'rekê da derbarê dûrketina ji mehbûba xwe sala 764an/1363 destnîşan dike ku ev sal nêzî sala 38ê temenê wî ye. Hinek lêkolîner di wê bawerîyê da ne ku ev mehbûba wî heman keça melâyê mizgefta taxê ye û navê wê *Şaxînebat* e ku Hâfizê Şîrâzî bi wê ra zewicîbû.⁴⁷ Lê ev ne teqez e, wekî li jorê jî hate gotin dibe ku evînek bê encam be di navbera wî û *Şaxînebatê* da û paşê Hâfizê Şîrâzî ê Şîrâzî bi keseke din ra zewicîbe.

Hâfizê Şîrâzî zewicîye, lê hevîna wî *Şaxînebat* e yan keseke din e ne dîyar e. Hâfizê Şîrâzî ji hevîna xwe gelekî hez kirîye, li ber dilê wî gelekî şîrîn û nazenîn

⁴⁰ صفا، جلد ۳، ص ۱۰۶۶.

⁴¹ دهخدا، ج ۶، ص ۸۵۳۲.

⁴² صفا، جلد ۳، ص ۱۰۶۶؛ قنادی، ص ۳.

⁴³ معین، حافظ شیرین سخن، ص ۸۴.

⁴⁴ قنادی، ص ۳.

⁴⁵ معین، حافظ شیرین سخن، ص ۱۷۷.

⁴⁶ دهخدا، ج ۶، ص ۸۵۳۲.

⁴⁷ خالقی، مقدمه دو.

bûye loma derbarê wê da çend xezel honaye.⁴⁸ Ji vê zewacê du lawê Hâfizê Şîrâzî hatine dinê. Yek ji wan di temenkî biçûk da wefat kirîye.⁴⁹ Hâfizê Şîrâzî li ser wefata wî qit'eyek du malikî honandîye. (HŞ 736) Navê lawê wî yê din Ni'man e. Ni'man, dema ji bo bazirganîyê diçe Hindistanê di rê da wefat dike.⁵⁰ Hâfizê Şîrâzî li ser mirina wî xezelê nivîsandiye. (HŞ 130) Hevjîna Hâfizê Şîrâzî tevî zaroka xwe di ber wîladetê da rehmet dike. Hâfizê Şîrâzî li ser vê bûyerê xezelê honandîye. (HŞ 238)

1.1.7 Xwendina wî

Hâfizê Şîrâzî di medreseyên Şîrâzê da ji 'âlimên girîng dersên dînî û dersên wêjeyê wergirtîye. Pêşî di medreseya Şemsuddîn 'Ebdullah ê Şîrâzî (??) da dest bi xwendina xwe kirîye. Demekê li ba Seyîd Şerîf Curcânî (w. 816/1413) xwendina xwe domandîye. Di medreseya Qewâmuddîn 'Ebdullah (w. 772/1371) da xwendina xwe pêş birîye û di zanînê da gihiştîye asteke bilind.⁵¹ Hâfizê Şîrâzî di van medreseyan da bi taybet di zanista tefsîrê da ji *Keşşâfa Zemexşerî* (w.538/1144), di rêzimana 'erebî da ji *el- Mişbâha Muterrizî* (w. 610/213), di 'ilmê hikmetê da ji *Tavâli'u'l-enwâra Beydâwî* (685/1286), di mentiqê da ji *Lewâmi'u'l-esrâr şerhu Metâli'i'l-enwâra Qutbuddînê Razî* (w.766/1365), di wêjeyê da ji *Miftâhu'l-'ulûma Ebû Ye'qûb Sekkâkî* (w.626/1229) sûd wergirtîye û bêtir li ser van berheman lêkolîn kirîye⁵². Hâfizê Şîrâzî di van medreseyan hem fêrî zanistên Îslamî û hem fêrî wêjeyê bûye.

Celâleddîn Humâyî, li ser vê bawerîyê ye ku Hâfizê Şîrâzî zanayê 'ilmê tecwîdê ye, di heman demê da zanayê 'ilmê serf, nehew, îştîqaq, me'anî, beyan û bedî'ê ye jî. Lewra ji bo 'ilmê tecwîdê pêdivî bi zanebûna van zanistan heye.⁵³ Bi vî rengî agahîyên li jor yên derbarê xwendina Hâfizê Şîrâzî da dipeyitîne.

1.1.8 Pîşe û Aborîya wî

Di biçûkatîya xwe da, piştî ku bavê wî emrê Xweda dike û birayên wî jî terka malê dikin, ew û dayika xwe tenê dimînin. Ji bo bikaribin xwe xwedî bikin li ba

⁴⁸ Bختیاری، پژمان، عشق در اشعار خواجه، از مقالاتی درباره شعر و زندگی حافظ، به کوشش: منصور رستگار فسائی، کنگره جهانی سعدی و حافظ ۱۲-۸ اردیبهشت ۱۳۵۰، ص ۱۷۰-۱۷۱.

⁴⁹ خالقی، مقدمه دو.

⁵⁰ Bختیاری، ص ۱۷۱.

⁵¹ خالقی، مقدمه یک. ; قنادی، ص ۳. ; رهبر، خلیل خطیب، دیوان حافظ شیرازی، انتشارات صفی علیشاه، چاپ سی و هفتم، تهران ۱۳۸۳، مقدمه بیست و ششم.

⁵² خالقی، مقدمه یک.

⁵³ همایی، مقام حافظ، ص ۱۳.

nanpêjekî dest bi kar dike.⁵⁴ Ne dîyar e ev kar çiqas didome. Piştî ku Hâfizê Şîrâzî dest bi xwendinê dike, di çavkanîyan da derbas nabe ka Hâfizê Şîrâzî debara xwe bi çi şiklî dike.

Mebesta Hâfizê Şîrâzî ji fêrbûna 'ilmê ne ew e ku bike sedema bidestxistina aborîya xwe. Piştî fêrbûna van zanistan wekî dersbêjekî di medreseyan da wezîfe negirtîye.⁵⁵ Tenê ev heye, hatîye gotin ku Hâfizê Şîrâzî, medreseyek vekirîye û di medreseya xwe da dursa Qur'ânê daye.⁵⁶ Ji bo vê yekê vê malika Hâfizê Şîrâzî mînak didin, her çend ku derxistina agahîyek wisa ji vê malikê zehmet be jî.

حافظا در کنج فقر و خلوت شب های تار تا بود وردت دعا و درس قرآن غم مخور

Ey Hâfizê Şîrâzî, heta zemanê ku di şevên tarî da di quncika feqr û xelwetê, wirdên te du'a û dursa Qur'ânê be, xem mexwe. (HŞ 407-10)

Di vê medreseyê da nayê zanîn ku ji bilî dursa Qur'ânê dersên din jî hatine dayin an na.

Hâfizê Şîrâzî, ji bedêla dersdayînê karûbarê siltanan kiriye di dîwanên wan da. Bi şuxlên siltanan ra mijûl bûye û di dîwanê siltanan da peywir girtîye. Jîyanek di bin bask û sîya emîr, siltan û wezîran da bêtir li xweşîya wî hatîye.⁵⁷ Bi vî rengî aborîya Hâfizê Şîrâzî, bi destê siltan û wezîran hatîye dabîn kirin. Ev têkilîya bi kesayetên mezin ra, tesîrek muhîm li jîyana wî kirîye ku di dawîya temenê xwe da duçarî xizanîyê bûye.

1.1.9 Têkilîyên Wî bi Derdorê

Di dema Hâfizê Şîrâzî da, li Şîrazê gelek zanayên 'ilm û zanyarên wêjeyê hebûn ku pirê van şa'ir û edîban di koşkên siltanan da dihatin xwedîkirin. 'Âliman di rêveberîyên dewletê da peywir werdigirtin an di medreseyan da ders didan. Bi taybet Şah Şêx Ebû Îshâq (w 758/1357) ji kesên ku bi 'ilm, wêje û hunerê ra mijûl dibûn hez kirîye, wan xistîye bin baskê xwe û xelatên mezin daye wan. Ji ber hindê gelek şa'ir û zana xwe li Şîrazê digirtin û dihatin li wir bi cih û war dibûn.⁵⁸ Ev jî dibû sedem ku Şîraz bibe navenda kultur, zanist û hunerê di serdema Hâfizê Şîrâzî da.

⁵⁴ خالقی، مقدمه یک.

⁵⁵ صفا، جلد ۳، ص ۱۰۶۸.

⁵⁶ معین، حافظ شیرین سخن، ص ۱۷۷.

⁵⁷ صفا، جلد ۳، ص ۱۰۶۸.

⁵⁸ Çiftçi, Hasan, 'Ubeyd-i Zâkânî Toplumsal Görüşleri, Ahlak ve Felsefesi, Basılmamış Doktora Tezi, Atatürk Üniversitesi, Sosyal Bilimler Enstitüsü, Doğu Dilleri ve Edebiyatları Anabilim Dalı, Erzurum 1996, r 38-39.

Hin kesayetên ku Hâfizê Şîrâzî têkilî bi wan ra ava kirîye û di serdema wî da li Şîrazê jîyane ev in: Qazîyê Şîrazê Şêx Mecduddîn Îsma'îl b. Muhemmed b. Xwudâdâd (w. 765/1364), Qazî 'Eđududdîn 'Ebdurrehmân b. Ehmed Êcî (w. 765/1364), Melâyê Mizgeftê Şêx Behâeddîn (w. 782/1380), 'Ellâme Mîr Seyyîd Şerîf Curcânî, Qewâmuddîn, 'Ebdullah, Şêx Emînuddîn (w. 745/1344), Xwâce Seyyîd Kemaluddîn Ebu'l-wefâyê Şîrâzî (?/?), Şêx Zeynuddîn Tayibâdî (w. 791/1389) û Şah Nî'metullah Welî Mâhânî (w. 828/1425) ye. Bi taybet têkilîya ku bi Şêx Nî'metullahê Welî ra hatîye danîn di jîyana Hâfizê Şîrâzî da guherînên mezin û girîng çêkirîye.⁵⁹ Wekî li jor jî hate gotin di fêrbûna zanistên Îslamî da bandora wan keseyatan zêde li ser Hâfizê Şîrâzî çêbûye.

Ji şa'ir û edîban yên ku Hâfizê Şîrâzî bi wan ra têkilî danîye wiha dikare bê rêzkirin: Xwâcuyê Kirmânî (w. 763/1352), 'Ubeydê Zâkânî (w. 772/1371), 'Îmâd Feqîhê Kirmânî (w. 733/1333), Selmânê Sâwecî (709/1309-778/1376), Kemâleddîn Mes'ûdê Xucendî (w. 803/1401), Nîzâmuddîn Mehmûd Qârî-yê Şîrâzî (w. 866/1462), Nâsirê Bûxârâyî (w. 829/1426), 'Ismetê Bûxârâyî (w.840/1437) û Bû Îshâqê Şîrâzî (w. 840/1437).⁶⁰ Dema ku Xwâcuyê Kirmânî li Şîrazê maye Hâfizê Şîrâzî bi wî ra zêde hemdem bûye. Selmânê Sâwecî yek ji wan şa'iran e ku zêde bandor li şî'ra Hâfizê Şîrâzî kirîye.

Hâfizê Şîrâzî du caran ji Şîrazê derketîye. Carekê çûye Yezdê. Carekê jî xwestîye ku here kendava Xurmizê lê bi sedema ku derya bi tofan gerîyaye negihîştîye armanca xwe û vegeerîyaye Şîrazê.⁶¹ Ji vê tê famkirin ku Hâfizê Şîrâzî negerîyaye û jîyana xwe bi tevahî li Şîrazê borandîye.

1.1.10 Wefata wî

Derheqê dîroka wefata Hâfizê Şîrâzî da dîrokên cuda hatine destnîşankirin. Dîrokên derketine pêş ev in: (791/1389), (792/1390), (794/1392) û (781/1379).⁶² Di pêşgotina ku Gulendam nivîsîye, di wir da wefata dîroka Hâfizê Şîrâzî 791/1389 hatîye nivîsandin.⁶³ Qit'eya maddeya tarîxê ku li ser kêlikê gora Hâfizê Şîrâzî hatîye nivîsandin dîroka 791/1389an dide.⁶⁴ Tevî vê jî Zerrînkûp dîroka 792/1390î destnîşan

⁵⁹ Qnadî, ص. ۵; صفا، جلد ۳، ص ۱۰۶۸؛ دهخدا، ج ۶، ص ۸۵۳۴.

⁶⁰ Qnadî، ص. ۵؛ صفا، جلد ۳، ص ۱۰۶۸؛ دهخدا، ج ۶، ص ۸۵۳۴.

⁶¹ بهروزی، علی نقی، حافظ را بشناسید: شرح حال حافظ، کتاب فروش معرفت، شیراز ۱۳۵۵، ص ۴.

⁶² طباطبایی، ص ۲۸۵.

⁶³ طباطبایی، ص ۲۷۸.

⁶⁴ دهخدا، ج ۶، ص ۸۵۳۷.

dike.⁶⁵ Li gorî Bihrûzî, Hâfizê Şîrâzî di sala 791/1389an da li Şîrazê çûye ser dilovanîya Xwedê û li goristana *Musellâ* ku Hâfizê Şîrâzî çend caran navê wî di şî'rên xwe da derbas kirîye, hatîye veşartin.⁶⁶ Tiştên ji van agahîyan tê bidestxistin Hâfizê Şîrâzî di sala 791/1389an da hatiye dinyayê û wî di sala 792/1390î da wefat kiriye.

1.1.11 Berhemên wî

Şeş behemên Hâfizê Şîrâzî hene. Ji van berheman, tenê dîwana şî'rên wî gihiştîye roja me. Berhemên mayî şerhên hin berheman in⁶⁷.

- a- Dîwan
- b- Şerha li ser *Keşşâfê*⁶⁸
- c- Şerha li ser *Metâli'ê*⁶⁹
- d- Şerha li ser *Mîsbâhê*⁷⁰
- e- Şerha li ser *Miftâhê*⁷¹
- f- Şerha li ser *Telxîsê*⁷²

⁶⁵ زرین کوب، عبد الحسین، *از کوچۀ زندان، انتشارات سخن، چاپ نهم، تهران ۱۳۷۴، ص ۱۲.*

⁶⁶ بهروزی، ص ۶.

⁶⁷ نعمت اللہی، رضا نور، نکاتی درباره زندگی و شعر حافظ، *از مقالاتی درباره شعر و زندگی حافظ، به کوشش: منصور رستگار فسائی، کنگرہ جهانی سعدی و حافظ ۱۲-۸ اردیبهشت ۱۳۵۰، ص ۴۶۹.*

⁶⁸ Keşşaf, kurtasîya navê berhema Ebû'l-Qâsim Muhammed el-Harezmi ez-Zemexşerî (w. 538/144) ye. Berhem tefsira Qur'âna Pîroz e. Ji bo agahîyên berfireh bnr: (Özek, Ali, "el-Keşşâf", *DİA*, c, 25, r 329-330.)

⁶⁹ Kurtasîya navê *Lewâmi 'u'l-esrâr şerhi Metâli 'i'l-envâr* a Ebû 'Ebdillah b. Muhammed er-Râzî et-Tahtânî ye. Mijara berhemê hikmet e. (ص ۳۶۹-۳۶۷) (معین، حافظ شیرین سخن، ص ۳۶۹-۳۶۷)

⁷⁰ Bi zimanê 'erebî û farsî gelek berhem bi navê *Mîsbâhê* hatine nivîsandin. Hâfizê Şîrâzî, li ser kîjan berhemê şerh nivîsandîye ne dîyar e. (ص ۳۶۹-۳۶۷) (معین، حافظ شیرین سخن، ص ۳۶۹-۳۶۷) Bi sedema ku di çavkanîyan da derbas dibe Hâfizê Şîrâzî, di rêzimana 'erebî da ji el-Mîsbah a Muterrizî zêde sûd wergirtîye (شفق، ص ۳۲۹) pêkan e ku li ser vê berhemê şerh nûsî be.

⁷¹ Miftah, navê *Miftâhu'l-'Ulum* a Ebû Ye'qûb es-Sekkâkî (w. 626/1229) ye. Ev berhem ji sê beşan pêk tê. Di beşa yekem û duyem da rêzimana 'erebî û di beşa sêyem da rewanbêjî cih girtîye. Bi taybet li ser beşa sêyem gelek şerh û telxîs hatine nivîsandin. (Benli, Mehmet Sami, "Miftâhu'l-'ulûm", *DİA*, c, 30 r 20-21.)

⁷² Telxîs, navê *Telxîsu'l-Miftâh* ê ye ku Xetîb el-Qezwîni (w. 739/1338) li ser beşa sêyem a *Miftâhu'l-'Ulum* a Sekkâkî nivîsandîye. (Durmuş, İsmail, "Kazvîni Hatîb", *DİA*, c, 25 r 156-157.)

1.2 Şêwaza Edebî ya Hâfizê Şîrâzî

Her hunermendek di berhemên xwe da hunera xwe derdixe pêş. Ew nasnemeya ku hunermend bi hunera xwe li eserên xwe dixê bi Tirkî jê ra *Edebi Şahsiyet/Kişilik*, bi farsî *Şîwe* شیوه yan *Sebk* سبک, bi 'erebî *Uslûb* أسلوب, bi kurdî *Şêwaz* û bi zimanê Ewrûpayîyan *Style* hatîye gotin. Ji bo xebatên li ser Şêwazê bi farsî *Sebknasî* û bi kurdî *Şêwaznasî* hatîye gotin.

Ji bo metnek edebî ji layê şêwaza edebî, *sebknasîyê* ve bê nirxandin pêwistî bi şêweyek edebî heye. Yek ji wan şêweyan ev e ku di heman demê da hêsantirîn û kardartirîn şêwe ye, ku metnê ji aliyê ziman, hizir û edebî va dinirxîn e.⁷³ Bi nirxandina her sê astan cudahîya metnekê ji metneke dîtir derdikeve meydanê.

Hâfizê Şîrâzî, wekî gelek şa'iran berîya herkesî,⁷⁴ di şî'rên xwe da hin îşaretan dide ji bo şêwaza şî'rên xwe. Her çend bi zelalî mirov nikaribe bigihêje mebesta wî, lê bi şîrove û raveyan hin agahî tên bidestxistin. Wekî mînak; carekê şî'rên xwe bi *rindâne* dinasîne.

شعر رندانہ گفتنم هوس است همچو حافظ به رخم مدعیان
Wekî Hâfizê Şîrâzî, li dijî pejirandina dozdarên min hewese şî'rê rindâne bibêjim. (HŞ 114-7)

Şî'rên rindâne wekî taybetîyek şêwaza Hâfizê Şîrâzî dikare were pejirandin ku hinek lêkolîner jî ev yek anîne ziman.⁷⁵

Mewlana Câmî, di *Nefahatu'l-unsê* da wiha dinivîsîne; *Her çend ku ne dîyar e Hâfizê Şîrâzî ji pîrê terîqetekê terîqet wergirtiye û bi terîqetekê peywendî danîye; lê gotinên wî wusa bi meşreba terîqetan girêdayî ne ku kesek nikare vê înkâr bike. Yek ji pêşewayê silsileya Xwacegan (Neqşebendîyye) e, Xweda sîrrên wî bidêre. Câmî, gotina xwe wiha kuta dike: Tu dîwan ji dîwana Hâfizê Şîrâzî baştir nîne eger xwedîyê wê sofî jî be.*⁷⁶ Her çend bi gotina wî ku teqez ne dîyar e Hâfizê Şîrâzî sofî ye jî, Câmî, vê îşaret dike ku qabiliyetek berfireh ji layê 'îrfânî ve di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da heye ku ji mêj ve behs û fehsên li ser dîwana wî heta roja me didome.

⁷³ شمیسا، سیروس، کلیات سبک شناسی، چاپ دوم، انتشارات فردوس، تهران ۱۳۷۳، ص ۱۵۳-۱۵۶.

⁷⁴ Ji bo hinek şa'îrên îranî ku di şî'rên xwe da îşaret bi şêweya şî'rên xwe kirine bnr: (رضایی، محمد غلام، (سبکشناسی شعری فارسی از رودکی تا شاملو، نشری جامی، تهران ۱۳۸۱، ص مقدمات ۸

⁷⁵ Li jêr di mijara Helbestên Rindâne da ew ê li ser were sekinandin.

⁷⁶ جامی، نفحات الإنس من حضرات القدس، ص ۳۸۳.

1.2.1 Asta Ziman

Di binê vî sernavî da metnek ji layê ziman tê nirxandin. Asta Dengnasî (Fonoloji), Asta Ferhengî (Lexical) û Asta Hevoksazî (Syntax) di binê asta ziman da cih digirin.⁷⁷ Bi vî rengî asta zimanê metneke edebî tê tesbîtkirin.

Ji asta ziman ra asta mûsîqîyê jî tê gotin û di sê binbeşan da tê nirxandin. *Mûsîqîya Bîrûnî, Mûsîqîya Kenarî û Mûsîqîya Derûnî.*

1.2.1.1 Mûsîqîya Derva

Mebest ji mûsîqîya derva / bîrûnî kêşa helbestê ye ku binirxtirîn û girîngtirîn rengê mûsîqîyê tê da xuya dibe.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da kêşa 'erûzê hatîye bikaranîn. Hâfizê Şîrâzî, di şî'rên xwe da ji 23 behrên 'erûzê sûd wergirtîye ku di binê 10 behrên 'erûzê da dicivin. Behrên ku Hâfizê Şîrâzî bi kar anîne û hejmara şî'ran bi vî rengî derdikeve holê:⁷⁸

Tablo 1: Behrên 'Erûzê di Şî'rên Hâfizê Şîrâzî da

| Behren 'Erûzê di Şî'rên Hâfizê Şîrâzî da | | | |
|--|--------------------|----------------|---------------|
| | Behrên 'Erûzê | Hejmara Şî'ran | Rêje % |
| 1 | Remel / رمل | 180 | 35,93 |
| 2 | Muctes / مجتث | 124 | 24,75 |
| 3 | Muzârî' / مضارع | 94 | 18,76 |
| 4 | Hezec / هزج | 78 | 15,57 |
| 5 | Xefîf / خفيف | 8 | 1,60 |
| 6 | Recez / رجز | 7 | 1,40 |
| 7 | Muteqârib / متقارب | 5 | 1,00 |
| 8 | Munserih / منسرح | 3 | 0,60 |
| 9 | Ser'i / سريع | 1 | 0,20 |
| 10 | Muqtedib / مقتضب | 1 | 0,20 |
| Giştî | | 501 | 100,00 |

Di xezelên Hâfizê Şîrâzî da kêşên sâlim kê m in. Di behra Hezêcê da 20 helbest, di kêşa Recezê da du helbest û di behra Muteqarib da helbestek bi kêşên sâlim hatine honandin. Yê mayî hemî kêşên nesâlim in. Di navbera 23 behrên ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hatine bikaranîn em bi van sê behran bêtir rû be rû dibin:

⁷⁷ شمپسا، کلیات سبک شناسی، ص ۱۵۳.

⁷⁸ Di vê amarê da ji şî'rên Hâfizê Şîrâzî tenê kêşa xezel, qesîde û mesnewîyan hatîye destnîşankirin.

- a- Remelâ Musemmena Mexbûna Mehzûf (Fe'ilâtun/ Fe'ilâtun/ Fe'ilâtun/ Fe'ilun)
- b- Muctessa Musemmena Mehzûf (Mefâ'ilun/ Fe'ilâtun/ Mefâ'ilun/ Fe'ilun)
- c- Mudari'a musemmena exreba mekfûfa mehzûf (Mef'ûlu/ Fâ'ilatu/ Mefâ'ilu/ Fâ'ilun)⁷⁹

Li gorî van agahîyên jor kêşên helbestên Hâfîzê Şîrâzî bi kêşên navînî û sivik⁸⁰ û behrên cûbarî⁸¹ hatine honandin.

1.2.1.2 Mûsîqîya Kenarî

Mûsîqîya کنارî mûsîqîya dawîya helbestê ye. Di vê mûsîqîyê da du faktor cih digirin ku yek jê serwa û ya din jî paşserwa ye.

a- Serwa

Di şî'rên Hâfîzê Şîrâzî da li gorî hejmara herfan hemû cûreyên serwayê tîn dîtîn. Serwaya nîvco ku ji yek herfê pêk tê wekî herfa *r* di xezela 116an da (HŞ 212), herfa *m* di xezela 119an da. (HŞ 212) Serwaya tam ku di gelek şî'ran da tê dîtîn wekî di xezela 276an da herfên *ar*. (HŞ 434) Serwaya dewlemend ku bi sê herfan yan zêdetir ava dibe û bi navê *i'nat* اعنات jî tê nasîn wekî herfên *amet* di xezela 21ê (HŞ 86) û herfên *aret* di xezela 131ê da. (HŞ 234)

Serwaya hundirîn ku bi farsî jê ra serwaya *mîyanî* میانی yan *daxilî* داخلی hatîye gotin, di seranserê xezelê da nayê dîtîn di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da. Di xezela 191ê da tenê di malika meqte'ê da ev serwa tê dîtîn:

با چشم پرنیرنگ او حافظ مکن آهنگ او کان طره شب رنگ او بسیار طراری کند
Ey Hâfîzê Şîrâzî, bi hebûna çavê hileger qesda dîtina yarê neke, zîra biskên wekî şevê reş gelek dila talan dike. (HŞ 317-9)

Herwiha di hin xezelan da jî bi perakendeyî ev cûre serwa tê dîtîn ku xezela 5an (HŞ 63) wekî nimûne dikare were dayin.

⁷⁹ فرشیپورد، خسرو، نقش آفرینی های حافظ : تحلیل زیبا شناسی و زبان شناختی اشعار حافظ، صفی‌علیشاه، تهران ۱۳۷۵، ص ۸۲.

⁸⁰ Li gorî senifandinek behrên 'erûzê ku li ser hejmara heceyên kurt û dirêj ava bûye kêşên navînî û sivik ew kêş in ku hejmara heceyan ne hindik in û ne pir in, lê hejmara heceyên kurt jî yên dirêj zêdetir in. Ji bo agahîyên berfierh bnr: (انتشارات)، (از آغاز تا امروز)، (فردوس، تهران ۱۳۸۰، ص ۲۳۰-۲۳۶).

⁸¹ Li gorî senifandinek behrên 'erûzê ku li ser cîyawazî, tevger û çalakîyên behrên 'erûzê hatîye avakirin behrên cûbarî ew behr in ku pêngavên wan dubare nabin. Wekî behra "muzâri'a musemmena exreba mekfûfa mehzûf (مفعول مفاعیل مفاعیل فعولن)". Ji bo agahîyên berfierh bnr: (کدکنی، محمد رضا شفیع، (موسیقی شعر، چاپ سیزدهم، آگاه، تهران ۱۳۹۱، ص ۳۹۳-۳۹۵).

b- Paşserwa

Paşserwa, wekî taybetîyek şî'rên Hâfizê Şîrâzî dikare were hesabandin. Lewra ji serwayan bêtir paşserwa di şî'rên wî da cih girtine. Di xezelên Hâfizê Şîrâzî da 328 xezel bi paşserwayê hatine honandin. Di qesîdeyan da tenê yek qesîde bi paşserwa ye. Di 42 çarînan da 33 çarîn û di 34 qit'eyan da 11 qit'e bi paşserwa ne ku di tevahîya şî'rên Hâfizê Şîrâzî da di 373 şî'ran da paşserwa cîbicî bûne. Pêwist e bê gotin di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da paşserwayên ji nîvmalikan pêk hatine nayê dîtin.

1.2.1.3 Mûsîqîya Hundur

Girîngtirîn 'unsûrên mûsîqîya hundur / derûnî cînas, tekrar û wekhevîya deng an kîteyan e ku bi farsî; *wacarayî* واج آرایى û bi hin zimanê ewrûpî –li gorî varyantên zimanan telafûz diguhere- *aliterasyon* jê ra tê gotin.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji bo mûsîqîya derûnî cînas û cûreyên cînasê ku hatine bikaranîn ev mînak dikarin werin dayin:

از آن دمی که ز چشم برفت رود عزیز کنار دامن من همچو رود جیحون است
Çi zemanê ku lawê min ji ber çavên min dûr bû, ez ew qeder girîyam ji kêleka kirasê min çemê Ceyhûnê herikî. (HŞ 130-7)

Bêjeya *rûd* رود di misraya yekem da bi wateya zarok û di misraya duwem da bi wateya çem bi hevra cînasa tam ava kirine. Di xezela 182yan da (HŞ 304) di navbera bêjeyên *En'am* انعام û *În'amî* انعامی da cînasa naqis pêk hatîye. Di xezela 30yî da (HŞ 98) di navbera bêjeyên *çare* چاره û *çar* چار da cînasa zayîd derketîye holê. Di xezela 94an da (HŞ 185) di navbera bêjeyên *welî* ولی û *welayet* ولايت da hunera cînasa îştîqaqê pêk hatîye. Gelek mînakên vê hunerê dikare were dayîn ku Hâfizê Şîrâzî bi vê hunerê di şî'rên xwe da mûsîqîya derûnî derxistîye holê.

Tekrar, wekî hunerek edebî ji bo mûsîqîya derûnîyê tê bikaranîn ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da mînakên wan tînin dîtin. Di xezela 283î yan da;

دل و دینم دل و دینم ببرده ست بر و دوشش بر و دوشش بر و دوش
Dil û dîne min, dil û dîne min birî ye, himbêz û kêleka wê, hembêz û kêleka wê, himbêz û kêlek. (HŞ 444-6)

Dubarekirina *dil û dînem* دل و دینم û *berû duşş* بر و دوشش û di heman xezelê da bêjeyên *leb nûşş* لب نوشش mînakên tekarê ne ji bo mûsîqîya derûnî. Herwiha di xezela 204an da (HŞ 337) di serê her malikê da dubarekirina bêjeyên *yad bad an ki* یاد باد آن که cureyek tekarê ye.

Tekrara bêjeyan di pirs û bersîvan da ku di serê misraya yekem da bi şikleki û di serê misraya duyem da bi şikleki din dubare dibin mûsîqîya derûnîya şî'rê zêde dike. Di xezela 231ê da;

گفتم ز مهرورزان رسم وفا بیاموز گفتا ز خوبویان این کار کمتر آید

Min got: ji 'aşiqan şîweya wefadarîyê hîn bibe, Got: ji xweşikrûyan (me'şûqan) ev hêvî nayê kirin. (HŞ 373-2)

di serê misraya yekem bêjeya *goftem* گفتم û di serê misraya duwem bêjeya *gofta* گفتا di seranserê hemû helbestê asta mûsîqîyê bilind dike.

Hunera wacarayî/alîterason ji erkek mezin digire ser xwe di mûsîqîya derûnî da ku Hâfizê Şîrâzî ji vê hunerê ji sûd wergirtîye.

که آگه است که کاووس و کی کجا رفتند

Kî dizane ku Kawus û padîşahên din bi kuda çûne... (HŞ 193-5)

Di misraya jorîn da pênc car bikaranîna herfa *k* ک yê mînak e ji bo vê hunerê.

1.2.2 Asta Ferhengî

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da du zimanên sereke hatine bikaranîn. Zimanê eslî farsî ye û yê duyemîn 'erebî ye. Duzimanîya Hâfizê Şîrâzî ne tenê di bikaranîna bêjeyên 'erebî da xuya dike. Hâfizê Şîrâzî di heman demê da mulemme'ên du zimanî (farsî-'erebî) ji nûsîye û bi vî rengî dibe şa'irekî mulemme'nûs.

Hâfizê Şîrâzî hem mulemme'ên muretteb/tekûz û hem mulemme'ên muşewweş/netekûz⁸² nûsîye. Ji mulemme'ên Hâfizê Şîrâzî xezela 426an (HŞ 231-232) mulemme'ek tekûz e yê mayî ne tekûz in. Di vê mulemme'ê da her nîv malika pêşî farsî ye û nîv malika duyem 'erebî ye. Di mulemme'ên netekûz da carînan misraya yekem, carînan misraya duwem û carînan ji herdû misrayên pêşî bi 'erebî hatine nivîsîn.⁸³ Ji bo mulemme'ên ne tekûz ku tu pergalek ji bo wan nayê nîşandayîn xezela 460î (HŞ 678-679) û xezela 461ê (HŞ 680-681) mînakên baş in.

Edebîyatzanên Faris, ji bo şî'rên sê zimanî ku yek ji van zimanan zimanê mehelli ye *Musellesat* gotine û pêşengê wê ji Se'dî nîşan dane.⁸⁴ Di heman demê da bikaranîna lehçeyên mehelli ji mulemme' hesabandine.⁸⁵ Ji ber vê yekê, lêkolîner

⁸² Ew şî'rên du zimanî yên ku di wan da tekûzîyek tunebe, rêbazek neyê nîşandayîn û hinek malik an misrayên wan bi zimanekî din bin, şî'rên wisa mulemme' hatine hesabandin. (دانشپژوه، منوچهر، تفنن ادبی). Em ji mulemme'ên bi vî rengî ra "mulemme'ên netekûz" dibêjin.

⁸³ گرمارودی، سیدعلی موسوی، عربی‌های دیوان حافظ؛ ترکیب‌ها، جمله‌ها، عبارات، مصراع‌ها و بیت‌های عربی در اشعار حافظ، طهوری، تهران ۱۳۹۶، ص ۷.

⁸⁴ دانشپژوه، ص ۲۱۲-۲۱۳.

⁸⁵ شمیسا، سیر غزل در شعر فارسی، ص ۲۲۰.

Hâfizê Şîrâzî bi sê zimanî dinasînin ku zimanê sêyem dîyalekta Şîrazê ye.⁸⁶ Lehçeya Şîrazê tenê di xezelê da ye û di vê xezelê da jî tenê di di yek misra û du malikan da ye.⁸⁷ Xezela Hâfizê Şîrâzî ku tê da lehçeya Şîrazê hatîye bikaranîn xezela 437an e (HŞ 648) ku di heman demê da 'erebî jî tê da heye û bi vî rengî dibe *Musellesât*.

Divê were gotin ku Hâfizê Şîrâzî hindik be jî çend bêjeyên Tirkî jî bi kar anîye. *Perçem* پرچم (HŞ 750) *xan*⁸⁸ خان (HŞ 695) *yexma* یغما (HŞ 60) wekî mînak dikarin werin dayîn.

1.2.2.1 Asta Hevoksazîyê

Bi piranî hevokên Hâfizê Şîrâzî di malikê da temam dibin. Kêm caran hevok di misrayê da temam dibin. Hevokên Hâfizê Şîrâzî ji nezma pexşanê⁸⁹ dûr e. Ango hêmanên hevokê li gorî distûrên rêziman cih nagirin. Wekî mînak di vê misrayê da: (پیش رفتار تو پا برنگرفت از خجلت). (HŞ 86-6) Hin taybetîyên farsîya kevn di şî'ran da tên dîtîn. Daçek *ra* ر di gelek cihan da bi kar neanîye. Ji bedêla daçeka *der* در, *be* به *ne* نمی دیدم (به بزمگاه چمن دوش مست بگذشتم) (HŞ 70-5) bi kar anîye. Ji dêleva ku bibêje; (من از ورع می و مطرب ندیدمی زین پیش) (HŞ 79-8) *gotîye*; wekî di vê misrayê da:

1.2.3 Asta Hizrî

Bi nêrînek giştî di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da 'îrfân û 'îşq heye. Ango şî'rên wî '*ârifâne* û '*âşiqâne* ne. Tevî herdû mijarên sereke *rindî* jî wekî mijara sêyemîn cih girtîye. Bi vî şiklî şî'rên Hâfizê Şîrâzî bi sê mijarên sereke '*ârifâne*, '*âşiqâne* û *rindâne* hatine senifandin.⁹⁰ Her çend ku ev her sê mijar wekî mijarên sereke werin pejirandin jî di nava malikên Hâfizê Şîrâzî da bi perakendayî hinek felsefe jî tê dîtîn. Felsefeya Hâfizê Şîrâzî ne felsefeyek kûr û berfireh e. Bêtir wekî îşaret pê dayîne ye.

1.2.3.1 Helbestên 'Ârifâne

Bêyî ku em bikevin nava nîqaşên derbarê Hâfizê Şîrâzî ku sofî ye yan ne sofî ye, 'ârif e yan ne 'ârif e, ev rastîyek e ku di dîwana wî da helbestên 'ârifâne tên dîtîn û di van helbestan da mijarên 'îrfânî cih girtine. Hebûna istilâhên îstî'arî û neîstî'arî yê tesewufî û bêjeyên 'îrfânî û bi van istilâh û bêjeyan avakirina mezmûnên 'îrfânî

⁸⁶ فسانى، منصور رستگار، حافظ و پيدا و پنهان زندگى، سخن، تهران ۱۳۸۵، ص ۲۰۶.

⁸⁷ گرمارودى، ص ۷.

⁸⁸ Bi wateya reîs, emîr, mezin. (دهخدا، ج ۶، ص ۹۴۰۵).

⁸⁹ Mebest jî Nezma Pexşan; ku di misrayê da hêmanên hevokê li gorî qaîdeyên rêziman werin rêzkirin.

⁹⁰ استعمالى، محمد، درس حافظ (نقد و شرح غزلیهای خواجه شمس‌الدین محمد حافظ)، سخن، چاپ دوم، تهران ۱۳۸۳، برگ ۱، ص ۵۶.

rengê helbestên 'irfânî dibexşîne şîrên Hâfizê Şîrâzî. *Derwîş* برویش, *Cezbe* جذبہ, *Ene'l-Heq* انالحق, *Sâlik* سالک, *Xirqe* خرقہ, *Xaneqâh* خانقاه, *Zâhid* زاهد, *Zuhd* زهد, *Tecellî* تنجلی tenê mînak in ji bo istilâhên 'irfânî.

Herwiha di hin malikan da rasterast em rastî nêrînên Hâfizê Şîrâzî derbarê tesewuf û 'irfânê dibin. Wekî dibêje; *di meqamatê terîqetê da min li ku temaşa kir...* (HŞ 347-3), *Kesên di seyra terîqê da ne 'âşiq be di nîfaqê da ye* (HŞ 347-4), *her tiştê di terîqetê da were pêş sâlikî jê ra xêr e.* (HŞ 154-2) di heman demê da gelek malikên din bi rengê tesewufî dikare were şîrovekirin. Û ev bûye sebeb ku hatîye gotin beşek ji helbestên Hâfizê Şîrâzî helbestên 'irfânî ne.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bilindtirîn xezelên 'irfânî di çar xezelên wî da xuya dibe. Di wan da felsefeya wî, rewşa wî ya 'irfânî û tecrûbeyên wî yê rûhî eşkere dibe. Ji van xezelan ra *Xezelîyatên 'Erşê Hâfiz* hatine gotin.⁹¹ Misrayên yekem yên van xezelan ev in: دوش پرتو حسنت ز تجلی دم (HŞ 305-1) دوش وقت سحر از غصه نجاتم دادن (HŞ 262-1) دوش دیدم که ملائک در میخانه Û (HŞ 248-1) سالها دل طلب جام جم از ما می کرد (HŞ 262-1) زدند (HŞ 307-1) Hejmara malikên van xezelan bi tevahî sî û du (32) ne. Divê were gotin ku ev çar xezel yekser mijarên felsefî rave nakin. Belkî di van xezelan da bêtir mijarên felsefî hatîye ziman.

1.2.3.2 Helbestên 'Âşiqâne

Seranserê dîwana Hâfizê Şîrâzî behsa 'işqê dike. Ji 'işqa zemînî û cismanî bigire heta rûhanî û 'işqa asîmanî ('işqa 'irfânî). Di hinek şîrên wî da bi tevahî bêhna 'işqa zemînî û cismanî jê tê ku bingeha wê kelecana cinsî ye. Di van helbestan da 'işqa zemînî xuya dike ku xîtaba wî bi me'şûqa însanî ye. Helbesta ku bi metle'a " اگر (HŞ 62) صبا به لطف بگو آن غزال رعنا را" Û (HŞ 60) " آن ترک شیرازی به دست آرد دل ما را dest pê dikin wekî mînak dikare were dayîn.⁹² Ji hinek malikan jî bêhna 'işqa ruhanî tê ku di van malikan da mijar ne xweşikahîya bedenê, xweşikahîya ruh, rewan û letafeta exlaqî ye. Xezela ku bi metle'a " رواق منظر چشم من آشیانه ی توست" (HŞ 103) Û " (HŞ 282) mînakên vê 'işqê ne.⁹³ ستاره ای بدرخشید و ماه مجلس شد

⁹¹ خرّمشاهی، بهاءالدین، حافظ نامه (شرح الفاظ، اعلام، مفاهیم کلیدی، و ابیات دشوار حافظ، انتشارات صدا و سما، تهران ۱۳۶۶، ج ۱، ص ۶۷۰.

⁹² یغمایی، افسانه، جان دارو؛ سیری در اندیشه ی سعدی و حافظ، سروا، تهران ۱۳۸۲، ص ۴۰۰؛ خرّمشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۱۱۶۸.

⁹³ یغمایی، ص ۴۰۱؛ خرّمشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۱۱۶۸.

Ji bilî van xezelên 'âşiqâne ku 'işq bi eşkerayî di wan da dixuyê, gelek xezelên Hâfîzê Şîrâzî bi tevahî nîşanê 'işqa 'irfânî ne. Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da 'işqa 'irfânî serçeşmeya xwe ji xweşikahîya Xweda digire, qedîm e, hemû 'âlem li ser vê 'işqê hatîye afirandî û hemû afêrîde gedayê vê 'işqê ne.⁹⁴ Bi gelemperî di şî'rên wî da 'işqa mecazî û 'işqa heqîqî bi asanî ji hev nayê veqetandî. Lewra bi bikaranîna istilahan mey û şerabê ku hem wateya heqîqî û hem wateya tesewufî di xwe da digirin bêhna herdû 'işqan jî ji wan tê.

1.2.3.3 Helbestên Rindâne

Helbestên Hâfîzê Şîrâzî yên ku ne helbestên 'âşiqâne û ne helbestên 'arifâne ne bi helbestên rindâne hatine nasandin. Di van helbestan da ku teşeya wan xezel in rexneya civakî tê dîtîn. Di van xezelan da li hember rîyakarên civakê têkoşînek heye. Di vê têkoşînê da kesayetên Hâfîzê Şîrâzî yên 'âşiq û rind, ku ew xwe yek ji wan dihesibîne, li hember sofî, zâhid, şêx û muftîyan têkoşînê dikin.⁹⁵ Ev têkoşîn di seranserê dîwanê da li ber çavan e.

Di van xezelên rindâne da vexwarina meyê, meyxane, pîrê meyfiros, dêra muxan, xerâbât,⁹⁶ cih bigire jî têkoşîna li hember şêx, sofî û zâhidan bêtir li ber çavan e. Ya rastî ew bi xwe jî şî'rên xwe bi vî rengî dinasîne û xwe jî wek yekî rind dihesibîne.

1.2.4 Asta Edebî

Ji layê asta edebî va şêwaza Hâfîzê Şîrâzî di binê van sernavan da dikare were nirxandin.

1.2.4.1 'İşq û 'İrfân bi hev ra di Xezelan da

Di serdema Hâfîzê Şîrâzî da qalibê şî'rê yê sereke xezel e. Xezel, beriya ku ji qesîdeyê cuda bibe, beşa *texezzul* yan *teşbîb* a qesîdeyê teşkil dikir ku bêtir di wesfê siriştê û pir hindik derbarê pesnê hezkirîyê da bû. Piştî hêdî hêdî ji qesîdeyê veqetîya û mijar bêtir bû 'işq.⁹⁷ 'irfân/tesewuf, bi Senâyê Xeznewî (w. 525/1131?) di xezelan da cihê xwe girt⁹⁸ û ji layekî xezelên 'âşiqâne û ji layekî jî xezelên 'arifâne ji teref şa'iran va hatin honandin. Bi vî rengî di xezelan da mijarên sereke bû 'işq an 'irfân/tesewuf.

⁹⁴ یغمایی، ص ۴۰۲؛ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۱۱۷۳.

⁹⁵ پورنامداریان، تقی، گمشده لب دریا، سخن، تهران ۱۳۸۲، ص ۱۵.

⁹⁶ اقبال، عباس، سخنی درباره حافظ، کتابخانه تخصصی ادبیات، اسپهان، ۱۳۲۱، ص ۸۱ و ۷۵؛ استعلامی، ص ۵۶.

⁹⁷ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، مقدمه، ص ۳۴.

⁹⁸ شمیسا، سیر غزل در شعر فارسی، ص ۷۵.

Berîya Hâfizê Şîrâzî, Se'dîyê Şîrâzî (1184/1268-1272 nûnerê xezelên 'âşiqâne ye. Di warê xezelên 'irfânî da Mewlânâ Celâleddînê Belxî li pêş e. Şa'irên piştî Se'dî û Mewlana, bi pêşengîya Xwâcuyê Kirmânî 'iştîq û 'irfân di yek xezelê da civandin ku ji van şa'iran ra *Gruba Telfîq* گروه تلفیق hatîye gotin.⁹⁹ Hâfizê Şîrâzî jî şa'irê vê grûbê hatîye hesibandin ku 'iştîq û 'irfân bi hevra di xezelên xwe da civandîye.

1.2.4.2 Serxwebûna Malikan yan Tunebûna Hevgirtîbûnîyê di Xezelan da

Ji mêj va li ser şewaza Hâfizê Şîrâzî hatîye sekinandin û şî'rên wî hatine nirxandin. Herî pêşî kesê derbarê xezelên Hâfizê Şîrâzî da ramanên xwe anîye ziman Şah Şuca' e. (w. 786/1384) Şah Şuca', bi rexnegêrî ji Hâfizê Şîrâzî ra dibêje: *Ji xezelên te yek tenê jî ji malika metle'ê heta malika meqte'ê ne li ser yek şîweyê ye. Belkî, di her xezeleke te da, sê çar malik li ser şerabê ye, du sê malik derbarê tesewufê da ye, yek du malik jî li ser pesnê mehbûbê ye û pirrengî di yek xezelê da dijî belaxetê ye.*¹⁰⁰ Rexneya Şah Şuca' ya *pirrengî di yek xezelê da dijî belaxetê ye* îşaretê ji bo avakirina xezelên beriya Hâfizê Şîrâzî dike ku di wan da yek rengî hebû û ji layê mijarê hevgirtî bûn. Li aliyekî din ev rexne peyîtandîneke ji bo şewaza Hâfizê Şîrâzî ku di şî'rên wî da çend mijar bi hev ra cih girtine.

Piştî şah Şuca', berhevkare dîwana Hâfizê Şîrâzî, Muhemmed Gulendam, di pêşgotina xwe da bi hinek taybetîyên şewaza Hâfizê Şîrâzî wekî; *çend wateyî bûn, an tewelîya wateyî* îşaret kirîye.¹⁰¹ Rastî ev e ku xezelên Hâfizê Şîrâzî di zâhir da perîşan in; wateyên malikên xezelan hevûdû nagirin, li pey hev bi heman mijarê berdewam nakin. Di vê mijarê da, di navbera lêkolîneran da behs û fehs her berdewam e. Li gorî hin lêkolîneran; di piranîya xezelên Hâfizê Şîrâzî da, peywendîya wateyên malikan bi şiklekî ku bikaribe xezelê ji layê mezmûnan bi hev girêbide û yekîtiya mijarê ava bike nayê ditîn.

Di xezelên Hâfizê Şîrâzî da her malik serbixwe ye. Di navbera malikan da însîcamek, hevgirtîbûnîyek nayê ditîn. Her malikeke xezelê yek mezmûnê rave dike û têkilîyek di navbera malika beriya wê û piştî wê nayê ditîn. Bi vî rengî di xezelekê da dudu, sisê yan çar mijar bi hev ra cih digirin. Di van xezelan da her malik ji layê mijarê va serbixwe û azad e. Bi vî rengî xezel ji koma hin malikên mijarcuda ava

⁹⁹ Şa'irên *Gruba Telfîqê* ev in: Ewhedê Merâxe'î, Xwâcuyê Kirmânî, 'Îmâd Feqîhê Kirmânî, Selmânê Sâwecî, Nâsir Buxârâyî û Hâfizê Şîrâzî. (ص ۱۷۹). (شمیسا، کلیات سبک شناسی، ص ۱۷۹).

¹⁰⁰ فسائی، حافظ و پیدا و پنهان زندگی، ص ۶۸.

¹⁰¹ گلاندان، محمد، مقدمه جامع دیوان حافظ، در دیوان خواجه حافظ شیرازی، تصحیح: ابوالقاسم انجوی شیرازی، انتشارات جاویدان علمی، تهران ۱۳۴۵، ص ۱۲۳-۱۲۹.

dibe.¹⁰² Her malikeke xezelê dikare bibe ferd an du malikên xezelê dikarin bibin çarîn an qit'e. Ev taybetî wekî *înqîlaba Hâfizê Şîrâzî di xezelan da* hatiye nasandin.¹⁰³ Arthur J. Arberry, di pêşgotina berhema xwe ya bi navê *Fifty Poems Of Hâfizê Şîrâzî* (Wergera Pêncî xezelên Hâfizê Şîrâzî) da tunebûna însîcama zâhirî di xezelan da uslûba Hâfizê Şîrâzî dizane û di vê bawerîyê daye ku wî xwe bi xwe ev uslûb ava kirîye. Piştîre vê uslûbê wekî înqîlabekê di xezelan da dihesibîne.¹⁰⁴ Xurremşahî, tunebûna îrtîbatê, ya nebûna însîcamê ku di Quranê da tê dîtî menşea vê taybetîya şewaza Hâfizê Şîrâzî dizane.¹⁰⁵ Bi gotinek din avakirina xezelên Hâfizê Şîrâzî bandorgirtina ji sûreyên Quranê dizane.

1.2.4.3 Îhâm

Îhâm, ew huner e ku nivîskar an şa'ir di nezm an di pexşanê da bêjeyekê bi kar bîne ku ji wê bêjeyê ra du wate hebin; wateyê nêzîk û wateyê dûr. Çi dema xwendekar di hevok/malikê da bêjeyê bixwîne bi têkilîya bêjeyên din wateya nêzîk were hişê wî lê mebest wateya dûr be.¹⁰⁶ Di berhemên belaxetê da *Îhâm*, *Tewrîye* û *Texeyyul* wekî yek hunerê hatiye nasandin.¹⁰⁷ Şa'ir, bi hunera *îhâmê*, bi bêjeyên hindik çend wateyan radigihîne muxatabên xwe. Bi vî şiklî malik çend wateyî dibe. Ev bi qabilîyeta şa'irî/nivîskarî va girêdayî ye. Yek ji amûrên ku Hâfizê Şîrâzî bi wê firehî daye peyvên xwe hunera *îhâmê* ye. *Îhâm* yek ji taybetîyên bingehîn yên şewaza Hâfizê Şîrâzî hatiye hesibandin.

Di serî da Minûçeher Murtedewî û gelek lêkolîner hunera *îhâmê* girîngtrîn û mezintirîn taybetîya eslî ya şewaza Hâfizê Şîrâzî dinasînin. Piştî vê nasandinê di vê babetê da gelek xebat hatine kirin. Ji van xebatan tiştê derketîye holê ev e ku; Hâfizê Şîrâzî ji xeyrî cûreyên *îhâmê* ku di berhemên rewanbêjîyê da hatine destnîşankirin, gelek cûreyên din jî bi kar anîye.¹⁰⁸ Hunera Hâfizê Şîrâzî di *îhâmê* da ev bikaranîna cûreyên cuda ye.

¹⁰² فسائی، حافظ و پیدای و پنهان زندگی، ص ۶۸.

¹⁰³ خرّمشاهی، بهاء الدین، چهارده روایت، کتاب پرواز، تهران ۱۳۶۷، ص ۱۲.

¹⁰⁴ Arberry, Litt Arthur J, *Fifty Poems Of Hâfizê Şîrâzî*, At The Universty Cambridge, Lodon 1947, r 21-22.

¹⁰⁵ خرّمشاهی، چهارده روایت، ص ۱۲.

¹⁰⁶ شمیسای، سیروس، بیان، انتشارات فردوس، تهران ۱۳۷۰، ص ۲۵۹-۲۶۰.

¹⁰⁷ عتیق، عبدالعزیز، علم البدیع، دار النهضة العربية، بیروت - لبنان ۲۰۱۵، ص ۱۲۲-۱۲۳.

Saraç, M. A. Yekta, *Klâsik Edebiyat Bilgisi*, Belâgat, Gökkuşbu Yayınları 12. Baskı, İstanbul 2014, r 207.

¹⁰⁸ فرید، طاهره، ایهامات دیران حافظ، طرح نو، تهران ۱۳۷۷، ص ۱۷.

1.2.4.4 Tenz

Yek ji taybetiyên şêwaza Hâfizê Şîrâzî ku ji teref Hâfizê Şîrâzîşunasan hatîye peyîtandin *Tenz* e. *Tenz*, di eslê xwe da bêjeyek 'erebî ye. Wekî bêje bi wateya tinazî kirin, qeşmerî kirin, şermezarkirin, gotinên bi remz, bi henek ji kesekî/ê behskirin hatîye. Bi ingilîzî jê ra *satire* tê gotin. Di istilaha edebî da *Tenz*, cûreyek taybet ji asarên menzûm an pexşan ra tê gotin ku çalakîyên beşerî yê çewt û şaş an kiryarên ku nayên daxwazkirin, fesadîyên civakî û sîyasî, hetta hizrên felsefî ku bi şêweyek pêkenokî were gotin hatîye nasandin.¹⁰⁹ Her çend di *tenzê* da ken hebe jî ne wekî komediyê ye ku mebest û armanca eslî ken e. Di *tenzê* da ken, amraz e ji bo beyana 'eyban û agahdarkirina hişî ye ji bo riswatî û nebaşîyan. Tenznûs, di zâhir da dikenîne lê di bâtin da însanan mecbûrî tefekkurê dike. Di *tenzê* da mebest islah û tezkiye ye ne zemkirin û azirandina kesan e.¹¹⁰ Ev ferqa sereke ye di navbera *tenz* û *hicwê* da.

Beriya Hâfizê Şîrâzî jî di edebiyata farsî da *tenz* tê dîtîn. Beriya wî, Se'dî û 'Ubeydê Zâkânî di vî warî de gelekî pêş ketîne. Lê di van herdû şa'iran da carcaran *tenz* xwe digihîne *hicwê* û zimanekî tûj. Lê di Hâfizê Şîrâzî da ev nayê dîtîn. Ango Hâfizê Şîrâzî hicuw bi kar neaniye.¹¹¹ Di *tenzê* Hâfizê Şîrâzî da ji kesayetên dîyar bêtir bernavên kesayetên; wa'iz, zâhid, sofî¹¹² û bûyeran cih girtine. Mînakek ji *tenzê* Hâfizê Şîrâzî ev malik e.

فقيه مدرسه دی مست بود و فتوی داد که می حرام ولی به زمال اوقاف است

Duh, dersdarê medresê di rewşa serxweşîyê da fetwa da; ku vexwarina şerabê heram e, lê ji xwarina malê weqfê baştir e. (HŞ 117-3)

1.2.5 Rewşa Sosyo-kulturî ya Serdema Hâfizê Şîrâzî

1.2.5.1 Rewşa Sîyasî

Di dîroka Îslamê da mirov nikare ji dagirkirina Moxolîyan hevlenaktir behsa tu bûyerên din bike. Ev bobelata mezin hem ji layê sîyasî hem ji layê kulturî û hem ji layê civakî birînên sed sale li dû xwe hiştîye ku serdema Hâfizê Şîrâzî jî behra xwe jê wergirtîye.

¹⁰⁹ اصلانی، محمد رضا(همدان)، فرهنگ واژگان واصطلاحات طنز، انتشارات کاروان، تهران ۱۳۸۵، ص ۱۴۰.

¹¹⁰ داد، سیما، فرهنگ اصطلاحات ادبی، انتشارات مروارید، چاپ سوم، تهران ۱۳۸۱، ص ۳۴۰.

¹¹¹ خرمشاهی، چهارده روایت، ص ۹۳.

¹¹² مصفی، ابو الفضل، طنز و تعریض در شعر حافظ، در حافظ شناسی، به کشش: سعید نیاز کرمانی، جلد ششم، انتشارات پازنگ، تهران ۱۳۶۶، ص ۱۴۵.

Piştî berbelavbûna dagirkerîya Moxolîyan, Cengîz (w. 624/1227), êrişî serzemîna Îranê dike, hemû bajaran talan û wêran dike, desthilatdarên Îranî yê biçûk yan ji holê radike û yan wan dixe bin barê bacê. Serokê dewleta Xârezmşâhîya 'Elauddîn Muhemmed Xârezmşâh (w. 618-1221) li hember vê êrişê radibe lê têk diçe. Piştî mirina Muhemmed Xârezmşâh, Cengîz berê xwe dide Moxolîstanê. Lawê Muhemmed Xarizmşah Celâluddîn (w. 628/1231) çi dema serê xwe li hember Moxolîyan radike, Moxolî dîsa berê xwe didin serzemîna Îranê û bi vê êrişê hemû serzemîna Îranê 629-1232 dadixin bin destên xwe.¹¹³

Piştî parvekirina dewleta Moxolîyan di navbera Kubîlay (w. 693/1294) û Hûlâgû (w. 663/1265) da ji desthilatdarên ji nesla Hûlâgû ra *Îlhanî – Îlîxanî* (ایلخان) hate gotin.¹¹⁴ Hûlâgû, di sala 654/1256an da dest bi dagirkerîyê kir. Heta Bexdayê çi kete ber destê wî wêran û talan kir. Di sala 657/1258an da Bexda bi wêranî zevt kir, xelîfeyê Îslamê di nav da kî kete ber destê wî kuşt.¹¹⁵

Bi destpêkirina jihevketina selteneta Îlhanîyan heta êrişa Tîmûr (w. 807/1405) li serzemîna Îranê xanedanên biçûk wekî Celâyîrî (Îlekanî), Muzafferî, Çûpânî, Încûyî, Serbedârî, Texatîmûrî, Kertî, Atabegên Loristan û Atabegên Yezdê dest bi desthilatdarîyê kirin.¹¹⁶

Zulm û sitema ku van xanedanan ji bo desthilatdarîya xwe li gel dikirin ji zulm û cewra Moxolîya ne kêmtir bû belkî zêdetir bû. Tenê yek mînak ew ê hemû rewşê bi zelalî bide ber çavan. "*Ji xanedana Încûyan Şah Şêx Ebû Îshâq, êrişî ser Yezdê dike (750-1349). Kelaha bajêr demeke dirêj tê dorpêçkirin. Têkilîya bajar bi her deverê qut dibe. Bi vê sedemê di nav bajêr da xwarin namîne. Ji birçîbûnîyê gel dest bi xwarina goştê hev dike. Li gorî gotina dîrokzanekî "însanek bi nanekî dihat firotin lê kesî îltîfat bi vê jî nedikir. Mezel jî tunebûn ji bilî kefenek û kortalekê."* Dîsa ji van desthilatdaran Şah Şucâ', dorpêçkirineke bi vî rengî li bajarê Kirmanê pêk tîne.¹¹⁷ Divê were gotin ev herdû desthilatdarên navbûrî ji teref Hâfizê Şîrâzî hatine pesinandin, di nava memduhên Hâfizê Şîrâzî da cih digirin.

Di serdema Hâfizê Şîrâzî da bi rêzê Îlhanî, piştî mirina padîşahê Îlhanîyan yê dawî Ebû Se'îd Behâdir Xan (736/1335) Xanedana Încûyî (744/1344-758/1357)¹¹⁸,

¹¹³ Çiftçi, hb, r 7. ۲۶، ص، معین، حافظ شیرین سخن، ص، ۲۷.

¹¹⁴ Çiftçi, hb, r 6.

¹¹⁵ معین، حافظ شیرین سخن، ص، ۲۷.

¹¹⁶ معین، حافظ شیرین سخن، ص، ۴۱-۴۴؛ ۹، Çiftçi, hb, r 9.

¹¹⁷ Çiftçi, hb, r 101.

¹¹⁸ غنی، قاسم، تاریخ عصر حافظ، بحث در: آثار و افکار حافظ، انتشارات زوار، تهران ۱۳۸۳، ص ۱۱۳.

Muzefferî (713/1313-795/1393)¹¹⁹, Celayirî (736/1336-814/1411) û hin xanedanên din desthilatdarî kirine.¹²⁰

Hâfizê Şîrâzî, li Şîrazê bi rêzê selteneta Şah Şêx Ebû Îshâq Încû (w. 758/1357), selteneta Emîr Mubârizeddîn (w. 765/1363), Şah Şucâ' (w. 786/1384), birayê Şah Şucâ' Şah Mehmûd (w. 776/1374), Sultan Zeynu'l-'âbidîn (786/1384-789/1387), Şah Mensûr bin Muzeffer (w. 795/1393) û herî paşî jî selteneta Tîmûr dibîne.¹²¹

Hâfizê Şîrâzî, di serdemeke wusa de jîyaye ku li Şîrazê û li Îranê îstîqrarek sîyasî nayê dîtîn. Hemû jîyana wî di nav şer û cengên navxwoyî yên xanedanan derbas bûye û herî dawî jî dagirkirîya Tîmûr bi çavên xwe dîtîye. Helbet bûyerên sîyasî ew ê tesîreke mezin li jîyana kesên nêzîkî desthilatdaran bike. Hâfizê Şîrâzî ji vê tesîrê bê par nemaye.

1.2.5.2 Rewşa Civakî

Serdema ku Hâfizê Şîrâzî tê jîyaye ne tenê li Şîrazê li hemû serzemîna Faris serdemek bû ku civak ji layê sinc û exlaq di asta herî jêr da bû. Xîrûra millî ji holê rabibû. Bi tifaqa hemû lêkolîneran serdema Hâfizê Şîrâzî yek ji tarîktirîn serdemên dîroka Îranê ye.¹²² Di vê serdemê da zilm, sitem, xwînrijandin, tevlihevî, nebaşî, bê exlaqî û rûreşî û cinayet gelekî berbelav bû. Ev rewş ew qeder berbelav bû heta gihiştibû xanqah û hinek medreseyan jî. Helbet kesên di xanqah û medreseyan da wekî, sofî, zâhid, feqî, muftî û wa'iz jî ji vê ne bêpar bûn.¹²³

Pişî dagirkirina Îranê ji teref Cengîz û di berdewamê da di desthilatdarîya Îlhanîyan û herwiha xanedanan da, di navbera gel û desthilatdaran da peywendiyek ava nebû. Bi perçebûna dewleta Îlhanîyan wezîr, emîr û begên ku di dewletê da peywir girtibûn tevî hinek endamên xanedanên bi nav û deng bi hev ra ketin têkoşîna seltenetê. Ev têkoşîna bêdawî, bû sedema texrîba welat, perîşanîya millet, paşketina 'ilm û kultur, têkçûna sinc û exlaq, berbelavbûna zilm û wehşetê.

Tunebûna desthilateke merkezî, tunebûna yekîtiya civaka Îranî pisgirêkên mezhebî, sîyasî û iqtîsadî bi xwe ra anîbû. Bi dagirkerîya Moxalîyan bêhêvîbûnî û

¹¹⁹ غنى، تاريخ عصر حافظ، ص ۱۱۹.

¹²⁰ Çiftçi, hb, r 100.

¹²¹ عطائی، مسعود جنتی، سفینه حافظ، چاپخانه خواجه، تهران ۱۳۴۶، ص ۶۷۹.

¹²² دهقان، علی، حدیدی، خلیل، احمدی، موسی، "بررسی تصوف عابدانه و عرفان عاشقانه در غزلیات حافظ"، ادبیات عرفانی و اسطوره شناختی (زبان و ادبیات فارسی)، دانشگاه آزاد اسلامی، واحد تبریز، زمستان ۱۳۹۳، دوره ۱۰، شماره ۳۷، ص ۱۱۷.

¹²³ زرین کوب، از کوچه زندان، ص ۳۴-۳۶.

bedbînî gihiştibû astekê ku rê li şoreşa Tîmûr vedikir. Padîşah û kesên desthilatdar tevî keşmekeşa ji bo desthilatdarîyê, bêyî ku bibin rêber û rehnûma ji bona gel, ew bi xwe heta qirikê di nava fesad û xirabîyê da noq bûbûn.¹²⁴ Jina padîşahekî mêrê xwe di xew da dikuşt, jina padîşahekî çav bera tîyê xwe dida, law çavê bavê xwe dirijand û jina wî ji xwe ra dianî. Padîşah, fermandarên xwe rehîn digirtin ji bo jinên wan ji wan bide berdan û li xwe mehr bike. Birakujî, eşqîyatî di astekê da bû ku xelasiya padîşahan jî jê tunebû. Kar û barê fermandar û wezîran dizî bû. Fesada sîyasî di heman demê da bandor li civakê jî dikir, rewşa civakê ji ya desthilatdaran xerabtir bû.

Helbet sazîyên dînî jî ji vê fesad û wêranîyê ne bê par bûn. Ev fesada civakê gihiştibû tekke û medreseyan jî.¹²⁵ Du muqeddesatên girîng; şerî'et û terîqet texrîf û înhîraf bûbûn. Dîn û muqeddesatên dîn wekî amraz ji bo berjewendîyên şexsî û dunyewî dihatin bikaranîn.¹²⁶ Hâfîzê Şîrâzî di şert û mercên wusa tûnd û dijwar da dihate dinê, dijîya û jîyana xwe bi dawî dianî.

1.2.5.3 Rewşa Kulturî

'Ilm û edebiyat jî ji êrîşa Moxolîyan ku xerakirin û kuştin û talankirin bi xwe ra dianî bê par nemabû. Ne tenê gelek zana û 'âlim bi şiklekî zâlîmane dihatin kuştin, mescîd, medrese, pirtûkxane, resedxane bi xak yeksan dibû, hemû berhemên di wan da bi talan û çapûlî dihatin tunekirin. Zana û 'âlimên ku canê xwe ji destê celladên Moxolîyan reha kirin bi hin berhemên ku bi tesadufî ji wehşeta Moxolîyan filitîbûn koçî welatên din kirin. Ev, sedemek bû ji bo berdewama edebiyata Îranê. Sedema duyem jî desthilatdarên Moxolî û Tîmûrî ji neçarî hinek zana û 'âlimên Îranî ji xwe ra wekî wezîr hilbijartin. Van kesan rê li 'ilm û edebîyatê vekirin.¹²⁷

Bi van herdû sedeman 'ilm û edebiyat hêdî hêdî di nava 'âlema Îslamê da ji nû va tovên xwe veda, hem di warê zanîstî û hem di warê edebîyatê da kesayetên mezin derketin holê. Ji 'âlim û 'ârif û hukemayên serdema Moxolî û Tîmûrîyan ev kes dikarin werin hejmartin: Şîhabuddîn Suhrewerdî (w. 632/1234), Necmuddînê Râzî (w.654/1256), Nesîrê Tûsî (597/1201-672/1274), Qadî Beydâwî (w. 685/1286),¹²⁸

¹²⁴ مصفى، ابو الفضل، با حافظ بيشتتر آشنا شويم، چاپخانه قم، قم ۱۳۸۴، ص ۶.

¹²⁵ زرین کوب، از کوچيه زندان، ص ۳۴-۳۶.

¹²⁶ خر مشاهي، چهارده روايت، ص ۹۱.

¹²⁷ شفق، ص ۲۵۹-۲۶۱.

¹²⁸ غني، قاسم، بحث در آثار و افكار و احوال حافظ، انتشارات هرمس، تهران ۱۳۸۶، ج ۲، ص ۱۰۵۹-۱۰۶۳.

Zekerîyayê Qezwînî (w. 682/1283), Qudbuddînê Şîrâzî (w.710/1311), Qâdî 'Eduddîn Îcî (w. 756/1355), Qudbuddînê Râzî (w. 766/1365).¹²⁹

Tesewuf wekî dersekê di medrese û xanqahan da cih girt û tesewuf û 'irfân di qalibê şî'rê da derket holê. Di vî warî da nimûneyên serkeftî hatin nivîsîn.¹³⁰ Di vê serdemê da şa'irên wekî Se'dî, Şêx Mehmûdê Şebusterî (687/1288-720/1320), Mewlana Celâleddînê Belxî, Humâmê Tebrîzî (636/1237-714/1314), Ewhedîyê Meraxe'î (w. 738/1337), Emîr Xusrewê Dehlewî (w. 725/1325), Xwâcuyê Kirmânî, Îbn Yemîn (w. 769/1368), Selmanê Sawecî û 'Ubeydê Zâkânî perwerde bibûn.¹³¹ Edebîyat di serdema Hâfizê Şîrâzî da di rewac û rewneqê da bû.¹³²

Di serdema Hâfizê Şîrâzî da kesayetên tesewufî wekî Şêx Mehmûdê Şebusterî, Şah Ni'metullah Welî Mâhânî (w. 730/1330), Şêx Emînuddîn (w.745/1345), Şah Qasim Enwer 'Elî Tebrîzî (757/1362-837/1442), Şêx Zeynuddîn Ebûbekir Xewâfî (w. 833/1438) nûnerên tesewufî bûn.¹³³

Texrîbata Moxolîyan di destpêka dagirkerîyê da tesîrek mezin li ser kultura Îranê kiribe jî lê tesîra herî mezin di serdemên pişt da derkete holê. Lawazbûn û paşketina maddî û me'newî ya serdema Hâfizê Şîrâzî û ya piştî Hâfizê Şîrâzî encama vê tesîrê ye.¹³⁴ Bi şîklekî giştî; bi taybet di serdema Hâfizê Şîrâzî da, bi xêra 'âlimên mu'teber û şa'ir û edîbên navdar mûhîtekî me'newî û edebî **ye** musaît û avakirî hebû.

1.3 Jîyana Melâyê Cizîrî û Şîwaza Wî ya Edebî

1.3.1 Jîyana Melâyê Cizîrî

Di edebiyata kurdî da li gorî jêderên berdest 'âlim, mûtesewif û yekem şa'irê xwedîyê dîwana muretteb Melâyê Cizîrî ye. Cizîrî di navbera sedsalên 16-17ê zayîne da jîyaye. Di derbarê jîyana wî da tu belgeyên dîrokî nehatine bidestxistin. Bi taybet di berhemên dîrokî da em rastî navê wî nayên. Berhema herî kevin ku navê Melâyê Cizîrî tê da derbas dibe berhema Ehmedê Xanî (1650-1651/1706-1707) *Mem û Zîn* e. Mem û Zîn di sala 1693yan da hatîye nivîsîn.¹³⁵ Ehmedê Xanî, di vê berhemê da navê sê şa'irên Kurdan tîne ziman ku yek ji wan Melâyê Cizîrî ye.

¹²⁹ شفق، ص ۳۵۸-۳۶۱.

¹³⁰ شفق، ص ۲۶۳.

¹³¹ شفق، ص ۲۶۵-۳۵۲.

¹³² معین، حافظ شیرین سخن، ص، ۵۲-۶۱.

¹³³ مصفی، با حافظ بیشتر آشنا شویم، ص ۵.

¹³⁴ غنی، بحث در آثار و افکار و احوال حافظ، ج ۲، ص ۱۰۵۶.

¹³⁵ دۆسکی، ته‌حسین ئبراهیم، شهرها دیوانا ئهمدی خانی، پهرتووگخانا خانی، دهۆک ۲۰۲۰، ر ۲۰.

*Bînā ve ruhā Melê Cizîrî pê hey bikirā 'Elî Herîrî*¹³⁶

Derbarê peyîvandina dîroka wîladeta wî, lêkolîneran ji malikên dîwana Melâyê Cizîrî sûd wergirtine. Herwiha hin lêkolîner ji helbesteke Feqîyê Teyran (971/1563-1041/1631) ku bi metle'a *Îro werin lāzim verin*¹³⁷ dest pê dike, dîroka wefata wî derdixînin holê. Di derbarê jîyana Melâyê Cizîrî da hemû agahîyên berdest, agahîyên devkî ne. Ji ber hindê pêwîst e em bi guman li van jêderan binêrin.

1.3.2 Navê Wî

Navê Melâyê Cizîrî *Ehmed* e. Di dîwana xwe da, di hin şî'ran da navê xwe wekî mexles bi kar anîye. Wek numûne;

Ehmed im sîne siper pêşberê tîra felekê (MC 108-7)

Bi tevahî 11 caran navê *Ehmed* di dîwanê da derbas dibe ku ji wan 10 caran wek navê xwe û mexlesa xwe bi kar anîye. Ji navê xwe bêtir bi bernavê *Melâyê Cizîrî* û *Melâ* meşhûr bûye û tê nasîn. Ji bilî ku *Melâ* ye di heman demê da mutesewif e. Di serê hin nusxeyên dîwana wî da û di hin şerhên dîwanê da bi bernavê *eş- şeyxu'l-cezerî* û *el- 'Ārifu'r-rebbānî we'l 'Āşiqu'r-rehmanî*¹³⁸ hatîye nasandin ku ev bernav, layê wî yê tesewûfî nişan dide.

1.3.3 Mexlesên Wî

Melâyê Cizîrî, di dîwana xwe da sê mexles; *Melâ*, *Nişānî* û *Ehmed* bi kar anîye. Herî zêde Mexlesa *Melâ* hatîye bikaranîn. Di ferhengên da ji bo bêjeya *Melâ* hatîye gotin ku ji *Mewla* ya 'erebî hatîye wergirtin ku leqeba ustad û mamosteyan e. Ji bo leqeba 'âlimên dîn, ew kesên ku edeb, fîqih û usûlê dizanin¹³⁹, kesê dersxwendî, xwenda¹⁴⁰, mamoste¹⁴¹ jî hatîye bikaranîn. Di walatê me da ew kesên li mizgeftê yan li gundekî li pêşîya gel nimêj dikin, we'z û nesîhetan li wan dikin, wan fêrî dîn dikin, yan di medreseyan da ders didin¹⁴² bi *Melâ/Melle* tên bi nav kirin.

¹³⁶ خانى، احمدى، مم و زين، آماده‌كرن: حسين شمرخى، وشانين نوبهارى، استنبول ۲۰۰۹، ر ۳۱.

¹³⁷ Ji bo vê helbesta Feqîyê Teyran bnr (Sadînî, M. Xalid, *Feqîyê Teyran Jiyan Berhem û Helbestên Wî*, Nûbihar, İstanbul 2012, r 139-145.

¹³⁸ الزفنى، ملا احمد، العقد الجوهري في شرح ديوان الشيخ الجزري، مطبعة الصباح، دمشق ۱۹۸۷، ص ۱.

¹³⁹ دهخدا، ج ۱۴، ص ۲۱۴۲۴.

¹⁴⁰ عميد، حسن، فرهنگ فارسى عميد، راه رشد، تهران ۱۳۸۹، ص ۹۷۱.

¹⁴¹ معين، فرهنگ معين، آدنا، تهران، ۱۳۸۱، ص ۱۸۰۸.

¹⁴² Bi giştî aborîya Melâyan ji teref gel va dihate dabînkirin. Melâyên ku tenê ders dane, di mizgeftan da îmamefî nekirine û aborîya xwe, xwe bi xwe dabînkirine jî tên dîtîn ku yek ji wan Melâ Muhammedê Zivingî ye. (Timurtaş, Abdulhadî, "Molla Muhammed Zivingî Ve İlmi Kişiliği", *Şarkiyat İlmi Araştırmalar Dergisi* -www.e-sarkiyat.com- ISSN: 1308-9633 Sayı: I Nisan 2009, r 106-107.)

Melâyê Cizîrî di dîwana xwe da 111 caran bêjeya *Melâ* bi kar anîye ku 73 ji wan mexles e. Herwiha bi tewangê bêjeya *Melê* jî 51 caran derbas dibe ku ji wan 42 caran bi mexlesî hatîye bikaranîn.

Mexleseke din ya Melâyê Cizîrî, Nîşan û Nîşanî ye. Nîşan, di ferhengan da bi wateya 'elamet, 'elameta ku bi wê kes yan tişt dîsa bê naskirin,¹⁴³ 'elamet û remza di navbera du kesan da, mohra ku li durc, kîs an nameyan dikeve, nîşaneyê taybet ji bo xuyabûna paye û mensiba kesekî, 'elameta ku dewlet ji bo xizmet an îftîxarekê dide kesekî, hedefa hatîye danîn ji bo tîr û tivingan, dewsa birîna kewandî, şanik, deq¹⁴⁴ da hatîye. Di dîwanê da 16 caran bêjeya *Nîşanî* bi kar hatîye ku Melâyê Cizîrî 8 caran bi mexlesî bi kar anîye. Ji ber ku Melâ xwe wekî hedefa tîrên işqê dîtîye,¹⁴⁵ yan ji bo dildayîya şanika yara xwe¹⁴⁶ ev mexles bi kar anîye. Melâ di malikeke helbesta xwe da dibêje:

Bê nişânên me nişân kî Mâh û xurşîdê qirân kî
Bende kelbê âsitan kî Dûr nekî xweş tûle ye (MC 212-2)

Bê nîşanî, di edebiyata farsî da bi wateya nexuya û tunebûnîye di şî'rên Se'dîyê Şîrâzî da¹⁴⁷ û bi wateya fenabûna di 'işqê da di şî'rên Xâqânîyê Şîrwanî (w. 595/1199) da hatîye bikaranîn.¹⁴⁸ Melâ, di işqa dildara xwe da xwe fena kirîye, xwe tune kirîye û xwestîye ku dildara wî bi 'işqa wî bizanibe û bi wî bihese. Pêkan e bi vê sedemê ev mexles bi kar anîbe. Lewra Melâ agahdarê edebiyata farsî ye. Melâyê Cizîrî, di malikên xwe da cih daye navê şa'îrên navdar yê edebiyata farsî wekî Hâfizê Şîrâzî, (MC 17-1) Se'dîyê Şîrâzî, (MC 16-9) û Câmî. (MC 16-9)¹⁴⁹

Ayhan Tek, di berhema xwe da îhtîmaleke din dide berçavan ji bo mexlesa nîşanî. Tek dibêje, di edebiyata Tirkî da du şa'îran mexlesa *Nîşanî* bi kar anîne bi sedema ku di dewleta Osmanîyan da peywira wan *Nîşancı* ango *Katip* bûne. Pêkan e ku Melâyê Cizîrî jî di rêveberîya mîrektîya Cizîrê da ji bo peywîreke wusa ev mexles bi kar anîbe.¹⁵⁰

¹⁴³ معین، فرهنگ معین، ص ۱۹۴۱.
¹⁴⁴ دهخدا، ج ۱۴، ص ۲۲۴۸۳-۲۲۴۸۱.

¹⁴⁵Turan, Abdalbaki, *Melâyê Cizîrî ve Divanı*, Nûbihar, İstanbul 2010, s 9.; Öz, Ruhullah, *Sufinin Akidesi (Molla Ahmed el-Cizîrî Örneği)*, Şırnak Üniversitesi Yayınları, Mardin 2019, s 7.

¹⁴⁶ شرفکندی، عبدالرحمان، دیوان ملای جزیری شرح هزار، پانیز، تهران ۱۳۹۳، ر بیست و نو.

¹⁴⁷ سعدی شیرازی، ابو محمد مصلح الدین، کلیات سعدی، به تصحیح: محمد علی فروغی، هرمس، تهران ۱۳۸۵، ص ۹۵۷.

¹⁴⁸ شروانی، خاقانی، دیوان، تصحیح ضیاء الدین سجادی، زوار، تهران، ۱۳۸۲، ص ۴۵۴.

¹⁴⁹ Di dîwana Melâyê Cizîrî da navê *Ferxî* jî derbas dibe ku pêkane şa'îrê Îranî yê meşhur Ferrûxê Sîstanî be (w. 329/1038) (MC 95-6).

¹⁵⁰ Tek, Ayhan, *Melâyê Cizîrî Jîyan û Tesîra Edebî, Şerha Xezelên Bijartî*, Nûbihar, İstanbul 2019, r 20, jênot 3.

Ehmed ku navê Melâyê Cizîrî yê resen e 11 caran di dîwanê da derbas dibe. Ji wan 7 caran bi mexlesî hatîye bikaranîn.¹⁵¹ Ji van hersê mexlesên wî *Melâ* ketîye şûna navê wî û bi vê mexlesa xwe navdar bûye û tê nasîn.

1.3.4 Welatê Wî

Welatê Melâyê Cizîrî, Cizîra Botan e. Cizîr, di herêma Botan da navenda herî girîng e ku di berhemên dîrokî da bi navê *Cezîretu İbn 'Umer* derbas dibe. Derbarê herêma ku Melâyê Cizîrî lê hatîye dinê tu belgeyên dîrokî heta niha nihatine bidestxistin. Hemû lêkolîner dibêjin Melâyê Cizîrî li Cizîrê hatîye dinê. Pêkan e ku lêkolîneran ev agahî ji bernava Melâyê Cizîrî wergirtibin. Di nava şa'ir û 'âlimên Kurdan da gelek kesayetên bernava xwe ji deveran wergirtine. Gelekan ji wan, bernava xwe ji devera ku li wê nav û deng dane wergirtine, ne ji devera lê hatîne dinê. Wekî mînak Melâ Xelîlê Sêrtî (1754-1843). Melâ Xelîlê Sêrtî li gundê Kulpik (Süttaş) a navçeya Hîzanê ku girêdayî Bitlîsê ye hatîye dinyayê.¹⁵² Melâ Xelîl, ji bajarê ku lê nav daye bernava xwe wergirtiye. Herwiha Melâ 'Ebdusselamê Mermerî jî li gundê Hezanê hatîye dinê,¹⁵³ lê ji gundê ku melâtî kirîye (Mermer) bernava xwe wergirtiye. Pêkan e ku Melâyê Cizîrî li gund an navçeyêke din hatibe dinê lê ji ber ku li Cizîrî nav û deng daye bi bernava *Cizîrî* hatibe nasîn.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran navê Cizîrê derbas dibe. Ji yek malikê em dizanin ku li Cizîrê maye. Lewra ji helbestê (Musacele) tê famkirin ku Musacele li Cizîrê hatîye gotin. (MC 317-1) Melâ di dîwanê da wekî hin şa'irên din pesnê navçe û bajarê xwe nedaye. Tiştê ji dîwanê tête famkirin ji Cizîrê bêhtir meftûnê *Botan* e. Melâyê Cizîrî xwe wekî gula Baxê İrema Botan dide nasîn ku herêma *Botan* dişibîne behîştê İremê. (MC 249-7) Di malikeke din da bejna yara xwe dişibîne dirêjahîya nêrgizên¹⁵⁴ Botan (MC 252-1) û bi vî rengî pesnê siruşt û çiçekên herêma Botanê dide.

¹⁵¹ Sedema ku hejmara mexlesan û hejmara helbestan hevûdû nagirin û hejmara mexlesan ji hejmara helbestan zêdetire ev e ku Melâyê Cizîrî di hin helebstan da du mexles bi hev ra bi kar anîye.

¹⁵² Pakiş, Ömer, "Molla Halil Siirdî", *DİA*, c 30, r 250-251.

¹⁵³ Ertekin, Nurettin, "Melâ Ehmed Yalar û Dîwana Wî", *Diyarbakır: Âlimler, Arifler, Edipler (Edit. İbrahim Özcoşar, Ali Karakaş, Mustafa Öztürk ve Ziya Polat)*, İstanbul: Ensar Neşriyat, İstanbul 2018. r 419.

¹⁵⁴ Di helbesteke Celadet 'Elî Bedirxan da ya ku di 29ê Çirîya Paşîn sala 1932yan da bi bernavka Herekol Ezîzan li Bêrûdê honandîye, di malikekê da cihekî bi navê *Nêrgizî* derbas dibe.

Kanî Seqlan, Seqnefisk û Nêrgizî

Gul û rihan zeriyanê, tev rizî

Di danasîna cih û şinwarên ku di helbestê da derbas dibin tê fam kirin ku *Nêrgizî* navê seyrengehên cizîrê ye. Li cizîrê du seyrengeh bi navê Nêrgizîyê hene. Bi sedema ku nêrgiz di wan da şîn dibûn ev nav li wan hatîne kirin. (http://www.nefel.com/articles/article_print.asp?ArticleNr=294: Pêgihîn:

1.3.5 Dîroka Wiladeta Wî

Ji ber nebûna belgeyên dîrokî derbarê jidayikbûna Melâyê Cizîrî gelek nêrînên cuda hene. Lêkolîneran ji malikên Melâyê Cizîrî dîrok deranîne. Lêkolîneran, geh ji navekî di malikan da derbas dibe, geh bi hesabê ebcedê dîrokek nîşan dane. Hin lêkolîneran jî ji dîrokên li ser keşkol û destxetên dîwanê hatine nivîsîn sûd wergirtine. Feqîyê Teyran di Musaceleya xwe û Melâyê Cizîrî da dîroka Musaceleyê dîyar kirîye.

Birîndârê 'işqê me dūrim ji sihā bihān
Dizānin meddāhê keme di hezār ū yek ū sihān
Senāxwānê Melê me li hemū 'erḍ ū cihān (MC 317-5)

Malikên jor, belge ye di destê me da ku em pê dizanin Melâ di sala 1621an da li jîyanê bûye. Ji ber hindê ne pêwîste em li ser dîrokên dūrî vê salê rawestin. Li ser vê boçûnê hin nêrînên wîladeta Melâyê Cizîrî wiha ne. Marûf Xeznedar 1567,¹⁵⁵ Baba Merdox Rûhanî 1570,¹⁵⁶ Sedîq Sefîzade 1564,¹⁵⁷ Melâ Ebdusselamê Cizîrî 1567-1568,¹⁵⁸ Zeynelabidîn Zinar 1570,¹⁵⁹ Celâlettin Yöyler 1589¹⁶⁰ û Tehsîn Îbrahîm Doskî 1567-1568an¹⁶¹ destnîşan dike.

1.3.6 Malbata Wî

Melâyê Cizîrî yek ji Kurdên Botan e. Di vê da tu şek tune ye. Lewra ew bi xwe di şî'ra xwe da vê yekê eşkera dibêje:

Gulê bāxê Iremê Buhtān im
Şebçirāxê şebê Kurdistān im (MC 249-7)

Di çavkanîyan da derbas dibe ku Melâyê Cizîrî ji 'eşîra Bûxtîyan e.¹⁶² Bûxtî, heman 'eşîra Botan e ku bi derbasbûna demê bûye *Bohtî yan Botan*.¹⁶³ Navê bavê wî Melâ/Şêx Mehemed e. Navê dayika wî û ku hebin xûşk û birayên wî nayê zanîn.

09.01.2021) Pêkan e di dema Melâyê Cizîrî da, di gelek deverên Botan da nêrgizên dirêj şîn hatibin û Melâyê Cizîrî di şî'rên xwe da nêrgizên Botan ji bo şibandina bejna yarê bi kar anibe.

¹⁵⁵ Xê Zêne Dar, Marf, Mîrzooyî Nîdîyî Kordî, Nâras, He ûlîz 2002, Brîg 2, r 243-244.
¹⁵⁶ Rûhanî, Babâ Merdox, *Tariix Meshahir Kurd (E Rfa, Elma, Adîba, Şe'ra)*, Brî Kûshsh: Mûmd Mâjd Merdox Rûhanî, Srosh, Teheran 1382, v 191.

¹⁵⁷ Bûre Kîyî, Sdîq Sefî Zade, Mîrzooyî ûîze Kordî, Nâras, He ûlîz 2008, Brîg 2, r 474.

¹⁵⁸ Cizîrî, Melâ Ebdusselam, *Şerha Dîwana Melâyê Cizîrî*, Amadekar: Tehsîn Îbrahîm Doskî, Weşanên Dara, İstanbul 2018, r 16.

¹⁵⁹ Melâyê Cizîrî, *Dîwan*, Werger: Z. Kaya-M. Emin Narozî, Weşanên Roja Nû, Stockholm/Sweden 1987, r 21-22.

¹⁶⁰ Yöyler, Celalettin, *Şîroveya Dîwana Melâyê Cizîrî*, Weşanên Enstîtuya Kurdî Ya Stenbolê, Çapa Yekem, Stenbol 2006 r 18.

¹⁶¹ Dûskî, Tehsîn Nîrahîm, Şrha Dîwana Mlâî Jzîrî, Kûmêlîge Ha Fer Heîngî Ya Ahmedî Xanî, Sûran 2018, Brîg 1, r 8.

¹⁶² Yöyler, hb, r 11.

¹⁶³ Şeref Han, *Şerefname - Kürd Tarihi*, Çev: M.Emin Bozarslan, Deng Yayınları, İstanbul 1998, r 99.

Herwiha xizm û merivên wî yên nêzîk jî nehatine peyîtandin. Melâ Ebdusselamê Cizîrî dibêje ku min di gelek nusxeyên destxetên dîwanê da dîtîye ji bo binemala Melâ gotine *el-Cezerî el-Enşârî*.¹⁶⁴ Li gor vê nêrînê Melâ digihêje Ensarîyan. Ensarî ta niha jî yek ji binemalên Cizîrê yên navdar in.

1.3.7 Xwendina Wî

Hemû çavkanî dibêjin Melâyê Cizîrî li cem bavê xwe dest bi xwendinê kirîye. Lewra bavê wî jî 'âlim bûye. Melâyê Kurdan dersdar in. Zarokên gel fêr dikin. Zarok pêşî li ba melâyan fêrî *Elifba* ye, *Qurana Pîroz* û hin berheman dibin da ku bikaribin bi wan berheman pêdivîyên dînî pêk bînin. Di dema me da zarok (suxte) piştî xwendina *Quran Pîroz*, *Mewlûda* Melâ Huseynê Bateyî (1675/1689-1755), *Nehcu'l-Enam* a Melâ Xelîlê Sêrtî û *Nûbihara Biçûkan* ya Ehmedê Xanî dixwînin. Lê ev hersê berhem jî piştî Melâyê Cizîrî hatine nivîsîn. Ji ber hindê em nizanin di wê dema ku Melâyê Cizîrî tê da jîyaye heta berhema destpêkê ya feqetîyê ku *Emsîle* ye¹⁶⁵ Zarokên Kurmancan çî berhem dixwendin.

Melâ piştî ku hin berhemên olî li cem bavê xwe dixwîne dest bi feqetîyê dike. Tiştê ku çavkanî dibêjin Melâyê Cizîrî, li Cizîrê, Hekarî, Amêdî û Diyarbekirê xwendina xwe domandîye. Li Diyarbekirê li gundê Sitirbas ji Melâ Taha îcazeya 'ilmî werdigire.¹⁶⁶ Ji bilî Medreseya Melâ Taha em navên medreseyên ku Melâyê Cizîrî li wan xwendîye û navên seydayên wî nizanin. Helbet derbarê deverên ku Melâ lê xwendîye nêrînên ciyawaz jî tên dîtin. Di berheman da hatîye nivîsîn ku Melâyê Cizîrî li 'Iraq, Sûrî, Misir û Îranê jî xwendîye.¹⁶⁷ Ji bo van agahîyan çavkanîyên nivîskî nihatine destnîşankirin.

1.3.8 Pîşe û Aborîya Wî

Melâyê Cizîrî, melâtî, dersdarî û dersbêjî kirîye. Lê ev wekî pîşe ew ê bê pejirandin an neyê pejirandin cihê nîqaşê ye. Hemû çavkanîyên derbarê jîyana Melâyê Cizîrî da bavê Melâyê Cizîrî 'âlim, melâ/şêx dinasînin ku nêrînên cuda nehatine destnîşanirin. Ji ber vê em jî bavê wî 'âlim dipejirînin. Melâyê Cizîrî piştî

¹⁶⁴ Cizîrî, *hb*, r 15.

¹⁶⁵ *Emsîle*, navê berhemek serfa Erebi ye. Nivîskarê wê nehatîye zanîn. (Newayî, Merdan, *Melâ Eliyê Teremaxî (sedsala 16-17)*, *Tesrîfa Teremaxî –Yekemîn Gramera Kurdîya Kurmancî*, Nûbihar, İstanbul 2018, r 43.)

¹⁶⁶ Cizîrî, *hb*, r 17.

¹⁶⁷ Mustefa Resûl, Izedîn, *Melâyê Cizîrî, Hin Tişt Derbarê Jîyan û Berhema Wî De*, Kurmancîya Wê: Ziya Avcî, Weşanxaneya Lis, Diyarbakır 2020, r 18.

wergirtina îcazeyaya 'ilmî li gundê *Serba* yê *Heskîfê* dest bi melâtîyê dike. Hemû çavkanî di vê biwarê da heman agahîyan didin. Ev jî gotina me piştrast dike.

Melâyê Cizîrî piştî demekê ku li *Serba* melâtîyê dike vedigere welatê xwe Cizîra Botan û li navenda Cizîrî dest bi dersbêjîyê dike. Melâyê Cizîrî, li Cizîrê li kîjan mizgeft û medresayan da dersdarî kirîye, li kîjan gund an gundên Cizîrê, yan li hin deverên din melâtî kirîye ne dîyar e. Tenê hatiye gotin ku li Cizîrê di Medreseya Sor da dersdarî kirîye.¹⁶⁸ Pêkan e ku ev jî bi sedema ku gora wî di Medreseya Sor da ye hatibe gotin.

Di derbarê aborîya Melâyê Cizîrî da çar ihtîmal derdikevin pêş me. Yek jê ev e ku Melâyê Cizîrî, bi malbatî ji Cizîrê ye. Dibe li gundên Cizîrê an navenda Cizîrê ji bav û kalên wî hinek mamelek jê ra mabin û xwe bi wan xwedî kiribe. Ya duyê, dibe wekî hemû melâyên welêt bi fitre û zekâta gel aborîya xwe bi dest xistibe. Ya sêyê wekî dersbêjekî mîrên Cizîrê dersdarî û melâtî kiribe û aborîya wî ji teref mîran va hatibe dabînkirin. Çarem, aborîya dersbêjên medreseyê û xwendekaran ji dahatên weqfên medreseyê hatibe dayîn. Ev ihtîmala dawî bêtir ber'eql e. Lewra Medreseya Sor ji teref Mîrên Cizîrê, Mîr Şerefyan (Mîr Şerefê Duwem) hatiye avakirin û gelek gund û zevî ji bo aborîya medreseyê hatine weqifkirin¹⁶⁹ û mîrên Cizîrê pêdivîyên medrese û feqîyan û aborîya dersdaran bi dahatên weqfên medreseyê dabîn kiribin.

1.3.9 Têkilîyên Wî bi Derdorê

Ji ber ku di derbarê jîyana wî da agahîyên dîrokî nihatine bidestxistin em têngîhêjin ka bi kê ra têkilî danîye. Lê di dîwanê da em dizanin ku Melâyê Cizîrî, bi Feqîyê Teyran û Mîr 'Îmâdeddîn ra têkilî danîye û bi hevra *musacele* gotine ku her dû kesayet jî hem ji layê şa'irtîyê va şarezaya ne û hem jî zanyarên girîng in. Bi taybet ji van herdû kesayetên yek mîr e ku ji layê berbelavbûna edebiyat û 'ilmê va di nava civakê da mînakek girîng e.

1.3.10 Wefata Wî

Wekî ku di beşa ji dayikbûna Melâyê Cizîrî da hatibû gotin; ji bo rojbûna Melâyî dîrokên cuda hatine destnîşankirin. Bi vê sedemê dîroka koça wî jî bi teqezî nihatiye peyîtandin. Di wan çavkanîyên li jor di mijara *Wiladeta Melâyê Cizîrî* da dîroka wefata wî wiha hatiye nirxandin. Marûf Xeznedar 73 sal temen û sala 1640î,

¹⁶⁸ السلفي، حمدي عبد المجيد - الدوسكي، تحسين إبراهيم، معجم الشعراء الكرد، دار سبيريخ للطباعة و النشر، دهوك ٢٠٠٨، ص ٦٣.

¹⁶⁹ Yaşın, Abdullah, *Tarih, Kültür ve Cizre*, Kent Işıkları Yayınları, İstanbul 2011, s 71.

Baba Merdox Rûhanî 70 sal temen û sala 1640î, Sedîq Sefîzade 74 sal temen û sala 1638an, Melâ Ebdusselamê Cizîrî 73 sal temen û 1640-1641ê, Zeynelabidîn Zinar 70 sal temen û 1640î, Celâlettin Yöyler 75 sal temen û 1664an û Tehsîn Îbrahîm Doskî 73 sal temen û 1640-1641ê destnîşan dikin. Melâ li Cizîrê çûye ber dilovanîya Xwedê û di Medreseya Sor da hatîye veşartin. Sala 1640 bêtir nêzî rastîyê xwuya dike.

1.3.11 Berhemên Wî

Li gorî jêderên ber destên me, ji Melâyê Cizîrî tenê dîwanek muretteb maye. Menzûmeyeke dirêj jî -ku bi *Ellah sehergaha ezel* dest pê dike û ji 143 malikan pêk tê -di nava dîwanê da cih girtîye.

Dîwana Melâyê Cizîrî ya resen, ku wî bi destê xwe nivîsîbe yan di jîyana wî da hatibe nivîsîn û wî jî teshîh kiribe nehatîye peydakirin. Herçend Tehsîn Doskî ji şî'reke Melâyê Cizîrî bi hesabê ebcedê dîrokek deranîbe ji bo danîna dîwanê lê ev ne teqez e, bi guman e. Li gor Doskî, Melâyê Cizîrî di 29ê Tîrmeha sala 1631ê da ku 66 salîya temenê wî ye dîwan bi dawî anîye.¹⁷⁰

Helbestên Melâ di nava gel de berbelav bûne û paşê ji teref hin kesan va hatine berhevkerin, tomarkirin, nivîsandin û şerhkirin. Li gorî jêderên berdestên me, şerha herî kevn şerha helbestek Melâ ye ku di sala 1771ê da ji teref Melâ Cercîsê Erbîlî va¹⁷¹ bi farsî hatîye şerhkirin. Wekî dîwanek muretteb, destxeta ku helbestên melâ di xwe da civandîye, ya herî kevn di sala 1815an da ji teref Muhemmed Teyar Paşayê Amêdîyê va hatîye îstinsaxkirin. Cara yekem dîwana Melâ ji teref Martîn Hartman li Berlînê di sala 1904an da hatîye çapkirin.¹⁷²

Lê hemû şî'rên Melâ nehatine berhevkerin. Di dema me da jî di hin berhem û keşkolên ku nû derdikevin holê helbestên Melâyê Cizîrî tên dîtin. Wekî ku Abdulreqîb Yûsuf dibêje: *Gelek şî'rên Melâyê Cizîrî yên dîtir min dîtine ku heta niha nihatine çapkirin.*¹⁷³ Pêkan e ji niha û şûnda jî hinek helbestên Melâyê Cizîrî werin peydakirin.

Ji ber ku destxeta Melâyê Cizîrî ya resen nehatîye bidestxistin, mustensix û şarihan helbestên Melâyê Cizîrî berhev kirine. Di vê berhevkerinê da her kesî li gorî hêza xwe helbest berhev kirîye û destxet an şerha xwe amade kirine. Ji ber hindê ye

¹⁷⁰ Dûskeyî, Şerha Dîwana Melayî Jizirî, r. 11.

¹⁷¹ Dûskeyî, Şerha Dîwana Melayî Jizirî, r. 14.

¹⁷² Tek, hb. r. 36.

¹⁷³ Yûsuf, Abdulreqîb, *Şairên Klasîkên Kurd*, Weşanên Jîna Nû, Uppsala/Sweden 1988, r. 64.

ku hem di navbera destxetên ku hatine nivîsîn¹⁷⁴ û hem di şerhên dîwanê da cudahî gelek in. Ev cudahî hem di hejmara helbestan da hem di hejmara malikên helbestan da û hem jî di bêjeyên malikan da tînin.

Melâ dîwana xwe li gor elifbaya 'erebî muretteb kiribe jî di dîwanê da bi sê herfên 'erebî ("zal", "'eyn" û " xeyn") helbest nehonandîye. Lê bi çar herfên elifbaya kurdî ("p", "g", "v", "ê") ku di elifbaya 'erebî da nînin helbest honandîye.

1.4 Şêwaza Edebî ya Melâyê Cizîrî

Di berhemên nivîskî da cara pêşî em navê Melâyê Cizîrî di *Mem û Zîn* a Ehmedê Xanî da dibînin. Lê Ehmedê Xanî tenê îşaretî bi bal navê wî kiriye. Derbarê wî û şî'rên wî da tiştek negotîye. Ev îşaret, jî teref Ehmedê Xanî girîngîya Melâyê Cizîrî dide nîşandan.

Melâyê Cizîrî jî wekî gelek şa'iran di malikên xwe da pesnê şî'rên xwe dide. Pêkan e ku ji van malikan hinek agahî derbarê şêwaza wî ya edebî were derxistin. Melâ di nivmalika xwe da dema dibêje;

Were bêperde Melâ vê xezelê bîne meqâm (MC 160-8)

Mirov dikare têbigihêje ku Melâ di şî'rên xwe da merama xwe di binê perdeyan da bi remz û îşaretan tîne ziman. Û ev yek dikare wekî sedema giranîya helbestên wî were pejirandin û wekî şêwaza wî ya takekesî bête hesabandin.

Di risteyek din da jî şî'rên xwe bi şî'rên *Perîşan* û nezma xwe jî bi *muşewweşî* dinasîne.

Şî'rā me tê perîşān nezmā me tê muşewweş (MC 126-3)

Dibe ku Melâyê Cizîrî bi perîşanîyê tunebûna însîcam, hevgirtîbûnîya malikên xwe û bi muşewweşîyê jî behsa teşeyên nezma xwe kiribe.

Cara pêşî em derbarê şêwaza Melâyê Cizîrî da hin agahîyan di teqrîza 'Ebdurrehîm Rehmî Hekarî (1890-1958) da dibînin. Hekarî, teqrîza xwe di dawîya çapa dîwana Melâyê Cizîrî da nivîsîye ya ku di sala 1904an da jî teref Muhemmed Şefîq Erwasî va li Stenbolê hatiye çapkirin.¹⁷⁵ Di vê teqrîzê da hem hin agahî derbarê şêwaza Melâyê Cizîrî tê dîtin û hem berawirdîyek di navbera Melâyê Cizîrî û Hâfizê Şîrâzîê Şîrâzê jî tê kirin.

¹⁷⁴ Ji bo hejmara helbestên di destxetan da û edîsyon kîrtîka wan da bnr: (مه‌لایێ جزیری، دیوانا مه‌لایێ) (جزیری، توێژاندنا صادق بهاء‌الدین نامیدی، چاپخانه کوری زانیاری کرد، بغداد ۱۹۷۷) ¹⁷⁵ الجزیری، شیخ احمد، دیوانا جزیری، طابعی: محمد شفیق الارواسی، اوقاف اسلامیه مطبعسی، استانبول، ۱۳۴۰، ص ۹۶.

Li gorî 'Ebdurrehîm Rehmî Hekarî, herdû şa'ir jî mijara 'îşqê kirine mijara helbestên xwe. Ev rastîyek e, lewra di şîrên herdû şa'iran da 'îşq mijara sereke ye. Li gorî Ebdurrehîm Rehmî Hekarî Melâyê Cizîrî di mijara 'îşqê da ji Hâfîzê Şîrâzî serkeftîtir e. Lewra Melâyê Cizîrî, 'elema 'îşqê birîye di bandewê da çikandîye.

*Şîrâzî li nāv Fursān kêşā 'elemā 'îşqê
Melā! Te bire ewcān Hāfîz bike pê meşkê*

Hekarî, serkeftîbûna Melâyê Cizîrî bi vê girêdide: Melâ bi reng û rûyekî nû mijara 'îşqê anîye ziman û bi zimanê kurdî ew xemilandîye.

*Lêkin bi kirāsek dî nūr û şefeq dā
Dîbāyekî Kurmāncî rāçānd dî Cizîrê dā*

'Ebdurrehîm Rehmî Hekarî dibêje; *Melā! te wekî Hāfîzê Şîrâzî Firdewsî ji xwe re nekir ustad*. Firdewsî¹⁷⁶, wekî ku tê zanîn yek ji şa'irên Farisan yê navdar e. Navê Firdewsî bi 'inwana perçe behs jê hatîye kirin ji bo giş were famkirin. Ev rêbazeke belaxetê ye. Yanî Hekarî zimnen dibêje; Hâfîzê Şîrâzî, ji hemû şa'irên navdar yê Îranî sûd wergirtîye. Belkî em bikaribin bibêjin cara yekem û herî pêşî 'Ebdurrehîm Rehmî Hekarî karîgerîya Hâfîzê Şîrâzî li ser Melâyê Cizîrî nepejirandîye.

*Melā! Te wekî Hāfîz Firdewsî nekir ustād
Hem 'îşq ji nū hilkir Kurmāncî te kir îcād*

Herçend hinek malikên 'Ebdurrehîm Rehmî Hekarî derfeta nîqaşê bide jî, derbarê şewaza Melâyê Cizîrî da em dikarin bibêjin agahîyên pêşî û tebût, bi rêkû pêk ev in. Ji ber vê yekî girîng in. Di serê şerh û çapên dîwanê da derbarê şewaza Melâ da tiştêkî bi rêkûpêk nehatîye dayîn, ji bilî hin agahîyên giştî. Wekî ku Mihemed Şefîq Erwasî di pêşîya çapa dîwanê da gotîye; *...eger ji emsale dîwana ibnî Faridî û Hāfîzê Şîrâzî faîq û zêdetir nebit, kêmtir jî nehin*.¹⁷⁷

¹⁷⁶ Firdewsî. Leqeba wî Ebu'l-qâsim, mexelsa wî Firdewsî ye. Navê wî bi durustî nayê zanîn. Yek ji şa'irên Îranî yê navdar e. Nivîskarê dastana millî ya Îranîyan *Şehnameyê* ye. Di sala 411/1020 yan di sala 416/1025an rehmî kirîye. (شفق، ص ۷۷-۸۲)

¹⁷⁷ الجزیری ، ص ۳.

1.4.1 Asta Ziman

1.4.1.1 Mûsîqîya Derva

Di dîwana Melâyê Cizîrî da kêşa 'Erûzê hatîye bikaranîn. Melâyê Cizîrî ji behrên 'erûzê 7 behr¹⁷⁸ bi kar anîne ku hejmara helbestan li gorî behran wiha derdikevin holê.

¹⁷⁸ Behrên 'erûza helbestên Melâyê Cizîrî ji şerha ku me ji bo vê xebatê bingeh pejirandîye hatîye deranîn. Eger di navbera amarên me û hin xebatên din cudahî hebin pêkan e ku ji hejmara helbestên wan dîwanan peyda bûbe yê ku li ser xebat hatine kirin. Di vê hejmarê da Çarîn nehatine hesibandin.

Tablo 2: Behren 'Erûzê di Şi'rênMelâyê Cizîrî da

| Behren 'Erûzê di Şi'rênMelâyê Cizîrî da | | | |
|--|---------------------|-----------------------|---------------|
| | Behrên Êrûzê | Hejmara Şi'ran | Rêje % |
| 1 | Remel / رمل | 56 | 44,44 |
| 2 | Hezec / هزج | 32 | 25,40 |
| 3 | Recez / رجز | 29 | 23,02 |
| 4 | Ser'i / سريع | 3 | 2,38 |
| 5 | Besît / بسيط | 3 | 2,38 |
| 6 | Muzârî' / مضارع | 2 | 1,59 |
| 7 | Xefîf / خفيف | 1 | 0,79 |
| Gîştî | | 126 | 100,00 |

Wekî ji tabloya jorîn jî xuya dibe Melâyê Cizîrî ji % 92,86 şî'rên xwe bi sê behran; Remel, Hezec û Recezê honandîye. Di helbestan da 36 kêş sâlim in ku; 1 (yek) helbest di behra Remel da, 13 helbest di behra Hezec da û 22 helbest di behra Recez da bi kêşên sâlim hatine honandin. Bi tevahî ji %28,57 helbest bi kêşên sâlim hatine honandin.

Di helbestên Melâyê Cizîrî da pênc (5) kêşên sereke derdikevin holê. Di dîwanê da 67 helbest bi wan hatine honandin û rêjeya wan %53,17 ye.

- 1- Receza Musemmena Sâlim (Mustef'ilun, Mustef'ilun, Mustef'ilun, Mustef'ilun) 22 helbest.
- 2- Hezeca Musemmena Sâlim (Mefâ'ilun, Mefâ'ilun, Mefâ'ilun, Mefâ'ilun) 13 helbest.
- 3- Remelâ Musemmena Mehzûf (Fâ'ilatun, Fâ'ilatun, Fâ'ilatun, Fâ'ilun) 12 Helbest.
- 4- Remelâ Musemmena Mexbûna Mehzûf (Fâ'ilatun, Fe'ilatun, Fe'ilatun, Fe'ilun) 10 helbest.
- 5- Hezeca Musememna Exreba Mefûfa Mehzûf (Mef'ûlu, Mefâ'îlu, Mefâ'îlu, Fe'ûlun) 10 helbest.

Li gorî van amaran helbestên Melâyê Cizîrî li gorî senifandina yekem ya behren 'erûzê¹⁷⁹ behrên bedêldar (mutenawib) û giran in. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 45 helbest bi kêşên tefîleyên (pêngav) dubarekirî hatine honandin ku rêjeya wan di tevahîya helbestan da %35,71 e. Li gorî vê amarê di senifandina duyem ya behren

¹⁷⁹ Bnr tez; r 22, jêrenot, 80.

'erûzê¹⁸⁰ da helbestên Melâ bi behrên Pêlî (خیزایی) hatine honandin. Her çend ku hatibe gotin; *Di bingeha xwe da avabûnîya bêjeyên zimanê her milletekî ji bo şî'rên wan îcada cûreyên kêşê pêwîst dike. Bi vê sedemê bi kêşên şî'rên milletên din nayê muqayesekirin.*¹⁸¹ kêşên Melâyê Cizîrî bi vî şiklî, rengê kêşên folklorî kurdî di xwe da digirin. Bi gotineke din, kêşên Melâyê Cizîrî derfetâ reqsê dide. Ev yek, ji tevgera reqs û semaya wî ya rûhanî pêk haîye. Ev ahenga reqs û semayê ye ku rengê xwe daye mûsîqîya şî'rên Melâyê Cizîrî.

1.4.1.2 Mûsîqîya Kenarî

a- serwa

Serwa, yek ji 'unsûrên şî'rêye. Bi vê sedemê hatîye gotin *ku; Şî'r ji aliyê şî'rbûnîyê va pêdivîya xwe bi kêş û serwayê heye.*¹⁸² Helbet ev pênase bêtir ji bo şî'ra klasîk derbasdar e. Melâyê Cizîrî jî wekî hemû şî'irên klasîk cûreyên serwayê di şî'rên xwe da cîbicî kirîye û bi vî rengî mûsîqîya şî'rên xwe bihêztir kirîye.

Di şî'rên Melâyê Cizîrî da di helbesta *Dil ji min bir dilberek zîbâ qebâ* (MC 34) da herfa *a* ji bo serwaya nîvco, di helbesta *Di dest dâ yengîyek nûbârî min dî ew kemân ebrû* (MC 227) da herfên *an* ji bo serwaya tam, di helbesta *Peyweste du ebrû li me mehbûbê kişandin* (MC 186) da herfên *şandin* ji bo serwaya dewlemend wekî mînak dikarin werin dayin.

Melâyê Cizîrî di helbestên xwe da hunera *Zûkafiyeteyn*, helbesta bi du serwayan jî bi kar anîye ku ji layê mûsîqîyê va helbestê bihêztir dike.

Ismê te ye mektûbi di dîwânê qidem dâ

Herfêk qelemê 'ilmi bi teqwîmê reqem dâ (MC 18-1)

Di malika jorîn da serwaya eslî ya şî'rê herfa *m* ye. Beriya bêjeya serwayê anîna herfa *ê* di dawîya bêjeyan da serwayek din jî derdixê holê ku bi *Zûkafiyeteyn*, (*du serwa*) hatîye bi nav kirin. Di dawîya malikan da *da* paşserwa ye. Melâyê Cizîrî mûsîqîya vê helbesta xwe hem bi serwayê, hem bi paşserwayê û hem bi zûkafiyeteynê ava kirîye.

Di helbestên Melâyê Cizîrî da serwaya hundurîn yek ji taybetîyên şêwaza wî dikare were hesibandin. Melâyê Cizîrî ev cûre serwa gelek zêde bi kar anîye. Ev cûre serwa bi du şêweyan tê dîtin. Di şêweya yekem da di navbera malikan da tê dîtin. Wekî di mînaka jêrîn da:

¹⁸⁰ Bnr tez; r 22, jêrenot, 81.

¹⁸¹ کدکنی، موسیقی شعر، ۴۵۴.
¹⁸² فسائی، حافظی و بیدای و پنهان زندگی، ص ۵۲.

Sotin û derdê evînê 'illetê dâx û birînê
Xweş dibin m̄ ew bi dînê şerbetâ lêvân mufâ ye (MC 200-2)

herfên *înê* serwaya hundurîn e ku sê caran hatîye gotin, herfa *a* jî serwaya şî'rê ya bingehîn e û ye jî paşserwa ye.

Di şêweya duyem da Melâyê cizîrî serwaya hundurîn di nava misrayê da bicih kirîye. Wekî mînak:

Yârê me pur nîşân û sur sîmâ ji dur dêm kewkeb e (MC 217-1)

Di vê misrayê da herfên *ur* ku sê caran hatîye bikaranîn serwaya hundurîn e, herfa *b* serwaya şî'rê ya eslî ye û herfa *e* jî paşserwa ye. Melâ hem bi serwaya hundurîn û hem paşserwa di yek malikê da cîbicî kirîye.

b- Paşserwa

Di şî'rê da piştî avakirina kêşê ew tişt a ku tîniya nexmeyên bêjeyan dide guh paşserwa ye. Melâyê Cizîrî di şî'rên xwe da ji bo zêdekirina mûsîqîyê ji gelek cûreyên paşserwayan; ji paşserwayên ku ji herfan, navan, lêkeran, cînavkan û têgihan pêk hatine sûd wergirtîye. Ji 108 xezelan 53 xezel, ji 4 qesîdeyan 3 qesîde, ji 18 çarînan 9 çarîn û menzûme bi paşserwa hatine honandin ku bi giştî ji 144 helbestan di 66 helbestan da paşserwa tîn dîtîn. Li gorî van hejmaran rêjeya helbestên bi paşserwa di tevahîya dîwanê da %45,83ê ye.

Di Helbestên Melâyê Cizîrî da du helbest ji paşserwayên ku ji nîv malikan pêk hatine cih girtine. Di helbestekê da nîv malika *feryād ji destê furqetê* (MC 279-280) û di helbesteke din da jî nîv malika *dil ji min bir dil ji min* (MC 187-188) paşserwa ye. Di vê mînaka dawî da, di heman demê da hunera tekarê jî tê dîtîn ku yek ji amûrên mûsîqîya derunî ye. Herwiha tenaqûz/tezad, ku yek ji alavên mûsîqîya derunî ye di paşserwayên sê helbestan da tê dîtîn. Bêjeyên *çep û rāst* (MC 63), *rāst û çep* (MC 61-62) û *şeb û roz* (MC 117) hem paşserwa ne û hem di wan da hunera tenaqûz/tezadê heye. Bi vî rengî Melâyê Cizîrî mûsîqîya derunî di mûsîqîya kenarî da bi kar anîye. Bi vî terzî asta mûsîqîya helbesta wî bilindtir bûye.

1.4.1.3 Mûsîqîya Hundur

Melâyê Cizîrî mûsîqîya derunî ya helbestên xwe bi gelek hunerên rewanbêjîyê ava kirîye. Di serî da cînas û cûreyên wê wekî nimûne dikare were nîşandayîn.

'Izārê ger li min dî tu li dil de

¹⁸³ لان القلب قد يهوى عذارى (MC 156-1)

Di malika jorîn da bikaranîna bêjeya 'izâr/عذار ji bo cînasa tam mînak e. Di misraya yekem da 'Izar bi wateya kêra tûj, şûr û tîrê hatîye. Di misraya duyem da bi wateya ruxsar, sûret û cênîkê hezkirîyê hatîye. Di helbesta *feryād ji destê furqetê* da di malikekê da bêjeyên *şewānd, tewānd û kewānd* (MC 280-1) û dîsa di heman helbestê da, di malikekê da bêjeyên *çevîn, revîn û evîn* (MC 280-9) bi hevra cînasa zaîd deredixe holê. Di malika *Dil di deryâyê qidem qaf e bi şābit qedem î* (MC 79-5) da di navbera bêjeyên *qidem û qedem* hunera cînasa naqis pêk hatîye. Herwiha di misraya *Cāmā cihānbîn dā Cemê* (MC 46-4) da, di navbera bêjeyên *cāmā û cemê* da hunera cînasa îştîqaq heye.

Tekrar an tekrîr jî yek ji wan huneran e ku Melâyê Cizîrî ji bo bihêzkirina mûsîqîya xwe zêde bi kar anîye. Melâyê Cizîrî hem di serê misrayan da hem di dawîya misrayan da û hem di nava misrayan da bêje yan komepeyv dubare kirîye.

*Cebhet û dêmê ji qudret lê nivîsî herfi herf
Kāgulān tā tā li ser herfān kişandî lām û lām* (MC 170-7)

Di malika jorîn da bêjeyên *ta ta* ji bo tekrara hundurê misrayan, *herfi herf* û *lami lam* jî ji bo tekrara dawîya misrayan mînak e.

*Te divê berq û birûskān bireşînî tu nezer de
Te divê roji xwiyā bit ji şubākê tu xwuyā be
Te divê zîr û zeber kî me du zulfān bide ber bā
Te divê qenci qiyāmet li me rābit bi xwe rābe* (MC 199-6,7)

Di herdû malikên jorîn da di serê misrayan da dubarekirina komepeyvên *te divê* hêzeke xurt dide mûsîqîyê ku guhdar an xwendevan çêjekê jê werdigire.

Pirs û bersîv, ku cûreyek tekrarê ye di seranserê helbestekê da neyê dîtîn jî di helbestek Melâyê Cizîrî da di gelek malikan da hatîye bikaranîn. Wekî di malika jêrîn da bêjeyên *min go û go*.

*Min go di şevān şubhê nucūmān bi tewāf īn
Go 'işwe dizānin bi çi qest ūhewes î tū* (MC 232-4)

Alîterasyon û asonans di mûsîqîya herfan da cihekî girîng digire ku Melâyê Cezerî bi serkeftî di malikên xwe da cîbicî kirîye.

*Der hāt û mest şubhā elest min dest bi dest dī cām di dest
Kāgul dibest tāyek verest vē rā şikest nīşān e qest* (MC 152-6)

¹⁸³ Ev niv malik bi tevahî 'erebî ye. Wate: Bi teqez dilê min pir ji ruxsara te hez kirîye.

Di malika jorîn da, di navbera herfên *a* û *eyê* da asonans û di navbera herfên *d*, *s*, *tyê* da jî alîterasyon pêk hatîye.

1.4.2 Asta Ferhengî

Zimanê dîwana Melâyê Cizîrî kurdî ye. Di dîwanê da bêje, misra û malikên bi zimanê 'erebî û farsî jî hatine bikaranîn. Bi vî şiklî di dîwanê da sê ziman tên dîtin. Bi bi kar anîna sê zimanan Melâyê Cizîrî dibe Mulemme'nûsê sê zimanî. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê helbestek ne bi kurdî ye. Helbesta bi metle'a¹⁸⁴ "يا رب اين يا نرگس رعنا است اين" (MC 171-172) dest pê dike bi farsî hatîye nivîsîn.

Di dîwanê da mulemme'ên tekûz werin dîtin jî bi giştî Mulememe'ên Melâyê Cizîrî ne tekûz in. Helbesta ku bi metle'a *Min di ber qāl û belā bāñin vi wê rā bû evîn* (MC 176-177) dest pê dike mulemme'ek sê zimanî û tekûz e. Di binyata xwe da ev helbest texmîs e. Şa'irekî bi navê Celâl mulemme'ek du zimanî (farsî- 'erebî) nûsîye û Melâyê Cizîrî jî ev helbest bi kurdî texmîs kirîye. Bi vî şiklî helbest bûye mulemme'ek sê zimanî. Şi'ra *Newāyā muṭrib û çenge fixān āvête xerçengê* (MC 15-17) mulemme'eke sê zimanî ye, lê bi pergala e. Ev şî'r tezmîna xezeleke Hâfîzê Şîrâzî ye ku Hâfîzê Şîrâzî jî, ji xezeleke 'erebî tezmîn kirîye. Di vê şî'rê da ji xeynê malika ku Hâfîzê Şîrâzî ji şa'irekî 'Ereb tezmîn kirîye û malikên Hâfîzê Şîrâzî yên farsî, Melâyê Cizîrî jî hin misra bi farsî û yek misra bi 'erebî tê da honandîye tevî malikên xwe yên kurdî. Bi vî şiklî bûye mulemme'eke sê zimanî ya netekûz. Herwiha şî'ra ku *Pur meke isrâfê di qetlê mubāh* (MC 86) da û şî'ra bi misraya *'Īd e û herkes ji dîdārā te lê pîroz e 'īd* (MC 98-99) dest pê dike jî mulemme'ên sê zimanî ne lê ne tekûz in.

Wekî di şî'ra *Muxbeçeyên meyfiroş* da, di hin şî'ran da tenê yek misra bi 'erebî hatîye nivîsîn. (MC 21-3) Di hinek şî'ran da niv misra bi 'erebî hatine nivîsîn, Wekî di şî'ra; *Çîn çîn kirin zulfên siyā* da. (MC 22-6) Di şî'rên mayîn da malik û misrayên 'erebî bi perakende hatine nivîsîn ku tu pergala ji bo wan nayê avakirin. Şî'ra ku bi *Nāzîkek min seherê dî bi cemālā xwe ne wek* dest pê dike, ji bo vê cureyê mînak e. (MC 157-158)

Divê were gotin di dîwana Melâyê Cizîrî da hinek bêjeyên ji zimanê Tirkî jî tên dîtin. Wekî mînak; *yol* bi wateya rê (MC 102-4), *Eslan* bi wateya şêr (MC 274-5), *Yox* bi wateya tune (MC 93-6), *Qûşçî* (MC 65-7) û hin bêjeyên din.

¹⁸⁴ Ev nîvmalik bi farsî ye. Wate: Xweda! Gelo ev qevdek ji gulana yan nergizek nazik e?

Şe'ban Çalî, di berhema xwe da amarekê ji bo zimanê bêjeyên dîwana Melâyê Cizîrî dide. Di vê amarê da bêjeyên dîwana Melâyê Cizîrî; ji %58,11 kurdî ne, ji %26,31 'erebî ne, ji %15,23 farsî ne û ji %0,33 jî bi zimanê Tirkî ne.¹⁸⁵ Li gorî vê amarê karîgerîya zimanê 'erebî ji zimanê farsî zêdetir xuya dike ku ev jî tesîra kultura Îslamê ye.

Di şî'rên Melâyê Cizîrî da bêjeyên kurdî yên ku di dema me da nayên bikaranîn tên dîtin. Wekî mînak;

Zêr û māl er çi nedêrim te didêrim ne feqîr im (MC 259-5)

Bêjeyên wekî; *didêrî, didêrit, didêrim û didêrîn*¹⁸⁶ bi wateya xwedîbûnîyê û bidestxistinê hatîye.

Kurtkirina bêjeyan, yek ji taybetîyên şewaza Melâyê Cizîrî dikare were hesibandin. Gelek bêje di şî'rên wî da hatine kurtkirin.¹⁸⁷ Di risteya; *Me ji nû xweş ke li ser çehvê şehîdên xwe bi meş û di malika Mā li min kî ne zerek luffê ji dil xemze ye yan da ke û kî kurtkirina bike û bikî ye.*¹⁸⁸ Melâyê Cizîrî ne tenê bêjeyên kurdî bêjeyên farsî jî kurt kirine. Di misraya; *Ko spêde li ferqê ser niha tac (MC 82-10)* da bêjeya niha/نه kurtkirina nihaden/نهان a farsî ye.¹⁸⁹

1.4.2.1 Asta Hevoksazîyê

Ji bo avakirina tesîra şî'rê, şa'ir, di hevokan da bi bêjeyan dilîzin. Hevok qad, û bêje jî amûrên lîstika şa'irî ne. Melâyê Cizîrî, ji bo tesîra fikr û ramanên xwe bigihîne muxatebên xwe, ji layê wate û rêziman va hevokên cuda ava kirîye. Bi giştî misra û malik li gorî pergala rêzimanê nehatine honandin, cihê hêmanên hevokê hatine guhertin, ji peşana nezmê dûr in. Di misraya jêr da pêveber û têrkerê cih guhertîye, tevî ku kirde "ez" jî veşartî maye.

Ji mābeynā du ebrūyān dibīnim qābê qewseyne (MC 292-1)

Hin malik bi tevahî bê pêveber hatine honandin. Şa'ir xwestîye ku xwendekar/guhdar bi xwe bigihêje mebesta şa'irî.

*Exterê iqbāl û mehê bircā bext
Mihr û sipihre kemer û text û tac (MC 83-5)*

¹⁸⁵ Çalî, شه‌عبان، شنیوازی شیعر جزیری، سپرئز، دهوک ۲۰۰۸، ۱۲۳.

¹⁸⁶ Di helbestên Baba Tahir da em rastî van bêjeyan tên.

دلی دیرم دلی دیوانه و دنگ نزونم مو که دیرم نام یا ننگ

Pêkane ku di dema Melâyê Cizîrî da ev bêje di nava gel da dihatin axaftin. (Çalî، ۱۴۳). Dibe ku Melâyê Cizîrî ji diyalekta Lorî sîd wergirtibe.

¹⁸⁷ Ji bo kurtkirin û sivikkirina hên bêjeyan bnr; ۱۲۱-۱۲۲، Çalî.

¹⁸⁸ Ebdusselam Cizîrî, r 370.

¹⁸⁹ Ebdusselam Cizîrî, r 234.

Di hin misrayan da hevok li gorî rêziman ava bûne û wate sergihayî bûye. Xasma di şîrên ku paşserwaya wan lêker in yan bêjeya serwayê lêker in û misra û malikên metle'ê, li gorî pergalên rêzimanê hatine honandin.

*Îro ji cemâlā te dilê min bi birîn e
Ellāh çi hebîbî çi tebîbî vikewîne (MC 219-1)*

Çawa ku di malika jorîn da wate di misrayê da tamam bûye û her misra li gorî rêziman ava bûye, di hin malikan da jî em vê taybetîyê dibinin.

*Seb'eyê seyyāre û neh çerxê sergerdān bi vê
Gerdiş û dewrê 'eceb der xidmet û karê te bî (MC 282-4)*

Melâyê Cizîrî di hevokan da bi bêjeyan dileyîze. Di vî warî da lîstikvanekî şareza ye. Di mînaka jêr de, di malikekê de pênc hevok li pey hev rêz kirîye. Ev hevok di eslê xwe da hevokên hevedudanî ne ku cureyek ji hevokên kompleks in. Carna, di avakirina hevoka kompleks da ji bo pevgirêdanê herfên reptê yan zerf nehatine bikaranîn. Ev derfet dide ku bi bihnokan çend hevokên hevedudanî yan hevokên serbixwe werin avakirin, wekî di nimûneya li jêr da.

*Şebê qedrê li me rewşen ke tu rûh î were xweş
Me ji nû xweş ke li ser çehvê şehîdên xwe bi meş (MC 128-1)*

Bêyî ku em tiştêkî li malikê zêde bikin, yan tiştêkî jê derxî, maalîk ji 5 hevokên serbixwe pêk hatiye.

Şebê qedrê li me rewşen ke. Tu ruh î. Were xweş. Me ji nû xweş ke. Li ser çehvê şehîdên xwe bi meş.

Di şî'ra ku bi metle'a; *Ey dil were weqtê mecāl dā kin senayā hindîyān* (MC 189-190) dest pê dike di çend malikan da heman şeweya bikaranîna hevokên kompleks tê dîtin.

Di hinek malikan da her nîv misra hevokeke serbixwe ye.

*Hin gulê bû 'enber in
Hin di şîrîn esmer in
Hin guherê dane yin
Mişlê Suheylê semā (MC 20-2)*

1.4.3 Asta Hizrî

Bi nêrînek giştî em helbestên Melâyê Cizîrî di binê sê sernavan da dikarin bicivînîn. Helbestên ku mijara wan 'îrfân e, helbestên ku mijara wan 'îşq e û

helbestên felsefî.¹⁹⁰ Bi vî rengî em dikarin helbestên Melâyê Cizîrî bi helbestên; 'ârifâne, 'âşiqâne û Felsefî kategorîze bikin.

1.4.3.1 Helbestên 'Ârifâne

Di xebatên li ser Melâyê Cizîrî da em dibînin ku bi tifaqa hemû lêkolîneran, di dîwana wî da, 'îrfân bi berfirehî cih girtîye. Ji van xebatan, xebatên Nesim Doru,¹⁹¹ Abdurrahim Alkış,¹⁹² Mîkaîl Tahir,¹⁹³ Şe'ban Çalî,¹⁹⁴ Mecîd Malik¹⁹⁵ wekî mînak dikare were dayîn digel hin gotarên vê mijarê û şerhên diwana Melâ.

'Îrfân, bi du rêyan tê bidestxistin. Yek 'îrfâna nezerî ye ku rêça 'ulemâ, hûkemâ û feylesofan e ku bi rêya zanistan, bi delîl û burhanan tê bidestxistin. Ya din 'îrfâna 'emelî ye ku bi rêya seyr û silûkê pakkirina dil e ku rêça enbîya, ewlîya û 'ârifan e û keşf û şihûdî ye. Ango pêkan e ku şexsek 'ârif be lê ne sofî be û pêkan e ku peyrevê terîqetekê be û ne 'ârif be.¹⁹⁶ Di dîwana Melâyê Cizîrî da hem nêrînên wî yên derbarê 'îrfâna nezerî û hem jî yên 'îrfâna 'emelî tînin.

Hin nêrînên Melâyê Cizîrî derbarê 'îrfân û tesewufê da wiha dikare were ravekirin. Seyr û silûk bê mehebbet û 'îşq pêk nayê (MC 229-8). 'ârif heta ji destê meyfroşî meyê nenoşe, nagihêje meqamê welayetê (MC 72-4). Murîd divê di emr û fermana murşidê xwe da be û haya sâlikî ji rê û rêçên seyr û silûkê hebe. (MC 16-3) Bêyî ku em van mînakan dirêj bikin têgihên tesewufî yên ne 'îstî'arî, çi têgihên derbarê 'îrfânê da wekî; cezbe, tecellî, ene'l-heq, ene'l-lah û çi têgihên keseyatên tesewufî wekî; sofî, sâlik, murşid, şêx, 'ârif, zâhid û wekî din di malikên Melâyê Cizîrî da ji bo mijarên 'îrfânê cih girtine.

¹⁹⁰ Li ser senifandina şî'rên Melâyê Cizîrî xebatên berfireh li ber çavê me neketin. Ayhan Tek di berhema xwe da şî'rên Melâyê Cizîrî di bine şex sernavan da di civîne; "*Dîwan, bi naverokeke zengîn ku ew jî 'eşq, 'îrfân, tesewwûf, hikmet, felsefe û rindîtiyê ve tijî ye bale dikêşit.*" (Tek, hb, r 31) Abdalbaki Turan dibêje xezelên Melâyê Cizîrî, 'âşiqâne, rindâne û hikemî ne. Ji bo xezelên rindâne jî pênaseyek wiha datîne: "*Ji wan xezelên ku meyê, zewqa meyê, hizrên derbarê meyê û çêjgirtina ji jîyanê tînen ziman ra xezelên rindâne tê gotin.*" (Turan, hb, r 272) Dema em li senifandina şî'rên Hâfizê Şîrâzî dinihêrên şî'rên rindâne ew şî'rên ku di wan şî'ran da rind, kesayetek e û di civakê da erkek mezin daye ser mile xwe ku li hember fesadî û xerabîya civakê tekoşînê dike. Li ser vê boçûnê me şî'rên Melâyê Cizîrî wekî şî'rên rindâne nehesiband.

¹⁹¹ Doru, M. Nesim, *Melâyê Cizîrî, Felsefî ve Tasavvufî Görüşleri*, Nûbihar, İstanbul 2016. Doru, M. Nesim, *Melâyê Cizîrî, Hakikat ve Mecaz Arasında bir Süfi'nin Portresi*, Nûbihar, İstanbul 2016.

¹⁹² Alkış, Abdurrahim, *Melâyê Cizîrî'nin Dîvanında Tasavvufî Mazmunlar*, Nûbihar, İstanbul 2014.

¹⁹³ طاهر، میکانل، الشیخ الجزری نهجه و عقیده من خلال دیوانه، سپیریژ، دهوک ۲۰۰۵.

¹⁹⁴ چالی، ر ۲۴۲-۱۹۸.

¹⁹⁵ الدوسکی، مجید مالک محمد، شعر التصوف بین الشیخ الجزیری و ابن الفارض، سپیریژ دهوک ۲۰۱۶.

¹⁹⁶ صورتگر، لطفعلی، تجلیات عرفان در ادبیات فارسی، انتشارات ابن سینا، تهران ۱۳۴۸، ص ۶۶-۷۶؛ مطهری، مرتضی، عرفان حافظ، انتشارات صدرا، تهران ۱۳۹۴، ص ۱۰-۱۷.

1.4.3.2 Helbestên 'Âşiqâne

'Işq, di wêjeyê da cihekî girîng digire û mijarek berfireh e. Di şî'rên sofegerîyê da 'işq mijara sereke ye. 'Işq û tesewuf/'irfân ji hevûdû nayê veqetandin, her bi hev ra meşîyane. Di felsefeya tesewufê da 'işq bingeha afirandinê ye. Ji ber vê peywendîyê hatiye gotin ku; 'irfân zaroka 'işqê ye û 'işq jî dayika 'irfânê ye.¹⁹⁷

Di berhemên edebî da 'işq bi sê cûreyan tê dîtîn. Wekî ku li jor di mijara helbestên 'âşiqâne yên Hâfizê Şîrâzî da amaje pê hate kirin; 'işq, yan cismanî yan rûhanî û yan 'irfânî ye. Bi senifandinek din 'işq; ya Ilâhî-'irfânî ye yan edebî-'ictîma'î ye û yan jî insanî-zemînî ye.¹⁹⁸ Di şî'rên Melâyê Cizîrî da 'işqa Ilâhî-'irfânî û 'işqa edebî-'ictîma'î tê dîtîn.

'Işqa Ilâhî di şî'rên 'âşiqâne yên Melâyê Cizîrî da temaya sereke ye. Wekî Ayhan Tek dibêje; *Cizîrî ne tenê wekî şa'irekî, herwisa wekî şêxekî/ârifekî di derbareyê 'eşqê de gotinên xwe gotine. Wî bi vî şiklî di dîwana xwe da felsefeya wê 'eşqê derbiriye.*¹⁹⁹ Melâyê Cizîrî, bi gotina ku dibêje *Pîrê 'işq in* (MC 98-1) û *muftiyê 'işq in* (MC 198-10) û herwiha di malika xwe ya ku dibêje; *Me cewher 'unsurek xâmis numa îro di tîlî* da (MC 223-1) 'işqê wekî hêmaneke pêncemîn di afirandina heyînan da dinasîne û felsefeya xwe di derbarê 'işqa Ilâhî da tîne ziman. Ji xeyrê malikên perakende helbesta; *bi husnâ ehseni't-teqwîm û zâhir sûretê zat î* (MC 241-243), helbesta; *Destê qudret ko hilâvêti ji bejna te niqab* (MC 52-53) û helbesta; *Ewwel ku yârê dâ me yek zerreyek 'inâyet* (MC 72-73) dikarin wekî mînakên helbestên 'işqa Ilâhî werin dayin.

'Işqa edebî- 'ictîma'î di gelek malik û helbestên 'âşiqâne yên Melâyê Cizîrî de xuya dike. Di şî'rên bi vî rengî da me'şûq bi cazîbe, xweşikahî û delalîya xwe di şî'rê da xuya nake. Di van şî'ran da me'şûq yan wenda ye yan jî bê şikl û sûret e. Hetta bê cism û cins e. Pîrî caran nayê famkirin bê nêr e yan mê ye.²⁰⁰ Di şî'rê da bêhn û rengê 'işqê heye lê me'şûq ne dîyar e. Wekî mînak helbesta bi *Çûme temâşâ çemen tâze gul û nesteren* (MC 118-121) û helbesta bi *Şimşâdê xerâm û serwê xennâc* " (MC 82) dest pê dike, dikarin werin dayin.

Melâyê Cizîrî her çend ji bo gihîştina 'işqa Ilâhî-'irfânî ('işqa heqîqî) 'işqa însanî-zemînî (meczâî) pêwîst bibîne jî em di dîwana wî da 'işqa însanî-zemînî

¹⁹⁷ صبور، داریوش، عشق و عرفان و تجلی ان در شعر فارسی، زوار، تهران ۱۳۴۹، ص ۲۸.

¹⁹⁸ خرماشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۱۱۷۶.

¹⁹⁹ Tek, hb, r 25.

²⁰⁰ خرماشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۱۱۷۶.

nabînin. Ji ber ku navê *Selmayê* di dîwana wî da derbas dibe (MC 99-5) hin kesan Selma wekî evîna wî nasandine.²⁰¹ Lazime were gotin *Selma* yek ji bûkên edebîyatê ye ku mecazen ji bo hemû me'şûqan tê bikaranîn.²⁰² Selma, di edebiyata 'erebî û farsî da²⁰³ bi firehî cih girtîye, çawa ku di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da (HŞ 315-2) jî tê dîtin.

1.4.3.3 Helbestên Felsefî

Di dîwana Melâyê Cizîrî da felsefe û bi taybet felsefeya tesewufê cihekî girîng digire. Tevî têgihên rasterast bi felsefeyê girêdayî wekî; *'eqil* (MC 42-3), *ustuqus* (MC 185-11), *cewher* (MC 223-1), *'illet* (MC 41-1) û têgihên bi felsefeya tesewufê girêdayî wekî; *wehdetê muşleq* (MC 21-5), *wehdetê şîrf* (MC 54-5), *'ilmê wehdet* (MC 49-7), *işrâq* (MC 197-5) û *nûra Eşmedî* (MC 42-2) di dîwanê da cih girtine.

Di şî'rên Melâyê Cizîrî da nêrînên wî yên felsefî yên epîstemolojîk cih bigirin jî²⁰⁴ bêtir giranî li ser nêrînên afirandina heyînê û gerdûnê ye. Di vî warî da menzûmeya *Ellâh sehergehâ ezel* (MC 35-51) bi tevahî li ser vê felsefeyê ava bûye ku ji 143 malikan pêk hatiye. Herwiha di guftûgoya bi Mîr û Feqî, helbestên ku bi *Hê di ber qâlû belâ belku ev 'âlem nebû* (MC 229-230), *Tu sehergeh bi temâşâ were bâzârê hudûş* (MC 79-80), *Sirrê wehdet ji ezel girtîye hetta bi ebed* (MC 96-97) û *Muhbetê mihnet di zor in* (MC 200-206) dest pê dikin, nêrînên Melâyê Cizîrî yê derbarê felsefeya tesewufê, mijarên zanista kalamê û rewşa wî ya me'newî tînin. Hejmara malikên van helbestên navborî ji sêsed û nodî (390) zêdetir in. Ji bilî malikên ku bi perakendeyî di şî'rên din da derbas dibin.

Bi pîrbûna helbest û malikên ku mijarên felsefî anîne ziman, ravekirina mijarên felsefî bi berfirehî, mirov bibêje Melâyê Cizîrî xwestîye bingehek felsefî ava bike ew ê ne îddî'ayek mezin be.

1.4.4 Asta Edebî

Melâyê Cizîrî, wekî hemû şa'îrên edebiyata klasîk, di şî'rên xwe da ji hemû 'unsûrên edebiyata klasîk; 'erûz, teşeyên nezmê, cûreyên rewanbêjîyê, mezmûn û têgihên edebiyata klasîk sûd wergirtîye. Em ê şî'rên Melâyê Cizîrî ji layê asta edebî va di bin sê sernavan da binirxînin.

²⁰¹ Resûl, hb. 59-67.

²⁰² خر مشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۸۸۳؛ خالقی، ص ۴۷۲.

²⁰³ Ji bo mînakên edebiyata 'erebî û farsî bnr; (مشختی، کامران نیبراهیم، سیمیلوژیای زمانی سوفیگری له (شعر مکانی مه‌لای جزیری دا، سپهریز، دهۆک ۲۰۱۱، ر ۲۵۶-۲۵۳)

²⁰⁴ Doru, *Melâyê Cizîrî, Felsefî ve Tasavvufî Görüşleri*, r 167-175.

1.4.4.1 Têkeliya 'Işq û 'Irfânê

Piştî ku xezel ji qesîdeyê veqetîya bi pêşengîya Senâyê Xeznewî 'irfân/tesewuf bû mijareke xezelan. Xwâcuyê Kirmânî, 'işq û 'irfân bi hev ra kir mijara xezelan ku piştî wî ev tradisyon bi kesayetên wekî Selmanê Sawecî, Nasir Buxarayî, Hâfizê Şîrâzî û Câmî berdewam kir. Melâyê Cizîrî jî li ser vê tradisyonê şî'rên xwe ava kirine. Di şî'rên Melâyê Cizîrî da 'işq bi hêmanên 'irfânî cih werdigirin.

Cihgirtina 'işq û 'irfânê bi hev ra di xezelan da encama felsefeya tesewufê ye. Bi gotineke din parastina hizra wehdetu'l-wucûdê ye. Di vê felsefeyê da serçemeya heyînan 'işq e û hemû tişt bi 'işqê hatîye afirandin û 'işq, asantirîn û kurtirîn rê hatîye hesabandin di tesewufê da ji bo gihiştina armancê.²⁰⁵ Şa'iran bi gelek sedeman ku yê herî girîng tênekirina zimanê rojane ye bi sembol û mecazan²⁰⁶ hizrên xwe di şî're da derbirîne. Bi vî rengî 'işqa Ilâhî tevî mijarên 'irfânî/tesewufî di helbestekê da cih digire ku Melâyê Cizîrî jî ev yek di dîwana xwe da pêk anîye.

Cudahîya navbera Melâyê Cizîrî û şa'irên navbêrî ev e ku Melâyê Cizîrî ne tenê di xezelan da di hemû teşeyên nezmê yên dîwana xwe da, wekî terkîb, musacele, musemetan da heman rewş pêk anîye.

1.4.4.2 Îhâm

Yek ji hunerên edebî, rewanbêjîyê ku Melâyê Cizîrî bi wê firehî daye peyv û malikên xwe hunera îhâmê ye. Û îhâm yek ji taybetîyên bingehîn yên şêwaza edebî ya Melâyê Cizîrî dikare were hesabandin.

Îhâm, çêjekê dide xwendekar an guhdar. Kedkenî vê çêjê wiha rave dike. *Lezzeta îhâmê ji vê derdikeve holê ku xwendekar ji wateya nêzik digihêje wateya dûr. Di rastîyê da li sere duryanekê sekinandîye. Di demekê da nizane ku ew ê kîjan rêye hilibijêre.*²⁰⁷ Divê were gotin ku dûrî û nêzîkî tiştêkî îzafî ye. Pêkan e wateyek ji bo kesekî dûr be û ji bo kesekî din nêzîk be. Ev jî bi asta zanebûn û têgihiştina xwendekarî va girêdayîye. Îhâm pirwateyîyê derdixe holê. Şa'ir li gorî qabilîyeta xwe bi îhâmê dikare çend wateyan li malikên xwe bar bike.

Melâyê Cizîrî di şî'rên xwe da bi sê şiklan ji hunera îhâmê sîd wergirtîye. Yek jê îhâma ku di berhemên belaxetê da derbas dibe û pir hindîk hemû şa'iran jê sîd

²⁰⁵ لاهوری، عبدالرحمان ختمی، شرح عرفانی غزلیهای حافظ، تصحیح و تعلیقات: بهاءالدین خرمشاهی، کورش منصور، حسین مطیعی امین، مجلد سوم، چاپ چهارم، نشر قطره، تهران ۱۳۷۱، ص، ۱۸۲۴.

²⁰⁶ Emiroğlu, İbrahim, *Sûfi ve Dil (Mevlana Örneği)*, İnsan yayınları, İstanbul 2010, s 150-177.

²⁰⁷ کدکنی، موسیقی شعر، ص ۳۰۷.

wergirtîye. Wekî di risteya; *Were bêperde Melā vê xezelê bîne meqām* (MC 160-8) de perde hem bi wateya qumaş an çîta di navbera tu tiştan da û hem wekî têgihek mûsîqîyê ku bi meqam ra hunera tenasubê ava dike. Bi herdû wateyan jî malik dikare were şîrovekirin û bi vî rengî malik du wateyî dibe.

Şiklê duyem îhâma xetî (nivîsê) ye. Di nivîsandinê da hin bêje li gorî nivîsê wateyê werdigirin. Wekî di malika *Ahi ji destê wê surê dil ji meyê hewâlê kir*" (MC 102-1) bêjeya *surê* hem bi şiklê *sirê* bixwînin ku wateya veşartinê dide û hem bi şiklê *surê* bixwînin ku wateya balkêşîyê dide. Malik li gorî herdû wateyan jî dikare were şîrovekirin.

Sûdwegirtina ji bêjeyên ku di zimanên cuda da wateyên cuda werdigirin şiklê sêyem yê îhâmê ye. Melâyê Cizîrî ji heman bêjeyê ku di kurdî da wateya wê cuda ye û di 'erebî yan farsî da wateyek din wergirtîye sûtê werdigire û bi vî rengî îhâmê ava dike. Wekî di vê malikê da: *Dā xef nebî bejnā ferê* (MC 19-10). Bêjeya *fer* di kurdî de tê wateya tek, tenê û bi farsî tê wateya ciwan û delal. Bi herdû wateyan jî malik dikare were şîrovekirin.

1.4.4.3 Dirêjbûna Xezelan – Pir Metle'î û Teşeyên Nezmê

Di dîwana Melâyê Cizîrî da ji teşeyên nezmê herî zêde xezel derdikeve pêşberî me. Di dîwanê da 108 xezel cih digire ku ji vî layî va Melâyê Cizîrî xezelnûs e. Di kevneşopîya edebiyata klasîk da çawa ku di berhemana de cih digire divê malikên xezelan di navbera 5-12 malikan da be.²⁰⁸ Di dîwana Melâyê Cizîrî da xezela herî biçûk ji 5 malikan ya herî dirêj ji 57 malikan pêk hatîye. Hejmara xezelên di navbera 5-12 malikan da hatine honandin 59 in. Ango 49 xezel dirêj in.

Xezelên Melâyê Cizîrî xezelên pir metle' in. Di xezelên wî da dudo, sê û çar metle' bi hev ra cih girtine. Wekî mînak em li xezela ku bi metle'a *Felekā eflēsê sergeşte di cāmā me hebāb e* (MC 197-199) binihêrin. Di vê helbestê da malika; *Ji hicabê were der nāzik ū mestāne bimeş tu* (MC 197-3) metle'a duyem e. Malika; *Dūredest in ji xiyālān me divê yek ji Xwudê rā* (MC 198-2) dest pê dike metle'a sêyem û malika ku bi *Me ji biskên tey girihdāri ji bextê xwe girî ne* (MC 199-5) dest pê dike metle'a çarem e.

Serwaya hundurîn wekî li jor hate gotin yek ji taybetîyên şewaza Melâyê Cizîrî ye. Serwaya hundurîn derfetê dide ku şîrên Melâyê Cizîrî bi çend teşeyan

²⁰⁸ شمپسا، سیر غزل در شعر فارسی، ص ۲۲۱؛ فسانی، منصور رستگار، انواع شعر فارسی، انتشارات نوید، شراز، ۱۳۸۰، ص ۵۱۰

werin nivîsîn û nav li wan werin kirin. Wekî mînak; helbesta *Şox û şengê zuhrerengê* (MC 187-187) hem wekî xezel, hemwekî qit'e û heme wekî terci'î bend dikare bê hesibandin. Di heman demê da helbesta *Yârê me pur nîşân û sur sîmâ ji dur dêm kewkeb e* (MC 217-218) hem wekî xezel, hem wekî qit'e û hem wekî dubeytîyên li pey hev (peyweste) jî dikare were nivîsandin û bi vî rengî nav li wan were kirin. Di hemû xezelên ku bi qalibên 'erûzê yên sâlim hatine honandin ev rewş xwuya dike.

1.4.5 Rewşa Sosyo-kulturî ya Serdema Melâyê Cizîrî

1.4.5.1 Rewşa Sîyasî

Cizîr, bajarekî kevnare ye. Zanyar û lêkolînerên dirokê, rabirdûya avabûna Cizîrê digihînin tofana Hezretî Nûh.²⁰⁹ Piştî hakîmîyeta Îslamîyete bi rêzê Emewî, 'Ebbasî, Tîmûr, Qaraqoyûnlû, Aqqoyûnlû, Sefewî û 'Usmânî li Cizîrî hukumranîyê dikin.

Di sala 1508ê zayînî Mîr Şerefê Duyem Cizîrê ji destê Aqqoyûnlûyan rizgar dike û mîrektîya xwe ava dike. Piştî Mîr Şerefê Duyem, Mîr 'Elî dibe Mîrê Cizîrê. Di vê demê de bajar di demekê de bikeve bin hakîmîyeta Sefewîyan jî, Mîr 'Elî, Cizîrê ji destê wan rizgar dike. Di encama têkilîya Îdrîsê Bitlîsî û Yawûz Sultan Selîm de wekî gelek deverên kurdnîşîn, Cizîr jî dikeve nav erdnîgarîya 'Usmânîyan.

Di bin hakîmîyeta dewleta 'Usmânî de Ruha û rojhilatê wê bi eyaleta Diyarbekirê va girêdayîbûn.²¹⁰ Cizîr û derdora wê her çend girêdayî bi eyaleta Diyarbekirê be jî rewşek, statuyeke wê ya taybet hebû. Di belgeyên 'Usmânîyan da ew rewş wiha hatîye ravekirin: *desthilat, li ser mulkiyetê dewleta xwe zevt û rept dike.*²¹¹ Ji vê tê famkirin ku Cizîr bi destê Mîran dihate îdare kirin û di şerên 'Usmânîyan û dewletên din da piştgirî dida Stenbolê.

Cizîr, ji ber pozîsyona xwe ya erdnîgarî, ji dewleta 'Usmânî ra hem navendeke lojîstîk bû û hem jî navendeke leşkerî bû. Tevî vê Mîrektîya Cizîrê hem di parastina sînorên 'Usmânîyan, hem di êrişên derva yên sînor û hem jî bi taybet di cengên rojhilat da cih digirtin. Mîrên Cizîrî, di sala 1583-1584an da, di sefera

²⁰⁹ Ergün, Zülküf, *Bajar-Edebiyat û Cizîra Botan*, Nûbihar, İstanbul 2014, r 77-78.

²¹⁰ Salihê Kurê Xan Budaq, *Dîroka Nijada Şêrwan (Dîroka Mîrekê Şêrwanê)*, Werger: Kerem Soylu, Enstîtuya Kurdî Ya Stenbolê, Stenbol 2004, r 5.

²¹¹ Göynük, Nejat, "XVI. Yüzyılda Güney-Doğu Anadolu'nun Ekonomik Durumu", *Türkiye İktisat Tarihi Semineri, Metinler/Tartışmalar*, Türk Tarih Kurumu Yayınları, Ankara 1975, s 83.

Rewanê, di sala 1585an da di sefera Tebrîzê, di sala 1638an da di sefera Bexdayê da piştgirî dane 'Usmânîyan.²¹²

Piştî stendina Bexdayê ji teref 'Usmânîya aşîti di navbera Dewleta Sefewî û Dewleta 'Usmânî da pêk hat. Bi vê aştiyê Cizîr ji erîşên Sefewîyan reha bû.²¹³ Eger çend serhildanên di navbera Mîrên Cizîrî da neyên hejmartin di serdema Melâyê Cizîrî da rewşeke sîyasî ya zêde aloz nayê dîtin.

Helbet hebûna îstîqrara sîyasî ji her alî va tesîrê li rewşa civakê dike. Herî zêde hebûna îstîqrareke sîyasî tesîrê li rewşa aborîyê dike ku ev jî bi xwe ra derfeta avabûn û berfirehbûna kultureke pêşketî tîne. Melâyê Cizîrî di serdemekê de jîyaye ku îstîqrara sîyasî têda heye. Ev di dîwana wî da xuya dike. Ji hebûna vê îstîqrara sîyasî ye ku di dîwana wî da medhîyeyên derbarê mîr û emîran da nayên dîtin ji xeyrî du qesîdeyan.

1.4.5.2 Rewşa Civakî

Cizîr, ji layê devera lê ava bûye û erdnîgarîya xwe herêmek bazirganîyê bû. Lewra bazirganî hem li ser reşayîyê û hem li ser avê, li ser çemê Dicleyê bi kelekan dihate kirin.²¹⁴ Bazirganîya Cizîrê li ser du rêyan ava bibû. Rêyek diçû Amedê û ji wir diçû Anadolê. Rêyek jî diçû Ruhayê û ji wir jî digihişt Heleb û Şamê.²¹⁵ Ji ber hindê Cizîr, hemû taybetmendîyên bajarên bazirganîyê di xwe da dicivand. Helbet ev rewş bandorek li rewşa civakî jî dikir. Cizîr, ji bilî bazirganîyê aborîya xwe bi çandina zad û fêkî, xwedikirina ajalan, pîşesazîyên cûrbecûr dabîn dikir.

Civaka Kurdan li ser 'eşîrtîyê hatibû avakirin. Serokê 'eşîrê axa an beg bûn. Bavik û qebîleyên girêdayî bi 'eşîrê di binê emr û fermanên axa û began da bûn. Ev yek dibû sedem ku di nava 'eşîrê da aramîyek derkeve holê.²¹⁶ Li Cizîrê jî heman rewş derbasdar e. Li Cizîr û bajarên din, gel di binê çar tebeqeyan da dikare were

²¹² Polat, Süleyman, "XVI. Yüzyılın İkinci Yarısı ve XVII. Yüzyılın İlk Yarısında Osmanlı Devleti'nin Doğu Seferlerinde Cizre'nin Yeri", *Tarih Araştırmaları Dergisi*, Yıl 2013, Cilt 32, s 249-263.

²¹³ Bilgin, Feridun, "Osmanlı Hâkimiyetindeki Cizre'de Siyasal Değişim ve Merkez-Çevre İlişkisi (XVI-XIX)", *Bilim Düşünce ve Sanatta Cizre, Uluslararası Bilim Düşünce ve Sanatta Cizre Sempozyumu Bildirileri*, Editör: M. Nesim Doru, Mardin Artuklu Üniversitesi Yayınları, İstanbul 2012, s 73.

²¹⁴ Yaşın, hb, r 278-279.

²¹⁵ Aslan, Nazim, *17. Yüzyılda Diyarbakır'da Tasavvufî Hayat*, Yüksek Lisans Tezi, Mardin Artuklu Üniversitesi, Sosyal Bilimler Enstitüsü, Tarih Anabilim Dalı, Mardin 2017, r 6- 33.

²¹⁶ طاهر، ۹۳.

senifandin. Tebeqeya mîr, beg û axayan, tebeqeya tucar û bazirganan, tebeqaya 'âlim, muderris û meşayixan û tebeqeya 'amê.²¹⁷

Di berheman da, derbarê zilm û sîtema Mîrên Cizîrê li ser gelên Cizîrî tiştek nayê dîtin. Bil'eks pesn û medhên mîran bi dadî û camêrî hatîye kirin. Wekî di Şerefnameyê da derbas dibe Mîr Xan Şeref yan Şerefxanê kurê Xan Ebdalê kurê Nasir Beg ku di serdema Melâyê Cizîrî da jîyaye bi merdîtîya xwe hatîye şibandin bi Xatemê Tayî, bi cengawerîya xwe hatîye şibandin bi Rustemê Zal.²¹⁸ Ji ber dadîya wî gel zêde jê hez dikir. Ev mîr tevî 'Usmânîyan li dijî Sefewîyan şer dike li derdora Tebrîzê. Heye ku navê Tebrîzê ji bo vê yekê derbas dibe di qesîdeya Melâyê Cizîrî da. (MC 283-1)

Li Cizîrî di serdema Melâyê Cizîrî da qedr û gramîya pîrekan xuya dike. Li Cizîrî ji bo jinan jî perwerdehî dihate dayin. Di hefteyê da rojek hatibû terxankirin ji bo jinên Cizîrê, di wê rojê da jin dihatin mizgeftê û melâyan we'zên dînî li wan dikirin. Hatîye gotin ku Melâyê Cizîrî jî di vê çalakîyê da peywir girtîye. Herwiha gelek ji bê exlaqîyên ku li şerqê berbelav bû ji bo jinên Kurdan û jinên Cizîrê nehatîye gotin.²¹⁹

1.4.5.3 Rewşa Kulturî

Medrese li nava Kurdan û herwiha di nava gelên rojhilat da di fêrbûn û perwerdehîyê da roleke mezin leystîye. Dîroka avabûna medreseyên rojhilat digihêje Nîzamulmulk. (w. 485-1092) Li Cizîrê *Medreseya er-Radevîyye* yek ji medreseyên yekem ku li rojhilat avabûna hatîye pejirandin.²²⁰ Avabûna vê medreseyê girîngîya Cizîrî dide ber çavan. Helbet ev girîngî ji ber pozîsyona Cizîrê ya erdnîgarî û bajarvanîya wê bû.

Bajarvanîyê bi xwe ra kultur, huner û zanist jî dianî ku Cizîr di vî warî da pêşketî bû. Medreseyên li Cizîrê hatine avakirin û zanyarên ku navê wan bi nisbeya *el-Cezerî*²²¹ dest pê dike nîşanên vê pêşketinê ne.

Hin bûyerên sîyasî çawa ku tesîrên mezin li rewşa kultura Îslamê û rojhilat kirîye, Cizîr jî wekî bajarekî rojhilat ji karîgerîya van bûyerên hewlenak reha nebûye.

²¹⁷ طاهر، ٩٤.

²¹⁸ Şerefxanê Bedlîsî, *Şerefname- Dîroka Kurdistanê*- Werger: Ziya Avcı, Weşanên Azad, Çapa Taybet, İstanbul 2014, r 186.

²¹⁹ طاهر، ٩٤.

²²⁰ Kavak, Abdulcebbar, *Cumhuriyet Döneminde Ağrı'da Tasavvuf*, İlahiyât Yayın, Ankara 2020, s 260

²²¹ Ji bo medrese û zanyarên Cizîrê bnr: (Yaşın, hb. r 117-482.)

Di êrîşa Hûlâgû da gelek berhem ji pirtûkxaneyên Bexda, Cizîr û Şamê hatine hinartine Meraxe²²² tevî gelek zanyar, hunermend û pîşesazan. Heman rewş di serdema Tîmûr jî dubare dibe, gelek berhem û zanyar birine Semerqendê.²²³ Ev herdû bûyer sedmeyek mezin li zanist û kulturê dixê.

Cizîr, wekî hemû deverên Îslamê di warê 'ilm û hunerê da bi sebeb van êrîşan bi paş dikeve. Mirov dişê bibêje eger ev herdû sedmeyên mezin nebûna Melâyê Cizîrî ew ê di rewşek cudatir da, li ser mîratek berfirehtir divana xwe ava bikira.

Li welatê Kurdan mizgeft û li kêleka mizgeftan hicreyên wan yekem cihê fêrbûnê bûn. Zarokên mîr, beg, axa û şêxan ji bo fêrbûna xwendin û nivîsandinê li wir li ber destê melâyan dixwendin.²²⁴ Ji Cizîrê heta Hekarî, Hîzan, Bedlîs, Sêrt, Mêrdîn û Amedê gelek medrese hebûn û xwendin di wan da dihate kirin. Li Cizîrê Medreseya Mîr 'Ebdal û Medreseya Sor,²²⁵ li Hîzanê Medreseya Mîr Dawût û li Bidlîsê medreseyên Xetîbîye, Şukrîye, Îdrîsîye û Ixlasîye ava bûn. Herwiha li Finikê jî medrese hebû.²²⁶ Em li Sêrtê jî bi hebûna medereseyekê agahdar in.²²⁷ Li Miksê Medreseya Mîr Hesênê Welî yan Medereseye 'Ebdalîye û li 'Îmadîyeyê Medreseya Qubehan jî dikare were hejmartin.²²⁸ Helbet divê medreseyên Colemêrgê jî neyên jibîrkin. Medreseya Mîr Zeynel Beg û Medreseya Meydanê²²⁹ ji wan in.

Di dema Melâyê Cizîrî da li Amedê tenê di qada perwerdehiya asta bilind da, di bîstî zêdetir medreseyan da perwerdehi didan.²³⁰ Wekî li jor derbas bû Melâyê Cizîrî li gundekî Amedê îcaza xwe ya îlmî wergirtîye. Ev jî nîşan dide ku ji bilî bajaran li gelek nevçe û gundan jî medrese ava bûn.

Beriya Melâyê Cizîrî di warê edebîyatê da çalakîyek tê dîtin. Beriya Melâyê Cizîrî di edebiyata kurdî da em rastî navê Şukrîyê Bidlîsî, 'Elî Herîrî, Hemîdî û Mîr Ye'qûbê Zîrkî tên.²³¹ Di serdema Melâyê Cizîrî da bi tenê hebûna Feqîyê Teyran û

²²² العيني، بدر الدين محمود، عقد الجمان في تاريخ أهل الزمان، دار الكتب والوثائق القومية، القاهرة ٢٠٠٩، ج ١، ص ٢٢٥.
²²³ هونكه، زيگر، فرهنگ اسلام در اوروپا، ترجمه: مرتضارهباني، انتشارات دفتر فرهنگ اسلامي، تهران ١٣٦٢، ص ١٥٩.
²²⁴ خه زنه دار، برگ ١، ر ٦٥.

²²⁵ Yaşın, hb, r 163-186.

²²⁶ Çiçek, Hasan Çiçek- Yılmaz, Hacı, "Gezgin Şair/Düşünür: Feqîyê Teyran", *Van Yüzüncü Yıl Üniversitesi Sosyal Bilimler Enstitüsü Dergisi*, Sayı 37, s 176.

²²⁷ Demlikoğlu, Uğur, "XVI. Yüzyılda Siirt'in Sosyo Ekonomik Durumu", *Journal of History Studies*, Volume 10 Issue 1 February 2018, , p. 61-84, s 81.

²²⁸ Aykaç, Yakub, "Miks: Navendeke Dîrokî, 'ilmî, Tesewifî û Edebî", *The Journal of Mesopotamian Studies*, Vol 7 (1) Spring 2022, r 76, ss 67-101.

²²⁹ Eminoğlu, Nevzat, "Medreseyên Kurdan Ji Destpêkê Heta Îro", *Anemon Muş Alparslan Üniversitesi Sosyal Bilimler Dergisi*, 3 (2) , r 207.

²³⁰ Haspolat, Yusuf Kenan, *Medreseyên Amedê*, Wergera ji Tirkî: Şivanê Dêrikî, e-pirtûk, 2015, r 37.

²³¹ Ertekin, Mehmet Zahir, "Dîwanên Wenda Yên Kurdî", *Nûbihar*, hejmar 157, sal 29, cild 25, payîz 2021, r 9.

Mîr 'Îmadeddînê Hekarî nîşan dide ku li Cizîr û derdora wê çalakîyên 'ilmî û edebî li ser bingehê kevnare ava bûye.

Ne lazime ku behsa Feqîyê Teyran were kirin. Em dizanin ku Mîr 'Îmadeddînê Hekarî bi mexlesa *Sebûrî*²³² şî'r honandîye û bi Melâyê Cizîrî ra Musacele gotîye.²³³ Herwiha li Amêdîyê Melâ Remezanê Ebbasî/Kirdikî jî şa'irekî xwedî dîwan e ku îro em nagihêjin dîwana wî.²³⁴

Li ser van agahîyên li jor hatin dayîn em dikarin bêjin ku Melâyê Cizîrî di bajarekî ji layê kultur, huner, zanistên dînî û 'ilmî da ku navenda rewşenbîrîyê bû hatibû dinê. Di derdora wî da û li deverê ku xwendina xwe lê kirîye gelek medrese û zanyar hebûn. Bi teqezî neyê zanîn jî, ji navê berhemên di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas dibin îşaretên bi bal xwendinek di asta bilind da dixuye. *Gulşenê Raz* a Şêx Mahmûdê Şebusterî *Hikmet'ul 'eyn* a Necmud-dîn 'Elî bîn 'Umer (600/675-678), *eş-Şifâ* û *el-Işârât* a Îbn Sîna (w.1037) wekî mînak dikare were dayîn.

²³² Doskî, Tehsîn Îbrahîm, *Baxê Îrem-Geşteş Li Nav Şî'ra Kurmancî ya Klasik*, Amadekar: M. Zahir Ertekin, Weşanên Dara, Diyarbakır 2020, r 17-26.

²³³ Temerxanê Yazîcî, *Mîrnameya Hekarîyan*, Wergera Ji Farisî: M. Xalid Sadînî, Peywend, Wan 2022, Berg 1, r 37.

²³⁴ Ertekin, hb, r 12; Doskî, hb, r 27-30.

BEŞA DUYEM

'UNSÛRÊN DÎNÎ DI DÎWANA HÂFIZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ DA

Edebiyata klasik ji alîyê naveroka xwe ve gelek dewlemend e. Vê dewlemendiya xwe ji çavkanîyên xwe yên hizrî werdigire. 'Unsûrên dînî û bi taybet 'unsûrên dînê Islamê yek ji bingehîn 'unsûrên edebiyata klasik e. Nav û sifetên Xweda, bîr û bawerîyên Islamê, berhemên pîroz yên semawî, pêxember û her çar xelîfeyên Islamê di binê 'unsûrên dînî da kom dibin.

Her çend bi nîrxandina 'unsûrên dînî em bigihêjin hinek bîr û bawerîyên şa'îrên edebiyata klasik jî, mebesta şa'îran bi tevahî ne ravekirina 'unsûrên dînî ye. Ji vê zêdetir mebesta wan bi van 'unsûran ragihandina hest û ramanan e. Bi gotineke dîn şa'îra 'unsûr û têgihên dînî ji bo fikr û ramanên xwe, xeyalên xwe bînin ziman 'emilandine.

Di vê beşe da, di serî da nav û sifetên Xweda, 'unsûrên 'îbadetê, bîr û bawerîyên Islamê û her çar xelîfeyên Islamê weke binbeş cih digire.

Ji nav û sifetên Xweda da yên ku di zanista kelimê, tesewufê û di edebîyatê da hevpar in tînin, weke Cemal. Di vê beşe da 'unsûr û têgihên bi vî rengî li gorî sîyaqa mijarê hatine nîrxandin.

2.1 Navên Xweda Yên Zatî

Ellāh (الله) (Xwedā (خودا), Āmurzigār (آمرزگار), Īzed (ایزد), Kirdigār (کردگار), Rebb (رب), Yezdān (یزدان), Bāxwê (باخوی), Īlāh (إله))

Xweda, hem bi navên xwe yê zatî, hem bi Esmāên Husna (navên herî xweşik) û hem bi sifetên xwe, di şî'rên Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da cih werdigirin. Di hizra herdû şa'îran da, hebûna Xweda bê şert û merc hatiye pejirandin. Xweda û têkilîya Xweda û kaînatê ne mijarên sereke ne. Têkilîya Xweda û afirandina 'işqê bêtir di şî'rên herdû şa'îran da cih digire. Ji ber vê Xweda, ji nêrînên dînî bêtir bi nêrînên felsefî û tesewufî derdikeve pêşberî me di şî'rên herdu şa'îran da.

2.1.1 Ellāh (الله)

Ellah, bêjeyeke 'erebî ye. Navê wî zatî ye ku hebûna wî mecbûrî ye û şayesteyê hemû pesindarîyan e.²³⁵ Lewra di bawerîya Îslamê da hemû kaînat û tiştên

²³⁵ التهانوي، محمد علي، كشاف اصطلاحات الفنون والعلوم، تقديم؛ رفیق العجم، مكتبة لبنان ناشرون، لبنان ١٩٩٦، ج ١، ص ٢٥٧.

hundirê kaînatê ji aliyê Xweda hatine afirandin.²³⁶ *Ellah*, navê Xweda yê herî meşhûr e. Hemû nav û sîfatên Xweda di xwe da dicivîne û Îsmê E'zem e.²³⁷ Ji ber vê jî hemû navên xweda ra *Navên Ellah* اسم الله tên gotin.²³⁸

Bêjeya *Ellah* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 38 caran derbas dibe. Ev bêje, bi piranî di malikên Hâfîzê Şîrâzî yên 'erebî de li ber çavan dikevin. Hâfîzê Şîrâzî, bi bêjeyên hevedudanî wekî ji bo spasîya Xweda *elḥemdū-lillāh* الحمد لله (HŞ 129-4; 620-1), Ji bo înkâr û tenzîhê *ḥāṣe li'l-lāh* حاش لله (HŞ 404-4; 440-2; 522-4), ji bo poşmanîyê *estexfiru'l-lāh* استغفر الله (HŞ 620-4; 621-4), bi bêjeyên sondê wekî *we'l-lāhi* والله (HŞ 632-1; 648-8), *bi'l-lāhi* بالله (HŞ 717-5) bêjeya *Ellah* di malikên xwe da derbas kirîye. Wekî di malika jêr da ji bo matmayîn û ecêbmayînê jî navê *Ellah* tê dîtin.

دل بسی خون به کف آورد ولی دیده بریخت الله الله که تلف کرد و که اندوخته بود

Dil, gelek xwûn bi dest xist û berhev kir, lê çav hemû rijand. Ecêb! Kê bi asanî hemî telef kir û kê bi zehmetê berhev kir? (HŞ 346-6)

Di şîrên Melâyê Cîzîrî da bêjeya *Ellah*, 28 carî derbas dibe. Ji bo sondxwarinê *we'l-lāhi* والله (MC 134-1) were dîtin jî bêtir ji bo heyret û matmayî bûnê peywîrê digire. *Ellah*, şeş caran bi şîklê fer (MC 89-9; 219-1; 262-10; 270-6; 298-7; 298-9) û heft caran bi şîklê cot; *Ellāh Ellāh* (الله الله) (MC 54-8, 80-4; 117-4, 139-8, 197-7, 252-3, 262-4) 'ecêbmayîn û matmayînê tîne ziman. *Ellah*, serçeşmeya xweşikahîyê ye. Çi dema ku *Ellah* qetreyek ji nûra xwe ya berdewam û bêdawî dide Melâ, ew di wê da remzek wusa şîrîn dibîne ku her tim bêhiş dimîne. (MC 101-3) *Ellah*, di ezel de 'îşqê dike para hin kesan. Ji bo dile 'âşiqan bi 'îşqê talan bike xal û xetên bêhnxeş afirandîye. Melâ vê nêrîna xwe ya tesewufî wiha anîye ziman.

Ellāh di ber qālūbelê dā yexme kit qelbê Melê
Avête çerxê cedwelê evrenge 'enberbārî xet (MC 137-6)

2.1.2 Xudā (خدا), Xwedā (خودا), Xwedê (خودی), Xudāwend (خداوند), Xudāwendigār (خداوندگار)

Xuda, bêjeyek farsî û kurdî da bêjeyek hevpar e. *Xuda*, yanî ji xwe hatîye wucûdê. Bi vê wateyê wekî *Ellah*'a 'erebî navê afirînerê hemû aferîdeyan û hakimê

²³⁶ *Qur'āna Pîroz* En'am 101.

²³⁷ Navê Xweda yê herî mezin.

²³⁸ الغزالي، أبو حامد محمد بن محمد، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، دار ابن حزم، بيروت لبنان، ٢٠٠٣، ص ٦١.

hemû kaînatê ye. Kurdîya wê *Xwedê*, *Xweda* ye.²³⁹ *Xudawend* û *Xudawendigar* tê wateya malik (xudan), sahib (xwedî), padîşah, Xuda û Ellah.²⁴⁰ Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da çar caran *Xudawendigar*, 8 caran *Xudawend* û 144 caran *Xuda* derbas dibe.

Nêrînên Hâfîzê Şîrâzî derbarê *Xweda* da nêrînên misilmanekî ji rêzê ye. Wekî li jêr ew ê were dîtîn nêrînên wî mefhûmê ayet û hedîsan in.

Hemû zehmetîyên ku tên kişandin û hemû asayîşa mirov digihêjê ji teref *Xweda* ne. (HŞ 310-4) Hemû kar divê bi *Xweda* were sipartin û dilê xwe aram bike. (HŞ 311-5) Hemû qencî û başî (xêr) yên bi dizî tên kirin divê ji bo qaîlbûna *Xweda* be. (HŞ 3245-11) Hemû rewşên ku însan tê re derbas dibin, di bin zanîna *Xweda* da ye. Ji ber vê divê mirov xemê nexwe. (HŞ 407-9) *Xweda*, pir dilovan û bi merhemet e, ji ber hindê divê mirov her dem li benda rehma *Xweda* be. (HŞ 434-3) *Xwedawendigar* bi lutf û bexşandina xwe ew ê di gunehê me da bibore (HŞ 435-7) lewra, lutfa *Xweda* ji cirmên me mezintir e.²⁴¹ (HŞ 446-5) Kesên tima û xesîs ji *Xweda* dûr in.²⁴² (HŞ 637-9)

Hâfîzê Şîrâzî, me'rîfeta *Xweda* dişîbîne deryayê û navê *Behra Xweda* lê dike. Ew kesê bikeve deryaya me'rîfeta *Xweda* di nav heft deryayên dinyayê ('âlema maddî) yên mezin de serê mûyekî wî jî şil nabe.

یک دم غریق بحر خدا شو گمان مبر
کز آب هفت بحر به یک موی تر شوی
Yek kêlik noqî behra Xweda bibe û bêguman wê ava heft behra jî serê mûyekî te şil neke. (HŞ 717- 6)

Eger kesek di rêya *Xwedayê* mezin da fânî (tune) bibe ji serê xwe heta nigê xwe ew ê bikeve nava nûra *Xweda*.

از پای تا سرت همه نور خدا شود
در راه ذوالجلال چو بی پا و سر شوی
Çi dema tu di riya Xwedayê Zu'l-Celâl da xwe tune bikî serapa wucûda te ew ê noqî nûra Xweda bibe. (HŞ 717- 7)

Ji bo kesek bibe 'ârif, yan bikaribe 'âlema me'nayê derk bike pêwîst e tenê qaîlbûna *Xweda* ji xwe ra bike armanc.

²³⁹ دهخدا، ج ۶، ص ۹۵۵.

²⁴⁰ معین، فرهنگ معین، ج ۱، ص ۶۱۷.

²⁴¹ Lutfa *Xweda* ji cirmên me mezintir e, mefhuma Hedîsê ye ku dibêje "rehmeta Min xedeba Min derbaskirî ye." Bnr: ez-Zebîdî, Ahmed b. Ahmed, *Sahîh-i Buhârî Muhtasarî Tecrîdî Sarîh Tercemesî ve Şerhî*, Mutercim: Kâmil Miras, Diyanet İşleri Başkanlığı Yayınları, on ikinci Baskı, Ankara 1993, Cilt 12, s 420.

²⁴² Dûrbîniya kesên tima û bexîl di Hedîsê da wiha derbas dibe: "Bexîl, dûr e ji *Xweda*, dûr e ji însana, dûr e ji bihiştê, nêzîk e ji agir ra." Bnr: (البيهقي، أبو بكر أحمد بن الحسين بن علي، الجامع للشعب الإيمان، مكتبة الرشد، (رياض ۱۳۲۳، ج ۱۳، ص ۲۹۲)

وجه خدا اگر شودت منظر نظر زین پس شکی نماند که صاحب نظر شوی
*Eger tenê gav avêtin di rêya Xweda û qaîlbûna Xweda ji te re armac be, bê
şik, ji vê pê ve tu yê bibî xwedî besîret.* (HŞ 717- 8)

Di şî'rên Melâyê Cizîrî da *Xweda* û *Xwedê* bêtir ji bo sond xwarinê, (MC 167-5; 266-5), heyret û matmayîbûnîyê (MC 153-6) û alîkarî xwestin bo xatirê *Xweda* (MC 198-2) di malikan da cih werdigirin.

Di malikekê da piştgirêdan û xwesipartina bi *Xweda* (tewekkul) cih girtîye. Ji layê wateya malikê ya zâhirî va bîr û bewrîya dînê Îslamê tîne ziman. Qur'âna pîroz di derbarê tewekkulê da dibêje; *Ew kesên ku dixwazin piştta xwe qewîn bikin bila tenê bi Xweda qewîn bikin.*²⁴³ Malika Melâyê Cizîrî jî heman vê wateyê bi bîr tîne.

*Piştî nâdin du hezâr xencer û tîr û rim û xişt
Me serî dānîye rê û bi Xwedê bestîye pişt* (MC 261-7)

Ji bo tiştên ku *Xweda* dide mirov minnet, hemd û spasîya *Xweda* tê kirin. Melâ jî ji bo ku *Xweda* xema 'îşqê daye wî minnetê ji *Xweda* dike.

*Minnet ji Xwedā yî ku bi 'ebdê xwe Melāyî
Iksîrê xemê 'îşqê ne dînār û direm dā* (MC 19-3)

2.1.3 Āmurzigār (آمرزگار)

Navê *Xweda* ye. Bi wateya gunehjêbir *Xāfir*- غافر, ew ê li gunehkarî dibore. *Xefûr*- غفور, yê ku gelek gunehan jê dibit ji *Xeffār*- غفار hatîye.²⁴⁴ Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da tenê carekê derbas dibe.

Li gorî Hâfîzê Şîrâzî, ji bo bexşandin û dilovanîya *Xweda* pêk were divê giramî û rûmetek guneh û şaşîyên însan hebin. Yanî divê însan şaşî û guneha bikin ji bo ku bexşandin û dilovanîya *Xweda* pêk were.

سهو و خطای بنده گرش اعتبار نیست معنی عفو و رحمت آمرزگار چیست

*Eger guneh û şaşîyên însan li ba Xweda bê erziş bin, vêca wateya bexşandin
û rehmeta Āmurzigâr çi ye?* (HŞ 144-7)

Āmurzigâr di şî'rên Melâyê Cizîra da jî tenê carekê derbas dibe. Di malikê da bexşandina gunehan bi rehmeta *Āmurzigâr* û şefqeta *Xwedayê Xeffâr* va hatîye girêdan.

*Xerqê deryâyê gunāh in teşneyê lutfā heq in
Rehmetā āmurzigār û şefqeyê xeffārî bes* (MC 125-3)

²⁴³ Qur'âna Pîroz, Maîde 11.

²⁴⁴ دهخدا، ج ۱، ص ۲۱۰.

2.1.4 Îzed (ایزد)

Îzed, di ferhengan da bi wateya firişte, melekan e. Di dînê Zerduştîyan da navê hinek melekan e ku Ahûremazda serokê wan e. Ev bêje di zimanê pehlewî da *Yezd* e û pirjimara wê *Yezdân* e. Di zimanê farsî de *Îzed* e. Hem di zimanê pehlewî û hem di zimanê farsî da ne bi wateya firişte bi wateya Xweda, Aferîdegarê giştî cih girtîye.²⁴⁵

Îzed, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da neh caran bi wateya aferîdegarê dunyayê derbas dibe û di van malikan da bêtir spasîya *Xweda* tê kirin.

شکر ایزد که میان من و او صلح افتاد صوفیان رقص کنان ساغر شکرانه زدند
Spas ji Îzed ra ku di encamê da di navbera min û wî/wê da aşîti çêbû û softîyan ji bo pîrozahîyê şerab vexwarin û şadî kirin. (HŞ 308-1)

Îzed, di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe.

2.1.5 Kirdigâr (کردگار)

Di ferhengan da bi wateya kesê pir kiryanan dike, bi kar hatîye. Navek ji navê *Xweda* ye ku bi piranî di wateya Aferînde, Afirînerê cîhanê, Aferîdegar û Perwerdegar hatîye.²⁴⁶ Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da sê caran derbas dibe û yek ji navê *Xweda* ye.

زاهد شراب کوثر و حافظ پیاله خواست تا در میانه خواسته کردگار چیست
Zâhid, şeraba kewserê û Hâfîz şeraba 'işq û mihebbetê xwest. Ka em bibinin xwestek û îradeya Kirdigâr çî ye? (HŞ 144-8)

Peyva *Kirdigâr* di şî'rên Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. *Kirdigâr*, ew *Xweda* ye ku îrade û îxtîyarî di destê wî da ye.

*Ew bû mirādā Kirdigār
Lew kir îradew ixtiyār* (MC 40-1)

2.1.6 Rebb (رب)

Wateya *Rebb* ya eslî şerde, terbiye û xwedîkirin e. Ev jî tê wateya hêdî hêdî avakirina tiştê heta ku digihêje asta kemalê. Ev bêje bi tena serê xwe ji bo wî *Xwedayî* tê bikaranîn ku meslehata heyînan diparêze.²⁴⁷ Bêjeyek Qur'ânî ye. Li gorî Qur'ânê terbiyekiroxê hemû 'âleman *Rebb* e.²⁴⁸

²⁴⁵ دهخدا، ج ۳، ص ۳۷۰۹؛ معین، فرهنگ معین، ج ۱، ص ۲۱۸.
²⁴⁶ دهخدا، ج ۱۲، ص ۱۸۳۵۴.

²⁴⁷ el-İsfehani, Rağib, *Mufredât-Kur'an Kavramları Sözlüğü*, Tercüme: Abdülbaki Güneş-Mehmet Yolcu, Çıra Yayınları, 3. Baskı, İstanbul 2012, s 407.

²⁴⁸ *Qur'âna Pîroz*, Fatîha 2.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 51 caran bi herfa nidayê ya لى û carekê jî bi tena serê xwe cih girtîye. Bi giştî ji bo heyret û matmayîbûnîyê (HŞ 98-5, 99-1, 128-6, 148-1) û laveyan di malikan da peywir girtîye. Di malika jêrîn da Hâfizê Şîrâzî ji bo pejirandina du'ayên xwe wiha dibêje;

حافظ وصال می طلبد از ره دعا یا رب دعای خسته دلان مستجاب کن

Hâfiz, bi rêya nîyazan gihaştina yarê daxwaz dike. Ya Rebb! Laveyên kesên dilşikestî bipejirîne. (HŞ 593-8)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da 13 caran bi herfa baneşanê hem ji bo metelmayîn û heyretmayînê (MC 32-3; 32-6; 126-2; 169-5) û hem jî ji bo laveyan cih girtîye. Melâyê Cizîrî ji bo gihiştina yara xwe wiha laveyan dike;

*Yâ Reb bi dîdârâ xwe kî
Min Waşilê yârâ xwe kî* (MC 281-5)

2.1.7 Yezdân (یزدان)

Yek ji navên *Xweda* ye. *Yezd*, *Îzed* û *Yezdân* ji yek raderê tên. Bi wateya pak û pîroz û şayesteyê pesn e.²⁴⁹ Di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da tenê di vê malike da tê dîtin:

دامن دوست به دست آرزو ز دشمن بگسل مرد یزدان شو و فارغ گذر از اهرمنان

Bi dawa dosta bigire û xwe ji dujminan dûr bike. Bibe zilamê Yezdân ji bo ku tu ji nebaşîyên Şeytân reha bibî. (HŞ 582-7)

Yezdân, di şî'rên Melâyê Cizîrî da derbas nabe.

2.1.8 Bâxwê (باخوی)

Di wateya ferhengî ya vê bêjeyê da çend nêrîn hene. Li gor Melâ 'Ebdusselamê Cizîrî bi wataye serokê gund û êlê, mîr e.²⁵⁰ Li gorî Melâ Ehmedê Zivingî, bi wateya xwedî ye.²⁵¹

Bâxwê, di şî'rên Hafizê Şîrâzî da derbas nabe.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da çar caran derbas dibe.

*Bende ê Bâxwê bivêt dê meyli sîm û zêr nekit
Dâ 'eṭ'âyâ pâdişâhân bêhed û ijmarî bit* (MC 65-8)

2.1.9 Ilâh - Ileh (إله - إله)

Ilâh-Ileh, Bêjeyek 'erebî ye yan ji suryanî ketîye zimanê 'erebî nedîyar e.²⁵² Her tişt û kesên ku 'îbadet jê ra tê kirin *Ilâh* e. Yanî her kes ji çî ra 'îbadet bike Ilâhê

²⁴⁹ دهخدا، ج ۱۵، ص ۲۳۷۶۷.

²⁵⁰ Ebdusselam Cizîrî, *Şerha Dîwana Melâyê Cizîrî*, r 101.

²⁵¹ الزفنگي، ج ۱، ص ۵.

wî ew e. Pirjimara wê *Ālihet* ²⁵³ Di Qur'âna pîroz da hem ji bo Xweda²⁵⁴ û hem ji bo tişt û kesên ku îbadet ji wan ra tê kirin hatîye bikaranîn.²⁵⁵ Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Ilâh*, Xweda ye û sê caran derbas dibe. Hemû tiştên ne li ber çavan in, sir û razê *Ilâhî* ne û tu kes wan nizane. (HŞ 285-9) Hemû zanayî, zanîn û hikmet ji teref Xweda tên dayîn. (HŞ 720-1) Lutf û înayeta *Ilâhî* her tim karê xwe dike û firişte jî ji lutfa *Ilâhî* mizgînîya rehmetê radigihîne.

لطف الهی بکند کار خویش مژده رحمت برساند سروش

Lutfa Ilâhî di encamê da karê xwe dike û firişteyên xeybê mizgînîya bexşandinê radigihînin. (HŞ 446-2)

Ilâh, di dîwana Melâyê Cizîrî de şeş caran derbas dibe û *Ilâh* heman Xweda ye ku di bawerîya Îslamê da cih girtîye. 'Işq, wekî dojhê behrek tijî agirê *Ilâhî* ye. (MC 32-5) Ew Cemâla pak û pîroz ku sirrek Subhânî ye û ketîye qalibê mirovî bi îlhameke *Ilâhî* tê zanîn (MC 252-7) Di encamê da mÂdem mirin heye, pêwîst e rêça şerî'etê were meşandin, terka emrê Xweda neyê kirin. (MC 190-4.) *Ilâh*, di şî'rên Melâ da ji bo laveyan jî cih girtîye wekî malika jêrîn:

Ilâhî nêrgizâ mey mest û nâzik
Ji destê xwâr û bedxwâhân bipârêz (MC 115-8)

2.1.10 Berawird û Nirxandin

Tablo 3: Navên Xweda yên Zatî

| Rêz | Navên Xweda yên Zatî | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|----------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Ellah | 38 | 0,797 | 28 | 1,237 |
| 2 | Xwuda | 156 | 3,272 | 20 | 0,883 |
| 3 | Âmurzigâr | 1 | 0,021 | 1 | 0,044 |
| 4 | Îzed | 9 | 0,189 | 0 | 0,000 |
| 5 | Kirdigâr | 3 | 0,063 | 1 | 0,044 |
| 6 | Rebb | 52 | 1,091 | 13 | 0,574 |
| 7 | Yezdân | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 8 | Bâxwê | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 9 | Ilâh | 3 | 0,063 | 6 | 0,265 |
| Giştî | | 263 | 5,517 | 70 | 3,092 |

²⁵² التهانوي، ج ١، ص ٢٥٨.

²⁵³ دهخدا، ج ٣، ص ٣٢٨٢.

²⁵⁴ (وَالْهَيْكَلُ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ) *Ilâhê we Îlâhekî tenê ye. Ji vî pê tu ilâh tune ye. Ew Rehmân û Rehîm e.* (*Qur'âna Pîroz*, Beqer 163.)

²⁵⁵ (أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا) Ma ji bo wan tu ilâh hene ku wan biparêzin. (*Qur'âna Pîroz*, Enbiya 43.)

Navên Xweda yên zatî di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi 8 cûreyan cih digirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da bi 7 cûreyan cih digirin. Ji alîyê hejmara navan, Hâfizê Şîrâzî bi yek navî di pêşîya Melâyê Cizîrî da ye. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 8 navên Xweda yên zatî 263 caran, di dîwana Melâyê Cizîrî da 7 navên Xweda yên zatî 70 carî derbas dibin. Rêjeya navên Xweda di dîwana Hâfizê Şîrâzî da %5, 517 ye û di dîwana Melâyê Cizîrî da %3,092 ye. Hem ji alîyê bikaranîna navan û hem ji alîyê rêjeyê ferqek mezin di navbera herdû şa'iran da derdikeve holê ku Hâfizê Şîrâzî li pêş e. Ev, ferqek sereke ye.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Îzed* û *Yezdân* cih digire, lê ev herdû nav di dîwana Melâyê Cizîrî da cih nagirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Bâxwê* cih girtîye, lê ev nav di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nehate dîtin. Bi vî şiklî du navên ku Hâfizê Şîrâzî tercîh kirîye di dîwana Melâyê Cizîrî da û navek ku Melâyê Cizîrî tercîh kirîye di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe.

Ji navên Xweda yên zatî, 6 nav; *Ellah*, *Xwuda*, *Amurzîgar*, *Kirdigâr*, *Reb* û *Îlâh* di dîwanên herdû şa'iran da hevpar in. Lê tercîha herdû şa'iran li ser hejmara bi kar anînê ne wekî hev in. Hâfizê Şîrâzî, di rêza yekem da bi hejmara 156 û bi rêjeya %3,272 cih daye *Xwuda*. Di rêza duyem da bi hejmara 52 û bi rêjeya %1,091 cih daye *Reb* û di rêza sêyem da bi hejmara 38 û bi rêjeya %0,797 cih daye *Ellah*.

Melâyê Cizîrî di rêza yekem da bi hejmara 28 û bi rêjeya %1,237 cih daye *Ellah*, di rêza duyem da bi hejmara 20 û bi rêjeya %0,883 cih daye *Xweda* û di rêza sêyem da bi hejmara 13 û bi rêjeya %0,574 cih daye *Reb*. Ev jî ferqek din e di tercîha ser bikaranîna navên Xweda. Ji vê tê famkirin ku Hâfizê Şîrâzî di rêza yekem da zimanê farsî tercîh kirîye û cih daye *Xweda*. Melâyê Cizîrî, hizrek wusa nekirîye û navê *Xweda* yê eslî ku bi 'erebî *Ellah* e xistîye rêza yekem. Ev ferqa tercîha ziman e ku di dîwanên herdû şa'iran da tê dîtin.

Ellah, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di rêza sêyem da û di dîwana Melâyê Cizîrî da di rêza yekem da cih digire. Ji alîyê hejmaran va ev ferqek sereke ye di navbera herdû şa'iran da. Ji alîyê hejmaran va Hâfizê Şîrâzî bi 38 hejmaran li pêşîya Melâyê Cizîrî (28 hejmar) xuya bike jî rêjeya Melâyê Cizîrî; %1,237 ji rêjeya Hâfizê Şîrâzî; %0,797 zêdetir e.

Ellah, di dîwana Herdû şa'iran da bi heman bikaranînan cih digire. *Ellah*, ew *Xweda* ye ku di bawerîya Îslamê da cih digire. Ev xalek hevbeş e di navbera herdû şa'iran da. *Ellah*, di malikên herdû şa'iran da ji bo sondxwarinê, ji bo te'eccub û

heyirandinê û bi bêjeyên hevedudanî wekî; *Haşelîllah, Barekellah* cih digire. *Ellah*, di dîwana herdû şa'iran da ji bo fikr û ramanên dînî cih nagire. Ji vê tê famkirin ku nêrîna herdû şa'iran di derbarê *Ellah* da nêrîneke misilmanekî ji rêzê ye. Ev xal jî xaleke hevpar e. Tenê em dikarin vê bibêjin ku Hâfizê Şîrâzî bêtir di malikên xwe yên 'erebî da cih daye *Ellah*. Ev xal, ferqa herdû şa'iran e.

Xweda, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di rêza yekem da; 156 car û di dîwana Melâyê Cizîrî da di rêza duyem da; 20 caran cih digire. Ev ferqa sereke ye di navbera herdû şa'iran da. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Xudawendigar* û *Xudawend* jî cih digire ku di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Ev jî ferqeke din e di navbera herdû şa'iran da. Ji aliyê watedarkirinê *Xweda*, di dîwanên herdû şa'iran da heman *Xweda* ye. Derbarê *Xweda* da nêrîneke felsefî yan kelimî nayê dîtîn. Di heman demê da *Xweda*, di dîwana herdû şa'iran da wekî *Ellah* ji bo sondxwarin û heyretmayîne jî cih digire. Ev herdû xal jî xalên hevpar in. Ferqa sereke ev e ku Hâfizê Şîrâzî ji Melâyê Cizîrî bêtir bîr û baweriyên xwe bi zimanê dayêkê anîye ziman. Ji ber hindê ye ku hemû navên din bikevin ser hev; 107 caran, hejmara wan nagihêje navê *Xweda*. Ji ber ku navê *Xweda* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da zêde hatiye bikaranîn, di dîwana wî da hinek nêrînen wî yên dînê Îslamê zêde werin dîtîn jî, nêrînen herdû şa'iran heman hizrên Îslamî ne. Ev xal jî xaleke hevpar e.

Herdû şa'iran di dîwana xwe da carekê *Âmurzigâr* derbas kirîye. Ev xaleke hevpar e. Herdû şa'iran jî di malikên xwe da wateya *Âmurzigâr* ya istilahî dane ber çavan. Di nêrîna herdû şa'iran da *Âmurzigâr*, ew *Xweda* ye ku gunehan dibexşîne. Û ev nêrîneke Îslamî ye ku di hizra herdû şa'iran da wekî xaleke hevpar cih girtîye.

Îzed, yek ji wan navên *Xweda* ye ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas dibe, lê di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe. Ev ferqa sereke ye ji aliyê bikaranîna navê *Xweda*. *Îzed*, bingeha xwe ji bawerîya Zerduştîyan digire. *Îzed*, wekî gelek bêje û îstîllâhên din ji dînê Zerduştî ketîye edebiyata farsî. Hâfizê Şîrâzî, ji vê kevneşopîya edebiyata farsî sûd wergirtîye. Ev jî bi me dide zanîn ku Hâfizê Şîrâzî xwestîye ji hemû aliyên edebiyata farsî sûd werbigire. Yek ji xalên ku Hâfizê Şîrâzî derdixê pêş ev sûd wergirtin e.

Kirdigâr, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da sê caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê carekê derbas dibe. *Kirdigâr*, di dîwana herdû şa'iran da jî yek ji wî navê *Xweda* ye ku îrade û îxtîyarî di destê wî da ye. Ji aliyê bikaranîna hejmarî ferqek xuya bike jî, ji aliyê wateyê wekhevîyek tê dîtîn.

Reb, di dîwana Hâfizê Şîrazî da 52 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 13 caran derbas dibe. *Reb*, bêjeyeke sivik e. Ji ber vê sivikbûnîya wê di axaftina rojane da ji bo laveyan, heyretmayîn û 'ecêbmayînê di zimanê misilmana da cih girtîye. Heman bikaranîn di edebîyatê da jî cihê girtîye. Şa'iran di şî'rên xwe da *Reb*, ne bi wateya ferhengî ku terbiyekirox e, bi bikaranîna di nava gelê Misulman wekî Misulmanekî ji rêzê xistine şî'rên xwe. Di dîwana herdû şa'iran da heman taybetî tê dîtin. Ev xaleke hevpar e. Bi gotineke din herdû şa'iran jî di şî'rên xwe da ji kultura gelên xwe sûd wergirtine.

Yezdân, di dîwana Hâfizê Şîrazî da carekê derbas dibe, di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe. *Yezdân*, bingeha xwe ji dîne Zerduştîyan werdigire. Di edebiyata farsî da navek ji navê Xweda ye. Hâfizê Şîrazî, li ser kevneşopîya edebiyata farsî ji vî navî sûd wergirtîye. Hâfizê Şîrazî, ji bo hunera tezadê ava bike di malika xwe da ji *Yezdân* û Ehrimen sûd wergirtîye.

Bâxwê, di dîwana Hâfizê Şîrazî da cih nagire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da di çar malikan da derbas dibe. *Bâxwê*, di malikên Melâyê Cizîrî da bi wateya Xwedayê mezin, xwedî kerema mezin û hukumran e. Di malikan da bi bejêyên padîşah, xelat, şefqet, asîtan hatîye bikaranîn ku hem vê wateyê dide û hem bi van bêjeyan di şî'rê da hunera tenasube ava dike.

Ilâh, di dîwana Hâfizê Şîrazî da sê caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da şeş caran derbas dibe. Ji navên Xweda yê hevpar tenê *Ilâh*, ji teref Melâyê Cizîrî ji Hâfizê Şîrazî zêdetir hatîye bikaranîn. Ev ferqa hejmarî ye. Di dîwana herdû şa'iran da *Ilâh*, ji bo Xwedayê bawerîya Îslamê cih girtîye. Ev xal xaleke hevpar e. Di navbera herdû şa'iran da tu taybetîyek ber bi çav, an ferqek sereke di bikaranîna *Ilâh* da nayê dîtin. Mumkîn e ku herdû şa'iran jî di forma şî'rê da ji *Ilâh* sûd wergirtibin.

2.2 Nav û Sifetên Xweda

2.2.1 Cebbâr (جبار)

Cebbâr, di ferhengan da bi wateya bi zordestî rastkirina tişteki, zeftkirina kesekî, dilhişk, bêrehm, zalim, sîtemkar û padîşah, hatîye.²⁵⁶ Wekî sifetekî însan Cebbâr; ji bo ew kesê ku bi neheqî gihiştîye meqamekî bilind û di wî meqamî da kêmasî û qusûrên xwe vedişêre tê gotin.²⁵⁷ Di Qur'ânê da hem wek navek ji navê

²⁵⁶ دهخدا، ج ۵، ص ۷۴۷.

²⁵⁷ el-Îsfahanî, s 219.

Xweda derbas dibe²⁵⁸ û hem ji bo kesên zordar û zordest hatîye bikaranîn.²⁵⁹ *Cebbâr*, yek ji navê *Xweda* yê *Zat* e.²⁶⁰ Wekî navek ji navên *Xweda* bi wateya kesê dikare tiştê şikestî veherîne, tamîr bike, kêmasîyan sergihayî bike hatîye.²⁶¹

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Cebbâr* derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da çar caran derbas dibe. Hemû neqş û sin'etên *Xwedayê Cebbâr* bêkêmasî û bêqisûr in. Nêrîna Melâ nêrînek 'aşiqâne ye. Neqş û sin'etên *Xweda* yê *Cebbâr* ku kêmasî di wan da nayê dîtin hemû di xal, xet û ebrûyên me'sûqa Melâyê Cizîrî da ye. Me'sûqa Melâyê Cizîrî bi destê *Xwedayê Cebbâr* sen'et û neqşeke bêhempa ye (MC 192-8; 227-1). Melâyê Cizîrî, di 'işqa mecazî da mohra neqşê *Xwedayê Cebbâr* ditîye û berê wî daye 'işqa heqîqî. (MC 304-3) *Xwedayê* mezin bi xwe xal û xet li ser rûyê mehbûban ku wekî bergê gulan danîye ku heta niha kesekî tiştêkî şêrîn bi vî rengî nedîtîye.

Bergên gulâ reyhânîyê kâtib bi xwe xâl dānîyê
Kes dî bi vê şêrānîyê der şen'etê Cebbārî xet (MC 136-11)

2.2.2 Celâl- *Zu'l-celâl* (جلال-ذوالجلال)

Wateya ferhengî ya *Celâl*, mezinbûnî, 'ezamet, serfirazî, cah, bilindpaye, qudret, hêz, heybet, rewneq û 'îzzet e.²⁶² *Celâl* sifetê *Xweda* yê qehrê ye. Lê di vê qehrê da merhemet jî heye.²⁶³ *Zu'l-Celâl*, ew ê ku *Celâl* û kemal her ji wî ra ye.²⁶⁴ Di *Qur'ânê* da, di sûreyê *Rehmân* da derbas dibe.²⁶⁵ Bi gelemperî *Celâl*, bi *Cemâl* ra ku ew jî sifetê *Xweda* ye, di malikên şa'iran da cih girtîye.

Wekî navê *Xweda*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Celâl*, bi wateya mezinbûna *Xweda* carekê cih digire. Pêwiste ku di dil da her dem medhên *Xwedayê Celâl* were kirin. Lewra dil cih û wargehê peyamên peykê xeybê ye.

بجز ثنای جلالش مساز ورد ضمیر که هست گوش دلش محرم پیام سروش
Ji bilî stayîşa Xwedayê Celâl bila tiştêk nebe wirdê dilî, lewra koşeya dilê te
wargeh e ji bo peyamên firişte. (HŞ 445-8)

²⁵⁸ (هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْتَمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ) Ew *Xweda* ye ku ji wî pê ve tu ilâh nîne. Ew *xwedîyê* her tiştî ye, ji her kêmasîyê pak e, serkanîya selametiye ye, pêbawer e, li ser her tiştî zêrevan e, xwoşewist e, serdest e û *xwemezindêr* e. (*Qur'âna Pîroz*, Heşr 23.)

²⁵⁹ Her wiha, *Xweda* dilê her zordarê ku xwe mezin didêre mor dike. (*Qur'âna Pîroz*, Xafir 35)

²⁶⁰ Erginli, Z - Karşlı, İ - Köktaş, Y- Ödül, N - Sevinç, R. R - Yavuz, S. S, *Metinlerle Tasavvuf Terimleri Sözlüğü*, Editor: Zafer Erginli, Kalem Yayınevi, İstanbul 2006, s 213.

²⁶¹ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ٧٤.

²⁶² دهخدا، ج ٥، ص ٧٨١٥.

²⁶³ سجادی، سید جعفر، فرهنگ اصطلاحات و تعبيرات عرفانی، انتشارات طهوری، چاپ هفتم، تهران ١٣٨٣، ص ٢٨٧.

²⁶⁴ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ١٤١.

²⁶⁵ Tenê hebûna wî *Xwedayê* *xwedî* mezinahî û kerêmê herheyî ye. (*Qur'âna Pîroz*, *Rehmân* 27.)

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bêjeya *Celâl* bi wateya ferhengî ji bo me'şûqê di gelek malikan da hatîye bikaranîn. (HŞ 138-2, 472-4, 755-1)

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Zu'l-Celâl* sifetek ji sifetê Xweda ye.

از پای تا سرت همه نور خدا شود در راه ذوالجلال چو بی پا و سر شوی

Çi dema tu di riya Xwedayê Zu'l-Celâl da xwe tune bikî serapa wucûda te ew ê noqî nûra Xweda bibe. (HŞ 717- 7)

Di şî'rên Melâyê Cizîrî da *Celâl* sifetekî Xweda ye. Melâyê Cizîrî, hem ji layê tesewufî, hem ji layê felesefî û hem ji layê 'aşîqâne va cih daye vî sifetê Xweda. Ew kesên di rêka seyr û silûkê da nin, ne bi yek rengî ne û ne di yek astê da nin. Xweda li hineka bi sifetê xwe yê *Celâl* tecellî dike. (MC 230-2) Ev nêrîna 'îrfânî ye.

Di nêrîna Melâyê Cizîrî ya felsefî da, husn û hub (xweşikahî û hezkirin) berîya afirandina aferîdeyan di zatê Xweda yê qedîm da civîyabûn. Paşê husn û hub ji hev cuda bûn. Husn, xweşikahîya Xwedayê ezêlî, kete qalibê me'şûqên mecazî. Hub, hezkirin jî di dilê 'aşîqên heqîqî da bû agirek, mezinahîyek û bû cazîbeyek ku dilên 'aşîqan bi bal mehbûban va dikişîne. (MC 229-5)

Xweda, *Şahê Celâl* e ku her tiştê afirandî bi hostatîyek zêde afirandî ye, hêz û şîyanek wî zêde heye û her karê ku kirîye mirov lê 'ecêbmayî dimîne.

Subhân ji te Şahê Celâl Hostâyê pur qudret li bâl (MC 4-248)

Di hizrên 'aşîqâne yên Melâyê Cizîrî da yar ew qeder xweşik e ku ango navê *Xweda Celâl* li ser dêmên wê nivîsandîye û xweşikahîya yarê bi saya navê Xweda tê parastin.

*Dêmê bixâl ew nûn û dâl ismê Celâl bejnâ şepâl
Yektâ elif nâyê weşif min 'eqlê tîflê mekteb e* (MC 217-13)

Ji sifetên Xweda *Zu'l-Celâl* di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe.

2.2.3 Cemâl (جمال)

Sifetê Xweda ye. Bêjeyek 'erebî ye. Bi wateya xweşikbûn, xweşikbûna serçav, xweşikbûna sîret û sûretê (derva û hundir) di ferhengan da cih girtîye.²⁶⁶ Du cûre xweşikahî heye. Yek jê, xweşikahîya dil, beden û karê însan e. Yek jî, ew xweşikahî ye ku ji kesekî digihêje kesên din.²⁶⁷ *Cemâl*, sifetê Xweda yê lutf û rehmetê ye. Di pişt her *Celâla* Xweda da *Cemâla* Xweda heye.²⁶⁸ *Cemâl*, tecellîya

²⁶⁶ معین، فرهنگ معین، ج ۱، ص ۵۳۷.

²⁶⁷ el-Îsfehani, s 241.

²⁶⁸ الكاشاني، عبدالرزاق، معجم اصطلاحات الصوفية، تحقيق: عبد العال شاهين، دار المنار، الطبعة الأولى، القاهرة، مصر ۱۹۹۲، ص ۶۶.

Heqq e. Di her *Cemâlê* da *Celâl* heye û di her *Celâlê* da *Cemâl* heye.²⁶⁹ Ji ber vê têkiliyê ye ku şa'iran herdû sifetên Xweda di malikên xwe da bi hev ra bi cih kirine.

Cemâl wekî sifetek ji sifetên Xweda di dîwana Hâfizê Şîrâzî da tenê di yek malikê da bi têkiliya tecelliyatê ra tê dîtin. Di malikê da *Cemâl* xweşikahîya Xweda nîşan dide.

بعد از این روی من و آینه وصف جمال که در آن جا خبر از جلوه ی ذاتم دادند

Piştira rûyê min ayîneyek dît ku tenê xweşikahîya Me'sûq di wê da xuya dikir, ku di wê da agahîyên tecellîya Zat didane min. (HŞ 306-1)

Di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da *Cemâl* bi wateya ferhengî ji bo nîşandayîna xweşikahîya me'sûqê zêde cih girtiye. (HŞ 60-4, 62-7, 89-2, 138-2)

Cemâl wekî sifetek ji sifetên Xweda di dîwana Melâyê Cizîrî da, di fikr û ramanên felsefî û tesewufî da cih digire. Beriya ku ev 'âlem were afirandin, di sehergaha ezeli zatê Xweda yê pak û pîroz tecellî kir. Di vê tecellîyê da ji ber ronahîya *Cemâla* Xweda ya ezeli û ebedî çiraya 'îşqê pêket û geş bû. (MC 35-1) Xweşikahî, *Cemâla* Xweda, evîn xwest. Ronahîya (nûr) *Cemâla* Xweda bû 'îşq û vîyan. (MC 35-4) 'Îşq 'eksa *Cemâla* Xweda ya Safî ye ku bi çavên dil tê dîtin.

Me'nâyê 'îşqê bê m çî ye lew min bi çeşmê dil dîye
'Eksâ cemâlek şâfî ye zahir di mirâtâ me dâ (MC 36-3)

Husn, *Cemâl* û 'îşq pêdivîya wan bi xuyakirinê heye. Ji ber vê di mehbûbên mecazî da tecellî dike.

Husnê zatê but û lâtân ji cemâlâ şemed e
Ji mişâlê şenemî weh ko tecellâ ye şemed (MC 96-7)

Ew *Cemâla* Heq ku di mehbûbên mecazî da tecellî dike nabe ku veşartî bimîne, divê 'âşiqê wan hebin. Teqez ew xweşikahî - *Cemâl* – ew ê derkeve holê û ew ê 'âşiqên wan hebin.

Husn û cemâl û 'îşqe ye ârâm di perdê dâ ne ye
Mehbûbi lew hettâ heye nâbit di perdew xilwe dâ (MC 39-1)

Armanca ji hezkirina xweşikên mecazî ew e ku di xweşikahîya wan da tecellîya *Cemâla* Xweda ya heqîqî heye.

Ne cemâlâ te tecellâ bikirit
Me ji xwûbân bi cemâlê çî xereç (MC 133-9)

²⁶⁹ سجادی، ص ۲۸۸.

Bêjeya *Cemâl* di dîwana Melâyê Cizîrî da bi wateya ferhengî ji bo saloxdayîna xweşikahîya yarê di gelek malikan da tê dîtin. (MC 22-4, 180-4, 196-10, 198-9)

2.2.4 Celîl (جليل)

Celîl di ferhengan da bi wateya mezin, ew kesê ku qedr û mertebeya wî mezin e hatiye.²⁷⁰ *Celîl* wekî navek ji navên Xweda, wateya wê ev e: Ew ê ku sifetên Celâl di xwe da digire. Sifetên Celâl jî 'îzzet e, mulk e, teqdîs e, 'ilm e, zengînî ye, qudret e û wd. Celîlê mutleq camî'ê hemû sifetên Celâl e û vedigere bi bal kemala sifatan. Çi dema sifetên *Celâl* were nisbetkirin bi bal tiştêkî ku xuya dibe, jê ra *Cemâl* tê gotin û ew tiştê bi wê tê wesifdayin jî jê ra *Cemîl* tê gotin. *Cemîl* di çi şertî dibe bila bibe xîtabî hissa dîtîne, sûretê, dike û bi çav tê dîtin. Piştî neqlî bi bal sûretê batin dibe û bi besîretê tê dîtin wek ku dibêjin *xulûqê cemîle, exlaqê xweşik*. Hemû *Cemîl* bi nisbet îdraqa Cemâlê mehbûb e û me'sûq e. Ji ber vê ye ku Xweda li nik 'ârifan mehbûb e û me'sûq e. *Celîlê Cemîl* ew e ku ku xweşikahîya sifetên batin lezzetê bide qelbê besîretê.²⁷¹

Celîl di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe.

Celîl wekî navek ji navên Xweda di yek malikeke Melâyê Cizîrî da tê dîtin. Melâyê Cizîrî têkilîyek di navbera *Cemâl* û *Celîl* de ava kirîye. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da xweşikahî ayîneyek ji nûra Xwedayê *Celîl* e.

Min nezerê husn û cemâlâ te kir
Âyîne yek dî me ji nûrâ Celîl (MC 161-2)

2.2.5 Ezel (أزل) – Lā-yezāl (لا يزال) – Lem-yezel (لم يزل)

Lā-yezāl û *Lem-yezel* ji lêkera *ezeleyê* tî. *Ezel*, tunebûna destpêkê ye.²⁷² *Ezel*, navek ji navên Xweda ye ku wateya qedîmîyê dide. *Lā-yezāl* û *Lem-yezel* sifetê Xweda ne.²⁷³ *Lem* لم a ku di serê lêkera *yezel* da tê, di zimanê 'erebî da qertafa neyînîyê ye û wateya lêkerê digêrîne bi bal dema borî va. Bi wî rengî wateya *Lem-yezel* dibe; ew ê ku *hebûna wî di dema borî da herhebû ye, ku destpêk jê ra tune ye*. *Lā* لا ya ku di serê lêkera *yezāl* da ye, ew jî di zimanê 'erebî da qertafa neyînîyê ye û

²⁷⁰ دهخدا، ج ۵، ص ۷۸۳۹.

²⁷¹ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ۱۱۶.

²⁷² التهانوي، ج ۱، ص ۱۴۳؛ دهخدا، ج ۲، ص ۱۹۸۹.

²⁷³ گوهرين، سيد صادق، شرح اصطلاحات تصوف، چاپ دوم، زوار، تهران ۱۳۷۶، ج ۱، ص ۱۷۱.

wateya dema bê dide lêkerê. Ji ber vê wateya *Lā-yezāl*, di pêşerojê da hertim hebûn e. *Ew ê ku domahî jê ra tune.*²⁷⁴

Hâfizê Şîrâzî, di sê malikan da navê *Ezel* bi kar tîne. Di du malikan da Xweda bi *Siltanê Ezel* û di yeke da jî *Ustadê Ezel* dinasîne. Di vê dinyaya wêrane da *Siltanê Ezel* gencîneya xema 'îşqê daye Hâfiz. (HŞ 562-3) Ew tiştên ku Hâfiz dibêje ne bi îradeya wî ye. Ji cîhaneke din, ji teref *Ustadê Ezel* îlham jê ra hatîye. (HŞ 574-2) Di malikeke din da jî mijareke kelamî tîne ziman. Li gorî Hâfizê Şîrâzî her tiştê ku têtê kirin ne bi ixtiyarîya însan e, tiştê ku hatîye teqdîrkirin însan wê dike.

نقش مستوری و مستی نه به دست من و توست
آن چه سلطان ازل گفت بکن آن کردم
Teqwa û gunehkarî ne bi destê min û te ye. Belkî ew tiştê ku Sultanê Ezel gotîye bike ez dikim. (HŞ 495-6)

Lā-yezāl û *Lem-yezel* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabin.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da hem *Ezel*, hem *Lā-yezāl* û hem *Lem-yezel* cih werdigirin. Ev nav û sifetên Xweda, di nêrînên Melâyê Cizîrî yê felesefî û 'îrfânî da têtê dîtin.

Xweda *Neqqaşê Ezel* e ku îsmê Cemâlê nivîsandîye. Di vê nivîsandîne da herfên ku şikil wergirtine Xweda ji sirra xwe li wan reşandîye.

Neqqāşê ezel ismê cemālê ku nivîsî
Herfên te mucussem ji sirê taze reşandin (MC 186-7)

'Îşq, ji nûra *Xwedayê Lā-yezāl* peyda bûye. Ji ber ku ew nûr Cemâla zatê Xweda ye husn û Cemâlek bê hempa ye.

'Îşqā ji nūrā lā-yezāl *husn û cemālā bê mîşāl*
Îsāndî yelmūm û şemāl *dîsā xwe lê perwāne dā* (MC 35-5)

Tecellîyata zatê Xweda ji nûra Cemâla *Xwedayê Lem-yezel* e. Di sehergaha ezeli da (beriya hebûna vê 'âlemê) çirûskek ji ronahîya çiraya 'îşqê nûra Cemâla *Xwedayê Lem-yezel* geş kir û tecellîya Xweda eşkera bû. (MC 35-1) 'Îşqa heqîqî, 'îşqa *Xwedayê Lem-yezel* e. Ew yara wî ya pak û pîroz ku xweşikahîya wê ji remza ezeli peyda bûye bi destê xwe vîyana *Lem-yezel* pêşkêşî wî dike. (MC 3-95) Xweda, zatê *Lem-yezel* e. Çawa ku di malika jêrîn da tîne ziman, beriya ku navê wî yên ezeli di saloxetên, sifetên wî da peyda bibin evîndar û yar her yek bûn û mûm û perwane jî her yek zat bûn.

Nehtibū hukmê şifātān ew ji zātê Lem-yezel

²⁷⁴ گوهرین، سید صادق، فرهنگ لغات و تعبيرات مثنوی جلال الدین محمد بن محمد بن حسین بلخی، زوار، تهران ۱۳۸۱، ج ۸، ص ۴۴۸.

'Āṣīq ū me'ṣūqi yek bûn şem' ū hem perwâne bû (MC 229-3)

2.2.6 Rehmân (رحمان)

Rehmân, yek ji nav û sifetên Xweda ye. *Rehmân* bêjeyek 'erebî ye û ji rehmetê tê. *Rehmet*, bi wateya mihribanî, merhemet û şefqetê ye.²⁷⁵ Di hemû sifetên Îlâhî da wesf xwe digihîne sifetê *Rehmân*. Lewra navê *Rehmân* ji ber ku şamiltir û berfirehtir e, muqabilî navê *Ellah* e.²⁷⁶ *Rehmân* îsmê xas e bi sifetê 'am. *Rehmân* ji layê wateyê va 'am e bi wateya ku ji herkesî ra afirîner e û rizqê herkesî dide. Ji alîyê lefzê xas e ku aferîde (mexlûq) nikarin vî navî li xwe bikin.²⁷⁷ Bi wateyeke giştî sifet û navê Xweda ye ku di derheqê hemû aferîdeyên xwe da başîyê û rehmetê dixwaze, bêyî ku cudahîyê bixe navbera aferîdeyên xwe çî mumin û çî kafir, çî dost û çî dujmin, rizqê wan dide û ni'metên bê hejmar dide wan.²⁷⁸ *Rehmân*, tevî ku di Qur'ânê da; di serê her sûretî, di besmeleyê da derbas dibe, di sûreyê Fatîhe, Re'd, Meryem²⁷⁹ û di hin sûreyên din da jî derbas dibe.

Hâfîzê Şîrâzî di şî'rên xwe da du caran bêjeya *Rehmân* derbas dike. Di yek qit'eyê da Xweda wekî *Rehmânê Lâ-yemût* (ew *Rehmânê* ku mirin ji ra tune) derbas dike. (HŞ 1-750) Di xezeleke xwe da dixwaze ku xanîyê memduhê wî her dem abad û me'mûr bimîne. Lewra her lehze wekî bayê Yemenî bêhna Xwedayê *Rehmân* jê tê. Hâfîzê Şîrâzî di vê malikê da hem bi hunera telmîhê amaje bi Hedîsek Cenabê Pêxember (s.a.s.) dike²⁸⁰ û hem bi hunera mubalexeyê memduhê xwe dişîbîne Uweysê Qerenî.²⁸¹

²⁷⁵ دهخدا، ج ۸، ص ۱۱۹۵۰.

²⁷⁶ Erginli, vd, s 61.

²⁷⁷ المبيد، ابو الفضل رشيد الدين، كشف الأسرار و عدة الابرار، به سعی و اهتمام : على أصغر حكمت، انتشارات امير كبير، چاپ هفتم، تهران ۱۳۸۲، ج ۱، ص ۷.
²⁷⁸ المبيد، ج ۱، ص ۷.

²⁷⁹ *Qur'âna Pîroz*, Fatîhe 3. ; Re'd 30. ; Meryem.18, 45, 58, 69, 78, 85, 87.

²⁸⁰ *Bêhna Xwedayê Rehmân ji alîyê Yemenê tê min* (كشف الخفاء ومزيل الإلباس عما) العجلوني، اسماعيل بن محمد، كشف الخفاء ومزيل الإلباس عما (: تحقيق در احوال اويس قرنى"، نشریه (إشتهر من الأحاديث على السنة الناس، مكتبة القدس، قدس ۱۳۵۱، ج ۱، ص ۲۱۷).

²⁸¹ Ji Yemenê ye. Navê wî Uwesê kurê 'Amirê kurê Cezê kurê Malikê kurê 'Umerê Qeranî ye. Di nav gel da bi *Weyes el-Qeranî* tê nasîn. Kengî Musluman bûye û bi çî rengî Musluman bûye ne dîyar e. Ji bo dîtîna Hezretî Muhemmed (s.a.s.) tê Medîneyê, lê Pexemberê Xweda (s.a.s.) nabîne û vedîgere. Piştî wefata Pêxember di serdema xelîfetîya Hezretî 'Umer da vedîgere Hicazê. Piştî hevdiîtîna bi Hezretî 'Omer ra diçe Kûfeyê û li wir dimîne. Hatîye gotin ku di herba Siffînê da hevaltîya Hezretî 'Elî dike û di wê herbê da, di sala 37/657an da şehîd dibe. (: صحیح :) عطار نیشابوری، فرید الدین محمد، تذکرة الاولیاء، تصحیح : محمد استعلامی، زوار، تهران ۱۳۴۶، چاپ شانزدهم، ص ۱۸-۲۵؛ محسنی، منوچهر، "تحقیق در احوال اویس قرنی"، نشریه (مهرا، سال ۱۳۴۵، شماره ۱۲، صفحه از ۷۷۰ تا ۷۷۶). Di tesewufê da kesayetekî zêde girîng e. Uweysê Qeranî Cenabê Pêxember (s.a.s.) nedîtîye û ji ruhanîyeta wî sûd wergirtîye û perwerde bûye. Di tesewufê da pişewayê wê ekole ye ku bi batinî têkilî bi murşidekî tê sazîkirin û ji rûhanîyeta wî di âlema me'newî da sûd tê wergirtin. Ji vê ekole ra *Uweysî yan Xwudaperwerde* tê gotin. (Cebecioğlu, Ethem, *Tasavvuf Terimleri Ve Deyimleri Sözlüğü*, Anka Yayınları, İstanbul 2010, r. 270.) Ji ber vê ew kesên ji şeyxekî ne li jîyanê yan şeyxekî li deverê dîr bi irtîbateke me'newî sûd bigire û perwerdehiyê bibîne jê ra *Uweysî* tê gotin.

تا ابد معمور باد این خانه کز خاک درش هر نفس با بوی رحمان می وزد باد یمن

Ta ebed ev xanî abad û me'mûr bimîne, lewra her kêlik bayê Yemenê ji axa derîyê wê bêhna Rehmân ya xweş bi xwe ra tîne. (HŞ 586-4)

Rehmân di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê carekê derbas dibe. Melâyê Cizîrî, di malika xwe da xweşikahîya dîlberan wekî sin'etê, şûndestê Xwedayê *Rehmân* dide berçavan.

*Wellâh ji herdû 'âlemân min husne cānāne xereḏ
Lew min ji husnā dilberān her şun'ê Rehmāne xereḏ* (MC 134-1)

2.2.7 Rezzāq (رزاق)

Rizq, di ferhengan da, bi wateya her tiştê ku sûd jê tê wergirtin, qût û yewmîye cih girtîye. Pirjimara wê *erzāq* (ارزاق) e. Wekî istilah, navê wan tiştan e ku Xweda ji bo zindî bixwin dişîne, ew tişt çî helal bin û çî heram bin.²⁸² *Rizq*, di Qur'ânê da geh bi wateya bexşandina di dinyayê û axretê, geh bi wateya qîsmet û par û geh bi wateya hemû tiştên ku însan ji bo xwe pê xweyî bike dixwe, cih digire.²⁸³ *Rezzâq* sifetê mubalexeyê ye û bi wateya ew ê ku ji kesên ku muhtacî rizq e, pêdivîya wan bi rizq heye, rêyên gihiştina rizqê diafirîne û ji wan ra amûrên sûd wergirtina ji rizqê diafirîne, hatîye.²⁸⁴ Di bawerîya Îslamê da yê rizqê aferîdeyan dide Xweda ye. Ev yek di Qur'ânê da wiha derbas dibe. *Bêşik, yê rizq dide (Rezzâq) û xwedî hêz û taqeta xurt e tenê Xweda ye.*²⁸⁵

Di şîrên Hâfizê Şîrâzî da yek car em rastî bêjeya *Rezzâq* tîn. Di malika ku bêje têda derbas dibe Hâfizê Şîrâzî, wekî her bawermendekî misliman Raziqê Heqîqî Xweda dizan e.

بر در شاهم گدایی نکته ای در کار کرد گفت بر هر خوان که بنشستم خدا رزاق بود

Li ber dergahê padişah gedakî gotinek nazik bi kar anî û ji min ra got; li ser her sifreya ku ez rûniştim min dît ku raziqê heqîqî Xweda bû. (HŞ 339-7)

Em di dîwana Melâyê Cizîrî da rastî navê Xweda *Rezzâq* nayên.

2.2.8 Şemed (صمد)

Şemed, di ferhengan da wateya nehewcedar, dewlemend, ew ê ku kesên din hewcedarê wî ne, ew ê ku mirov hêvî dike pêdivîyên wan pêk bîne, payende, daîm,

²⁸² دهخدا، ج ۹، ص ۱۲۰۰۵.

²⁸³ el-Isfehânî, s 425.

²⁸⁴ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ۸۴.

²⁸⁵ *Qur'âna Pîroz*, Zarîyat 58.

bilind, kesê ku tî û birçî nabe, hatîye.²⁸⁶ *Semed*, di istilahê da bi vê wateyê ye: Ew Xwedayê ku herkes di pêdivîyên dînî û dinyewî da hewcedarê wî ye û ew ne hewcedarê tu kesî ye.²⁸⁷ *Semed*, di Qur'âna Pîroz da di sûreyê Îxlas da derbas dibe.²⁸⁸ Di tefsîran da, di derbarê wateya *Semed* da nêrînên cuda tên dîtin. *Semed*, ew mezinê ku pêdivîyên hevcedaran temîn dike, ew ê ku naxwe û venaxwe, ew ê ku piştî herkesî dimîne, ew ê ku di hemû sifet û kiryarên xwe da kamil e, ew ê ku jê mezintir tune, ew ê ku kes nagihêje me'rifeta wî, tenê digihêjin nav û saloxetên wî.²⁸⁹

Semed, di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da du caran derbas dibe û di herdû malikan da jî *Semed* Xweda ye û li hember senemê cih girtîye. Ji xirqeyê Hâfiz tu nikarî tu sûdê werbigirî, lewra em li Xweda (*Semed*) digerin û ew (zâhid) li pey senema xwe ye. (HŞ 216-9) Di malika din da *Semed* dîsa bi senemê ra wiha derbas dibe.

گفتم صنم پرست مشو با صمد نشین گفتا به کوی عشق هم این و هم آن کنند
Min got: mebe senemperest, bibe hevalê Xweda (Semed), got: di gundê 'îşqê
da hem ev û hem ew tê kirin. (HŞ 329-4)

Melâyê Cizîrî di dîwana xwe da cih daye navê *Semed*. *Semed*, her Xweda ye, lê di şî'rên Melâyê Cizîrî da ji bo ramanên felsefî û 'âşiqâne cih girtîye. Dêm û enîya dilberê ya sipî hatîye şibandin bi nûra *Xwedayê Semed*. (MC 100-4) Birûyên yarê yên ku tîrên xezebê ji wan dertên û li dilê 'âşiqî dikevin ji teref *Xwedayê Semed* li hindava çavan hatîye bicihkirin. (MC 100-1) Xweda, piştî afirandina kaînatê ji bo ku esma û sifetên wî xuya bibin, mirov ji hev cuda kirin û her hinek kirin mezherê hinek nav û sifetên xwe. Melâyê Cizîrî ev hizra xwe bi mînakan rave dike ku mînakek jê *Semed* e. (MC 18-4) Li gorî Melâ xweşikahîya bût û latan ji Cemâla Xwedayê *Semed* e.

Husnê zâtê but û lâtân ji cemâlâ şemed e
Ji mîşâlê şenemî weh ko tecellâ ye şemed (MC 96-7)

2.2.9 Ehed (احد) – Wâhid (واحد)

Eslê bêjeya *Ehed*, *wehedun* (وَاحِدٌ) e. *Ehed*, di ferhengan da bi yekane û ferd hatîye watedarkirin.²⁹⁰ Dema em dibêjin Xweda *Ehed* e, wate, ji xeyrê wucûda Xweda tu wucûdek din tune. *Ehed*, îsmê zat e, bêtî ew pîrbûna ji sifet, esma,

²⁸⁶ معین، فرهنگ معین، ج ۱، ص ۹۹۶. دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۵۰۴۶. گوهرین، فرهنگ لغات و تعبيرات مثنوی، زوار، تهران ۱۳۸۱، ج ۶، ص ۱۷۶.

²⁸⁷ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ۱۳۴.

²⁸⁸ (Qur'âna Pîroz, Îxlas 1-2.) *Ew, Xwedayê yekane ye, Ellah, Semed e* (Bibêje; *فَلْهُوَ اللَّهُ أَحَدٌ * اللَّهُ الصَّمَدُ*)

²⁸⁹ المبيد، ج ۱۰، ص ۶۶۲.

²⁹⁰ دهخدا، ج ۱، ص ۱۰۷۶.

nisbet û tee'yyunatan hasil dibe were ber çavan. Sirf navê zatê Xweda ye û yekîfîya Xweda nîşan dide.²⁹¹

Waḥid (واحد), di ferhengan da bi wateya, yekta, yekane, bêhemta, ferd, تنها, bêşerîk cih girtîye.²⁹² *Wâhid*, bi wateya ew tiştê teqez perçebûnîyê û parvebûnîyê qebûl nake hatîye.²⁹³ *Wâhid*, bi wateya ew tiştê ku perçe nabe û nabe cot, ango yekî din wekî wî tune ye. Perçe nabe, wekî ew cewherê ku perçe jê nayê veqetandin. Yekî wekî wî tune ye, ango; wekî rojê ku bi tenê ye.²⁹⁴ Bi wateyeke din; *Wâhid*, redkirina teqşîmê (parvebûnî) di derheqê Zat da û şibandin di sifetên wî da, înkara hebûna şîrîka der heqê kiryarên (fi'l) Heq da ye. Ango, ne di zatê xwe da, ne di sifetên xwe da û ne di kiryarên xwe da ne wekî kesekî ye, mutleq yek e.²⁹⁵ Bi vî şiklî *Wâhid*, navê zatê Xweda ye bi wateya yekbûnîyê.²⁹⁶

Di nava şî'rên Hâfîzê Şîrâzî da em cerekê rastî navê Xweda, *Ehed* tên. *Ehed*, ew Ellah e ku tu Ilâh ji wî pê va tune ye.

به گوش جان رهی منهی ای ندا در داد ز حضرت احدی لا اله الا الله
Bi guhê can hâtîfekî ji teref hezretê Ehedê ku Ellah e û ew tenê şayesteyê perestîne ye bang kir. (HŞ 754-10)

Wâhid, di nava şî'rên Hâfîzê Şîrâzî da peyda nebû.

Ehed, di dîwana Melâyê Cizîrî da Xwedayê yekane ye. Lê nêrîna Melâyê Cizîrî nêrîneke felsefî-tesewufî ye. Xweda, beriya ku vê 'âlemê biafirîne tecellî dike, ji vê tecellîyê nûrek saf û zelal derdikeve. Ew nûr, Nura Muhemmedî ye, ku hemû heyîn ji vê nûrê hatine afirandin. Bi istilahê tesewufî jê ra *Nûra Muhemmedî* yan *Heqîqeta Muhemmedîye* tê gotin.²⁹⁷ Ev nêrîn pala xwe dide hedîsek Cenabê Pêxember (s.a.s.)²⁹⁸ Melâ li ser vê binaxeyê wiha dibêje:²⁹⁹ Hezretî Muhemmed (s.a.s.), wekî ayîneyê ye ku roja Xwedayê *Ehed* di vê da bilind dibe.

Mîm meṭle 'ê şemsâ Ehed âyîne şîfet kir
Lâmi' ji 'ereb berqê li fexxârê 'ecem dâ (MC 18-3)

²⁹¹ القاشاني، كمالالدين عبدالرزاق، اصطلاحات الصوفية، انتشارات بيدار، قم، ۱۳۷۰، ص. ۲۵.
²⁹² دهخدا، ج ۱۵، ص ۲۳۰۳۶.

²⁹³ el-Isfahanî, s 1139.

²⁹⁴ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ۱۳۳.

²⁹⁵ Erginli, vd. s 1108.

²⁹⁶ Erginli, vd. s 1164.

²⁹⁷ زمانی، کریم، شرح جامع مثنوی معنوی، اطلاعات، تهران ۱۳۸۲، ج ۲، ص ۲۵۱.

²⁹⁸ فروزانفر، محمد حسن بدیع الزمان، (أول ما خلق الله نوري) Tiştê ku Xweda herî pêşî afirandiye nûra min e. (أحاديث و قصص مثنوی، ترجمه: حسین داودی، انتشارات امیر کبیر، تهران ۱۳۸۱، ص ۳۶۳)

²⁹⁹ Divê were gotin misraya yekem heman mezmûna misraya yekem ya Şebusterî di xwe da digire. Şebusterî dibêje: (احد در ميم احمد گشت ظاهر) Xwedayê Ehed di herfa mîm a Ehmed da xuya bû. (ارديبيلي، حسين بن عبدالحق، شرح گلشن راز، مرکز نشر دانشگاهی، تهران ۱۳۷۶، ص ۳۵)

Wâhid, ji layê tecellîyê navek ji navê Xweda ye û sifetek ji sifetê Xweda ye. Melâyê Cizîrî dibêje *Wâhid*, zatekî ferd e, tecellî dike di sifetên mehbûbên mecazî da. (MC 4-399) Di nêrîna Melâyê Cizîrî da *Wâhid*, wekî wateya li jor hate dayin, Xweda, bi zatê xwe *Wâhid* e, ferd e û tu hejmar, ango şerîk jê ra nînin.

Sirrê wehdet ji ezel girtîye hettâ bi ebed
Wâhid û ferd e bi zâtê xwe wî nînin çu 'eded (MC 96-1)

Melâyê Cizîrî, cudahîyê dixê navbera *Wâhid* û *Ehed*. Di rastîyê da her çend ku wate yekîtî be jî lê di meqamê Samedîyyetê da ji hev cuda ne.

Ferq e Wâhid ji Ehed lê di meqâmê şemedî
Bi heqîqet ko yek in herdu çî Wâhid çî Ehed (MC 96-3)

2.2.10 **Wedūd (ودود)**

Ji radera *wudd* (وُد) ê tê ku bi wateya hezkirina tiştekî û çêbûna wî tiştî ye.³⁰⁰ Wateya *Wedūd* ya ferhengî; dost, mehbûb, mûhib, hezkirina pir, dostanîya zêde, pir bi hezkirin e.³⁰¹ Yek ji navê Xweda ye ku di Qur'ânê da derbas dibe. Di Qur'ânê da carekê bi Rehîm³⁰² û carekê bi Xefûr³⁰³ ra cih girtîye. Wekî navek ji navê Xweda tê wateya ew ê ku hez dike xêrê bi hemû xelqê bike û qencîyê ji wan ra îhsan dike hatîye.³⁰⁴

Di malikên Hâfîzê Şîrâzî da ji navên Xweda, *Wedūd* cih nagire.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê cih digire. Melâyê Cizîrî, di hizrên xwe yên felsefî-tesewufî da cih dide navê *Wedūd*. Nûra Xweda ya ku hemû heyîn jê hatine afirandin di neynika îsmê *Wedūd* da tecellî dike.

Coşîş ku dâ deryâyê cūd *Di âyîneyâ ismê Wedūd*
Cârek tecellâ bû wucūd *Nûrek ji nûrê jê vedâ* (MC 41-3)

2.2.11 **Wehhâb - Wâhib (وَهَّابٌ - وَاهِب)**

Wehhâb, sifetê mubalexê ye, ji radera peyva 'erebî *wehebe* (وَهَبَ) bi wateya hîbe, xelat, dîyarî, bexşandina tiştekî, dayina tiştekî bê veğerandin, dayina tiştekî ne li hember tiştekî hatîye.³⁰⁵ Wekî navek ji navên Xweda, wateya dayin û hîbeya, tiştan e ku bêveğerandin û bêgerew e. Dema tişt hatin bexşandin, dayin bi van sifetan ji

³⁰⁰ el-Isfehânî, s 1143.

³⁰¹ دهخدا، لغتنامه دهخدا، ج ۱۵، ص ۲۳۱۴۷.

³⁰² *Qur'âna Pîroz*, Hûd 90.

³⁰³ *Qur'âna Pîroz*, Bûrûc 14.

³⁰⁴ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ۱۲۲.

³⁰⁵ دهخدا، ج ۱۵، ص ۲۳۲۵۴.

xwedîyê ku wî tiştî dide, dibexşîne *Wehhâb* û *Cewwâd* tê gotin.³⁰⁶ *Wehhâb* di Qur'ânê da, di sûreyê Alî 'Îmran û Sad³⁰⁷ da derbas dibe.

Wâhib, sifetê wî kesî ye ku ew dibexşîne, 'eta dike, ciwanmerd û sexî ye.³⁰⁸ *Wehhâb*, navê Xweda yê xas e û ji bo bendeyên Xweda nayê gotin. Wâhib, ji bo bendeyan jî dikare were gotin.³⁰⁹

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *Wehhâb* û *Wâhib* cih nagirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê *Wehhâb* û sê caran *Wâhib* tê dîtin. *Wehhâb*, navek ji navê Xweda ye ku Xweda ji kerema xwe badeya şeraba 'işqê wekî xelat û dîyarî daye Melâyê Cizîrî.

Ew tilliyên nâzîk reqîq *Pur dâ me fîncânâ 'eqîq*
Ew badeyâ nûrîn rehîq *Minnet bi min wehhâbî dâ* (MCD 22-3)

Wâhib, di dîwana Melâyê Cizîrî da navek ji navên Xweda ye ku bexş û kerema wî zêde ye.

Dîsâ li bedrê kâtîbî *Kêşa ji nû jengâri xeş*
Nûrâ reşandî Wâhibî *Dergerdîşê purgâri xeş* (MC 136-1)

2.2.12 *Xâliq* (خالق) *Bârî* (بارى) *Muşewwir* (مصور)

Ji ber ku têkilîya hersê navên Xweda bi hev ra heye di binê yek binbeşê da hatin şîrovekirin. Û ev rêza hersê navên Xweda li gorî rêza Qur'ânê ye³¹⁰ û Qur'ân jî li gorî têkilîya wateyî ew rêzandîye.

Xâliq, ismê fa'il ê di binyata xwe da ji radera peyva 'erebî *xelq* (خَلَقَ) darijiye, hatîye. Bi wateya plansazîya bi rêk û pêk e. Bêbingeh û bêmînak afirandina tişteki ye.³¹¹ *Bârî* ismê fa'il ê 'erebî ye, ji lêkera *ber'e* (بَرَأَ) hatîye. Bêje di binyata xwe da bi wateya dûrbûnîya ji tişteki ye ku jê nayê hezkirin.³¹² *Muşewwir* ismê fa'ilê 'erebî ye, ji lêkera *şewwere* (صَوَّرَ) hatîye. Bang kirin, jêkirin, ji hev cuda kirin wateya ferhengî ye.³¹³ Ev hersê navê Xweda jî wateya afirandin û îcadkirinê di xwe da digirin. Hemû tiştê ku ji tunebûnê derdikevin hebûnê, di asta yekem da pêdivî bi teqdîrekê heye. Li ser vê teqdîra paşê îcad çêdibe. Ev asta duyem e. Di îcadê da jî teswîrkirin, şikil dayîn heye ku ev jî asta sêyem e. Xweda, *Xâliq* e ji bo wan tiştên ku

³⁰⁶ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ٨٢.

³⁰⁷ *Qur'âna Pîroz*, Alî 'Îmran 8; Sad 35.

³⁰⁸ دهخدا، ج ١٥، ص ٢٣١١١.

³⁰⁹ شريف كاشاني، ملا حبيب الله، خواص و مفاهيم أسماء الله الحسنى، ترجمه: محمد رسول دريای، نشر صائب، تهران ١٣٨٣، ص ٤١٢.

³¹⁰ (هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ) *Qur'âna Pîroz*, Heşr 24.) Ew Xweda ye ku hem *Xâliq* e, hem *Bârî* ye û hem *Muşewwir* e

³¹¹ el-Îsfahanî, s 359.

³¹² el-Îsfahanî, s 137-138.

³¹³ دهخدا، ج ١٠، ص ١٥٠٧٩.

teqdîr dike. *Bârî* ye ji bo wan tiştê ku îcad kirîye. *Musewwir* e ji bo wan tiştê ku pergala daye îcada wan, bi pergala herî xweşik.³¹⁴

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da em rastî navê Xweda *Xâliq* tên lê em rastî *Bârî* û *Musewwir* nayên. *Xâliq* di şî'rên Hâfiz da yek ji navê Xweda ye.

تو شاکری ز خالق و خلق از تو شاکرند تو شادمان به دولت و ملک از تو شادمان

Tu spasdarê Xwedayê Xâliqî û xelq jî spasdarê te ne, tu bi selteneta xwe bextewarî û seltenet jî bi te bextewar e. (HŞ 736-7)

Melâyê Cizîrî di dîwana xwe da cih daye her sê navên Xweda jî. Melâyê Cizîrî, pesnê Xweda dike, Xweda pak û pîrozahî didêre ji bo ku bi remzekê 'âlem afirandîye. Bi vî şiklî wateya navê Xweda; *Xâliq* dide ber çavan di 'âlema mehsûsatan da. (MC 36-2) Li gorî Melâyê Cizîrî tu kes nikare karûbarên Xweda (*Xâliq*) hizir bike. Lewra nêrîna heyînan (mexlûqatan) nêrînek kurt e. (MC 97-6) Di malikeke din da bi navê Xwedayê *xâliq* sondê dixwe. (MC 163-2) Ew Xwedayê ku navê wî *Xâliq* e xweşikahîya yara wî afirandîye. (MC 212-7) Ji ber ku *Xwedayê xâliq* û firîşteyan pesnê Pêxember dane ew neşê tu pesnan bide.

Fehmā min e qāşir we neşim weşfê edā kim

Meddāhî ji te rā Xâliq û hindî melekî ne (MC 220-6)

Bârî di malikên Melâyê Cizîrî da navê Xweda ye. Di roja cejnê da xêr û bereketa *Xwedayê bârî* ji yara xwe ra dixwaze. (MC 98-2) *Xwedayê bârî* Hezretî Âdem hînî hemû navan kirîye. (MC 111-2) Melâyê Cizîrî, di malika jêrîn da yara xwe emanetî *Xwedayê bârî* dike.

Dil û cān herdu mi dānê ko icāzet ji me xwāst

³¹⁵ قلت أستودعك الباري الله معك (MC 153-3)

Musewwir jî navek ji navê Xweda ye di dîwana Melâyê Cizîrî da. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da her tiştêkî li ser rûyê erdê û li esmana heye, xweşikahîya xwe ji navê *Musewwir* digire ku navek ji navê Xweda ye.

Çi husnek muşewwer e ismek ji Ellāh tê (4-310)

2.2.13 *Xellāq* (خَلَق)

Xellāq, sifetê mubalexeyê ye ji radera peyva 'erebî *xelqê* (خَلَق) hatîye. Di ferhengên da bi wateya Aferînende, Aferîdegar hatîye. Wekî navek ji navên Xweda

³¹⁴ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ٧٥.

³¹⁵ Ev niv malik bi tevahî bi 'erebî ye. Wate: "Min got: ez te dispêrim Xwedayê Bârî Xweda bi te ra be.

bi vê wateyê ye: Ew Xwedayê pey der pey diafirîne. Yanî afirandina li ser afirandinê.³¹⁶ Ev navê Xweda di Qur'ânê da du caran derbas dibe.³¹⁷ Ferqa navbera *Xâliq* û *Xellâq* ev e, di *Xellâq* da pîrbûnî, pîr afirandin heye.

Xellâq, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. *Xellâq*, di dîwana Melâyê Cizîrî da, di yek malikê da cih girtîye. Di vê malikê da *Xellâq*, ew Xweda ye ku ji yek tiştî pir tişt afindîye.

Ew şekl û şûret şewwirîn Eşl in li bālā zeyyinîn
Nisbet bi wān em sāye yīn Tertîbê Xellāqī we dā (MC 37-1)

2.2.14 *Āfūr* (غفور) – *Āffār* (غفار)

Āfūr û *Āffār* her dū jî bi 'erebî sifetên mubalekeyê ne û di bingeha xwe da ji radera *āfūr* (غفر) tēn. *Āfūr*, di ferhengan da bi wateya islah kirin, veşartina tişteki, star kirin, veşartina tişteki di zerfa xwe da, sergirtina tişteki ji bo gemar negire cih digire.³¹⁸ *Āfūr*, veşartina kêmasîyên yekî û bexşandina sezayên wî ye.³¹⁹ *Āffār* wekî sifetekî Xweda bi wateya baş bexşende, yê guneha vedişêre, li kesan dibûre di ferhangan da hatîye.³²⁰ Herçend di wateyan da tu cudahîyek zêde xuya neke jî wekî istilah cudahîyek di navbera wan da hatîye avakirin. *Āffār*, mubalekeya di mexfîretê, bexşandinê da ye. Bexşandina xeta, guneh û qusûrên ku tekrar dibin.³²¹ *Āfūr*, ew ê ku xweşikahîyan zâhir dike û tiştên kirêt vedişêre û her cûre gunehan dibexşîne.³²²

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Āfūr* bi wateya Xwedayê bexşende derbas dibe.

می خور به بانگ چنگ و مخور غصه ور کسی گوید تو را که باده مخور گو هو الغفور
Bi dengê çengê meyê vexwe û xeman nexwe, eger kesekî ji te ra got meyê venexwe, bibêje; Xweda Āfūr e. (HŞ 406-6)

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Āffār* derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da hem *Āfūr* û hem *Āffār* cih digire. *Āfūr* ew Xweda ye ku 'aşiq di rêka meşûqê da xwe bisotîne ew ê Xweda wî bibexşîne. (MC 310-7) Di malika jêrîn da xweşikahîya mehbûbên mecazî ji nûra *Xwedayê Āfūr* e.

Nūrā Āfūr xālên di hūr cāmā tehūr le'lên şefeq (MC 152-10)

³¹⁶ النجدي، محمد الحمود، النهج الأسمى في شرح أسماء الله الحسنى، مكتبة الامام الذهبي، كويت 1417، ج 1، ص 169.
³¹⁷ *Qur'āna Pîroz*, Hicir 86; Yasîn 81.

³¹⁸ دهخدا، ج 11، ص 16752.

³¹⁹ دهخدا، ج 11، ص 16755.

³²⁰ دهخدا، ج 11، ص 16750.

³²¹ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص 105.

³²² الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص 80.

Ĥeffâr, di dîwana Melâyê Cizîrî da wekî di pênaseyê da hate gotin ew Xwedayê wusa bi şefqet e ku kesek noqî deryaya gunehan jî bibe wî dibexşîne.

Ĥerqê deryâyê gunâh in teşneyê luţfâ heq in
Rehmetâ âmurzigâr û şefqeyê Ĥeffârî bes (125-3)

2.2.15 Ewwel (أَوَّل) - Āxir (آخر)

Bêjeya *Ewwel* 'erebî ye û ji lêkera *ele-yeûlu* (أَل - يُوُولُ) hatîye û eslê wê *ewe* (أَوَّل) ye.³²³ *Ewele*, di ferhengan da bi wateya destpêk û yekem hatîye.³²⁴ *Āxir* ji 'erebî ye û ziddê *ewwelê* ye. Wateya *Āxir* ya ferhengî, dawî, payan û encam e.³²⁵ *Ewwel*, yanî Xweda beriya her tiştî, bê destpêk hebû û tu tişteke tunebû. *Āxir*, yanî Xweda piştî ku hertişt fena dibe jî dawî lê nayê, eşya hemû fena dibe lê Xweda Bâqî ye, didome.³²⁶

Hâfîzê Şîrâzî di malikên xwe da cih nedaye van herdû sifetên Xweda. Melâyê Cizîrî du caran *Ewwel* û *Āxir* wekî sifetên Xweda di malikên xwe da bi cih kirîye. Melâyê Cizîrî, di malika xwe da îqtîbasê ji ayeta Qur'ânê digire³²⁷ û Xweda *Ewwel* û *Āxir* e. (MC 242-7) Di malika jêrîn da hem yekîtiya Xweda û hem *Ewwel* û *Āxirîya* Xweda wiha tîne ziman.

Her yek e w dê yek bimînit ewwel û āxir yek e
Lā cerem nābit du bin, ê dê bimînit her hebû (MC 230-9)

2.2.16 Zâhir (ظاهر) – Bâtin (باطن)

Zâhir, bi wateya ferhengî aşîkar, huweyda, me'lûm, vekirî, revşen, 'eyan û dervayî tiştan e.³²⁸ *Bâtin*, bi wateya veşartî, sir û raz, hundirê her tiştî di ferhengan da cih girtîye.³²⁹ Bi wateyek kurt *Zâhir*, tiştê ku ji derva xuya dike û *Bâtin*, tiştê di hundir da ye. Wekî sifetek ji sifetên Xweda *Zâhir*, ew ê ku serdestê ser her tiştî ye. *Bâtin*, ew ê ku zanayê her tiştî ye.³³⁰

Zâhir û *Bâtin* di şî'rên Hâfîzê Şîrâzî da da wekî sifetên Xweda derbas nabin. Di şî'rên Melâyê Cizîrî da carek *Bâtin* û du caran *Zâhir* derbas dibe. Malika ku *Zâhir* û *Bâtin* bi hevra tê da derbas dibin îqtîbasa ji ayeta Qur'âna Pîroz e. Melâyê Cizîrî, wekî ku di ayetê da derbas dibe, *Zâhir* jî û *Bâtin* jî ji sifetên Xweda dihesibîne.

³²³ el-Îsfehanî, s 110.

³²⁴ معین، فرهنگ معین، ج ۱، ص ۲۱۵.

³²⁵ معین، فرهنگ معین، ج ۱، ص ۳۶.

³²⁶ المبيدی، ج ۹، ص ۴۷۶.

³²⁷ (هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ) Ew (Xweda), Ewwel e û Āxir e. (*Qur'âna Pîroz*, Hedîd 3.)

³²⁸ دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۵۶۱۶.

³²⁹ دهخدا، ج ۳، ص ۴۱۶۹.

³³⁰ المبيدی، ج ۹، ص ۴۷۶.

هُوَ الْأَوَّلُ هُوَ الْآخِرُ هُوَ الظَّاهِرُ هُوَ الْبَاطِنُ
هُوَ الْمَعْبُودُ وَالْمَشْهُودُ فِي كُلِّ الْهُيَاتِي³³¹

(MC 242-7)

Melâyê Cizîrî, bi nêrînek felsefî ku pišta xwe dide fikra wehdetu'l-wucûdê hemû tiştî Xweda dizane. Di malika wî da 'âşiq jî, me'şûq jî, ruh jî bede jî, cewher jî, Zâhir jî mezher jî di hemû aferîdeyan da Xweda ye.

Āşiq ew e, dilber ew e Zâhir ew e, mezher ew e
Rûh her ew e gewher ew e D her şahidek dâ şu'le dâ (MC 36-11)

2.2.17 Me'bûd (معبود)

Ew ê ku jê ra îbadet, perestî tê kirin, hêjayî perestîne ye *Me'bûd* e.³³² Di bawerîya Îslamê da tenê Ellah şayeste ye ji bo perestîne û hemû îbadet ji bo Ellah tê kirin.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da em rastî bêjeya *Me'bûd* nehatin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. Ellah, di hemû nasnameyên xwe da *Me'bûd* e, tenê ew şayeste ye ji bo perestîne. (MC 4-129) Di malika jêrîn da Melâyê Cizîrî hizra xwe ya felsefî-tesewufî tîne ziman. Melâyê Cizîrî dibêje ji bilî Xweda li herdû dinya tu tişt tune. Ev hizr heman hizr e ku Neseî (w. 700/1300?) di berhema xwe ya bi navê *Însanê Kamil* da anîye ziman. Neseî dibêje; dema ji 'âlema kesretê derbasî 'âlema wehdetê bibî tu yê bibînî ku hemû saloxet (sifat), nav û kiryar (ef'al) yek wucûd in.³³³

Melâ her wî bibîn her wî eger her wî dinâsî tu
هُوَ الْمَعْبُودُ هُوَ الْمَشْهُودُ بَلْ لَا غَيْرَ فِي الدَّارَيْنِ³³⁴ (MC 175-6)

2.2.18 Meşhûd (مشهود)

Meşhûd di ferhengan da bi wateya amade bûye, tiştê tê dîtin, peyda, tiştê rûberû tê dîtin û kesê gewahîyê dide cih girtîye.³³⁵ *Meşhûd*, di istilaha tesewufê da ew ê ku bi çavê dil tê dîtin, yan bi rêya keşfe tê dîtin, tê zanîn.³³⁶ Zivingî di şerha

³³¹ Ev malik bi tevahî 'erebî ye. Wate: Pêşî ew e, dawî ew e, dîyar ew e, veşartî ew e, hêjayê perestîne ew e, yê di her tiştî da xuya dike ew e.

³³² دهخدا، ج ۱۳، ص، ۲۱۱۱.

(Pêgîhîn:09.09.2021) ([http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(57\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(57).php)), ۱۰۳-۱۰۲، ص، *انسان کامل*، ص ۱۰۲-۱۰۳.

³³⁴ Ev niv malik bi tevahî bi 'erebî ye. Wate: Yê hêjayî perestîne ew e, yê di her tiştî da xuya dike ew e, di herdû dunyayan da ji wî pê va tişt tune.

³³⁵ دهخدا، ج ۱۳، ص، ۲۰۹۸۰.

³³⁶ دۆسکی، شرحا دیوانا ملائی جزیری، ب ۴، ر ۱۲۹.

xwe da wateyêke wiha dide meşhûdê; *Meşhûd*, ew Xwedayê ku di hemû heqîqetan da, di hemû meknan da beriya wî tiştêk tune, piştî wî jî tu hebûnek tune.³³⁷

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da em rastî vî sifetê Xweda nayên. *Meşhûd*, di malika Melâyê Cizîrî da bi nêrînek felsefi-tesewufî sifetê wî Xwedayî ye ku li herdû dinya ji wî pêva tu tişt tune.

Melâ her wî bibîn her wî eger her wî dināsî tu
هوالمعبود هوالمشهود بل لا غير في الدارين³³⁸ (MC 175-6)

2.2.19 Heqq (حق)

Wateya eslî ya bêjeyê guncanîtî, tenasub, lihevî ye. Ew ê ku tiştêkî li gorî hikmeta wî diafirîne jê ra *Heq* tê gotin. Ji ber vê, Xweda, *Heq* e. Ew tiştê ku li gorî hikmeta xwe tê afirandin jî *Heqq* e. Ji ber vê hemû kiryarên Xweda *Heqq* in. Mirin *Heqq* e, heşir *Heqq* e.³³⁹ *Heq*, wekî navek ji navê Xweda ye û bi vê wateyê ye: Ew ê ku hebûna wî bi zatê wî ye û habûna wî venaguhêze.³⁴⁰ Li gorî sofîyan, mebest ji *Heq*, Xweda ye. Ji wan tiştê ku Xweda li ser xwe vacib kirîye jî *Heq* hatîye gotin.³⁴¹

Heq, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navê Xweda ye. Hemû lutf, qencî ji Xweda ye. (HŞ 264-13) 'Işq, razek ji razê Xwedayê *Heqq* e. (HŞ 571-3) 'Işqa Xweda însanan digihîne astên bilind.

گر نور عشق حق به دل و جان او فتد
بالله كز آفتاب فلک خوبتر شوی
Eger nûra 'işqa Heqq bikeve dil û canê te, sond bi Xweda tuyê ji roja li esmanan xweşiktir bibî. (HŞ 717-5)

Heq, di dîwana Melâyê Cizîrî da navek ji navê Xweda ye ku bi piranî di hestên 'aşiqâne da tê dîtin. Ji ezel da Xwedayê *Heq* qedeha 'işqê daye Melâ (MC 245-8) û ji ber vê 'işqê hemû cewr û cefayan ji dest yarê dikişîne. (MC 200-7) Çav û birûyên yarê neqş û sin'et (MC 227-5) û hemû xweşikahîya yarê jî nûra Xwedayê *Heqq* e. (MC 274-1) Di malika jêrîn da nêrînek tesewufî tê dîtin. Sâqî mezherê zat û sifetê Xwedayê *Heqq* e.

Were sofî musilmân be bi sâqî secdeê bîne
Ku şûret mezherê zat û şifâtê Heq Te'âlâ ye (MC 221-2)

³³⁷ الزفكي، ج ٢، ص ٧٠٥.

³³⁸ Ev niv malikl bi tevahî bi 'erebî ye. Wate: Yê hêjayî perestîne ew e, yê di her tiştî da xuya dike ew e, di herdû dunyayan da ji wî pê va tişt tune.

³³⁹ el-Isfehânî, s 296.

³⁴⁰ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ١٢٧.

³⁴¹ هجویری، علی بن عثمان، كشف المحجوب، ص ٥٠، (Pêgihîn: 10.08.2021) [http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(53\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(53).php)

2.2.20 Qeyyūm (قَيُّومٌ)

Qeyyūm 'erebî ye û yek ji saloxetên Xweda ye. Sê caran di Qur'ânê da derbas dibe³⁴² û her sê caran jî piştî sifetê Xweda; *Hey* حى hatîye zikir kirin.³⁴³ Bêjeya *Qeyyūm* mubalexeyê îfade dike û bingeha xwe ji *qāim* قائم ê wergirtî ye. Wateya *qāim* ya ferhengî kesê şîpya, li ser niga sekinandî ye.³⁴⁴ Wekî sifetekî Xweda, *Qeyyūm*; ji wê hebûnê ra tê gotin ku qîyama wî bi zatê xwe ye û qîyama hemû hebûnan jî bi zatê wî ye. Ew Xweda ye ku hemû mewcûdatê cîhanê diafirîne û tedbîr, parastin, şerde û perwerdehiya wan daye ser xwe bi şiklekî daîmî.³⁴⁵

Qeyyūm di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da nayê dîtin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da em du caran rastî *Qeyyūm* tên. Ji *Xwedayê Qeyyūm* ra ezel û ebed heman tişt in. (MC 4-137) Di malika din da jî Melâyê Cizîrî hîkmeta *Xwedayê Qeyyūm* ji nebûn û fenayê dinase.

Ji lāşeyî ji me' dūmî me nāsî sîrrê qeyyūmî
346 سَجُودِي فِي تَرَابِ الْمَحْوِي مِنْ أَعْلَى الْمَقَامَاتِي (MC 248-8)

2.2.21 Deyyūm (دَيُّومٌ)

Deyyūm 'erebî ye û ji peyva dewamê tê. Sifetê Xweda ye bi 'itîbara dewama wî û nebûna veguhêzîyê ji astekî bi bal asteke din va, yan ji revşekê bi bal rewşeke din va. *Deyyūm*, sifetê wî Xwedayî ye ku tu sînor jê ra tune ye, tiştê jê kê mabe, hereket jê ra tune ye û Zatê wî venaguhêze.³⁴⁷

Deyyūm, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da li ber çavê me neket.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da carek derbas dibe û sifetek ji sifetên Xweda ye. Li gorî Melâ, ezel û ebed di daîmbûn û qaîmbûna Xweda da wekî hevin.

Ezel 'eynê ebed yek ān di deyyūmî ū qeyyūmî
Tenezzul tête tefşîlê bi ānâtin we ewqātî (MC 243-4)

2.2.22 Fâtîr (فَاطِرٌ)

Fâtîr, bingeha xwe ji bêjeya *feṭr* (فطر) ê werdigire. *Fetir*, di ferhengan da bi wateya qelaştin, li ser dirêjahîyê qelaştin, dotina pez bi du tilîkan, bi 'ecele strandina hevîr û ji wî hevîrê nanê bê haveyn pehtin û afirandinê hatîye.³⁴⁸ *Fâtîr*, di Qur'ânê da

³⁴² *Qur'āna Pîroz*, Beqer 255; Alî 'Îmran 2; Taha 111.

³⁴³ Wekî mînak: (الله لا إله إلا هو الحى القيوم) Ellah e û ji wî pêve tu ilâh nîne. Ew Sax e û *Qeyyūm* e. (*Qur'āna Pîroz*, Beqer. 255.

³⁴⁴ ابن منظور، محمد بن مكرم، لسان العرب، دار صادر، چاپ سوم، بیروت ۱۴۱۴، ج ۱۲، ص ۵۰۴،

³⁴⁵ الطباطبائي، محمد حسين الميزان في تفسير القرآن، دفتر انتشارات اسلامی، قم ۱۴۱۷، ج ۲، ص ۳۳.

³⁴⁶ Ev niv malik bi tevahî bi 'erebî ye. Wate: Secdeya di axa tunebûnê da ji meqamên herî bilind e.

³⁴⁷ دروآبادی، السيد حسين همدانی، شرح الأسماء الحسنى، انتشارات بيدار، قم ۱۳۷۹، ص ۹۲.

³⁴⁸ el-Isfehanî, s 801. (دهخدا، ج ۱۱، ص ۱۷۱۷۹)

bi wateya ji tunebûnê afirandin, ji tunebûnê anîna hebûnê hatîye.³⁴⁹ Di heman demê da navek ji sûreyê Qur'ânê ye. *Fâtir*, wekî istilah bi wateya Xâliqê, aferînê erd û esman, ew Xwedayê heyîn afirandine, yanî destpêka afirandinê bi wî ye, ew Xwedayê ku erd û esman ji hev fitiqandîye hatîye.³⁵⁰

Fâtir, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagire. *Fâtir*, di dîwana melâyê Cizîrî da di yek malikê da derbas dibe. Melâyê Cizîrî, *Fâtir*, di nêrînên felsefî-tesewufî da ji bo ravekirina xuyabûna Cemâla Xweda di mehbûbên mecazî da anîye ziman. Melâyê Cizîrî, xweşikahîya mehbûban dişîbîne gul û giyayên di fesla biharê da ku ji nû dibişkivin. Vê yekê wekî remza wê Xwedayê *Fâtir*, ku di fesla biharê da ji nû va jiyanê vedijîne 'ecêb û xerîb dîbîne.

| | |
|---------------------------------|---|
| <i>Ew lāleyê ji gul tāzetir</i> | <i>Feşlā buhārê bête ser</i> |
| <i>Cî cî bi hevra tēne der</i> | <i>Xwoş xwoş di 'erdê xāre dā</i> |
| <i>Remzek xerîb û Fātirî</i> | <i>Peydā bibit nêv xaşirî</i> |
| <i>Quwwet te nînin rāgirî</i> | <i>Xekî di nêv qelbê xwe dā</i> (MC 39-3-4) |

2.2.23 Qādiyî Hâcât (قاضى حاجات)

Qādiyê hâcât, bêjeyek hevedudanî yê 'erebî ye. *Qadî*, ji *qeda'iyê* قضاء tê. Wateya eslî ya qedayê bi kiryanan ya bi gotinê ji hev veqetandina tiştan e. Wateyek din jî encam dayîna tiştan e. *Qadî*, bi wateya dawer, hâkim e.³⁵¹ *Hâcât*, ji ihtîyac, pêdivîyê tê. Çi dema *qadî* û *hâcât* bêjeyek hevûdudanî ava dike, dibe sifetê wî Xwedayê ku pêdivî û laveyan bi cih tîne.³⁵²

Qādiyê hâcât, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê wekî sifetekî Xweda cih girtîye.

| | |
|-----------------------------------|----------------------------------|
| حافظ آب رخ خود بر در هر سفله مریز | حاجت آن به که بر قاضی حاجات بریم |
|-----------------------------------|----------------------------------|

Ey Hâfiz! Avrûya xwe li ber derîyê kesên sefil merêje, baştir ew e ku pêdivîyê xwe bibî ber derîyê Xwedayê ku pêdivîyan bi cih tîne. (HŞ 565-5)

Ev sifetê Xweda di dîwana Melâyê Cizîrî da cih nagire.

2.2.24 Subhân (سبحان)

Subhân, bêjeyeke 'erebî ye. Wekî mesder bi wateya pak û munezzeh dêrandina Xweda ji tiştên nebaş yên ku ne layêqî Xweda ne. Wekî sifet bi wateya pak, munezzeh û muqeddes e. Dûrbûnî û pakbûna Xweda ji jin û zarokan jî wateya Subhân e. Di serê hevokan da bi pakî û başî bîranîna Xweda tîne ziman. Di heman

³⁴⁹ Bnr; *Qur'âna Pîroz*, *Fatir* 1; *Taha* 72.

³⁵⁰ النجدي، ج ١، ص ٣١٨-٣١٩.

³⁵¹ دهخدا، ج ١١، ص ١٨٣٤٣.

³⁵² شريف كاشانى، ص ٢١٣.

demê da ji bo te'eccub û heyretmayînê jî tê bikaranîn dema ku *Subhânellâh* tê gotin.³⁵³ Subhân bêjeyek Qur'ânî ye. Di Qur'ânê da, di 41 ayetan da derbas dibe.³⁵⁴

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da du caran bi y ya nisbetê, *Subhânî* سبحانى cih girtî ye. Di malika Hâfîzê Şîrâzî da hunera îhamê tê dîtin ku malik divê hem ji bo pesindarîya memduhê wî were şîrovekirin û hem jî wekî telmîha bi bûyera mû'cîzeyâ du perçebûna hîvê were rave kirin. (HŞ 695-4) Bi herdu aliyên telmîhê jî Subhân sifetek ji sefetê Xweda ye. Di malika duyem da Hâfîzê Şîrâzî, *Subhân* wekî sifetên Xweda di nêrînên felsefî da bi cih dike.

رموز سراناالحق چه داند آن غافل که منجذب نشد و از جذبه های سبحانی
*Remzên sirra Ene'l-Heq*³⁵⁵ çî dizane ew xafil, eger nehatibe kişandin bi
cezbeya Ilâhî. (HŞ 737-19)

Di dîwana Melâyê Cîzîrî da, di deh malikan da tê dîtin. Melâyê Cîzîrî bêtir di nêrînên 'âşiqâne da têkilîyek di navbera *Subhân* û xweşikahîyê da ava dike û *Subhân* hem wekî sifetekî Xweda û hem ji bo heyretmayînê bi kar tîne.

Ehşenellâh ji sirâ subhânî
Ko cemâlek we munezzeh anî (MC 252-6)

Wekî di pênasayê da hate gotin di serê hevokan da munezzeh bûna Xweda tîne ziman: Melâyê Cîzîrî jî bi heman mebestê sifetê Xweda *Subhân* di malika xwe da bi cih kirîye. Di malika Melâ da telmîha hedîseke Cenabê Pêxember jî tê dîtin.³⁵⁶

Ya Reb ji çî rû leb bi şenâyâ te kuşâyim
(MC 19-2) سبحانک لن أحصى في شأنک حمدا³⁵⁷

2.2.25 *Subbûh* (سُبُّوح)

Subbûh (سُبُّوح) yek ji navên Xweda ye. *Subbûh*, bi wateya; ew ê ku muberra, bêrî ye ji her 'eyb û kêmasîyan. Wekî navek ji navê Xweda, wateya wê ev e: Ew Xwedayê ku hemû heyîn, wî tesbîh û tenzîh dîkin. Tesbîh û tenzîhkirina Xweda ye ji her tiştê ku ne şayesteyî wî ye û ev tesbîh û tenzîh ne tenê taybetîyê însanan e.³⁵⁸

³⁵³ دهخدا، ج ۹، ص ۱۳۳۹۰.

³⁵⁴ Wekî mînak bnr: Beqer 32; Alî 'Îmran 191; Isra 1.

³⁵⁵ Ji bo Ene'l-Heq bnr; tez, r 262.

³⁵⁶ Ev Hedîs bi vî şiklî ye. (لَا أُحْصِي ثَنَاءَ عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَيَّ نَفْسِيكَ) Ez, bi şayesteyî nikarim medh û senaya te bikim. Te çawa medh û senaya xwe kiribe, tu wusa yî. (محیی الدین اَبی زکریا یحیی بن (شرفه ریاض الصالحین، دار المنهاج، الطبعة السابعة، لبنان - بیروت ۱۴۳۶، ص ۴۵۴)

³⁵⁷ Ev niv malik bi 'erebî ye. Wate: Ya Reb, ez te pak û munezzeh didêrim, ez ê çawa bikaribim li ser qencîyên te yên bê hejmar hemdê te bikim?

³⁵⁸ شریف کاشانی، ص ۳۲۱.

Belkî wekî ku Qur'ân dibêje³⁵⁹ ajal, nebat û hemû heyînên afirandî tesbîhê Xweda dikan.

Subbûh, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. *Subbûh*, di dîwana Melâyê Cizîrî da, di yek malikê da derbas dibe. Melâyê Cizîrî, navê Xweda *Subûh* di mîjara felsefî-tesewufî da derbarê afirandina heyînan da anîye ziman. Di malikê da tecellî û navê Xwedayê *Subûh* bi hev ra cih digire. Tecellî ku nûra Xweda ye û pak û pîroz e bi wateya *Subûh* ra hunera tenasube ava dike.

Ev reng tecellâ kir subûh Sâqî ji şehkâsâ fitûh
Mey rêhte cāmā 'eql û rûh Roj bû di qewsê qubbâ da (MC 44-1)

2.2.26 Mecîd (مجيد)

Mecîd, navek ji navên Xweda ye. *Mecîd*, ji bêjeya Mecdê (مجد) hatiye. *Mecd*, gihiştina şeref û keremê ye.³⁶⁰ *Mecîd*, di ferhengên da bi wateya şerîf, mezin, gramî qedr, bilind paye, 'alî mertebe hatiye.³⁶¹ *Mecîd*, wekî navek ji navên Xweda bi wateya ew ê ku îhsan, qencîyan pir dike,³⁶² Bilind, mezin, bi 'itîbara mezinbûna sifetan e ku kesek nikare xwe bigihîne mezinbûna sifetan.³⁶³ *Mecîd*, ew Xweda ye ku bi zatê xwe şerîf e, bi e'falên xwe cemîl e û kerema wî gelek zêde ye. *Mecîd*, hemû wateyên navên Celîl, Wehhâb û Kerîm di xwe da dicivîne.³⁶⁴

Mecîd, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da ne wekî navê Xweda, wekî nav û sifetekî Qur'ânê; *Qur'âna Mecîd* derbas dibe. Melâyê Cizîrî ji bo gotina xwe bipeyîtîne bi Qur'âna Mecîd sond dixwe.

Muşhefâ husn û cemâlê sûretâ xâl û xe'ân

ما تلونا غير حرف لا و قرآن مجيد³⁶⁵ (MC 99-3)

³⁵⁹ *Qur'âna Pîroz*, Îsra 45.

³⁶² el-Isfehânî, s 990.

³⁶⁰ درودآبادی، ص ۱۶۲.
³⁶¹ دهخدا، ج ۱۳، ص ۲۰۳۴۱.

³⁶³ درودآبادی، ص ۱۶۲.
³⁶⁴ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ۱۲۳.

³⁶⁵ Ev niv malik bi 'erebiye. Wate: Ez bi Qur'ana Mecîd sond dixwum ku ji bilî herfa "na" me tiştekan nexwendîye.

2.2.27 Berawîrd û Nirxandin

Tablo 4: Nav û Sifetên Xweda

| Rêz | Nav û Sifetên Xweda | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|---------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Cebbâr | 0 | 0,000 | 4 | 0,177 |
| 2 | Celâl | 1 | 0,021 | 6 | 0,265 |
| 3 | Zu'l-Celâl | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 4 | Cemâl | 1 | 0,021 | 19 | 0,839 |
| 5 | Celîl | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 6 | Ezel | 3 | 0,063 | 6 | 0,265 |
| 7 | Lâ-yezâl | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 8 | Lem-yezel | 0 | 0,000 | 5 | 0,221 |
| 9 | Rehmân | 3 | 0,063 | 1 | 0,044 |
| 10 | Rezzâq | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 11 | Semed | 2 | 0,042 | 24 | 1,060 |
| 12 | Ehed | 1 | 0,021 | 5 | 0,221 |
| 13 | Wâhid | 0 | 0,000 | 6 | 0,265 |
| 14 | Wedûd | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 15 | Wehhâb | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 16 | Wâhib | 0 | 0,000 | 3 | 0,133 |
| 17 | Xâliq | 1 | 0,021 | 5 | 0,221 |
| 18 | Bârî | 0 | 0,000 | 3 | 0,133 |
| 19 | Musewwir | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 20 | Xellâq | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 21 | Ûefûr | 1 | 0,021 | 2 | 0,088 |
| 22 | Ûeffâr | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 23 | Ewwel | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 24 | Âxir | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 25 | Zâhir | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 26 | Bâtin | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 27 | Me'bûd | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 28 | Meşhûd | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 29 | Heqq | 9 | 0,189 | 29 | 1,281 |
| 30 | Qeyyûm | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 31 | Deyyûm | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 32 | Fâtir | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 33 | Qâdiyê Hâcât | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 34 | Subhân | 2 | 0,042 | 10 | 0,442 |
| 35 | Subbûh | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 36 | Mecîd | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| Giştî | | 27 | 0,566 | 152 | 6,714 |

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji nav û sifetên Xweda 13 heb; *Celâl*, *Zu'l-Celâl*, *Cemâl*, *Ezel*, *Rehmân*, *Rezzâq*, *Semed*, *Ehed*, *Xâliq*, *Ûefûr*, *Heq*, *Qâdiyê Hâcât*,

Subhân derbas dibin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 33 heb nav û sîfetên Xweda; *Cebbâr, Celâl, Cemâl, Celîl, Ezel, Lâ-yezâl, Lem-yezel, Rehmân, Semed, Ehed, Wâhid, Wedûd, Wihab, Wâhib, Xâliq, Bârî, Musewwîr, Xellâq, Xefûr, Xeffâr, Ewwel, Âxir, Zâhir, Bâtin, Me'bûd, Meşhûd, Heq, Qeyyûm, Deyyûm, Fâtir, Subhân, Subbûh* û *Mecîd* derbas dibin. Ji aliyê pîrbûna navan Melâyê Cizîrî li pêş e.

Di dîwanên herdû şa'iran da ji nav û sîfetên Xweda 10 heb; *Celâl, Cemâl, Ezel, Rehmân, Semed, Ehed, Xâliq, Xefûr, Heq* û *Subhân* hevpar in. *Zu'l-Celâl, Rezzâq* û *Qâdiyê Hâcât* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih digirin, lê di dîwana Melâyê Cizîrî da cih nagirin. Ev, ferqa tercîha li ser bikaranîna nav û sîfetên Xweda ye.

Nav û sîfetên Xweda yên di dîwana Melâyê Cizîrî û Hâfizê Şîrâzî da hevpar in, ji van yên ku herî zêde cih digire; *Heq* e. Ev, xalek hevpar e. *Heq*, di heman demê da di nava hemû nav û sîfetên Xweda da, di dîwana herdû şa'iran da, di rêza yekem da cih girtîye. Ev jî xalek hevpar e. Ji aliyê hejmaran va Melâyê Cizîrî 29 caran, Hâfizê Şîrâzî 9 caran cih daye *Heq*. Ev, ferqa hejmarî ye.

Nav û sîfetên Xweda bi tevahî di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 27 caran bi rêjeya %0.566, di dîwana melâyê Cizîrî da 152 caran û bi rêjeya %6.714 cih digirin. Hem ji aliyê hejmaran va û hem ji aliyê rêjeyê va ferqek gelek zêde derdikeve holê.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da ji nav û sîfetên Xweda bi rêzê; *Heq* 29 car, *Semed* 24 car, *Cemâl* 19 car û *Subhân* 10 caran derbas dibin. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi rêzê; *Heq* 9, *Ezel* 3, *Rehmân* 3, *Semed* 2 û *Subhân* 2 caran derbas dibe. Tercîha herdû şa'iran li ser rêzandina nav û sîfetên Xweda tenê di navê *Heq* da xuya dibe. Di nav û sîfetên din da wekhevîyek nayê dîtîn. Ev jî ferqek ji aliyê tercîha li ser nav û sîfetan e.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di bikaranîna nav û sîfetên Xweda da bêtir endîşeyên şa'irtiyê derdikevin pêş. Wekî *Semed*. Di herdû malikên ku *Semed* derbas dibe, bêjeya *Senem* jî tê dîtîn. Hâfizê Şîrâzî di navbera *Semed* û *Senemê* da hem hunera cînasê û hem hunera tezaadê saz kirîye. Herwiha, di malika ku *Rehmân* derbas dibe, hebûna hatina bayê, hunera telmîhek hedîsa Cenabê Pêxember (s.a.s.) e, teşbih û mûbalexe jî di malikê da hene.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di nav û sîfetên Xweda da îqtîbasên ji ayetan cih digirin. Melâyê Cizîrî, ev îqtîbasên ji Qur'ânê bi 'erebî û di malik/misrayên 'erebî da bi cih kirîye. Bikaranîneke bi vî şiklî di dîwana Hâfizê Şîrâzî da peyda nabe. Ev xal cudahîyek e di navbera herdû şa'iran da.

Ji xeyrî nav û sifetên Xweda yên resen û yên di berhemên dînî da derbas dibin, nav û sifetên Xeweda yên edebî û yên di nava gel da hatine bikaranîn di dîwanên herdû şa'iran da wekî xaleke hevpar tê dîtîn. Mînak; di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas bûna *Siltanê Ezel* û *Ustadê Ezel*, di dîwana Melâyê Cizîrî da *Neqqaşê Ezel* dikare mînak were dayîn.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da bêtir guncanbûna nav û sifetên Xweda bi wateya ferhengî û istilahî derdikeve pêş. Bi gotineke din, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da huner heye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tevî hunerê 'ilm heye. Melâyê Cizîrî, bi bikaranîna nav û sifetên Xweda hizrên xwe yên kalamî, derbarê 'eqaîda Îslamê raste rast anîye ziman. Bi vî şiklî xwestîye ku hizrên xwe yên kalamî ragihîne xwendevanên xwe. Melâyê Cizîrî dema dibêje;

Sirrê wehdet ji ezel girtîye hettâ bi ebed
Wâhid û ferd e bi zâtê xwe wî nînin çu 'eded (MC 96-1)

tevî hunerên edebî nêrînek teqez û qet'î heye. Ev nêrîna teqez, fikr û ramana Melâyê Cizîrî ye. Melâyê Cizîrî, bi vî şiklî zanebûna xwe ya derbarê ferheng, 'ilmê kalamê, 'ilmê 'eqaîdê û felsefeyê bi me dide zanîn. Ev, hêza wî ya melâtî û muderristîyê ye. Agahîyek bi vî rengî derbarê Hâfizê Şîrâzî da ji bikaranîna nav û sifetên Xweda nayê deranîn. Ev xal jî xalek cuda ye di navbera herdû şa'iran da.

Melâyê Cizîrî, nav û sifetên Xeweda bi gelemperî di ravekirina mijarên felsefî- tesewufî da bi kar diîne. Delîla vê yekê ev e ku di menzûmeya wî da – ku menzûme bi tevahî li ser nêrînen felsefî-tesewufî ava bûye – 15 nav û sifetên Xweda 23 caran derbas dibe. Ev jî îsbat dike ku Melâyê Cizîrî nav û sifetên Xweda li gorî wateya wan ya ferhengî-istilahî di munasebeta mijaran da bi kar anîye. Yanî, guncanî heye di navbera mijar û nav û sifetên Xweda da. Ev xal jî cudahîyeke navbera herdû şa'iran e.

Melâyê Cizîrî, di bikaranîna nav û sifetên Xweda da, nav û sifetên têkildarî hev, çî ziddê hev bin û çî ji layê wateyê va nêzî hev bin, bi kar anîye. Bi gelemperî nav û sifetê bi vî rengî di yek malikê da bi cih kirîye. Wekî; Ewwel û Âxir, Zâhir û Bâtin, Wâhid û Ehed, Xefûr û Xeffâr, Qeyyûm û Deyyûm. Bikaranîneke bi vî rengî di dîwana Hâfizê Şîrâzî da li ber çavan neket.

Cebbâr, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 4 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da di hestên 'âşiqâne da tê dîtîn. Di malikan da behsa sin'etê Xwedayê *Cebbâr* hatîye kirin ku bi wateya istilahî guncan e.

Celâl, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê, di dîwana Melâyê Cizîrî da 6 caran derbas dibe. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi wateya mezinbûna Xweda ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da hem di nêrînên tesewufî, hem di nêrînên felsefî û hem di hizrên 'âşiqâne da cihekî taybet digire. Melâyê Cizîrî, ji her alî ji navê Xweda *Celâl* sûd wergirtîye.

Zû'l-Celâl, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê wekî sifetekî Xweda cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe.

Cemâl, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di yek malikê da derbas dibe. Di vê malikê da ji xeyrê têkilîya bi tecelliyatê tu taybetî nehatîye nîşandayîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di 19 malikan da cih girtîye. Ji ber wateya vî navê Xweda ku xweşikahî ye, Melâyê Cizîrî gelek giramî daye vî navî. Lewra Melâyê Cizîrî dîwana xwe li ser 'îşqê ava kirîye û 'îşq ji xweşikahîya Xweda derketîye holê. Ji ber vê di hemû malikên têkildarî 'îşqê da, çi felsefî, çi tesewufî û çi 'âşiqâne be, di wan da ji Navê Xweda *Cemâl* sûd wergirtîye.

Celîl, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di yek malikê da tê dîtîn. Di vê malikê da têkilîyek di navbera *Cemâl* ku xweşikahîya derva ye û *Celîl* ku sifetên kemal e hatîye saz kirin û di hizreke 'âşiqâne da hatîye bikaranîn.

Ezel, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di sê malikan da bi terkîbên wekî; *Siltanê Ezel* û *Ustadê Ezel* cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da di şeş malikan da derbas dibe. *Ezel*, di dîwana Melâyê Cizîrî da bêtir di hizrên tesewufî-felsefî da cih girtîye. Carekê bi terkîba *Neqqaşê Ezel* derbas dibe.

Lâ-yezâl û *Lem-yezêl*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Lâ-yezâl* di yek malikê da û *Lem-yezêl* di 5 malikan da cih digire. Ev herdu sifetên Xweda di nêrînên felsefî da derbas dibin.

Rehmân, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di sê malikan da derbas dibe. Di van malikan da carekê bi *Rehmânê La-yemut* derbas dibe. Di yek malikê da bi hunera telmîhê hedîseke cenabê Pêxember (s.a.s.) ya derbarê Wesel Qerenî bi bîr tîne. Di malika din da, di pesinandina memduhê xwe da, *Rehmân* bi cih kirîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di yek malikê da û di hizrên âşiqâne da, em *Rehmân* dibînin. Di vê malikê da, di navbera xweşikahî yê û afirandina xweşikahîyê ji teref Xwedayê *Rehmân* hunera tenasubê hatîye saz kirin. Bi vî şiklî wateya navê Xweda di mezmûna malikê da daye rûniştandin.

Rezzâq, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Di vê malikê da *Rezzâq* ew Xweda ye ku rizqê bendeyên xwe ji wan ra dibexşîne. *Rezzâq*, di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe.

Semed, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di du malikan da cih digire. Di dîwana wî da ji bo sazkirina hunerên edebî cih digire. Di herdû malikan da bi bêjeya *Senemê* hatiye bikaranîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, bi 24 bikaranînan di rêza duyem da cih digire. Melâyê Cizîrî, ev navê Xweda di hizrên felsefî û 'aşiqâne da 'emilandîye. *Semed*, wateya nehewcedariyê di xwe da digire. Melâyê Cizîrî, xwestîye ku bibêje ew Xwedayê ku ne hewcedarê tu tiştêkî ye, ji fedl û kerema xwe her tişt afirandiye.

Ehed, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di yek malikê da tê dîtîn. Di vê malikê da tenê wekî navek ji navên Xweda derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da di 5 malikan da cih digire. Di van malikan da vekolînek kelimî-felsefî-tesewufî tê dîtîn. Di van malikan da em zanebûna Melâyê Cizîrî ya di 'ilmê tesewuf, felsefe û kelimê da dibînin.

Wâhid, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di 6 malikan da, di ravekirina mijarên kelimî-tesewufî cih digire. Melâyê Cizîrî bi nêrînek tesewufî-kelimî li ser *Wâhid* û *Ehedê* rawestîyaye ku di heman demê da felsefeye jî. Di malika xwe da dema dibêje;

*Ferq e Wâhid ji Ehed lê di meqâmê şemedî
Bi heqîqet ko yek in herdu çî Wâhid çî Ehed* (MC 96-3)

cudahî û wekhevîya navbera herdû navan bi nêrîneke felsefî-kelimî rave dike. Derbarê yekîtiya Xweda da nêrînen xwe bi teqezî tîne ziman. Dixwaze yekîtiya Xweda îsbat bike.

Wedûd, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di yek malikê da, di nêrînen felsefî-tesewufî da derbas dibe. *Wedûd*, ew Xweda ye ku bi hezkirin heyîn afirandîye.

Wehhâb û *Wâhib* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Wehhâb* carekê û *Wâhib* sê caran derbas dibe. Herdû navên Xweda jî ji bo ravekirina mijarên 'aşiqâne cih digirin. Di navbera wateya herdû navan û avakirana mezmûnên malikan da guncanî tê dîtîn.

Ji navên Xweda; *Xalîq*, *Bârî*, *Musewir* ku bi hevra têkildar in, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da tenê *Xalîq* di yek malikê da cih digire. Herwiha *Xellâq* jî ku têkildarê *Xalîq* e di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagire. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da,

di wê malika ku têda *Xâliq* derbas dibe, di navbera *Xâliq* û *xelqê* da hunera cînasê û tenasube hatîye sazkirin. Yanî bî nêrîneke şa'irane lê hatîye nêrîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Xâliq* 5 caran, *Bârî* 3 caran û *Musewwîr* û *Xellâq* heryek carekê derbas dibin. Melâyê Cizîrî van her çar navên Xweda bi gelemperî di hizrên tesewufî-felsefî da bi cih kirîye. Herwiha *Xalîq* ji bo sondxwarîne jî hatîye bikaranîn.

Xefûr, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da carekê bi wateya Xwedayê gunehan dibexşîne cih digire. Di malika ku *Xefur* derbas dibe, têda, Hâfîzê Şîrâzî hêvîya bexşandina gunehan dike. Ev nêrîna misilmanekî jê rêzê ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Xefûr* di du malikan da, di hizrên 'aşîqâne da cih digire. Di hizra Melâyê Cizîrî da Xwedayê *Xefûr*, 'aşîqê di rêya evîne da hatîye sotin dibexşîne.

Xeffâr, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da cih nagire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da di yek malike da bi wateya Xwedayê gunehan dibexşîne cih girtîye.

Ewwel û *Âxir* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da cih nagirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da her yek du caran derbas dibin. Melâyê Cizîrî bi van herdû navan hem hizrên xwe yê derbarê 'ilmê kelimê anîye ziman û hem ji ayeta Qur'ânê îqtîbas kirîye û bi vî rengî hêza gotina xwe xurt kirîye.

Zâhir û *Bâtin* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Zâhir* di du malikan da û *Bâtin* di yek malikê da derbas dibe. Melâyê Cizîrî di nêrîne felsefî da ji îqtîbasa ayetê fikra xwe ya derbarê wehdetu'l-wucudê bi van sifetên Xweda tîne ziman.

Me'bûd û *Meşhûd* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da her yek du caran derbas dibin. Melâyê Cizîrî, hem di nêrîne felsefî û hem di nêrîne kelimê da cih daye van navan. Bi taybet di nêrîne kelimê da tîkîlîya navbera herdû navan û dinya û axretê balkêş e. *Me'bûd*, ew Xweda ye ku 'îbadet jê ra tê kirin. Cihê îbadetê dinya ye. *Meşhûd*, ew Xweda ye ku tê dîtîn. Cihê dîtîna Xweda jî axret e. Ji ber vê Melâyê Cizîrî di vê hizrê da ye ku ji xeyrê Xwedayê *Me'bûd* û *Meşhûd* li herdû dinya tu tişt tune. Û belkî ev piştî xwe dide fikra Wehdeti Mutleqê.

Heq, hem di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da û hem di dîwana Melâyê Cizîrî da, di rêza yekem da cih digire. Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 9 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 29 caran derbas dibe. Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da di hizrên 'aşîqâne da cih digire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da hem di hizrên 'aşîqâne, hem di ramanên felsefî û hem di nêrîne tesewufî da cih girtîye. *Heq*, hebûn û yekîtiya Xweda îşaret dike. Ji

ber vê herdû şa'iran jî herçend di nêrînên cuda da anîbin ziman jî, di eslê xwe da yekîti û hebûna Xweda bi navê *Heq* anîne ziman.

Qeyyûm û *Deyyûm*, ku ji aliyê wateyê va têkildarî hev in, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Qeyyûm* du caran û *Deyyûm* carekê derbas dibe. Melâyê Cizîrî ev herdû sifetên Xweda bi hevra bi kar anîye di hizrên felsefî-tesewufî da.

Fâtir, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nehate dîtîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Fâtir*, di yek malikê da bi tenasuba wate û mezmunê, di hizreke 'âşiqâne da ew Xweda ye ku xweşikahîya mehbûbê deranîye.

Qâdiyê hâcât, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di yek malikê da derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe. *Qâdiyê hâcât*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di malikeke pendamîz da ji bo şîretkirinê derbas bûye bi vî şiklî: Ew Xweda ye ku pêdiviyên bendeyan pêk tîne.

Subhân, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di du malikan da û di dîwana Melâyê Cizîrî da di deh malikan da derbas dibe. Nêrîna Hâfizê Şîrâzî nêrîneke felsefî ye û bi gotina Ene'l-Heq têkildar e. Di dîwana Melâyê Cizîrî da bêtir di nêrînên felsefî-tesewufî da yên ku di ravekirîna kiryarên Xweda da bêkêmasîyê tînin ziman, di wan da, cih girtîye.

Subbûh, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di yek malikê da, di hizreke tesewufî-felsefî da, di asta kemalê da, bê kêmasî tecellîyata Xweda tîne ziman.

Mecîd, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nayê dîtîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da ne wekî navê Xweda, wekî navek ji navên Qur'ânê ji bo sond xwarinê derbas dibe.

2.3 Firişte

2.3.1 Melek (مَلَكٌ) – Firişte (فرشته)

Melek, bêjeyek 'erebî ye, pirjimara wê *melâ'iket* (ملائكة) e. Bi farisî û kurdî *firişte* (فرشته) û *surûş* (سروش) hatîye gotin. Wateya aferîdeyên, mexlûqên rûhanî dide.³⁶⁶ *Firişte* yan *melek*, cismê letîf û nûranî ne ku ji şiklê gûnagûn pêk hatine.³⁶⁷ *Melek*, cismên hewayî û letîf in, hêza wan heye bikevin gelek şiklan û li asîmana dimînin.³⁶⁸ Di Îslamê da ji *firişteyan* ra, xwarin, vexwarin, raketin, zewac, nêrbûnî,

³⁶⁶ دهخدا، ج ۱۱، ص، ۱۷۰۷۸.

³⁶⁷ الجرجاني، على بن محمد السيد الشريف، معجم التعريفات، تحقيق: محمد صديق المنشاوي، دار الفضيلة، مصر، ۲۰۰۴، ص ۱۹۳.

³⁶⁸ التهانوي، ج ۲، ص ۱۶۴۰.

mêbûnî, betilandin, xortanî û pîranî tune. Wekî ku Qur'ân dibêje per û baskên wan hene.³⁶⁹ Bê emrîya Xweda nakin û tiştê ku Xweda emrê wan bike dikan.³⁷⁰

Di derbarê hejmara *melekan* da agahîyek teqez tune. Di nava *melekan* da bi navê *Cebraîl, Mikail, Îsrafil* û *'Ezraîl* çar melekên mezin hene.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem *melek* û hem *firişte* derbas dibin. Herdû jî bi heman wateyê di malikan da cih digirin. Xweda, Hezretî Âdem ji herîyê afirandîye.³⁷¹ Di bawerîya Îslamê da yên ku herîya Hezretî Âdem stirandine û xistine qalib *firişte* ne. Ev bawerî, di edebîyatê da jî cih girtîye û di malikên Hâfizê Şîrâzî da jî tê dîtin.

Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da, *firişteyan* di meyxaneyê 'îşqê da ev kar kirine û herîya Hezretî Âdem bi ava 'îşqê sitirandine (HŞ 307-1) Ji ber vê pêwîst e ku *firişte* li ber derê meyxaneyê 'îşqê, tesbîhê Xweda bidin. (HŞ 330-7)

Xweda, dema Hezretî Âdem diafirîne emrê *melâîketan* bi çûna secdeyê ji Hezretî Âdem ra dike. Hemû *melek* diçine secdeyê ji xeyrê Şeytân.³⁷² Hâfizê Şîrâzî vê secdeyê wiha rave dike. Mebesta *firişteyan* di secdeya Hezretî Âdem da secde kirina Xweda bû, lewra tecellîya nûra Cemâla Xweda di Hezretî Âdem da dîtibûn. (HŞ 699-5)

Hatîye gotin ku haya *melekan* ji 'îşqê tune. Sebebê wê jî ev e ku *melek* ji agir hatine afirandin.³⁷³ Hâfizê Şîrâzî sedema ku agirê 'îşqê bûye behra însan bêagahîya *melekan* ji 'îşqê dizane. Yanî ji ber ku *melek* 'îşqê nizanin, 'îşq bûye behra âdemîyan.

جلوه ای کرد رخت دید ملک عشق نداشت عین آتش شد از این غیرت و بر آدم زد
Rûyê te cilwe kir, dît ku melek ji 'îşqê dûr in, ji ber vê agirê xîretê di wucûda te da şu'le da û bi canê Âdem ket. (HŞ 262-2)

Hâfizê Şîrâzî, di malika jêrîn da bi hunera telmîhê afirandina Hezretî Âdem ji axê bi bîr tîne. Hezretî Âdem, ji alîyê cesed ji axê û ji alîyê rih bi pîfikirina rihê Xweda³⁷⁴ mecmu'yê 'âlema rûhanî û cismanî ye. Ji ber hinde qabilê rakirina barê

³⁶⁹ *Qur'âna Pîroz*, Fatir 1.

³⁷⁰ *Qur'âna Pîroz*, Tehrîm 6.

³⁷¹ *Qur'âna Pîroz*, Sad 38.

³⁷² *Qur'âna Pîroz*, Beqer 34.

³⁷³ نجم الدين الرازي، عبدالله بن محمد الداية، مرصاد العباد من المبدأ إلى المعاد، بسعي: حسين الحسيني نعمت الله، مطبعة مجلس، ايران ۱۳۱۲، ص ۲۳.

³⁷⁴ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Sad 72.

'iŝqê ye.³⁷⁵Hâfizê Şîrâzî di malika xwe da têkilîya bêagahîya *melekan* ji 'iŝqê û afirandina Hezretî Âdem ji axê tîne ziman.

فرشته عشق نداند که چیست ای ساقی
بخواه جام و گلابی به خاک آدم ریز
Ey Sâqî! Melek nizanin 'iŝq çî ye. Cama ŝerabê bixwaze û hinekî jê wekî ava

gula bi axa Hezretî Âdem bireŝîne. (HŞ 423-4)

Ji her karekî Xweda ra hinek *melek* peywirdar in. Ji *melekê* baranê ra *Melekê Rehmêtê* hatîye gotin.³⁷⁶ *Melekê Rehmêtê* hinek ji ŝeraba 'iŝqê wekî gulava bêhnxweŝ li rûyê rindan kirîye, lewma wekî horî û perîyan xweŝik bûne û em 'âŝiqî wan dibin.

گرفته ساغر عشرت فرشته ی رحمت
ز جرعه بر رخ حور و پری گلاب زده
Firiŝteyê rehmêtê cama ŝadiyê xistibû destê xwe û qurtek ji wê wekî gulavê li

ser çavê horî û perîyan direŝand. (HŞ 625-5)

Me'ŝûqa mecazî hatîye ŝibandin bi xweŝikahîya *firiŝteyan*. Yara Hâfizê Şîrâzî, wekî *melekan* xweŝik e. (HŞ 137-2) Yar, ew qas pak û temîz e ku *melek* di zikrên xwe da behsa baŝî û xweŝikahîya wê dikan. (HŞ 470-2) *melek* hatîye ŝibandin bi 'iŝqê. Dil jî wargeha 'iŝqê ye. Dil cihê yek tiŝtî ye. Du tiŝtê dijberî hev di dil da cih nagirin. Ji bo ku *melek* ('iŝq) bikeve dil, divê her tiŝt ji dil derkeve. (HŞ 375-2) *melek* ji însanê qenc ra laveyan dikan.

دلا معاش چنان کن که گر بلغزد پای
فرشته ات به دو دست دعا ننگ دارد
Ey dil! Jîyanek wusa bijî çî dema ku tu lukumî bila ji bo te melek herdû destê

xwe vekin û dest bi du'a bikin. (HŞ 222-3)

Hâfizê Şîrâzî, di pesindariya memdûhê xwe da ji *melekan* sûdê werdigire. Hemû *melek* û asîman di xizmeta memdûhê wî da nin.

فلک جنیبه کش شاه نصرت الدین است
بیا ببین ملکش دست در رکاب زده
Asîman bi mezinbûna xwe ango hespê yedek yê Şah Nusretuddîn dikiŝîne û

wer bibin ku çawa melek jî ji wî ra rikêbdariyê dikan. (HŞ 625-11)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *melek* û *firiŝte* derbas dibin, lê bi kar anîna *melek* bêhtir e, lewra carek tenê em rastî *firiŝte* tên, lê hejdeh caran *melek* hem bi pirjimarî û hem bi bêjeyên hevedudanî cih digire.

Ji ber ku tecellîya Xweda di Hezretî Âdem de xuya bûye *melekan* berê xwe dane wî û jê ra secde bûne. (MC 263-3; m. 304-4) Di Qur'ânê da derbas dibe ku

³⁷⁵ نجم الدین الرازی، ص ۲۳-۲۴.
³⁷⁶ خالقی، ص ۹۴۶.

Xweda û *melâiketên* Xweda selewatan li ser Pêxember (s.a.s.) didin.³⁷⁷ Melâyê Cizîrî, li hember pesindariya Xweda û *melâiketên* Xweda neşê ku bi şayesteyî pesindariya Resûlê Xweda (s.a.s.) bike.

Fehmā minê qāşir we neşim weşfê edā kim
Meddāhi ji Te rā Xāliq ū hindī melekī ne (MC 220-6)

Hem li gorî tesewufê û hem li gor Melâyê Cizîrî evîn bingeha her tiştî ye. Li gorî Melâyê Cizîrî hemû 'âlem li ser evînê avabûye. Zivirandina gerdûnê, çerx û semaya gerdûnê bi evînê ye, û herwiha sema û reqsa *melekan* jî ji ber evînê ye. (MC 153-7)

Bi evînê melek ū çerx ū felek têne semā
Rewşen in tēki bi mihrê ji semā tā bi semek (MC 153-7)

Dema me'sûqa Melâyê Cizîrî tecellîyê li ser wî dike, çerx û felek û *melek* û roj û stêr û burc hemî wî pîroz dikan. (MC 82-11) Ji ber tecellîya yarê *melek* bi zimzim tên xwarê û diçin jor û erwah jî 'işqê hildikişin jor.

Dengê melekān zimêhne zimzim
Erwāhi ji 'işqê têne mi'rāc (MC 82-13)

Yara Melâyê Cizîrî bi cazîbeya xwe wekî perîyan û bi sifetên xwe wekî horîyan e ku sed *melâiket* li dora wê dizivirin û ji wê ra direqisin. (MC 63-7; 303-4) Mehbûba Melâyê Cizîrî, di xweşikahîya xwe da ji horîyan, wîldanan, *melekan* û hemû beşeran xweşiktir e. (MC 157-1; 171-2; 231-6) Yara wî horîya rengmelek e. (MC 182-1; 312-9) Sed *melâiket* tên guh didin deng û çingeçinga ku ji xemla yara wî tê.

Çingeçingā bişkowān āwāz ū dengê zergowān
Sed melāik guh didin ber wê newāyê rast ū çep (MC 62-4)

2.3.2 Surûş (سروش)

Surûş, bêjeyeke farsî ye û ji *Surûşeyê* hatîye. *Surûşe*, di Awestayê da bi wateya îta'et û fermanberî ye. Bi taybet di pêkanîna emrê Ilâhî û bihîstina kelimên Xweda da. Bêjeya *Surûşe* ji *Surû* bi wateya bihîstinê hatîye ku bi vê wateyê di Awestayê da gelek caran hatîye bikaranîn. *Surûş*, yek ji muhîmtirîn îzdanê mezdisîna ye û mezherê îta'et û femandariyê ye. Remza xisleta qaîlbûnî û teslîmîyê ye. *Surûş*, di Awestayê da bi inwanê 'ilm ji firîşteyê ra hatîye gotin ku meqamekî mezin ji bo wî

³⁷⁷ (إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا) Xweda û *melâiketên* Xweda li ser Nebî (Hezretî Muhememd) selewatan didin, geli bawermendan! Hûn jî selat û selaman li ser Wî bidin. (*Qur'âna Pîroz*, Ehزاب 56.)

hatîye terxankirin. Vê paşîyê di edebiyata mezdisîna da *surûş* wekî peykê Xweda û hamilê wehyê cih girtîye. Bêjeya *surûş* bi giştî bi wateya firîşte û bi taybet li hember Cibraîlê samî di edebiyata farsî da tê bikaranîn.³⁷⁸ Bi vî rengî *surûş*, ew firîşte ye ku peyam anîn peywira wî ye.

Surûş, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, 10 caran, di malikan da cih daye xwe. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ev taybetîyên *surûş* tèn dîtin. *Surûş* û Rûhu'l-qudus heman melek in û di yek malikê da bi hev ra cih girtine. (HŞ 751-1) *Surûş*, ji 'âlema xeybê peyaman tîne, lê cihê ku peyaman dide meyxane ye. (HŞ 107-3) *Surûş*, mizgînîyên rehmetê dide. Bi gotineke din her tim mizgînîyên xweşî û şahîyê dide.

لطف الهی بکند کار خویش مژده ی رحمت برساند سروش

Lutfâ Ilâhî di encamê da karê xwe dike, û surûş mizgînîya rehmetê radigihîne.

(HŞ 446-2)

Di du malikan da *surûş* û *ehrimen* ku yek ji navê Şeytân e bi hev ra derbas dibin. Di van malikan da *surûş* û *ehrimen* dijberî hev in. *Ehrimen* her wesweseyan dide û li hember vê yeke *surûş* peyamên rastîyê radigihîne. Di van malikan da taybetîyek *surûş* derdikeve holê ku carinan *surûş* peyamên xwe ne bi deng, bi îlhaman dişîne.

در راه عشق و سوسه ی اهرمن بسی ست پیش آی و گوش دل به پیام سروش کن

Di rêya 'îşqê da wesweseyên ehrimen zêde ne, were pêş û guhê dilê xwe bide peyamên surûş. (HŞ 597-2)

Surûş, di dîwana Melâyê Cizîrî da 3 caran derbas dibe. Melâyê Cizîrî bi nêrineke cuda *surûş* di malikên xwe da bi kar anîye. Her sê malikên ku *surûş* di wan da derbas dibin hizrên 'âşiqâne tînin ziman. Melâyê Cizîrî, di her sê malikan da jî têkilîyên di navbera *surûş* û meyê ava dike. Di bêtengîya vexwarina meyê da jî vexwarina meyê peyamên *surûş* têtin dilî.

Mey ku di cāmê bête nūş Bê deng û sewt her tête gūş

Jê tête dil her dem surūş Lew ev şerāb ālūde dā (MC 43-9)

Di geşbûna suhbeta digel yarê, dema yar cama şerabê dinoşe, ji yarê sed dengê wekî dengê *surûşî* derdikeve. Bi gotineke din, dengê vexwarina şeraba yarê wekî dengê *surûşî* ye ji 'âşiqî ra.

Dā demā şuḥbet bi coş bī

Me j hebīb sed deng surūş bī

Cām bi xwō j le'lān bi noş bī

Dīnber ū pīr 'iṣwe ye (MC 212-3)

³⁷⁸ دهخدا، ج ۹، ص، ۱۳۶۳۴؛ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۲۴۹.

Surûş, heman yar û mehbûb bixwe ye ku bangî 'âşiqî dîke ji bo vexwarina meyê.

*Dā min surûş wer mey binoş zewq û xwurûş lew çûm ji hoş
J wê 'işweyā yār bû xwuyā ew ne j meyā engûri bû (MC 225-1)*

2.3.3 Hâtif (هاتف)

Hâtif, bêjeyeke 'erebî ye. Sifet e. *Hâtif*, di ferhengan da bi wateya kesê bang dide, kesê dixwîne hatîye. Taybetîya *hâtifi* ev e ku ew bang dide, tu dengê wî dibihîzî lê tu wî nabînî.³⁷⁹ Bi giştî her firişteyê ku peyama bîne û bi taybet ew firişteyên ku peyam û mizgînîya tîne bi *hâtifê xeybê* tê binavkirin.³⁸⁰ *Hâtif*, bi vê peywira xwe miqabilê *surûş* a farsî ye.

Hâtif, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 8 caran derbas dibe. *Hâtif*, sê caran *Hâtifê xeybê* ye û peyam û mizgînîyan tîne. Du caran *Hâtifê meyxanê* ye û agahîyan dide şa'irî. Û bi gelemperî *hâtif*, di spêdê da peyam û mizgînîyan tîne. *Hâtifê xeybê* tevî ku mizgînîyan tîne, çareyan jî ji derdan ra dikare peyda bike.

ساقی بیا که هاتف غییم به مژده گفت با درد صبر کن که دوا می فرستمت
Sâqî, were Hâtifê xeybê mizgînî da min û got; li ser derda sebir bike ku ez ji te ra dewa bişînim. (HŞ 180-9)

Hâtifê meyxaneyê jî heman wekî *Hâtifê xeybê* peyamawer e. Lê di malika jêrîn da em dibînin ku pend û şîretan jî dîke.

سحرم هاتف میخانه به دولت خواهی گفت بازآی که دیرینه ی این درگاهی
Di spêdê da hâtifê meyxaneyê bi xêrxwazî got; vegere meyxaneyê, zîra tu endamekî kevn yê vî dergahî yî. (HŞ 718-1)

Hâtif, di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. *Hâtif*, *Hâtifê xeybê* ye ku ji *xeybê* peyaman tîne û *hâtif*, bang dide lê ew bixwe xuya nabe. Melâyê Cizîrî, şî'rên xwe dişibîne peyam û mizgînîyan ku *Hâtifê xeybê* wan tîne. Bi vî şiklî pesnê şî'rên xwe dide.

هاتف غیب است این یا ترجمان روح القدس بلبل شیداست در گلزار یا ملاست این³⁸¹
(MC 172-5)

Hâtif, di malikên Melâyê Cizîrî da, di hizrên 'âşiqâne da, cih digire û heman melek e ku bang dide û bi banga xwe ra mizgînîyan dide.

³⁷⁹ دهخدا، ج ۱۵، ص، ۲۳۳۰۰.

³⁸⁰ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۲۴۸.

³⁸¹ Ev malik bi tevahî farsî ye. Wate: *Ma gelo Hatifê xeybê ye, yan tercumanê Rûhu'l- Qudûs e, yan bilbilê şît e di gulzarê da, yan jî Melâ bi xwe ye.*

بر در باغ وصالش هاتفی آواز داد هذه جنات عدن فادخلوها خالدين³⁸²

(MC 177-2)

2.3.4 Cibr'îl (جبرئیل), Cibrîlê Emîn (جبرئیل امین), Rûhu'l-emîn (روح الامین), Rûhu'l-qudus (روح القدس)

Cibrîl, ji çar melekên mezin e. Navê wî di Qur'ânê da, di sûreyê Beqer û di sûreyê Tehrîm da,³⁸³ derbas dibe. Ji wî ra *Cebraîl* jî tê gotin. Bi şiklê *Cebraîl* (جبرائیل) û *Cibrîl* (جبرئیل) jî tê xwendin. Hatîye gotin ku *Cebraîl* jî suryanî hatîye. Di suryanî da *cebr* (جبر) bi wateya bende û *îl* (إيل) bi wateya qudreta Ilâhî ye.³⁸⁴ Ev melek, di bawerîya Îslamê da peywirdarê wehyê ye. Ji teref Xweda wehyê ji pêxemberan ra tîne. Hezretî Muhemmed (s.a.s.) du caran *Cibrîl* bi şiklê wî yê heqîqî dîtîye.³⁸⁵

Rûhu'l-emîn, carekê di Qur'ânê da derbas dibe.³⁸⁶ Di vê ayeta Qur'ânê da ew melek e ku hamilê wehyê ye. Mufessirên mezin di tefsîra vê ayete da *Rûhu'l-emîn* bi Cibraîl nasandine. Herwiha ekserê 'ârifên Îslamê *Rûhu'l-emîn* û *Rûhu'l-qudus* leqeba Cibrîl dizanin³⁸⁷ ku Mewlana jî yek ji wan e.³⁸⁸

Rûhu'l-qudus, sê caran di Qur'ânê da derbas dibe. Di van her sê ayetên Qur'ânê da têkilîyek di navbera Hezretî 'Îsa û *Rûhu'l-qudus* da heye.³⁸⁹ Di tefsîran da, derbarê vê mijarê da nêrînên cuda tên dîtin. Ez cumle; hin kesan gotine mebest ji *Rûhu'l-qudus* Cibrîl e. Hin kesan gotine *Rûh* Cibrîl e û *Qudus* (yan bi rîwayetek, xwendinek din Quds)³⁹⁰ Xweda ye. Li gor rîwayetekê *Îsmê E'zem* e û li gor rîwayeteke din jî *Încîl* e.³⁹¹ Di edebiyatê da bi gelemperî *Cibrîl*, *Rûhu'l-qudus* û *Rûhu'l-emîn* heman tişt e, ew melek e ku wehyê diîne, çawa ku 'Ettar bi kar anîye.³⁹²

³⁸² Nîveka yekem ya vê malikê bi farsî û ya duyem bi 'erebî ye. Wate: *Li ber deriyê baxê wîsala te hatîfekî bang kir got: Ev behîştê 'edn e, ji bo ku ebedî tê da bimînîn bikevinê.* Pêwîst e were gotin nîveka misraya duyem (فدخلوها خالدين) îqîbasaya ji Qur'ânê ye. Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Zumer 73.

³⁸³ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 97-98; Tehrîm 4.

³⁸⁴ دهخدا، ج ۵، ص، ۷۴۹۷-۷۴۹۶.

³⁸⁵ زمانی، ج ۱، ص ۳۶۳.

³⁸⁶ (وَإِنَّهُ لَنُنزِلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ . نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ . عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ) Bêguman ew ji teref Rebbê 'âlemê nazil bûye. *Rûhu'l-emîn* ew nazil kirîye. Nazilî ser dilê te bû, ji bo tu bibî ji kesên hişyarker. *Qur'âna Pîroz*, Şû'era 193-195.

³⁸⁷ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۱۰۲۴.

³⁸⁸ زمانی، ج ۱، ص ۳۶۳.

³⁸⁹ (وَأَتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ) Me mu'cîze dan 'Îsayê kurê Meryem û me bi *Rûhu'l-qudus* piştgirî da wî. *Qur'âna Pîroz*, Beqer 87. Ji bo herdu ayetên din bnr: *Qur'âna Pîroz*, Beqer 253, Maîde 110.

³⁹⁰ Ji vê tê famkirin ku di xendina wê da du nêrîn heye. Hin kesan bi *Qudus* xwendîye û hin kesan *Quds* xwendîye. Lê xwendina *Qudus* ji ya *Quds* ê bêtir hatîye tercîh kirin.

³⁹¹ المبيد، ج ۱۰، ص ۲۶۴-۲۶۵.

³⁹² خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۵۸۲.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Cibrîl* û *Cibrîlê Emîn* derbas nabe. Em carekê rastî *Rûhu 'l-emîn* û çar caran jî rastî *Rûhu 'l-qudus* tên.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Rûhu 'l-emîn* an bi bêjeyên Hâfizê Şîrâzî *Rûhê Emîn* heman Cebrail e ku wehy anîye. Hâfizê Şîrâzî têkilîyekê di navbera wehyê (Qur'ânê) û *Rûhê Emîn* ava dike. Qur'nê dişibîne gencîneyê û *Rûhê Emîn* dişibîne xezînedarê gencîneyê ku hem sadiq û hem emîn e.

با چنین گنج که شد خازن او روح امین
به گدایی به در خانه ی شاه آمده ایم
*Bi vê gencîneya (Qur'ân) ku xezînedarê wê Rûhê Emîn e, ez bi gedayî çûme
ber derê xaneyê şah. (HŞ 556-2)*

Rûhu 'l-qudus, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ew melek e ku feyd û îlamê tîne. Feyd û îlhama *Rûhu 'l-qudus* ne tenê ji peyxemberan ra ye. Feyd û lutfê *Rûhu 'l-qudus* divê ji kesên 'arif û xwedî kemal yê Şîrazê were xwestin. (HŞ 440-4) Memduhê Hâfizê Şîrâzî, bi îlhama ku *Rûhu 'l-qudus* dide wî kar û barê şerîetê dimeşîne. (HŞ 446-8) *Rûhu 'l-qudus*, ew melekê pîroz e ku li ser qubba felekê destê xwe vekirîye û ji memduhê Hâfizê Şîrâzî ra dû'a dike. (HŞ 751-1)

Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da hemû mu'cîzeyên pêxemberan bi wehy û alîkarîya *Rûhu 'l-qudus* e.

فیض روح القدس ار باز مدد فرماید
دیگران هم بکنند آن چه مسیحا می کرد
*Rûhu 'l-qudus eger bi feyda xwe alîkarîyê bişîne, ew karê ku Hezretî 'Îsa
Mesîh dikir kesên mayî jî ew ê bikin. (HŞ 249-7)*

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Cibrîl*, *Cibrîlê Emîn* û *Rûhu 'l-qudus* derbas dibin, lê *Rûhu 'l-emîn* cih nagire.

Eger *Cibrîl* xweşikahîya Pêxember (s.a.s.) dîtibûya, bi wê husn û Cemâla pak hesiyaba nazilê erdê nedibû. (MC 161-1) Yê ku bi destê xwe perde û hîcab ji navbera 'âşiq û me'sûqê rakirîye *Cibrîl* e. (MC 197-4) Qasid û peykê Xweda ku wehyê ji pêxemberan diîne *Cibrîlê Emîn* e ku Xweda pê ewle ye. Ev nêrîna Melâyê Cizîrî nêrîneke dînî ye.

*Mî'râcî te kir kes dî nekir şedrê rîsâlet
Qaşid ji Xwedê rā bo te Cibrîlê emîn e (MC 219-5)*

Rûhu 'l-qudus, rûhê e'zem yan rûhu 'l-erwah e, ew ruhê ku bûye mezherê zatê Ilâhî û ji Xwedê pê ve kes nagihêje rastîya wê. Xweda ji Cemâla xwe ya pîroz ku ronahî jê vedabû, xweşikahîyek pak afirand û nûra xwoştivîyê xwe (Muhemmed s.x.1) ji wê afirand û bi vê afirandinê 'âlem hemî di têgihiştina vê rastîyê da heyirandî

hişt. Di literatura sofîyan da ev rûh her 'eqlê ewwel e ku dikeve beranberî Heqîqeta Muhemmedî.³⁹³ Ev nêrîn nêrîna Melâyê Cizîrî ya tesewufî-felsefî ye.

Husnek munezzeh sewwirând *Nûrâ Hebîb jê âfirând*
'Âlem di kunhê heyyirând *Rûhu 'l-qudus cãn nefxe dâ* (MC 41-5)

Ruhu 'l-qudus, ji xeybê îlhama tîne. Hemû heqîqetên ku Melâyê Cizîrî dibêje ji îlhama Xweda ye ku bi alîkarîya Rûhu 'l-qudus (Cibrîl) ketîye dilê wî.

Mulhimê xeybê weh îmla dikirit
Meded û feyð ji rûhu 'l-qudus în (MC 185-10)

Mehbûba Melâyê Cizîrî ji layê husn û Cemâlê va di asteke gelek bilind da ye. Ji ber vê Melâyê Cizîrî dema behsa xweşikahîya mehbûba xwe dike nizane bê wê bi çi rengî bide nasîn û herî dawî dişibîne Ruhu 'l-qudus ku tu kesekî nedîye û nikare têbigihêje bê çendî xweşik e. (MC 171-2; m. 257-3; m. 263-2; m. 290-8) Di malika jêrîn da ji yara xwe ra dibêje; tu Rûhul Qudus bi xwe yî. Ev nêrîna Melâyê Cizîrî ya 'âşiqâne ye.

Şemsâ felek î yâ melek î he jî nizanîm
Horî û perî yâ bi xwe rûhu 'l-qudus î tû (MC 231-6)

Melâ, di pesnê şî'ra xwe da wusa şî'ra xwe xweşik didêre ku nizane dê wê wekî dengê çi binasîne. Yek ji wan dengê ku şî'ra xwe bi wê dişibîne weguheztina zimanê Rûhu 'l-qudus e.

هاتف غيب است اين يا ترجمان روح القدس بلبل شيداست در گلزار يا ملاست اين³⁹⁴
(MC 172-5)

Di bawerîya Îslamê da dewsa piyê *CeBârîl* hişîn dibe û gul û giha lê şîn tê. Tenê ne nigê Cibraîl, belkî ew heywana ku Cibraîl lê siwar e, dewsa nigê wê heywanê jî heman tiştî dike.³⁹⁵ Melâyê Cizîrî vê bawerîyê di malika xwe da tîne ziman. Ji memduhê xwe ra dû'a dike û dibêje her cihê ku te piyê xwe lê danî wekî dewsa nigê Rûhu 'l-qudus bila şînkahî lê şîn were.

Şubhetê rûhu 'l-qudus 'erdê tu pê lê dāyînî
Sebze û reyhān û nesrîn û gulê menqûri bî (MC 286-7)

2.3.5 **Ridwān (رضوان) Xāzinê Cennet (خازن جنت)**

Ridwan, di ferhangan da bi wateya, dilxweşî, pejirandin û bereketê cih girtîye.³⁹⁶ Wekî istilah navê firişteyê dergevan û nîgehbanê behiştê ye. Di Qur'ânê da

³⁹³ دۆسکی، شرحا دیوانا ملائ جزیری، ب ۱، ر ۲۱۹.

³⁹⁴ Ev malik bi tevahî farsî ye. Wateya malikê li jor di mijara hatîfî da derbas bû.

³⁹⁵ دۆسکی، شرحا دیوانا ملائ جزیری، برگ ۴، ر ۳۱۱.

³⁹⁶ دهخدا، ج ۸، ص، ۱۲۱۲۱.

wekî navê firişte derbas nabe. Wekî bêje sêzde caran di Qur'ânê da bi wateya razîbûnî, xwoşnûdî û pejirandina Xweda derbas dibe.³⁹⁷

Di edebiyata farsî da ji mêj va ji bo *Ridwan* leqeba *Xazinê Cennet* hatîye bikaranîn.³⁹⁸ Hâfizê Şîrâzî jî li ser vê kevneşopîyê meşîyaye. Hâfizê Şîrâzî, di şî'rên xwe da ji herdû navan jî sûd wergirtîye. Bi giştî hem *Ridwan* û hem *Xazinê Cennetê* ew melek e ku çavdêrî û dergevanîya behîştê dike.

بگو به خازن جنت که خاک این مجلس به تحفه بر سوی فردوس و عود مجمر کن
Bibêje ji xiznedarê bihiştê axa vê meclisê wekî dîyarî bila bibe bihiştê û bi ser

menqelê werke. (HŞ 595-5)

Geh kaxa ku *Ridwan* jê ra dergevanîyê dike çemenzara sefaya derwîşa ye. (HŞ 123-3) Geh, tiştên di behîştê ku *Ridwan* çavnêrîya wê dike wekî mafê xwe dibîne. (HŞ 568-3) Geh, yara wî horîya behîştê ye ku *Ridwan* ji bo xatirê dilê wî ew şandîye vê dinyayê. (HŞ 256-3) Geh, huşyarîyê dike ku kesên bi weswese-yên 'eql tevbigere wekî Hezretî Âdem ew ê ji behîştê *Ridwan* were avêtin. (HŞ 730-2) Di pesindarîya xwe da xwe şayesteyê gulşena *Ridwan* dibîne.

چنین قفس نه سزای چو من خوش الحانی ست روم به گلشن رضوان که مرغ آن چمنم
Ev qefes ne seza ye ji bo teyrekî wekî min dengxweş, herim gulşena Ridwan
lewra ez şayesteyê wê çîmenê me. (HŞ 524-2)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da em du caran rastî navê *Ridwan* tên. Melâyê Cizîrî, ew bexçeyên ku bilbilên 'aşîq di wê da bi hesret û xemgînîya me'sûqa xwe dinalin şibandîye behîştê ku *Ridwan* çavdêrîya wê dike. Ji ber ku dilê wan şewîtîye di nalîn û ahîna wan da tu 'eyb tune ye. (MC 107-2)

Ridwan, nîşana gihiştina xweşî û rehetîyê ye. Lewra kesê here behîştê *Ridwan* digihêje xweşîyê. Melâ, ew hudhudê ku agahîyan ji yara wî tîne dişibîne *Ridwanî*. Lewra kes çawa bi çûna behîştê kêfxweş dibin û her zindî dimînin, Melâ jî bi anîna agahîyên şêrîn kêfxweş dibe û dilê wî wekî kesê dikefte behîştê zindî dibe.

Hudhudê riðwânê xeybê Şed xeber şîrîn ji ceybê
Dā dilê min murde hey bê Guh li rê min wek şebā ye (MC 201-5)

2.3.6 Kirāme'l-kātibîn (گرام الکاتبین)

Kirāme'l-kātibîn, bêje ye hevedudanî ye. *Kîrām*, pirjimara *kerīm* (کریم) e û bi wateya mezin, bexîşkirox û ciwanmerd e. *Kātibîn*, pirjimara *kātib* (کاتب) ango

³⁹⁷ خر مشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۲۹۴.

³⁹⁸ خر مشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۲۹۴.

nivîskar e. Wateya ferhengî nivîskarên birêz e.³⁹⁹ Kirâme'l-kâtibîn wekî istilah, ji herdû melekên ku xêr û gunehên însanan, di defterên kiryarên wan da dinivîsînîn û tomar dikin tê gotin.⁴⁰⁰ Kirâme'l-kâtibîn di Qur'ânê da derbas dibe. "*Rewş ew e ku li ser we parêzkar hene, nivîskarên mezin, dizanin ku hûn çî kiryarên dikin.*"⁴⁰¹

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Kirâme'l-kâtibîn di vê derbasbûnê da heman ew melek in ku kiryarên bendeyên Xweda dinivîsînîn.

تو پنداری که بدگو رفت و جان برد
حسابش با کرام الکاتبین است

Guman meke kesê gotinên nexweş digot çû, û bi silametî canê xwe bir, bizan ku kiryarên wî yê xerab di deftera Kirâme'l-kâtibîn da ye. (HŞ 132-6)

Ew melekên ku xêr û şerên bendeyên Xweda di defterên kiryarên da dinivîsînîn di nava şîrên Melâyê Cizîrî da derbas nabin.

2.3.7 Subbūhī (سُبُّوحِي)

Subbūhī (سُبُّوحِي) wekî li jorê hate gotin yek ji navên Xweda ye. *Subbūhī*, çînek ji melâiketan e ku bi navê Xweda yê Subbūh tesbîhê Xweda dikin.⁴⁰²

Di malikên Hâfizê Şîrâzî da em rastî vî navê melâiketan nayên.

Di malikên Melâyê Cizîrî da sinifek ji sinifên melâiketan e ku bi navê Xweda yê Subbūh bi dengê bilind zîkr û tesbîhên Xweda dikin.

Hāy ū hūyā subbūhīyān Reqş ū semāyā qudsīyān
Teşbîhê coşā şofīyān Feryād ū zîkr ū lerze dā (MC 45-6)

2.3.8 Quddūsī (قُدُّوسِي)

Quddūs, yek ji navên Xweda ye ku di Qur'âna Pîroz da cih girtîye.⁴⁰³ Pakîzebûna ji hemû 'eyban wateya Quddūs e. Bi astekê ji navê Subbūh bilindtir e di warê tenzîhê da.⁴⁰⁴ Li gorî Xezâlî ne lazim e di watedarkirina vî navê Xweda em kêmasî û 'eyban bidin ber çavan. Lewra şanê Xweda ji vê gelek mezintir e. Ji ber vê, di navê Quddūs da em Xweda ji kemalatên hevbeş di navbera mumkinat û Wacîbu'l-wucûdê da tenzîh, bêrî dikin.⁴⁰⁵ Quddūsî ew çînek melâiketan e ku bi navê Xweda Quddūs zîkr û tesbîhê Xweda dikin.⁴⁰⁶

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ev navê çîna melâiketan cih nagire.

³⁹⁹ Üzümlü, İlyas, "Kirâmen Kâtibîn", *DİA*, c 26, r 59-60.

⁴⁰¹ *Qur'âna Pîroz*, Înfîtar 10-12.

⁴⁰³ *Qur'âna Pîroz*, Heşr 23.

⁴⁰⁰ المبيد، ج ١٠، ص ٤٠٦.

⁴⁰² دۆسکی، شرحا دیوانا ملای جزیری، ب ١، ر ٢٤١.

⁴⁰⁴ شریف کاشانی، ص ٣٢٢.
⁴⁰⁵ الغزالي، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، ص ٦٧.
⁴⁰⁶ دۆسکی، شرحا دیوانا ملای جزیری، ب ١، ر ٢٤١.

Di nav malikên Melâyê Cizîrî da mîna *Subbûhî* sinifek ji sinifê melâiketan e. Ev sinifê melâiketan, yanî Qûddûsî tevî Sûbbûhîyan û horîyên bihiştê di şeva qedrê da didar û dîtina xwoştivîyê dixwazin.

Subbûhî û quddûsî û hûrên di behîştê
Peyweste şebê qedrê liqâyâ te dixwâzin (MC 173-6)

2.3.9 Berawîrd û Nirxandin

Tablo 5: Melek-Firişte

| Rêz | Melek-Firişte | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|------------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Melek-Firişte | 15 | 0,315 | 19 | 0,839 |
| 2 | Surûş | 10 | 0,210 | 3 | 0,133 |
| 3 | Hâtîf | 8 | 0,168 | 2 | 0,088 |
| 4 | Cebraîl - Rûhu'l-qudus | 5 | 0,105 | 12 | 0,530 |
| 5 | Ridwan | 9 | 0,189 | 2 | 0,088 |
| 6 | Kirâme'l-kâtîbîn | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 7 | Subbûhî | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 8 | Quddûsî | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| Giştî | | 48 | 1,007 | 41 | 1,811 |

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi 6 cureyan navên melâiketan derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da bi 7 cureyan navên melâiketan cih digire. *Kirâme'l-kâtîbîn*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih daye xwe, lê di dîwana Melâyê Cizîrî da cih negirtîye. *Subbûhî* û *Quddûsî* di dîwana Melâyê Cizîrî da cih digirîn lê di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagirin. Bi tevahî di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 48 caran navê melâiketan derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 41 carî em navê melâiketan dibinin. Ji aliyê hejmaran va serdestîyek Hâfizê Şîrâzî xuya bike jî, ji aliyê rêjeyê Melâyê Cizîrî bi rêjeya %1,811 di pêşîya Hâfizê Şîrâzî da ye. Rêjeya Hâfizê Şîrâzî %1,007 e. Ev berawirdîyek hejmarî û rêjeyî ye.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da têkilîyek di navbera *melek* û 'îşqê da hatîye avakirin. Ev xaleke hevpar e. Nêrîna herdû şa'iran di vê têkilîyê da ji hev cuda ye. Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da *melek* 'îşqê nizane. Ev gotin piştî xwe dide bawerîya Îslamê. Bi sedema ku *melek* 'îşqê nedizanî 'îşq bûye behra însanan. Hâfizê Şîrâzî ji ber vê xemgîn e. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da bingeha afirandinê 'îşq û evîn e. *Melek*, jî ji ber vê evînê di rewşa reqs û semayê da ne. Ev, kêfxweşîyê dide Melâyê Cizîrî.

Hâfizê Şîrâzî ji Awestayê sûd wergirtîye û du bêjeyên Awestayî *Surûş* û *Ehrîmen* bi heman taybetîyên ku di Awestayê da derbas dibin di malikên xwe da bi cih kirîye. Ev, di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Herdû şa'ir jî *Hâtîf* bi wateya ferhengî û taybetîyên wî yên sereke bi kar anîne ku em fam dikin ku zanînek ferhengî û lîteratorî li cem herdû şa'iran heye.

Hâfizê Şîrâzî, *Cebraîl* û hemwateyên *Cebraîl*, di çarçoweya bawerîya Îslamê da bi kar anîye. Melâyê Cizîrî ji vê çarçoweyê derketîye û di hizrên xwe yên 'âşiqâne da bi nêrîneke şa'irane ji bo yara xwe bi kar anîye. Ji malikên Hâfizê Şîrâzî mirov têdigihêje ku *Ridwan* dergevanê behîşte ye, lê di malikên Melâyê Cizîrî da agahîyek bi vî rengî nayê bi dest xistin. *Kirâme'l-kâtibîn*, *Subbûhî* û *Quddûsî* bi heman wateyên 'ilmî cih digirin. Ev heye, herdû şa'ir jî derbarê nêrînên Îslamê derheqê melâiketan da û navlêkirina wan da xwedî agahîyên tekûz in.

Melek-Fîrîşte, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 15 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 19 caran derbas dibin. Ji alîyê hejmaran va Melâyê Cizîrî li pêş e û ev ferqa hejmarî ye. Di navbera herdû şa'iran da avakirina têkilîya *melek* û 'îşqê, secdekirina *melekan* ji Hezretî Âdem ra, şibandina xweşikahîya yarê bi *melekan* xalên hevpar in. Hinek taybetîyên *melekan* wekî; sitrandina herîya Hezretî Âdem ji teref *melekan*, laveyên *melekan* ji insanên qenc ra di dîwana Hâfizê Şîrâzî tene dîtîn lê di dîwana Melâyê Cizîrî da nayên dîtîn. Herwiha, di dîwana Melâyê Cizîrî da selewat dayîna *melekan* li ser Pêxember (s.a.s.) di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nayê dîtîn. Ev jî xalên cuda ne di navbera herdû şa'iran da.

Surûş, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 10 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 3 caran derbas dibe. Ev, ferqa hejmarî ye. Hâfizê Şîrâzî ji kevneşopîya edebiyata Îranê sûd wergirtîye ku yek ji amûrên vê kevneşopîyê Awesta ye. *Surûş* û *Ehrîmen* du bêjeyên awesytayî ne û li dijî hevdû ne. Hâfizê Şîrâzî, li ser vê kevneşopîyê di malikên xwe da herdû bêje bi hev ra bi hunera tezadê cîbicî kirîye. Ev bikaranîn di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn.

Surûş, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem bi wateya melekê hamilê wehyê Cibrîl û hem li dijî Ehrîmen bi taybetîyên hâtîf cih digire. Di dîwana melâyê Cizîrî da bi taybetîyên hâtîfî cih digire û yara Melâyê Cizîrî bi xwe ew *surûş* e ku ji bo vexwarina meya 'îşqê bangî wî dike. Ev ferqa bikaranîna herdû şa'iran e.

Hâtîf, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 8 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 2 caran derbas dibe. Ev ferqa hejmarî ye. *Hâtîf*, bi heman taybetîya xwe; agahî û

mizgîn anîn, di dîwana herdû şa'iran da cih digire. Ev xaleke hevpar e. Melâyê Cizîrî, *hâtîf*, di pesindariya şî'ra xwe da 'emilandîye ku ev bikaranîn di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nayê dîtin.

Cebraîl, yek ji melâiketê mezîn e. Bi formên cuda wekî; *Cebraîl*, *Cibrîl*, *Cibrîlê Emîn*, *Rûhu'l-emîn* û *Rûhu'l-qudus* di edebiyatê da cih digire. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi formen *Rûhu'l-emîn* û *Rûhu'l-qudus* 5 caran cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da bi formen *Cibrîl*, *Cibrîlê Emîn* û *Rûhu'l-qudus* 12 caran derbas dibe. Ev ferqa sereke ye hem ji aliyê bikaranîna forman û hem ji aliyê hejmarî va.

Cebraîl, di dîwana Hâfizê Şîrâzî bi taybetîya xwe ya sereke; wehî anînê, derbas dibe. Hâfizê Şîrâzî, *Cebraîl* wekî xezînedarê Qur'ânê dinasîne. Melâyê Cizîrî di vê babetê da *Cebraîl* qasidê di navbera Xweda û Pêxember de dinasîne. Ev xal di navbera herdû şa'iran da hevpar e. Hâfizê Şîrâzî, ji bo pesindariya memduhên xwe ji îlham anîna *CeBârîl* sûd wergirtîye. Melâyê Cizîrî, di pesindariya memduhê xwe da ji hişnbûnîya şûna nigê *Cebraîl* sûd wergirtîye. Ev jî di bingeha xwe da xaleke hevpar e.

Cebraîl, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da peywira anîna feyd û îlhamê wergirtîye. *Cebraîl*, bi vî şîklî di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe. Melâyê Cizîrî, *Cebraîl* û formên din hem di nêrînên felsefî û hem di hizrên 'âşiqâne da bi cih kirîye ku ferqa sereke di navbera herdû şa'iran da ev e. Herwiha di pesinadina şî'rên xwe da, şibandina şî'rê bi zîmanê *Cebraîl*, şibandina xweşikahîya yarê bi xweşikahîya *Cebraîl* û şibandina yarê bi mizgînanîna *Cebraîl* jî ji bikaranînên Melâyê Cizîrî ye ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nayên dîtin.

Ridwan, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem bi navê xwe yê eslî ku *Ridwan* e û hem bi leqeba xwe *Xazinê Cennet* bi tevahî 9 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê du caran *Ridwan* derbas dibe û tu leqebên wî derbas nabin. Ev ferqa hejmarî û bikaranîna leqeban dide ber çavan. *Ridwan*, dergevanê cennetê ye. Ev peywira wî ya eslî di malikên Hâfizê Şîrâzî da cih digire lê di malikên Melâyê Cizîrî da cih nagire. *Ridwan*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da her bi behîştê ra di malikan da cih girtîye. Di van malikan her îştîyaqek Hâfizê Şîrâzî li hember behîştê tê dîtin. Di malikên Melâyê Cizîrî da têkilîyek di navbera *Ridwan* û behîştê nayê avakirin. Melâyê Cizîrî di herdû malikên ku bêjeya *Ridwan* di wan da derbas dibin hestên xwe yê 'âşiqâne anîye zîman. Ferqa sereke ev e.

Kirâme'l-kâtibîn, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da qet derbas nabe. Ev ferqa sereke ye. *Kirâme'l-kâtibîn*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da heman melek in ku xêr û şerên bendeyan dinivîsin.

Subbûhî, wekî navê çînek ji melâiketan di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da di 2 malikan da cih girtîye. Di van malikan da *Subbûhî*, heman melâiket in ku bi navê Xweda yê Subbûh zikir dîkin. Melâyê Cizîrî ev çîna melâiketan di hizrên xwe yê 'âşiqâne da 'emilandîye.

Quddûsî, wekî sinifek ji sinifên melâiketan ku bi navê Xweda yê Quddûs tesbîhan dîkin di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di yek malikê da û bi heman wateya 'ilmî cih digire.

2.4 Berhemên Pîroz

Xweda, wekî ku Pêxemberê Xweda (s.a.s.) di hedîsekê da dibêje⁴⁰⁷ pêxember hinartine ji însanan ra ji bo ku dinya û axreta wan ava bikin. Ji bo vê jî berhemên ku emr û fermanên Xweda di wan da ne hatine hinartin. Pêxemberan bi van berhemên rê nişanî însanan daye û peywira pêxembertîyê bi cih anîye.

Çar berhemên mezin hatine hinartin ku ya pêşî Tewrat e û ji Hezretî Mûsa ra hatîye.⁴⁰⁸ Piştê ji Hezretî Dawûd ra Zebûr nazil bûye.⁴⁰⁹ Încîl ji bo Hezretî 'Îsa hatîye.⁴¹⁰ Herî dawî jî Qur'ân ji bo Hezretî Muhemmed (s.a.s.) hatîye hinartin. Ji hinek pêxemberan ra Suhûf⁴¹¹ hatine şandin ku ji berhemên biçûktir in.

Şa'îran ji bo hinek hizrên xwe bidin ragihandin ji berhemên pîroz yê dînî sûd wergirtine. Di nava şîrên Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da tenê navê du berhemên pîroz derbas dibin. *Qur'ân* û *Zebûr*.

2.4.1 Qur'ân (قرآن)

Qur'ân, bêjeyeke 'erebî ye. Wekî kelîme mesder e û di ferhengan da bi wateya telîf, berhevkirina tiştêkî bi tiştêkî, komkirina li ba hev, zarok dayina hamîleyan û xwendinê hatîye.⁴¹² *Qur'ân*, wekî istilah navê kitêba dînê Îslamê ye ku nazilî Muhemmed (s.a.s.) pêxemberê Îslamê bûye. Derbarê bingeha bêjeya Qur'ânê nêrînên ciyawaz tên dîtin. Hin 'âlîman gotîye ku *Qur'ân*, mesdera *qere'e* (قرء) bi

⁴⁰⁷ Ez hatime hinartin ji bo islahê dinyaya we û xelasîya axreta we. (بعثت لصلاح دنياكم و نجات عقباكم) العبادى، ابوالمظفر منصور بن ارسشير، صوفنامه التصفية فى احوال المتصوفة، به تصحيح: دكتور غلام حسين يوسفى، بنيادفرهنگ (ایران، تهران ۱۳۴۷، ص، ۱۶)

⁴⁰⁸ *Qur'âna Pîroz*, Maîde 44.

⁴⁰⁹ *Qur'âna Pîroz*, Nîsa.123.

⁴¹⁰ *Qur'âna Pîroz*, E'raf 157.

⁴¹¹ *Qur'âna Pîroz*, Beyyîne 2-3.

⁴¹² دهخدا، ج ۱۱، ص، ۱۷۴۷۲.

wateya xwendinê ye. Ev bêje beriya Îslamê ji aramî ketîye zimanê 'erebî. Hin 'âiman gotîye wesf e û ji *el-qere'e* (القرء) bi wateya komkirinê hatîye. Hin 'âlîman gotîye ku *Qur'an* ji *elqerain* (القراين) ê bi wateya şibandin û nêzîkahîyê ye lewra, ayetên *Qur'anê* dişîbin hevûdû. Hin 'âlîman gotîye ku *Qur'an* îsmê 'elem, navê taybet e, ji tu bêjeyan nehatîye, navê kitaba Xweda ye wekî Încîl û Tewratê. Îmamê Şafi'î jî vê nêrînê depejirîne.⁴¹³

Ji beşên biçûk yê *Qur'anê* ra *Sûre* û ji beşên sûreyan ra *Ayet* tê gotin. Gelek nav û sifetên *Qur'anê* hene.⁴¹⁴ Ji van navan di şî'ra Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da *Qur'an*, *Furqan*, *Mishef* û *Kitab* tên dîtin.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da li hember *Qur'anê* rêzgirtinek mezin tê dîtin. Hâfizê Şîrâzî, Hâfizê *Qur'anê* ye, ango hemî *Qur'an* ezber kirîye.⁴¹⁵ Ne tenê Hâfiz *Qur'an* e, *Qur'anê* bi çarde rîwayetan⁴¹⁶ dixwîne. (HŞ 186-6) Di nava hemû Hâfizên *Qur'anê* yê dinyayê da tu kesî wekî wî letîfeyên hîkemî ji *Qur'anê* berhev nekirîye. (HŞ 737-25) Hemû selamêtîya ku bi dest xistîye bi xêr û bereketa *Qur'anê* ye. (HŞ 495-9) Wusa bawer e heta ku dersa *Qur'anê* wirdê wî be, tu xemgînîyê nakişîne.

حافظا در کنج فقر و خلوت شب های تار
تا بود وردت دعا و درس قرآن غم مخور

Ey Hâfiz! Heta ku di gencîneya hejarî, di xelweta şevên tarî da wird û zikrên te dû'a û dersa Qur'anê be xem nexwe. (HŞ 407-10)

Hâfizê Şîrâzî, rûmetek mezin dide *Qur'anê*. *Qur'an* divê nebe amraz ji bo berjewendîyên tu kesî. *Qur'an*, pêwîst e ku nebe wesîle ji bo xapandina kesekî.

حافظا می خور و رندی کن و خوش باش ولی
دام تزویر مکن چون دگران قرآن را

Ey Hâfiz! Mey binoşe, rind be, xweş bijî, lê wekî yê mayî Qur'anê neke wesîle ji bo xapandinê. (HŞ 69-10)

Hâfizê Şîrâzî, zâhid û kesên ku gotinên wî fam nakin dişîbîne Şeytân û xwe jî dişîbîne *Qur'anê*. Şeytân çawa ji xwendina *Qur'anê* direve yê mayî wusa ji wî direvin. (HŞ 320-10) Ji bo bide bawer kirin di hinek malikan da bi *Qur'anê* sond dixwe. Sond bi *Qur'anê* ew kesê ku ji tezwîrê (xemilandina gotinan bi derew û

⁴¹³ السبكي، أبو نصر عبد الوهاب بن علي بن عبد الكافي، رفع الحاجب عن مختصر ابن الحاجب، المحقق: علي محمد عوض، عادل أحمد عبد الموجود، دار عالم الكتب، بيروت لبنان ١٤١٩، ج ٢، ص ٧٨-٧٩.

⁴¹⁴ Ji bo van nav û sifetan bnr: (محمد بن محمد شمس الدين، نفايس الفنون، گردآورنده: بهروز) (ثروتيان، انتشارات فردوس، تهران ١٣٨٠، ص ٢٢١)

⁴¹⁵ صهبا، جواد مجدزاده، سخني درباره حافظ، با مقدمه: عباس اقبال آشتياني، كتبخانه تخصص ادبيات، اسپهان ١٣٢١، ص ٧؛ بامداد، محمد علي، حافظ شناسي يا الهامات خواجه، انتشارات كتابفروشي ابن سينا، تهران ١٣٣٩، ص ٩؛ ضرغامفر، مرتضى، حافظ و قرآن؛ تطبيقي ابیات حافظ با آیات قرآن، نشر صائب، تهران ١٣٤٥، ص ٣.

⁴¹⁶ Wateya Çarde Rîwayetan ev e. Di eslê xwe da hinek bêjeyên *Qur'anê* ji ber hinek egeran cuda hatine xwendin. Ev cudahî bi heft xwendinên cuda (qiraetê seb'e) tê nasîn. Ji her xwendinekê ra du rawî hene ku bi tevahî dibe çarde rawî û çarde rîwayet. (خرمشاهی، حافظ نامه، ج ١، ص ٤٤٧).

bêbextîyê) û rîyayê xwe dûr bike ew ê di dinyayê da bi aramî bijî. (HŞ 266-10) Bi *Qur'ânê* sond dixwe ku kuştina 'âşiqî ji teref yarê bi zulfa yarê qisseyek dirêj e. (HŞ 429-8) Di pesnê şî'rên xwe da wiha sond dixwe.

ندیدم خوشتر از شعر تو حافظ به قرآنی که اندر سینه داری
Hâfiz! Bi wê Qur'âna ku di sînga te da ye, min ji şî'rên te xweştir nedîtîye.

(HŞ 659-7)

Di nava malikên Hâfizê Şîrâzî da navên Qur'ânê yên mayî nehatin dîtin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Qur'ân* hem bi navê xwe yê resen derbas dibe û hem navê *Qur'ânê* yên din wekî *Qur'âna Mecîd, Fûrqa, Mishef* û *Kîtab* jî cih girtine.

Qur'ân, di malika jêrîn da ji bo sond xwarinê cih girtîye. Sond bi *Qur'ânê*, eger pîrê xerâbâtê ji murîdên xwe ra bibêje ji latê ra herin secdeyê, ew ê bi ya wî bikin.

*Bi Qur'ânê bi âyâtê eger pîrê xerâbâtê
Bibêjit secde bin latê murîdên wî dibin qâtê* (MC 16-3)

Qur'âna Mecîd, ku di nav şî'rên Melâ de derbas dibe, te'bîreke Qur'ânî ye. Di Qur'ânê da, di sûreyê *Qaf* û *Waqî'e* da derbas dibe.⁴¹⁷ Mecîd, navek ji navê Xweda ye û wateya wî ev e: Ew ê ku îhsan, qencîya wî pir e.⁴¹⁸ Dema bêjeya Mecîd ji bo Qur'ânê tê pênasekirin; wateya şan, şeref û camêrîyê werdigire.⁴¹⁹ Melâyê Cizîrî, di hestên xwe yên 'âşiqâne da rûyê yarê dişîbîne rûpelên kaxizan û xal û xetên wê jî dişîbîne herfan û bi Qur'ânê sond dixwe.

Muşhefâ husn û cemâlê sûretâ xâl û xeşân

⁴²⁰ ما تلونا غير حرف لا و قرآن مجيد (MC 99-3)

Ew sehîfeyên ku di nava bergekî da hatine komkirin jê ra *Mushef* tê gotin. Herwiha ji berhemên semawî ra jî *Mushef* hatîye gotin.⁴²¹ Ji ber vê navek ji navê *Qur'ânê* ye di heman demê da. Çawa ku di nava Kurdan da dema *Mushef* tê gotin *Qur'ân* tê famkirin. Melâyê Cizîrî ji bo gotina xwe piştrast bike bi *Mushefê* sond dixwe.

*Feydâ 'ulûmê hikmet cāmā şedef ko gêrā
Me j destê mukbeçān dît bi müşhef û bi âyet* (MC 72-3)

⁴¹⁷ *Qur'âna Pîroz*, Qaf 1. ; Waqî'e 77.

⁴¹⁸ el-Îsfehanî, s 990.

⁴¹⁹ el-Îsfehanî, s 990.

⁴²⁰ Ev niv malik bi 'erebiye. Wate: Ez bi Qur'ana Mecîd sond dixwum ku ji bilî herfa "na" me tiştekek nexwendîye.

⁴²¹ معین، فرهنگ معین، ج ۲، ص ۱۷۴۶.

Di bawerîya Îslamê da navekî Qur'ânê jî *Furqan* e. *Furqan*, ji bo cudahîya di navbera heq û batil da tê bikaranîn.⁴²² Ji bo kelimên Ilâhî jî *Furqan* hatîye gotin. Di *Qur'ânê* da hem ji bo Tewratê⁴²³ û hem ji bo *Qur'ânê*⁴²⁴ di ayetan da derbas dibe.

Melâyê Cizîrî, *Furqan* wekî navê Qur'ânê di malika xwe da bi cih kirîye. Melâ, ji bo xweşikahîya me'sûqa xwe bi heft ayetên *Furqanê* sond dixwe ku ihtîmaleke mezin mebesta wî ji heft ayetan sûreyê Fatîhe ye ku ji heft ayetan pêk hatîye.

Dibit bêjin wî sulţānī Bi heft āyātê furqānī
Li mehbūbān tu xāqān ī Were derbê li qeyşer de (MC 193-4)

Kitab, wekî ku tê zanîn ew sehîfe ne ku nivîs di wan da hatine nivîsin.⁴²⁵ *Qur'ân*, ji hemû kelimên Xweda ra *Kitab* gotîye.⁴²⁶ Ji ber vê *Qur'ân* ji bo wan qewmên ku ji pêxemberên wan ra kelama Xweda hatîye *Ehlê Kitab* dibêje.⁴²⁷ *Qur'ân* jî ji ber ku kelama Xweda ye navek ji navên wê *Kitab* e.

Melâyê Cizîrî, tenê di malikekê da *Kitab* wekî navê Qur'ânê bi kar anîye. Di dînê Îslamê da du çavkanîyên sereke hene. Yek jê *Qur'ân* e. Û ji bo hukmên *Qur'ânê* *Ness* hatîye gotin. Çavkanîya duwem jî *Sunnet* e. Melâyê Cizîrî, di pesnên xwe da xwe muftîyê 'işqê dinasîne ku hemû biryarên wî ji *Nessa Kitabê* (*Qur'ânê*) û *Sunnetê* ye.

'Āşiqê mes'elxwāhī were em muftiyê 'işq īn
Destekī sunnet e tê dā di yekī neşşê kitāb e (MC 198-10)

2.4.2 Zebûr (زبور)

Zebûr, navê kitêba Hezretî Dawûd e. Wekî Qur'ân ferman dike; *Me Zebûr jî dabû Dawûd*.⁴²⁸ Her berhema ku bi herfên stûr were nivîsîn jê ra *Zebûr* tê gotin.⁴²⁹ Hatîye gotin ku Hezretî Dawûd ayetên *Zebûrê* bi dengê xwe yê xweş bi sazên wekî ney, nibil⁴³⁰ û tenbûrê dixwend.⁴³¹ Dîsa hatîye gotin ku *Zebûr* ji helbestan pêk hatîye. Her helbestek ku bi ahenga neyê tê xwendin jêre *Mizmar* an *Mezmûr* ji mecmû'eya wan ra jî *Mezamîr* tê gotin. Ji berhema ku ji *Mezamîran* pêk hatîye, jê ra *Zebûr* jî tê

⁴²² el-Îsfehanî, s. 990.

⁴²³ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Enbîya 48.

⁴²⁴ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Beqer 185.

⁴²⁵ el-Îsfehanî, s 892.

⁴²⁶ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Meryem 30.

⁴²⁷ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 153.

⁴²⁸ *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 123.

⁴²⁹ el-Îsfehanî, s 455.

⁴³⁰ Nibil, cûreyek çengê ye.

⁴³¹ ملاح، حسين على، حافظ و موسيقى، انتشارات وزارت فرهنگ و هنر، طهران ۱۳۵۱، ص ۱۲۹.

gotin.⁴³² Navê berhema Hezretî Dawûd ji ber ku Qur'ân jê ra gotîye *Zebûr* her bi vî navê tê zanîn.

Hâfizê Şîrâzî, di malika xwe da bi hunera telmîhê behs ji *Zebûrê* kiribe jî mebesta wî ji *Zebûrê* xezelxwanîya wî ye. Di vê malikê da xwe dişibîne Hezretî Dawûd ji alîyê deng xweşîyê. Wekî li jor amaje pê hate kirin dengê Hezretî Dawûd zêde xweş bûye.

زبور عشق نوازی نه کار هر مرغیست بیا و نوگل این بلبل غزل خوان باش
Sirûda helbestên 'işqê ne karê her teyrî ye, were bibe gula heskirîya teze a vî

bilbilê xezelxwan. (HŞ 432-4)

Zebûr, di nava şî'rên Melâyê Cizîrî da cih nagire.

2.4.3 Berawîrd û Nirxandin

Tablo 6: Berhemên Pîroz

| Rêz | Berhemên Pîroz | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|----------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Qur'ân | 11 | 0,231 | 7 | 0,309 |
| 2 | Zebûr | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| Gîştî | | 12 | 0,252 | 7 | 0,309 |

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji berhemên pîroz navê Qur'ânê û Zebûrê derbas dibe. Qur'ân 11 caran û Zebûr carekê derbas dibe. Bi tevahî 12 caran navê berhemên pîroz bi rêjeya %0,252yan da cih digire.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da ji berhemên pîroz tenê navê Qur'ânê 7 caran bi rêjeya %0,309an derbas dibe. Ji alîyê hejmara berhemên pîroz Hâfizê Şîrâzî li pêş be jî, rêjeya Melâyê Cizîrî hîn zêdetir e.

Hâfizê Şîrâzî, di dîwana xwe da tenê bêjeya Qur'ânê derbas kiriye. Melâyê Cizîrî hem Qur'ân hem hinek navên Qur'ânê wekî; *Qur'âna Mecîd, Fûrqaan, Mishef* û *Kitab* jî bi kar anîye. Ev bikaranîn jî ferqeke di navbera herdu şa'iran da.

Hâfizê Şîrâzî, di malikên xwe da dide zanîn ku Hâfiz Qur'ân e û dikare Qur'ânê bi çarde rîwayetan bixwîne. Ev agahîyek derbarê jiyana Hâfizê Şîrâzî da ye. Hâfizê Şîrâzî, di malikên xwe da dide zanîn ku xwendina Qur'ânê wekî dersekê dipejirîne, li ser ayetên wê disekine û nukteyên hîkemî, wekî ders ji xwe ra jê derdixîne. Dîsa di malikên wî da xuya ye ku di serdema wî da hin kes Qur'ânê ji bo berjewendîyên xwe bi kar tînin. Hâfizê Şîrâzî, li hember wan kesan derdikeve û vê

⁴³² خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۸۶۴.

yeke qebûl nake. Ev hem agahîyeke girîng e ji bo rewşa civaka serdema wî û hem qedirdanîya Hâfizê Şîrâzî li hember Qur'ânê nîşan dide. Bikaranîneke bi vî rengî di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn.

Xala hevpar di navbera Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da tenê sond xwarina bi Qur'ânê ye. Sond xwarina bi Qur'ânê di eslê xwe da ne Îslamî ye, ji kultura gel derketîye holê ku qedr û qîmeta Qur'ânê di nava gel da nîşan dide. Bi gotineke din hem di serdema Hâfizê Şîrâzî da û hem di serdema Melâyê Cizîrî da, di nava gel da, sond xwarina bi Qur'ânê wekî kultureke hevpar tê dîtîn.

Melâyê Cizîrî, ji xeyrê sond xwarinê di hestên 'aşîqâne da cih daye navên Qur'ânê. Taybetîyeke Melâyê Cizîrî di bikaranîna navên Qur'ânê ev e ku pala xwe daye kultura gel. Lewra di nava Kurdan da ji bo Qur'ânê Mushef jî tê gotin ku Melâyê Cizîrî di du malikan da ev istilah bi kar anîye.

Zebûr, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe. Ev ferqa bikaranîna navê berhemên pîroz in di navbera herdû şa'iran da. *Zebûr*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da remza xweş awazîyê ye. Xweş awazî û xezelxwanî teybetîyeke Hâfizê Şîrâzî ye. Bi vî şîklî zimnen Hâfizê Şîrâzî di navbera xweşawazîya xwe û *Zeburê* da têkîleyekê ava dike.

2.5 Pêxember

2.5.1 Nebî (نبی) – Resûl (رسول)

Wekî li jor, di binbeşa berhemên pîroz da, amaje pê hate kirin, Xweda, ji bo meslehetî dîn û axreta însanan pêxember hinartine. Pêxemberan, bi Sihûf û Kitêbên ku Xweda ji wan ra şandîye, emr û fermanên Xweda teblîxî gelên xwe kirine. Pêxemberên ku ji wan ra suhûf yan kitêb hatine hinartin, ji wan ra *Resûl* hatîye gotin. Pêxemberên ku bi suhûf û kitêbên pêxemberên beriya xwe 'emel kirine, ji wan ra *Nebî* hatîye gotin.⁴³³ Yanî her Resûl Nebî ye lê her Nebî ne Resûl e.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê *Nebî* û carekê jî *Resûl* derbas dibe. Ragihandina (teblîx) emr û fermanên Xweda peywira sereke ya pêxemberan e. Hâfizê Şîrâzî, bi bikaranîna sin'etên *telmîh* û *tewrîye* va peyama yara xwe – qîmet dayina kêf û şadî û xweşikahîya wekî gulê - dişîbine emrên Xweda ku pêwist e Pêxember wan ragihîne. Bi vî şîklî yara wî jî peywira resûltîyê hildigire di 'işqê da.

نشاط و عيش و جوانی چو گل غنیمت دان که حافظا نبود بر رسول غیر بلاغ

⁴³³ الجرجاني، ص ۲۰۱.

Hâfiz! Kêf û şahî û cuwanî wekî gulê ji xwe ra xenîmet bizanibe, lewra li ser Resûlan tenê wezîfa teblîxê⁴³⁴ heye. (HŞ 462-7)

Hâfizê Şîrâzî, ji jîyana Hezretî Nûh çend agahîyan bi hev ra di yek malikê da tîne ziman; Hezretî Nûh *Nebî* ye, li hember kiryarên kesên bawerî bi wî neanîne sebir kêşa ye, tofan li gelê wî rabûye, li gorî hin rîwayetan hezar sal temen borandîye. *Nebî* di malike Hâfizê Şîrâzî da sifetekî Hezretî Nûh e.

گرت چو نوح نبی صبر هست در غم طوفان
بلا بگردد و کام هزارساله برآید
Eger wekî Nebî Nûh li hember tofanên xem sebir bikî, di encamê da bela û mûsîbet ew ê biqedin tu ye bigihê arezûyên xwe yên hezar salî. (HŞ 377-6)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da em rastî *Resûl* nayên. Di malikên Melâyê Cizîrî da du caran *Nebî* derbas dibe ku yek ji wan mutleq *Nebî* ye ku ji teref Xweda jê ra îlham hatiye. Her çend di malika Melâyê Cizîrî da pirs hebe jî, ji malikê tê famkirin ku Melâyê Cizîrî vexwarina meya 'îşqê hem li gorî tesewufê û hem li gorî şerî'etê durust dibîne, lewra pîrên terîqetê destûrên heqîqetê û *Nebî* jî destûrên şerî'etê didin.

Fetweyâ pîrî Melâ yân tu bi ilhâmê Nebî
Vê meye herwe dînoşî bi helâlî şeb û roz (MC 117-8)

Di malika jêrîn da Melâyê Cizîrî, *Nebî* wekî sifetekî Hezretî Muhemmed (s.a.s.) bi kar anîye û bi hunera telmîhê mu'cîzeyê perçebûna hîvê bi bîr tîne.⁴³⁵ Melâyê Cizîrî, birhên yara xwe dişibîne tilîya Hezretî Pêxember (s.xl.). Çawa bi îşareteke tilîya Hezretî Muhemmed (s.a.s.) hîv bû du şeqan, herwiha bi îşareteke birhên yara wî sed serî tî jêkirin.

Goşeyên nûnân bi ser bādān ji qewsê bêweter
Mîşlê enguştā Nebî şed ser beyāndin māhê new (MC 228-2)

⁴³⁴ Di malika Hâfizê Şîrâzî da telmîha bi ayeta 99an ya sûreya Maîde heye. (مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ) Tuneye li ser Resûlan tenê ragihandin (teblîx) *Qur'āna Pîroz*, Maîde 99.

⁴³⁵ Şeqbûna (du perçebûn) hîvê yek ji mu'cîzeyên Pêxember e (s.a.s.) ku di sûreyê Qemer da amaje pê hatiye kirin. (اَقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْتَشَقَّ الْقَمَرُ (١) وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيُقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ (٢)) Sa'et (qîyamet) nêzik bû. Hîv bû du perçe. Eger çî ji mu'cîzeyan nîşanan bibînin jî berê xwe jê dizivîrînin û dibêjin ev sihrek domdar e. (*Qur'āna Pîroz*, Qemer 1-2.) Komek ji mezinên qureysîyan di şeveke ku temamê hîvê li asîman xuya dibû hatin cem Pêxember (s.a.s.). Gotin: Eger tu angaştā pêxembertîyê dikî û tu rastgoyî, destûrê bide bila hîv bibe du şeqan. Resûlê Xweda (s.a.s.) jî Xwedayê xwe ev mu'cîze xwest. Bi tilîka xwe îşaret kir û hîv bu du şeqan. Bi şiklekî ku çiyayê Hîrayê di navbera herdû şeqan da dihat dîtîn. Paşê hîv hat hev û bû weka berê. (المبيد، ج ٩، ص ٣٨٧)

Helbet di vê babetê da pêkane ku nêrînen cuda ji werin dîtîn û kesên ku ayetên sûreya Qemer bi terzeke din şîrove bikin jî hebin. Li vir mebesta me ev e ku em bidin zanîn gotinên şa'iran ne bê bingeş in. Lewra di kultur û bawerîya Islâmê da ev nêrîn jî heye. Şa'iran ev gotinên xwe ji kultur û bawerîya Islâmê û ji hinek berhemana deranîne.

2.5.2 Berawird û Nirxandin

Tablo 7: Pêxember

| Rêz | Pêxember | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|----------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Resûl | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 2 | Nebî | 1 | 0,021 | 2 | 0,088 |
| Giştî | | 2 | 0,042 | 2 | 0,088 |

Ji sifetên pêxemberan *Resûl* û *Nebî* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da her yek carekê derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Resûl* derbas nabe, *Nebî* du caran derbas dibe. Ev ferqa bi kar anîna sifetên pêxemberan e.

Di dîwanên herdû şa'iran da derbarê ferqa wateya *Resûl* û *Nebî* tu agahî nayê bidestxistin. Ev jî tê wateya ku derdê herdû şa'iran ne ravekirina wateya herdû têgihan e. Belkî zêdetir di çerçoweya honandina şîrê da wan ew bi kar anîne.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da peywireke pêxemberan, teblîx, bi telmîha ji Qur'ânê hatîye ziman. Herwiha *Nebî* ku sifetê Hezretî Nuh e di cih da hatîye bikaranîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da istilaha *Nebî* ji bo îşaret dayîna mu'cîzeyê Hezretî Muhammed (s.a.s.) hatîye bikaranîn. Ev yek bi me di de zanîn ku herdû şa'ir jî di mijara pêxembertîyê da xwedî agahî ne.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Resul*, di hizrên 'âşiqâne da cih girtîye. *Nebî*, ji bo fikreke pendamîz hatîye bikaranîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Nebî*, di herdû malikan da di hizrên 'âşiqâne da cih girtîye. Ev jî ferqa bikaranîna van istilahan e di navbera herdû şa'iran da.

2.6 Jîyana Axretê

Jîyana axretê bi sê merheleyan dikare ji hev were veqetandin. Kadri Yıldırım van merheleyan wiha dabeş dike. Rabûna qiyâmetê, vejîn (*be's*- بعث) û heşir û hesab û encam.⁴³⁶

2.6.1 Āxiret (آخرة)

Āxiret (آخرة) ji bêjeya *âxir* (آخِر) ê tê ku dijberê *ewwelê* (أول) ye. Ewwel yekemîn, âxir duyemîn e. Di bawerîya Îslamê da ji heyînên bi ruh ra du jîyan hene. Jîyana yekemîn jîyana dinê ye ku li gorî lefzên Qur'ânê jê ra *dāri'd-dunyā* (دار الدنيا)

⁴³⁶ Yıldırım, Kadri, *Ehmedê Xanî Külliyyatı 2- 'Eqîdeya İmanê*, Avesta, 2008, s 150-152.

yan *heyātu 'd-dunyā* (حَيَاةُ الدُّنْيَا) hatîye gotin. Jîyana duyemîn jî jîyana axretê ye ku jê ra *dāre 'l-āxire* (دَارِ الْأَخْرَةِ) yan *heyāte 'l-āxire* (حَيَاةُ الْأَخْرَةِ) hatîye gotin ku bi kurtasî *Axîret* û bi Kurdî bi sivikkirenê *Axret* e. Bawerîya bi jîyana axretê mercek ji mercên Îslamîyetê ye. Qur'ân di vê babetê da wiha dibêje: "*Û ew kesên ku bi te bawer dikin, hem bi ew tiştê ji te ra hatîye şandin û hem ew tiştên ku berya te hatine şandin û hem jî bi axretê bê guman bawer dikin.*"⁴³⁷

Carînan hem ji bo dinyayê û hem ji bo axretê '*âlem an cîhan* jî hatîye gotin. Şa'iran di şî'rên xwe da ji bo dinya û axretê *du 'âlem*",⁴³⁸ *herdû 'âlem, herdû cîhan*⁴³⁹ jî bi kar anîne. Wekî ku Melâ Huseynê Bateyî di mewlûdnameya xwe da dibêje;

Ew hebîbê rohnîyâ heft âsîmân
*Herdu 'âlem qalîb ew rûh û rewân*⁴⁴⁰

Di şî'rên 'aşîqâne da herdû 'âlem li hember hezkirina yarê bê qîmet e. Şa'ir, herdû dinya xwe li ber nigê mehbûba xwe radixe. Di şî'rên 'arîfane da pûte bi herdû 'âleman nayê dayîn, lewra mebesta şaîrî xwegihandina me'sûqa ezeli ye.

Hâfizê Şîrâzî, bêjeya *axîretê*, di helbestên xwe da, di wateya jîyana duyemîn da carekê bi kar tîne. Nêrîna Hâfiz, nêrîneke 'aşîqâne ye. Hâfiz, kêf û şahîya li ser çîmenê bi du yarên hişyar û zîrek û çar rîtil meya kevnare tevî xeyalên asûde û xwendina şî'ra bi dinê û axretê naguhêze.

من این مقام به دنیا و آخرت ندهم
اگر چه در پی ام افتند هر دم انجمنی
Ez vî meqamî bi dinê û axretê nadim, herçend ku her dem cema'etek li pey me werin û bibêjin dev ji vî karî berde jî. (HŞ 703-2)

Hâfizê Şîrazî, ji bedel bêjeya axretê bi wateya dinê û axretê herdu 'âlem (2 car), du cîhan (4 car) û herdû cîhan (4 car) bi kar anîye. Ev terkîbên navborî bêtir di hizrên 'aşîqâne da cih digirin. Kesên ku esîrên 'işqê bin di herdû 'âleman da azad in.

فاش می گویم و از گفته خود دلشادم
بنده ی عشقم و از هر دو جهان آزادم
Ez eşkera dikim û ji gotinên xwe dilşad im, bendeyê 'işqê me û li herdû dinya azad im. (HŞ 492-1)

Di malikeke din da, di heman mînwalê da rewşa 'aşîqî li hember bê rexbetîya herdû dinya wiha anîye ziman.

⁴³⁷ Qur'âna Pîroz, Beqer 4.

⁴³⁸ Bnr: ۶۴۶ بسعدی شیرازی، ص

⁴³⁹ Bnr: مولوی، مولانا جلال الدین محمد، کلیات دوان شمس، مصحح: بدیع الزمان فروزانفر، راد، تهران ۱۳۷۵، ج ۲، ص ۱۲۰۸.

⁴⁴⁰ Bateyî, Melâ Huseynê, *Mewlûda Nebî*, Werger û Şîkar: M. Xalid Sadînî, Kültür ve Turizm Bakanlığı Yayınları, Ankara 2014, r 20.

دوست گو یار شو و هر دو جهان دشمن باش بخت گو پشت مکن روی زمین لشکر گیر
Bibêje; ku dost yarê me be, bihêle bila herdû cîhan bibin dujmin, bibêje; eger

bextê me yarîyê ji me ra bike, bihêle bila rûyê zemin tijî leşker bibin. (HŞ 410-7)

Di nava şî'rên Melâyê Cizîrî da bêjeya *axretê* nayê dîtîn, lê *herdû 'âlem* cih girtîye. Nêrîna Melâyê Cizîrî nêrîneke 'îrfânî ye. Li gor şa'îrên 'arîfmeslek, mebest ji hezkirina xweşikên dinê dîtîna tecellîyatên Xweda ye ku di xweşikên dinê da xuya dibin.

Wellâh ji herdû 'âlemân, min ħusnê cānān e xereḏ
Lew min ji ħusnā dilberān, her şun'ê Reḥmān e xereḏ (MC 134-1)

2.6.2 Āxîrzemān (آخر زمان)

Āxîrzman, dema dawîbûna dinyayê ye. Piştî qiyâmet radibe. Ji sedsala yekem ya Îslamê bigre di her 'esrê da herkesî xeyal dikir ku dema wan dema dawîya dinyayê ye. Qur'ân ferman dike: *Sa'et (qiyâmet) nêzîk bû.*⁴⁴¹ Di hedîsa Resûlê Xweda da wiha derbas dibe: *Ez û qiyâmet bi qedere serê tu tilîya nêzîkî hev in.*⁴⁴² Di âxîrê zeman da gelek fitne, şer û nexweşî derdikevin holê ku wekî îşaretên beriya qiyâmetê hatine hesabandin. Pîrbûna 'erdhejan, girtina hîvê û rojê, peydabûna beyreqên reş ji rojava yan ji Xoresanê, derketina dabbetu'l-erdê, derketina deccal, derketina sufyan, derketina Mehdî, nazîlbûna Hezretî 'Îsa, Ye'cuc û Me'cuc, derketina rojê ji rojava hin ji wan in.⁴⁴³

Şa'îran geh bûyer û fitneyên dema xwe şibandine bûyerên âxîrzman. Bi nêrîneke şa'îrane xwestine ku bibêjin ev bûyer, fitne, keşmekeşî û xerabî çendî mezin in ku êdî âxîrê zeman nêzîk bûye. Yek ji wan şa'îran jî Hâfîzê Şîrâzî ye ku bobelatên dema xwe şibandîye fitneyên âxîrê zeman.

خواهم شدن به کوی مغان آستین فشان زین فتنه ها که دامن آخر زمان گرفت
Ez dixwazim ji hemû fitneyên ku dava âxîrê zeman girtine birevim, terka
hemû tiştî bikim û xwe bavêjim meyxaneyê. (HŞ 176-7)

Hin caran şa'îran, di şî'rên xwe da me'şûq şibandine fitneya âxîrê zeman. Carînan ji layê zilm, cewr û cefaya ku me'şûqa wan li wan dike, kiryarên wê dişîbînin fitneya âxîrê zeman. Û carinan jî bi 'îşqa me'şûqê ji fitne û fesadîyên âxîrê zeman di ewlehîyê da dimînin.

⁴⁴¹ *Qur'âna Pîroz*, Qemer 1.

⁴⁴² العسقلانی، علی بن أحمد بن حجر، فتح الباری شرح صحیح البخاری، المطبعة السلفية ومكتبتها، القاهرة ٢٠١٠، ج ١١، ص ٣٤٨.

⁴⁴³ Ji bo agahîyên berfireh bnr: Qoxî, Ahmed Hilmî, *Rehberê 'Ewam Şerha Nehcu'l-Enam*, İhsan Yayınları, İstanbul, 2004, r. 13-15.

از آن زمان که فتنه ی چشمت به من رسید ایمن ز شر فتنه ی آخرزمان شدم
Ji dema ku fitneya çavên te gihast me, ji hemû bela û fitneyên âxir zeman di ewlehîyê da mam. (HŞ 499-8)

Melâyê Cizîrî, âxirzeman û qiyâmetê di yek malikê da bi cih dike û di âxirê zeman da rabûna qiyâmetê bi bîr tîne. Şeva reş û tarî jî wekî nişaneke rabûna qiyâmetê di âxirê zeman da dinasîne.

Ez dibêm âxir zemân e dê qiyâmet rābitin
Lew şevā tarî kişandî û nehişt eswed xurāb (MC 59-5)

‘Aşiq divê di ‘işqa xwe da rastgo be, li ser wê soza ku dane me’şûqa xwe bimînin heta ku ruhê wan ji bedena wan cuda bibe. Şa’ir, ji bo vê yekê bînin ziman ji âxirê zeman sûd werdigirin. Heta ku dinya hebe ew ê li ser ‘ehd û peymanaxwe bimînin. Melâyê Cizîrî di vê babetê da ji qalû belayê⁴⁴⁴ da li ser peymanaxwe elestê ye heta ku dinya hebe.

Min di ber qāl û belā bātin vi wê rā bû evîn
Hêj li ser ‘ehdā elest im tā bi rojā âxirîn (MC 176-1)

2.6.3 Qiyâmet (قیامة) – Restâxîz (رستاخیز)

Eslê bêjeya *Qiyâmetê* ‘erebî ye û me’na wê, di bihnekê da rabûna ser nigan e.⁴⁴⁵ *Qiyâmet*, roja xerabûna dinyayê ye ku di wê rojê da li erd û esman kesek li jîyanê namîne.⁴⁴⁶ *Restâxîz*, bêjeyeke hevedudanî ya farsî ye ji *reste* (mirin) û *xîz* (qevz) ê pêk hatîye û wateya wê rabûna mirîyan ne. Di ferhengên da hem bi wateya *qiyâmetê* û hem bi wateya heşrê cih girtîye.⁴⁴⁷

Qiyâmet û *Restâxîz* di edebîyatê da wekî rojeke zêde bitirs, xofdar û hevîlnak cih girtîye ku bingeha xwe ji ayetên Qur’ânê werdigire. Lewra Qur’ân, roja *Qiyâmetê* bi vî rengî teswîr dike.⁴⁴⁸ Ji ber vê di şîrê da bi heman wate û rengî cih girtîye.

Di şîrên Hâfizê Şîrâzî da *Qiyâmet* cih nagire lê *Restâxîz* carekê di malikan da derbas dibe û bi wateya roja *Qiyâmetê* dikare were famkirin. Hâfizê Şîrâzî, ji bo tîrsa

⁴⁴⁴ Qal û Bela û Elest ji Qur’anê hatîye wergirtin. Bi gotineke din Melâyê Cizîrî îşaretê bi bal ayeta Qur’anê dike. Elest, ku jê ra ‘*Ehda Elest an Bezma Elest* jî tê gotin ew peyman e ku Xweda li ser yekîtiya xwe ji Hezretî Âdem yan ji zurrîyeta Hezretî Âdem wergirtîye. Di Qur’anê da wiha derbas dibe. (وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ) "Ey Resûl! Bi bîr bîne ew hengama ku Xwedayê te ji piştâ ferzendanê Âdem zurrîyeta wan girt (amade kir), û wan ji xwe ra kir gewah. Go: ez ne Rebbê we me?" (*Qur’âna Pîroz*, E’raf 172.) Ji vê gewahîyê ra *Bezma* an ‘*Ehda Elest* tê gotin. Di bersîvê da hemûyan got: (قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا) "Belê em gewahîyê didin. (*Qur’âna Pîroz*, E’raf 172.) Ji vê gewahîyê ra jî *Qal û Bela* hatîye gotin.

⁴⁴⁵ el-Îsfehani, , s 879.

⁴⁴⁶ Bnr: *Qur’âna Pîroz*, Zumer 68.

⁴⁴⁷ دهخدا، ج ۸، ص، ۱۲۰۲۶.

⁴⁴⁸ Bnr: *Qur’âna Pîroz*, Tekwîr 1-3. Taha 105-106. Îbrahîm 48.

Qiyâmetê ji dilê xwe bavêje, berê xwe dide vexwarina meyê. Hâfizê Şîrâzî di malika xwe da kulturek kevnare tîne ziman û tiştê balkêş jî ev e. Di vê kulturê da ji bo kesê mirî ji tirs û xewfa roja *Qiyâmetê* reha bibe tiştêkî pîroz dixistin ber kefenê wî.⁴⁴⁹ Hâfiz, cama şerabê pîroz didêre û dibêje camê bixin ber kefenê min.

پیاڵه بر کفنم بند تا سحرگه حشر
به می ز دل ببرم هول روز رستاخیز
Kaseya şerabê bixin ber kefenê min ji bo ku sibeha heşrê ez bi vexwarina meyê tirsê roja qiyâmetê ji dilê xwe derxim. (HŞ 423-5)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Restâxîz* cih nagire lê *Qiyâmet* bi çend wate û rengên xwe di malikên şîrên wî da cih wergirtiye. Herwiha Melâyê Cizîrî bi bêjeya *Qiyamê* jî *Qiyâmet* anîye zîman.

Wekî li jor derbas bû, şeva reş û tarî wekî nîşana *Qiyâmetê* cih girtîye. (MC 59-5) *Qiyâmeta* 'aşîqî ew e ku ji yara xwe dûr bikeve. Dema 'aşîq jî yara xwe dûr ket qiyâmet li serê wî radibe.

Melâ bê qâmetâ yektâ *Qiyâmet min bi çehvân dî*
Fîrâqê rûsiyâ bin te *Ji min cânê şîrîn cê dâ* (MC 29-6)

Qiyâmet, di axaftina gel da kînaye ye ji bo welwele, feryad û fixana ew kesên hêrsbûyî û bêhteng.⁴⁵⁰ Bi vê vateyê yara Melâ jî bo yek bûseyê sed *Qiyâmetan* radike.

Er'er xerâmâ bi qedd û qâmet
Yek bûse dâ me bi şed qiyâmet (MC 74-1)

Di edebîyatê da bejna yarê hatiye şibandin bi *Qiyâmetê*.⁴⁵¹ Bejna yarê bi endama xwe ya xweşik ji ber ku dilê 'aşîqî talan û wêran dike bi *Qiyâmetê* hatiye şibandin. Di heman demê da dema me'şûq rabe ser xwe û endama wê dîyar bibe hiş di serê 'aşîqî namîne û ev hatîye şibandin bi *Qiyâmetê*. Di edebiyata farsî da jî ev mezmûn tê dîtin.⁴⁵² Melâyê Cizîrî jî rabûna me'şûqa xwe şibandîye *Qiyâmetê*. (MC 199-7) Di malika jêrîn da şibandina qed û qama yarê eşkera xuya dike.

Leyletu'l-qedr û berât in zulf û cebhet şubhê 'îd
Dêm weko feşlâ bihârê lê qiyâmet qedd û qam (170-3)

⁴⁴⁹ استعلامی، برگ ۲، ص ۷۰۲؛ سعادتپور، علی، جمال آفتاب و آفتاب هر نظر: شرحی بر دیوان حافظ، احیاء کتاب، تهران ۱۳۹۵، ج ۶، ص ۴۰۱. (Lê mixabin herdû çavkanîyên jorîn jî nabêjin ev kultur kultura kîjan gelî ye.)

⁴⁵⁰ Çavuşoğlu, Mehmet, *Necatî Bey Divanı'nın Tahlîli*, Kitapevi, İstanbul 2017, s 199.

⁴⁵¹ Pala, İskender, *Ansiklopedik Divân Şiiri Sözlüğü*, Kapı Yayınları, İstanbul 2017, s 75.

⁴⁵² Wekî mînak di şîrên Selmanê Sawecî da wiha derbas dibe.

توحوری چهره فردای قیامت گربدین قامت
میان روضه بر خیزی قیامت ان زمان باشد
Tu ey hürî çehre! Eger roja piştî qiyametê bi vê endama xwe ji nav bexçeyê bihiştê tu rabî ser xwe qiyamet ew dem radibe. (عباس گلی وفائی، انجمن آسار و مفاخر (فرهنگی، تهران ۱۳۷۶، ص ۲۸۹)

2.6.4 Heşir (حشر) – Mehşer (محشر)

Bêjeya *Heşrê* bêjeyek 'erebî ye, bi wateya ji cihderxistina mirovan ji cihê wan û şandina wan ji bo ceng û tiştên wekî cengê ye.⁴⁵³ Wekî istilah, *Heşir*, vejîn û ji bo hesabdayîne kombûna li hizûra Xweda ye.⁴⁵⁴ Mehşer jî cihê kombûnê ye.⁴⁵⁵

Di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da *Heşir* cih digire lê *Mehşer* cih nagire. Di nêrîneke 'âşiqâne da, kesê ku di ezel da cama şeraba 'işqê vexwaribe heta roja *Heşrê* mest û sermest e. Hâfizê Şîrâzî xwe jî yek ji wan kesan dibîne.

سر ز مستی برنگیرد تا به صبح روز حشر هر که چون من در ازل یک جرعه خورد از جام دوست
Serê wî ji mestîyê ranabe heta sibeha roja heşrê, ew kesê ku wekî min di roja ezel da cur'eyek ji cama 'işqa yarê vexwaribe. (HŞ 141-4)

Di *Heşrê* da baş û xerab bi wezinandina xêr û gunehên wan ji hev tèn veqetandin. Kesên baş, qenc bi behîştê û kesên xirab, gunehkar jî bi dojhê tèn sezakirin.⁴⁵⁶ Hâfizê Şîrâzî di *Heşrê* da veqetandina baş û xeraban bibîr tîne û naxwaze ku şêx û rind heman sezayî bibînin.

ترسم که روز حشر عنان بر عنان رود تسبیح شیخ و خرقة رند شرابخوار
Ez ditirsim ku di roja heşrê da tesbîhên şêx û xirqeyê rindê şerabxwar wek hev bi erziş be. (HŞ 396-9)

Di roja *Heşrê* da ji her kesekî ra defterên kirinên wan, didin desten wan û li gorî wan defterên wan hesab ji wan tê xwestin.⁴⁵⁷ Hâfizê Şîrâzî, deftera kirinên xwe dişîbîne nameyek reş ji ber ku tijî guneh e. Lê her bi hêvî ye ku Xweda ew ê wî bibexşîne:

از نامه ی سیاه نترسم که روز حشر با فیض لطف او صد از این نامه طی کنم
Ez ji nameya xwe ya reş natirsim di roja heşrê da, bi lutf û bexşandina Xweda sed wekî vê nameyê dê li hev were pêkulturin. (HŞ 536-5)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Mehşer* tenê carekê derbas dibe lê *Heşir* qet derbas nabe. Melâyê Cizîrî *Mehşer* bi wateya dawîya sermestîya ji 'işqê bi kar anîye. Ev jî bi me dide zanîn ku 'işq di jîyana dinê da derbasdar e, di jîyana axretê da ne derbasdar e. Melâyê Cizîrî, ji qal û belayê heta roja mehşerê sermestê cama şeraba 'işqê ye.

Ew nâzîkâ nisbet gulê

Câmek ji kewşer dâ Melê

⁴⁵³ el-Îsfahanî, s 286.

⁴⁵⁴ Yıldırım, s 151.

⁴⁵⁵ معین، فرهنگ معین، ج ۲، ص ۱۶۴۹.

⁴⁵⁶ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Qarî'e 6-11.

⁴⁵⁷ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Înşîqaq 7-12.

Mest im ji ber qālū belê

Hettā bi rojā meḥşerê (MC 276-7)

2.6.5 Cennet (جنة) – **Behişt** (بهشت) (**Xuld** (خلد), **Me'wā** (مأوى), **Firdews** (فردوس), **Bāxê Ne'im** (باغ نعيم), **Dāru's-selām** (دارالسلام), **Rewḏe-i Riḏwān** (روضه رضوان), **Bāxê Riḏwān** (باغ رضوان), **Gulşen-i Riḏwān** (گلشن رضوان), ('**Edin** (عدن), **Behiştā İrem** (بهشتا ارم), **Bāxê İrem** (باغ ارم))

Cennet, bêjeveke 'erebî ye. Bi farsî û kurdî jê ra *Behişt* hatîye gotin. Ew bostan û bexçeyê ku darên wê bi pelg û gulîyên wê axa wê nuxumandibe, veşartibe, jê ra *Cennet* tê gotin.⁴⁵⁸ *Cennet*, wekî têgih ew warê axretê ye ku misilman hetahetayê ew ê tê da bimînin.⁴⁵⁹ Wekî Qur'ân ferman dike: "*Cennet, hatîye amadekirin ji bo kesên bawerî bi Xweda û Resûlê Xweda anîne.*"⁴⁶⁰

Di Qur'ânê da navê heşt *Behiştan* derbas dibe.⁴⁶¹ Yanî heşt *Behişt* hene. Di edebîyatê da *Cennet*, *Behişt* û navên heşt tebeqeyên *Behiştê* cih werdigire, digel hinek sifetên din. Wekî *Baxê Ridwan* bi nisbeta ku Ridwan dergevanê *Behiştê* ye.

Di dîwana Hâfiz da hem *Cennet* (HŞ 154-2) hem *Behişt* (HŞ 96-2) û hem hinek navên behiştê wekî *Xuld* (HŞ 528-7), *Me'wa* (HŞ 637-7), *Firdews* (HŞ 123-3), *Cenneti Firdews* (HŞ 495-7), *Daru's-selam* (HŞ 481-4) û hem sifetên wê wekî *Gulşenê Ridwan* (HŞ 524-2) û *Baxê İrem* (HŞ 645-5) jî di malikan da cih digirin.

Hâfizê Şîrâzî, wekî bawermendekî musliman hebûna heşt behiştan dipejirîne. Di nêrîna wî da ji kesên 'aşîq ra tu pûte bi wan nayê dayîn û herdû 'âlem jî ji wan ra ne xem e.

گدای کوی تو از هشت خلد مستغنی ست اسیر عشق تو از هر دو عالم آزادست

Gedayê gundê te pêdiviya wî bi heşt behiştan tune ye û esîrê 'işqa te ji herdû dinyayan azad e. (HŞ 105-4)

Di behiştê da çemên şerabê û şîr diherikin û di binê her behiştê da çemên avê diherikin çawa ku Xweda di Qur'ânê da ferman kirîye.⁴⁶² Hâfizê Şîrâzî çavên xwe dişîbîne çemên behiştê ku hêstir jê diherikin, kaxa me'şûqa xwe bi qesrên behiştê û wê jî bi horîyan dişîbîne.

شیوه جنات تجری تحتها النهار داشت

چشم حافظ زیر بام قصر آن حوری سرشت

⁴⁵⁸ دهخدا، ج ۵، ص ۷۸۶۸.

⁴⁵⁹ Yıldırım, s 158.

⁴⁶⁰ *Qur'âna Pîroz*, Hedîd 21.

⁴⁶¹ Navê behiştan di Qur'ânê da derbas dibin. Navê wan ev in: *Xuld* (خلد), *Daru's-selam* (دارالسلام), *Daru'l-qerar* (دارالقرار), *Cennetî 'edn* (جنة عدن), *Cennetu'l-me'wa* (جنة المأوى), *Cennetu'n-ne'im* (جنة النعيم), *İllyîyîn* (علیین), *Firdews* (فردوس). (فرهنگ اشارات (اساطیری، سنن، آداب، اعتقادات، علوم)، (میترا، تهران ۱۳۸۶، ص ۱۹۸)

⁴⁶² *Qur'âna Pîroz*, Alî 'Imran 57.

Çavên Hâfiz, li jêrî qesra wê yara wekî horîyê, wekî çemên di binê behîştê da diherikin, hêstiran diBârîne. (HŞ 163-8)

Di behîştê şerab heye û çemên şerabê di behîştê da diherikin. Şeraba behîştê serxweşîyê û mestîyê çênake. Wekî Qur'ân ferman dike: *Rebbê wan, wan ji şerabak pakîze têrav dike.*⁴⁶³

آن چه او ریخت به پیمانه ما نوشیدیم
اگر از خمر بهشت است وگر باده مست
Ew tiştê ku wî rijand îskana me, me vexwar, eger ew tişt ji şeraba behîştê be û eger şeraba mestîyê be. (HŞ 93-6)

Di malikên Hâfizê Şîrâzî da, behîşt, cihê vexwarina şerabê û zewaca bi horîyan e. (HŞ 635-6) Hem behîştê (HŞ 323-5) û hem şerabê û hem zewaca bi horîyan ra wekî mafê xwe dibîne. Di malika jêr da vê bi tevahî eşkera dike.

فردا اگر نه روزه ی رضوان به ما دهند
غلمان ز روزه حور ز جنت به درکشیم
Sibê eger rewdeê Ridwan (behîştê) nedin me, ez ê xilmanan ji bexçe û horîyan ji cennetê birevînim. (HŞ 588-3)

Selsebîl navê kanîyeke behîştê ye ku Qur'ân wê dinasîne.⁴⁶⁴ Lêva me'sûq hatîye şibandin bi ava kanîya selsebîlê.

ای رخت چون خلد و لعلت سلسبیل
سلسبیل کرده جان و دل سبیل
Ey ew a ku rûyê te wekî behîştê ye û lêva te selsebîl e, lêva te can û dilê 'âşiqan bi xwe va girêda. (HŞ 480-1)

Di behîştê da sîya dara Tûbayê, qesrên cûrbecûr û horîyên zêde zêde xweşik hene. Tûba navê wê dara behîştê ye ku şaxên wê digihêje hemû deverên behîştê û qesrên wê. Dara tûbayê fêkîyên cûrbecûr digire û herkesê ku dixwaze, ji wan fêkîyan berhev dike û dixwe.⁴⁶⁵ Tevî hemû van taybetîyên xwe behîşt beranberê axa gundê yarê nayê.

باغ بهشت و سایه ی طوبی و قصر و حور
با خاک کوی دوست برابر نمی کنم
Ez baxên behîştê, sîya dara tûbayê, qesr û horîyan, bi axa gundê yara xwe nadim. (HŞ 538-2)

Kewser, navê çemê hewzekî ye di behîştê da.⁴⁶⁶ Hâfiz, daxwaza vexwarina şeraba kewserê nake, ew karê zâhidan e.

زاهد شراب کوثر و حافظ پیاله خواست
تا در میانه خواسته کردگار چیست

⁴⁶³ Qur'âna Pîroz, Însan 21.

⁴⁶⁴ Bnr: Qur'âna Pîroz, Însan 17.

⁴⁶⁵ شمیسا، فرهنگ اشارات، ص ۲۰۱.

⁴⁶⁶ Di derbarê Kewserê da gelek nêrîn hebin jî dudu ji wan bêtir derdikevên pêş. Yek; Kewser, navê çemekî bihiştê ye. Dudu; navê hewzê taybet yê Pêxember (s.a.s.) e. (ص ۵۸۸، ج ۱، زمانی، ج ۱، ص ۵۸۸)

Zâhid, şeraba kewserê û Hâfiz şeraba tirî xwest. Ka em bibînin xwestek û îradeya Kirdîgar çî ye? (HŞ 144-8)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da Cennet, Behîşt û hinek navên behîştê wekî Xuld, Firdews, Me'wa û 'Edn hatine bikaranîn.

Derbarê afirandina behîştê da Melâyê Cizîrî bi nêrîneke felsefî-tesewuffî dibêje; Xweda, behîşt ji nûra xwe afirandîye.

Kâtîb qelem dîsâ gerând Ismek ji ismân sewwirând
Kursî ji nûrê âfirând Cennâtê xuld û sidre dâ (MC 42-9)

Behîşt û horîyên behîştê xemilandî ne. Xemilandina wan ji ber kêf û şahîya Resûlê Xweda (s.a.s.) ye. Lewra dema Resûlê Xweda (s.a.s.) hate dinyayê ji kêfan ra behîşt û horî xemilîn.

Zâlim veşêrî kufir nemâ qeş di dinê dâ
Cennet bû muzeyyen xemilîn hur û perî ne (MC 219-8)

Me'şûq her çend ku bi şiklê xwe însan be jî, lê di eslê xwe da ji layê xweşikahîyê wekî horîya behîştê ye. (MC 312-9) 'Âşiq çî dema ji ber hin egeran negihêjin me'şûqên wekî horîyên behîştê canê xwe ji dest bidin, di rêka 'îşqê da şehîd bibin ji wan ra rewa ye. (MC 200-6) Qesr, sera û kaxên me'şûqê di çavê 'âşiqî da behîşt e.

Çendekê çemen herem bû Lê medâm ew şubhîdem bû
Min behîşt baxê İrem bû Lê şeba go min Sebâ ye (MC 205-3)

Me'şûq hûrî sifet e û wîsala wê, gihiştina wê gihiştina behîştê ye. (MC 232-3) Wîsala Me'şûqê hatîye şibandin bi behîştê lewra behîşt cihê nemirinê û xweşîyê ye.

⁴⁶⁷ *هذه جنات عدن فدخلوها خالدين* *بر درباغ وصالش هاتفی آواز داد*
(MC 177-1)

Di nêrîna 'âşiqî da gundê yarê ji hemû (di malika Melâyê Cizîrî da Xuld, Firdews û Me'wa) behîştan şirîntir, xweşiktir e. (MC 172-4) Me'şûq eger xwe nîşanî dojhê bide, dojhê yekser dibe behîşt. (MC 261-3) Eger ji xweşikahîya yarê gulek tenê xuya bibe navê behîştê İremê ew ê ji dinê rabe. (MC 236-7) Ji ber van taybetîyên yarê nêrînek wê tenê berberî şerab, kewser û hemû hîrîyên behîşte ye.

Nezerek wê beşerê lebşekerê hûrîsirîştê
Nâdirim ez bi mey û kewşer û hûrên di bihiştê (MC 258-1)

⁴⁶⁷ Nîveka yekem ya vê malikê bi farsî û ya duyem bi 'erebî ye. Wate: *Li ber deriyê baxê wîsala te hatîfekî bang kir got: Ev behîştê 'edn e, ji bo ku ebedî tê da bimînî bikevinê.* Pêwîst e were gotin di nîveka malike ya duyem (فدخلوها خالدين) îqtîbasa ji Qur'anê ye. Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Zumer 73.

'Işq di zâhir de wekî 'ezab be jî, di batin da wekî behiştê ye, herçend ku hinav bisohte û ceger bi tevahî were biraştin jî.

*Zâhirî dā me 'ezābek we ko bātin ve behişt
Sohtinê dāye hināvān û ceger têki birîşt (261-5)*

2.6.6 Cehennem (جهنم) (Dûzex (دوزخ), Seqer (سقر))

Cehennem di eslê xwe da bêjeyeke 'erebî ye, farsî ye yan 'îbranî ye ne dîyar e.⁴⁶⁸ Li ser wateya *Cehennemê* gelek nêrîn hebin jî wateyên zêde derdikevin pêş *agir* û *kûr* û *dûr* bûnî ye.⁴⁶⁹ Wekî istilah, navê agirê sorkirî yê Xweda ye. Warek ji warê axretê ye ku hatîye amadekirin, ji bo kesên nebaş werin sezakirin. Bi farsî *Dûzex* û bi kurdî *Dojeh* hatîye gotin. Wekî ku Qur'ân dinasîne heft derîyên (tebeqeyên) *Dojehê* hene.⁴⁷⁰ Herkesek li gorî sezayê xwe diçe tebeqeyeke *dojehê*. Qur'ân li gorî taybetîyên wan, navekî taybet li her derîyên (tebeqe) *Dojehê* kirîye.⁴⁷¹

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da tenê *Dûzex* derbas dibe. Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da kesên li axretê yan li behiştê ne û yan li *dojehê* ne.

چه دوزخی چه بهشتی چه آدمی چه پری
به مذهب همه کفر طریقت است امساک

Di mezhebê hemî kesan da çi dojehî û çi behiştî, çi însan û çi perî, bexilî û çikûsî kufr û nasipasî ye. (HŞ 468-4)

Taybetîya *Dojehê* ya herî mezin agirê wê ye. Agirê *dojehê* dijwar e. 'Âşiq ji avêtina *Dojehê* gilî û gazindeyan nake bi şertê ku bikaribe rûyê yarê xeyal bike, bîne pêşberî çavên xwe.

در آتش ار خیال رخس دست می دهد
ساقی بیا که نیست ز دوزخ شکایتی

Sâqî şerabê bîne were ku ez di agir da rûyê yarê xeyal bikim gazindeyan ji avêtina xwe ya dojehê nakim. (HŞ 647-8)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Dûzex* û navek ji navên *Dojehê Seqer* derbas dibe. Di eslê *Seqerê* da wateya şewitandinê heye.⁴⁷² Qur'ân, ji bo ku cudahîya navbera agirê dinê û agirê *dojehê* bide ber çavan dibêje; *Seqer çi ye tu dizanî? Li pey xwe tiştêkî nahêle, tiştêk jê xilas nabe, çermê însan diqemitîne.*⁴⁷³ Bi vî şiklî *Seqerê* ji bo me pênase dike.

⁴⁶⁸ Bnr: el-Îsfehanî, s 250. ; ص ۷۹۳، ج ۵، دهخدا،

⁴⁶⁹ ابن منظور، ج ۱۲، ص ۱۱۲،

⁴⁷⁰ *Qur'âna Pîroz*, Hicr 44.

⁴⁷¹ Ji bo navên tebeqeyên *dojehê* û taybetîyên wan û sinifên ku ewê bikevin her tebeqeyekê bnr: (المبيد، ج ۵، ص ۳۱۷-۳۲۰)

⁴⁷² Bnr: el-Îsfehanî, s 501

⁴⁷³ *Qur'âna Pîroz*, Mudessîr 27-29.

Can û cesedê 'âşiqî ji ber cewr û cefaya yarê wekî ketibe nava agirê *Seqerê* hatîye qemitandin. (MC 257-6) 'âşiq ji ber agirê 'îşqê her tim dinale lewra agirê *Seqerê* dilê wî sohtîye. Ji ber vê, nalîna 'âşiqê ne 'eyb e. (MC 107-2) Agirê di dilê 'âşiqî da ji agirê *Seqerê* diwartir e û dikarê *Seqerê* jî bisojîne.

*Ji ber âhên me dinê âgir û dūd bit ne 'eceb
Me di dil dā heye nārek ko disojit seqerê* (MC 265-8)

Me'şûq bi xweşikahîya xwe carek tenê xwe nîşanê *Seqerê* bide, *Seqer* dê ji xweşikahîya wê bibe behîsta horîyan.

*Ger xwe nîşān seqerê dit dikirit hūri bihişt
Ke'beyā tê nebit ew butkede ye w dêr û kinişt* (MC 261-3)

Dûrbûnî, firaq û hicra yarê hatîye şibandin bi rewşa kesê di *Dojehê* da ye. 'Âşiq her dixwaze ji wê dûrbûnîyê xilas bibe, lê yar her dixwaze dûrbûnîya xwe li 'âşiqê xwe zêde bike.

هر نفس دارد صلا و نعره ء هل من مزيد⁴⁷⁴ کی خلاص از دوزخ هجر تو یابم ای جوان
(MC 98-8)

2.6.7 Berawird û Nirxandin

Tablo 8: Jîyana Axretê

| Rêz | Jîyana Axretê | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|----------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Âxiret - Herdû 'âlem | 11 | 0,231 | 1 | 0,044 |
| 2 | Âxir Zeman | 2 | 0,042 | 2 | 0,088 |
| 3 | Qiyâmet - Restâxîz | 1 | 0,021 | 6 | 0,265 |
| 4 | Heşîr - Mehşer | 4 | 0,084 | 1 | 0,044 |
| 5 | Cennet | 66 | 1,385 | 28 | 1,237 |
| 6 | Cehennem | 4 | 0,084 | 11 | 0,486 |
| Giştî | | 88 | 1,846 | 49 | 2,164 |

Têgihên derbarê jîyana axretê wekî; *Âxiret - Herdû 'Âlem*, *Âxir Zeman*, *Qiyâmet - Restâxîz*, *Heşîr - Mehşer*, *Cennet*, *Cehennem* di dîwana herdû şa'iran da derbas dibin. Ev xalek hevpar e. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ev têgih 88 caran bi rêjeya %1,846 a derbas dibin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 49 caran bi rêjeya %2,164 a derbas dibin. Ji aliyê hejmaran va Hâfizê Şîrâzî li pêş be jî, ji aliyê rêjeyê Melâyê Cizîrî li pêş e.

⁴⁷⁴ Ev malik bi tevahî farsî ye. Wate: *Ey ciwan! Ez ê kengî ji dojeha dûrbûnîya te reha bibim. Dojeha te her dem bi dengê bilind bang dike û dibêje; hê heye.* Divê were gotin nivê malikê yê duyem telmîha ayetê û bêjeyên (هل من مزيد) jî raste rast îqtîbasa ji Qur'anê ye. Bnr: *Qur'ana Pîroz*, Qaf 30.

Di malikên Hâfizê Şîrâzî da bawerîya bi axretê, di axretê da hebûna hesab, defterên kiryanan û sezakirina gunehkaran eşkere derdikeve holê. Bawerîya Hâfizê Şîrâzî bawerîyeke misilmanekî jê rêzê ye. Nakeve nava hûrguliyên mijarên bi nîqaş. Di mijara behîştê da hemû taybetîyên behîştê di malikên xwe da rêz dike. Di heman demê da arezûya wî ya bidestxistina behîştê û derkitina Hezretî Âdem ji behîştê balkêş e. Hâfizê Şîrâzî ji bo derketîna ji behîştê xemgîn e.

Ji malikên Melâyê Cizîrî derbarê bîr û bawerîyên wî derbarê jîyana axretê bi asanî tiştek nayê famkirin. Hebûna istilahên derbarê mijarê ne nîşana bîr û bawerîyên wî ne. Melâyê Cizîrî, bi tevahî istilahên vê mijarê ji bo ravekirina hizrên 'âşiqâne bi kar anîye. Di vê bikaranînê da ji taybetîyên edebiyata klasîk sûd wergirtîye. Îstîlâhên bi mijarê ra têkildar rewşa 'âşiq û me'şûqê didin ber çavan.

Bêjeya *Âxiretê* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe, di dîwana Melâyê Cizîrî da qet derbas nabe. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Herdû 'âlem*, *Herdû Cîhan* û *Du Cîhan* ku wateya axretê jî di wan da heye di 10 malikan da derbas dibin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê di yek malikê da em rastî bêjeya *Herdû 'âlem* dibin. Ev ferqa sereke ye ji alîyê hejmarê bikaranînê ve.

Hâfizê Şîrâzî, bêjeyên *Âxiret*, *Herdû 'âlem*, *Herdû Cîhan* û *Du Cîhan* di hizrên 'âşiqâne da anîye ziman. Di malika ku bêjeya *Âxiret* derbas dibe, têda bêjeya dinyayê jî derbas dibe. Di vê malikê da heman wateya *Herdû 'âlem* dîyar e. Di hizra Hâfizê Şîrâzî da kesên 'âşiq pûte bi herdû dinya nadin, ji herdû dinya azad in û eger yar bi wan ra be, tu tirsê wan ji xeman namîne ne li vê dinyayê û ne li axretê.

Melâyê Cizîrî, *Herdû 'âlem* di nêrîna xwe ya felsefî-tesewufî da anîye ziman. Di malika wî da sebebê hezkirina xweşikên dinyayê û horîyên behîştê tecelliyata Cemâla Xweda ye. Ferqa berbiçav di navbera herdû şa'iran da, di hizrên wan da, derdikeve holê.

Bêjeya *Âxirzeman* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da du caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê bêjeya *Âxirzeman* û carekê bi wateya âxirzeman *Roja Âxirîn* cih girtîye. Ji alîyê hejmaran va wekhevîyek derdikeve holê. Di dîwanên herdû şa'iran da *Âxirzeman*, bi wateya roja dawî ya dinyayê ye. Ev xal jî hevpar e. Hâfizê Şîrâzî, fitne û nebaşîyên serdema xwe şibandîye bûyerên *Âxirzaman*. Şibandînek bi vî şiklî di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Hâfizê Şîrâzî, hezkirina li hember me'şûqa xwe wekî fitneyên *Âxirzeman* mezin dibîne û bi vê 'îşqê xwe ji fitneyên

Âxirêzeman diparêze û xwe di ewlehîyê da dibîne. Melâyê Cizîrî, ji bo sebata li ser 'îşqê bêjeya *Roja Âxirîn* bi kar tîne. Ev ferqa watedarkirina herdû şa'iran e.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Restâxîz* carekê di malikan da derbas dibe, *Qiyâmet* di dîwana wî da cih nagire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Restâxîz* cih nagire, bêjeya *Qiyametê* û bi wateya *Qiyametê*, *Qiyam* bi giştî 6 caran derbas dibin. Ji aliyê hejmaran va Melâyê Cizîrî li pêş e. *Restâxîz*, bêjeyeke farsî ye û Hâfizê Şîrâzî terciha farsî li ser 'erebî kirîye. Xaleke din, Hâfizê Şîrâzî di malika xwe da kevneşopîyek anîye ziman. Di vê kevneşopîyê da tiştên herî bi qîmet yê mirî bi wî ra dixin gorê. Hâfizê Şîrâzî xwestîye ku kaseya meyê bixin ber kefenê wî. Dîsa di malika wî da xuya ye ku di nêrîna wî da roja *Qiyametê* rojek gelek bi tirs e. Ev herdû xal di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtin.

Melâyê Cizîrî bêjeya *Qiyametê* di ramanên 'aşîqâne da li ser kevneşopîya edebiyata klasîk di malikên xwe da bi cih kirîye. Ev yek bi me dide zanîn ku Melâyê Cizîrî derbarê edebiyata klasîk û bikaranîna istilahên 'aşîqâne xwedî agahîyek temam e.

Hâfizê Şîrâzî di dîwana xwe da 4 caran cih daye bêjeya *Heşrê*. *Mehşer*, di dîwana wî da cih nagire. Melâyê Cizîrî di yek malikê da cih daye *Mehşerê*. Bêjeya *Heşrê* di dîwana wî da cih nagire. Ev ferqa hejmarî ye di navbera herdû şa'iran da. Hâfizê Şîrâzî bêjeya *Heşrê* hem di bawerîyên xwe yên dînî da û hem di hestên 'aşîqâne da bi kar anîye. Bi asanî tê fam kirin ku bawerîya Hâfizê Şîrâzî bi roja *Heşrê*, di *Heşrê* hebûna defterên xêr û gunehan û vezinandina xêr û gunehan heye. Ev bawerîyeye misilmanekî ji rêzê ye. *Heşir* û *Mehşer* bi vî şiklî di dîwana Melâyê Cizîrî da cih nagire. Ev ferqa sereke ye di navbera herdû şa'iran da. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Mehşer* di hestê 'aşîqâne da cih bigire jî wateya ferhengî ber bi çav e.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da; *Cennet – Cennat* 7 car, *Behîşt* 33 car, *Xuld* 11 car, *Me'wa* 1 car, *Firdews* 8 car, *Cenneti Firdews* 1 car, *Daru's-selam* 3 car, *Gulşen-i Ridwan* 1 car, *Rewde-i Ridwan* 4 car, *Baxi Ridwan* 1 car, *Baxê İrem* 1 car, *'Edin* 2 car bi tevahî 66 caran di malikan da cih digirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da; *Cennet-Cennat* 6 car, *Behîşt* 10 car, *Xuld* 2 car, *Me'wa* 1 car, *Firdews* 1 Car, *'Edin* 1 car, *İrem* 7 car, *Bexçeyê Ridwan* 1 car ku bi tevahî 28 caran derbas dibin. Hem ji aliyê

hejmarî û hem ji aliyê zêdebûna nav û sifetên *Behiştê* va ferqek mezin di navbera herdû şa'iran da heye.

Di malikên Hâfizê Şîrâzî da hemû taybetiyên *Behiştê* derdikevin holê. Horî, qesr, xilman, Dara Tûbayê, şeraba behiştê, Ava Selesebilî, Ava Kewserê û çem û rubarên behiştê wekî wênayan li ber çavan hatiye raxistin. Teswîrên bi vî rengî, taybetiyên *Behiştê* bi berfirehî di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Ev ferqek e di navbera herdû şa'iran da.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da iştîyaqek, arezûyek mezin heye ji bo çûna *Behiştê*, bi dest xistina *Behiştê*. Gotina wî; *ez ji lutfa Xwedayê Ezel temakarîya behiştê dikim* (HŞ 495-7), vê arezûyê tîne ziman. Hâfizê Şîrâzî, ji ber ku Hezretî Âdem ji *Behiştê* derketîye her bi xem e. Dema dibêje; *Bavê min behişt ji destê xwe berda* (HŞ 166-6) vê xemgînîya xwe tîne ziman. Ji ber vê jî bidestxistina *Behiştê* û ni'metên *Behiştê*, wekî horî, qesr û yên mayî mafê xwe dibîne. Helbet di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Behişt* di hizrên 'âşiqâne da cih bigirin jî fikra wî ya sereke derbarê *Behiştê* ev arezûya wî ye û xemgînîya wî ya derketina ji *Behiştê* ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da eger hin taybetiyên *Behiştê* werin dîtîn jî, di fikr û ramanên 'âşiqâne û tesewufî da têne dîtîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da arezû û iştîyaqek derbarê bi destxistina *Behiştê* nayê dîtîn. Ber'eksa wê, yar û bi destxistina yarê di nezera wî da ji hemû ni'metên *Behiştê* biqîmettir e. Ferqa herî mezin di navbera herdû şa'iran da ev nêrînên wan in.

Cehennem, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi navê xwe yê farsî *Dûzex* 4 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da bi kurdî 6 caran *Dojeh*, navek ji navê *Cehennemê Seqer* 4 caran û carekê jî bi farsî *Dûzex* cih girtîye. Bi tevahî di dîwana Melâyê Cizîrî da 11 caran derbas dibe. Ji aliyê hejmarî va Melâyê Cizîrî serdestî li Hâfizê Şîrâzî kirîye.

Hâfizê Şîrâzî, bi bawer e ku kesên li axretê du firqe ne. Yan *Behiştî* ne yan *Dûzexî* ne. Ev pala xwe dide bawerîya Îslamê. Yanî di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da *Dûzex*, warê wan kesan e ku li axretê têne sezakirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da hemû navên *Cehennemê* di hestên 'âşiqâne da, di çerçoweya şî'rê da bi nêrînên şa'irane bi taybetiyên edebiyata klasîk tîn dîtîn. Ev ferqa sereke ye ji layê bikaranîna navên *Cehennemê*.

2.7 Hin 'Unsûrên Dînî yên Girîng

2.7.1 Dîn (دين)

Bêjeya *Dîn* (دين) di eslê xwe da ji çî zimanî hatîye bi teqezî nayê zanîn.⁴⁷⁵ *Dîn* û bêjeyên ji hevrişeyên wê avabûne di zimanê 'erebî da bi wateya *deyn*, *qerz* tê zanîn.⁴⁷⁶ *Dîn*, wekî istilah, mecmu'eya rêbaz û şîweyan tê zanîn ku însanan nêzîkî Ilâhan (xwedawend) dike.⁴⁷⁷ Li gorî seyra dîrokî dîn bi dînên Ilâhî û dînên ne Ilâhî, bi gotineke din; dînên semawî û dînên erdî/zemînî dikare were dabeşkirin. Mebest ji dînên Ilâhî yan dînên Semawî ev e: Ew dînên ku bingeha bawerîya wan li ser yekîtîya Xweda ava bûye. Hukm û fermanên van, bi rêya pêxemberan ji însanan ra hatîye ragihandin. Ji regez û rêbazên wan ra *Şerî'et* hatîye gotin.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bêjeya *Dîn* gelek caran derbas bibe lê, taybetîyên dînekî yan teybetîyên Dînê Îslamê rave nake û nayne ziman. Di demên berê da ji ber ku desthilatdar di heman demê da serokê dîn jî bûn, Hâfîzê Şîrâzî di pesindariya desthilatdaran da wan wekî hamîyên, piştevanên *Dîn* dinasîne. (HŞ 735-19; h. 737-18) Helbet bêjeya *Dîn* ku di dawîya hinek navan da derbas dibe ne mijara me ye.

Di edebîyatê da *Dîn* rewşa 'âşiqîyê ye. Bêtir dîn û dil bi hevra tê bikaranîn û helbestvan bi gelek bêjeyên din rewşa 'âşiqîbûnîyê li hember me'şûqê xwe bi hunera kînayeyê tîne ziman.⁴⁷⁸ Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da jî ev rewş tê dîtîn. Hâfîzê Şîrâzî, di malika jêr da *Dîn* bi wateya eslî bi kar anîye.

مشو حافظ زكيد زلفش ايمن كه دل برد و كنون در بند دين است

Hâfîz! Ji mekr û hîleya zulfan ewle nebe, dil birin û aneha jî li pey birina dîn e. (HŞ 132-7)

Di malika jêrîn da dîn û dil bi hev ra hatîye bikaranîn û bi kinaye rewşa 'âşiqbûnîyê tîne ziman.

دين و دل بردند و قصد جان كنند الغياث از جور خوبان الغياث

Dil û dînê me birin û qesda canê me dikin, hawar ji dest cewra xweşikan hey hewar! (HŞ 96-2)

⁴⁷⁵ Ji bo nêrînen derbarê eslê bêjeya dîn bnr: Rehnas, Husein Muhammed, *Ferhenga Etîmolojî ya Kurdî*, r. 88 (<https://zimannas.wordpress.com/2016/11/02/3073/>) (Pêgihîn: 06.03.2022)

⁴⁷⁶ el-Îsfehani, s 393.

⁴⁷⁷ دهخدا، ج ۸، ص ۱۱۴۱۷.

⁴⁷⁸ عفيفي، رحيم، فرهنگنامه شعری، چاپ سوم، سروش، تهران ۱۳۹۱، ج ۲، ص ۱۰۳۱.

Hâfîzê Şîrâzî hezkirina me'şûqên xweşikrû wekî *Dîn* ji xwe ra dihesibîne.

روزگاری ست که سودای بتان دین من است غم این کار نشاط دل غمگین من است

Ji demek dirêj da hezkirina xweşikan bûye dînê min, xema vî karî bûye şadîya dilê min yê xemgîn. (HŞ 128-1)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da em rastî çend wateyên bêjeya *Dîn* tên. Di misraya jêrîn da *Dîn* bi wateya mutleq *Dîn* hatîye.

Secde bin ber te rewāye di hemî mezheb û dînān (MC 237-3)

Di dîroka dînan da tê dîtî ku her pêxemberek xwedî mu'cîzeyên taybet in. Xweda, ji bo îsbata pêxembertîyê, ji bo kesên bi pêxemberan bawerî nedianîn bawerîyê bînin mu'cîze dane pêxemberan. Yanî mu'cîze ji bo înkare ji holê rake tê nîşandayîn. Melâyê Cizîrî vê yekê di malika xwe da bi cih dike lê, di malika wî da *Dîn* xweşikahîya yara wî ye û pêdîvîya yarê bi nîşandayîna mu'cîzeyan tune.

Hâcet niye cānā yedê beydā bi derānī
Inkārā di dîn dā nebit i'cāzi çî hâcet (MC 69-2)

Melâyê cizîrî hem bêjeya *Dîn* û hem bêjeyên *Dil* û *Dîn* bi wateya 'aşiqbûnîyê di malika xwe da tîne ziman. Birqandina her xelekek ji porê yarê însan ji *Dîn* derdixe, 'aşiqî xwe dike. (MC 16-1) Husn û Cemâla yarê, dil û *Dînê* însan talan dike.

Dil û dîn xāret û yexma nekirī
Serê sewdāzede sewdā nekirī (MC 250-9)

Di destpêkê da me got dîn yan semawî ne yan zemînî ne. Di dîwana Melâyê Cizîrî dînekî din tê dîtî *Dînê 'îşqê*.⁴⁷⁹ Melâyê Cizîrî di vî *Dînê 'îşqê* da hem Şêxê *Duyemîn* e (MC 242-9) û hem wekî di malika jêrîn da dibêje;

⁴⁷⁹ Divê were gotin di helbestên Hâfîzê Şîrâzî da *Dînê 'îşqê* wekî mezmûn derbas bibe (HŞ 128-1) ji wekî te'bîr derbas nabe. *Mezhebê 'îşqê* derbas dibe.

ستم از غمزه میاموز که در مذهب عشق هر عمل اجری و هر کرده جزایی دارد

Sîtemkarîyê ji xemzeyan hîn nebe, di mezhebe 'îşqê da ji bo her kiryarî padaş û ji bo her kirinan seza tune. (HŞ 223-7)

Bi kar anîna *Mezhebê 'îşqê* di malikên gelek şa'îrên Îranî yên beriya Hâfîzê Şîrâzî tê dîtî. Wekî mînak; Di dîwana Mewlana da (1286) (مولوی، ج 2، ص 1286) di dîwana Se'dîyê Şîrâzî da (عطار نیشابوری، فرید الدین محمد، دیوان، تصحیح: سعید نفیسی، کتابخانه سنایی، چاپ (ص 673) di dîwana 'Ettâr da (نور، دیوان، بکوشش: سعید نفیسی، سگه - پیروز، چاپ سوم، (ص 129) di dîwana Enwerî da (کرمانی، خواجه، دیوان اشعار، به تصحیح: احمد سهیلی (ص 516) di dîwana Xwâcuyê Kirmânî da (نور، دیوان اشعار، انتشارات پازنگ، تهران 1364، ص 242) (مناظرات) (ص 242) (نظامی گنجه ای، حکیم، لیلی و مجنون، مطبعة ارمغان، تهران 1313، ص 197) *Mecnûn* da (نظامی گنجه ای، حکیم، لیلی و مجنون، مطبعة ارمغان، تهران 1313، ص 197) tê dîtî.

Bikaranîna *Dînê 'îşqê* kêmîtir e. Em di dîwana Mewlana da (432) (مولوی، ج 1، ص 432) di dîwana Nezirê Nîşabûrî da (نظیری نیشابوری، محمد حسین، دیوان اشعار، تاجران کتب علوم مشرقی کشمیری بازار پاکستان -)

*'Āšiqê mes'elxwâh im were em muftiyê 'iŝq in
Destekî sunnet e tê da di yekî neŝŝê kitab e (MC 198-10)*

Ew bi xwe *Muftiyê 'Iŝqê* ye ku dikare derbarê 'iŝqê da fetweyan bide. Di *Dînê 'Iŝqê* da bi dîtîna yarê çûna secdeyê li ser 'âšiqî pêwist dibe.

*Yek secde tinê ferde di dînê 'iŝqê
Bin ber qedê yarê di mecâlê dînê (MC 290-5)*

Di her dînekî da hinek şikl û rêbazên 'îbadetan heye. Hin tişt pêwist e ku teqez were kirin. Hin dem hene di wan deman da bi taybet perestî tete kirin. Di *Dînê 'Iŝqê* da herd û birhên yarê qiblegaha 'îbadetan e. Dema 'îbadetê jî xuyabûna herdû birûyên yarê ye. Di wê demê da pêwist e ku yek an du secde were kirin û ev li ser peyrewên *Dînê 'Iŝqê* ferz e.

*Herdû qirân ko qible bin herçi demā xuyā bin ew
Wê se'etê di dînê 'iŝq lāzim e yek du secde ferd (MC 132-2)*

2.7.2 Şeytān (شَيْطَان), Iblīs (إِبْلِيسُ), 'Ezāzīl (عَزَازِيلُ), Ehrimen (أَهْرِمَنْ), Ebyeç (أَبْيَعُ), Dêw/Dîw (دِيو).

Bêjeya *Şeytān* an ji radera *şeŝene* (شَطَنٌ) bi wateya hatîye dûrkirin⁴⁸⁰ û yan ji radera *ŝāte* (شَاطٌ) bi wateya helak bûnîyê hatîye.⁴⁸¹

Îblīs, dibe ku ji zimanê yûnanî ji *Diabolos* ê hatibe ketibe zimanê 'erebî bi wateya serokê dîwanê. Dibe ku di zimanê 'erebî da bingeha xwe ji bêjeya *Iblās* (ابلاس) ê wergirtibe û bi wateya bêhêvîbûnî û poşmanbûnîyê be.⁴⁸² Her çawa be herdû wate jî di cihê xwe da ne û *Iblīs* navek ji navên *Şeytān* e.

'Ezāzīl navê Iblīs ye pêşîn e. Beriya ku 'isyan bike û bikeve nav gunehan bi vî navî bang lê dihate kirin.⁴⁸³

Ehrimen an *Ehremen*, rehnumayê xeraban e. Di bawerîya Mecûsîyan da çawa ku Yezdân kirdarê başîyan e, *Ehremen* jî kirdarê nebaşîyan e.⁴⁸⁴

اوحدى اسفهانى، کلیات، تصحيح، سعيد نفيسى، همير كبير، (.لاهور بی تاریخ، ص ۱۸ رasti wê te'bîrê hatin. تهران ۱۳۴۰، ص ۲۴۸

⁴⁸⁰ el-Îsfehani, s 551.

⁴⁸¹ دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۴۷۰۶.

⁴⁸² دهخدا، ج ۱، ص ۳۱۹.

⁴⁸³ زمانى، ج ۱، ص ۸۷.

⁴⁸⁴ دهخدا، ج ۳، ص ۳۶۶۰.

Ebyed, navê Şeytânêkî ye ku gelek zîrek e. Çi dema Şeytânê mezin di tişteki da diheyire, alîkarîyê ji Ebyedî dixwaze, lewra fen û finasên wî pir in.⁴⁸⁵

Dêw, navê ew mewcûdê efsanewî ye ku bejna wî bilind e, bi heybet e û şiklê wî nexweşik e, jê ra *'Ifrît û xîl* jî tê gotin. Di heman demê da navê cûreyekî Şeytânan e.⁴⁸⁶ Bi kîneyê ji wî kesî ra tê gotin ku kiryarên xerab dike.⁴⁸⁷

Di bawerîya Îslamê da, Şeytân, yekem firişte ye. Xweda emr û ferman kir ku hemû firişte ji Hezretî Âdem ra secde bibin.⁴⁸⁸ Şeytân ji ber ku emr û fermana Xweda neanî cih, le'net lê hate kirin û ji dergahê Xweda hate avêtin.⁴⁸⁹ Ji ber vê dest bi xapandin û ji rê derxistina zurrîyeta Hezretî Âdem kir wekî dujminekî wan.⁴⁹⁰

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *Şeytân, Ehrimen* û *Dêw* derbas dibin. Çawa ku Quran ferman dike *Şeytân*, heman *Şeytân* e ku hatîye qewitandin (recimandin).⁴⁹¹

دام سخت است مگر یار شود لطف خدا ورنه آدم نبرد صرفه ز شیطان رجیم

Eger alîkarîya Xweda nebe heval, xefik zehmet e, ne wusa bûya Hezretî Âdem ji xapandina Şeytânê qewitandî reha nedibû. (HŞ 557-10)

Ehrimen, heman Şeytân e ku weswasê dixê dilê însanan, çawa ku di Quranê da weswese dayîn wekî xisletekî Şeytân derbas dibe.⁴⁹² Di rêya 'îşqê da wesweseya *Ehrimen* tenê bes e ji bo kesên 'âşiq. Pêwist e ku 'âşiq guhê dilê xwe bide peyama firişteyan. (HŞ 597-2) Di şî'rên Hâfîzê Şîrâzî da *Ehrimen*, tîmsala xapandinê ye û bi bûyera Hezretî Suleymân ra di malikan da cih girtîye. Di vê bûyerê da bi kurtasî Şeytân gustîla Hezretî Suleymân bi xapandin bi dest dixê.⁴⁹³

من آن نگین سلیمان به هیچ نستانم که گاه گاه بر او دست اهرمن باشد

Ez, wê gustîla Hezretî Suleymân ku carînan di destê Ehremen da ye qet naxwazim. (HŞ 274-2)

⁴⁸⁵ دۆسکی، شرحا دیوانا ملائذ جزیری، ب ۱، ر ۳۲۸.

⁴⁸⁶ دهخدا، ج ۸، ص ۱۱۴۳۸.

⁴⁸⁷ انوری، حسن، فرهنگ کنایات، سخن، تهران ۱۳۷۳، ج ۱، ص ۷۸۳.

⁴⁸⁸ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 34.

⁴⁸⁹ *Qur'âna Pîroz*, Sad 74-78.

⁴⁹⁰ *Qur'âna Pîroz*, Kehf 50.

⁴⁹¹ *Qur'âna Pîroz*, Hicir 34.

⁴⁹² *Qur'âna Pîroz*, Nas 3-6.

⁴⁹³ Ev bûyer di beşa sêyem da di bin sernavê Hezretî Suleyman da cih girtî ye. bnr: tez, r 169

Dêw, bi tesîra dînê Zerduştîyê di edebiyata farsî da û di şî'rê Hâfîzê Şîrâzî da bi wateya Şeytân cih girtîye. *Dêw*, heman reqîb e ku nahêle 'aşîq xwe bigihîne me'şûqê. Ji ber vê Hâfîzê Şîrâzî ji reqîb bi gazinde ye û wî wekî *Dêwsîret* dinasîne.

مگر آن شهاب ثاقب مددی دهد خدا را ز رقیب دیوسیرت به خدای خود پناهم

Ji destê reqîbê dêwsîret xwe tavêjim Xweda, ji bo ku Xweda bi dûvsîtêrkan alîkarîya min bike. (HŞ 65-2)

Melâyê Cîzîrî di dîwana xwe da cih daye *Şeytân*, *Iblîs*, *'Ezâzîl*, *Ehrimen*, *Ebyed* û *Dêw*. *Şeytân*, heman *Şeytân* e ku kiryarên nebaş dike. Kiryarên reqîb hatîye şibandin bi kiryarên *Şeytân*.

Min go: Gelo ey dilrûbâ, fitnâ reqîb feyde heye?

Go: Sond bi husnâ min ku ne, lê fi'lê şeytân e xereç (MC 134-6)

Iblîs, navek ji navê *Şeytân* e. Melâyê Cîzîrî vî navî di wateya fergengî de li *Şeytân* dike. Di nêrîna Melâyê Cîzîrî da ger *Iblîs* ew sir û nihênîya di Hezretî Âdem da veşartî bidîya ew peşîman dibû û secde ji Hezretî Âdem ra dibir.

Ger di Âdem bîdiyâ sîrrê 'ilim Îblîsî

494 حينما أبصره كبرّ حيناً وسجد (m. 97-2)

'Ezâzîl, heman *Şeytân* e û navê wî yê beriya 'isyan kirina wî ye. Di malika Melâyê Cîzîrî da di navbera wate û nav da têkîlî heye. Di malikê da telmîha ayetên secdekirina ji Hezretî Âdem hebe jî mebesta eslî nêrînek tesewufî-felsefî ye ku şîrînî û cazîbeya dîlberê ji Xwedayê Semed e.

Şenemâ sur ji semed şewqê ji heq dāye wucūdê

Ger 'Ezâzîlî bidîtā nedîbir xeyri sucūdê (MC 257-1)

Melâyê Cîzîrî di malikekê da cih daye *Ehrimen* û *Dêw*. *Dêw*, heman reqîb e ku yar dorpêç kirîye û nahêle kes bigihêje wê. *Ehrimen* jî heman *Şeytânê* xapînok e ku bi finasên xwe, gustîla Hezretî Suleymân bi dest xistîye.

Dāx û key min lê hezār in

Surperî dêw wê l kînar in

Gul di dest şewkên bixār in

Ehrimen xātem revā ye (MC 200-5)

Ebyed, heman *Şeytânê* zîrek e û dikare sihre çêbike û bi vî rengî xwe bigihîne armanca xwe. Divê were gotin *Ebyed*, navê wî *Şeytânî* ye ku *Feqîyê Teyran* di

⁴⁹⁴ Ev niv malik bi tevahî bi 'Erebî ye. Wate: gava ku ew didît, tekbîr dida, wêgavê diçû secde.

menzûmeya *Bersîsê 'Âbid*⁴⁹⁵ da cih daye wî. Di menzûmeyê da navê wî Şeytânê ku Bersîs ji rêya Xweda dûr kirîye Ebyed e.

Ehremen te'lîmi dâ bû Ebyedî dest tê hebû
Pur bi vê te'lîm û rayê hatibû çübû xitab (MC 60-1)

2.7.3 Berawird û Nirxandin

Tablo 9: 'Unsûrên Dînî yên Girîng

| Rêz | 'Unsûrên Dînî yên Girîng | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|--------------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Dîn | 23 | 0,482 | 12 | 0,530 |
| 2 | Şeytân | 12 | 0,252 | 16 | 0,707 |
| Gîştî | | 35 | 0,734 | 28 | 1,237 |

Dîn, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 23 caran bi rêjeya %0,482yan derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 12 caran bi rêjeya %0,530yê derbas dibe. Ji aliyê hejmaran va Hâfizê Şîrâzî, ji aliyê rêjeyê Melâyê Cizîrî derdikeve pêş. Di dîwanên herdu şa'iran da *Dîn*, di çarçoweya kevneşopîya edebiyata klasîk da bi bêjeya dil ra bi wateya 'îşqê cih digire. Ev xaleke hevpar e. Herdû şa'iran *Dîn*, wekî mutleq dînekî, ne ji bo nasandina dînekî xas, ne ji bo pesinandina dînekî bi kar anîne. Ev xal jî xaleke hevpar e.

Di navbera herdu şa'iran da cudahiya herî mezin ev e ku Hâfizê Şîrâzî bi mezmûn heskirina me'sûqê, 'îşqê jî xwe ra *Dîn* dihesibîne. Melâyê Cizîrî, ne bi mezmûn rasterast te'bîra *Dînê 'îşqê* bi kar tîne. 'Îşqê jî xwe ra wekî *Dîn* dibîne. Peyrewê *Dînê 'îşqê* ye. Şêxê vî *Dînê 'îşqê* hene, muftiyê vî *Dînê 'îşqê* hene, rê û rêbazên 'îbadetên vî *Dînê 'îşqê* hene. Melâyê Cizîrî, di vî *Dînê 'îşqê* da xwe şêxê duyemîn dihesibîne. Xwe muftiyê *Dînê 'îşqê* dihesibîne. Dema 'îbadetê jî bo peyrewên *Dînê 'îşqê* xuyabûna bejna yarê ye.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *Şeytân* û navên *Şeytân*; *Ehremen* û *Dêw* bi tevahî 12 caran derbas dibin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, *Şeytân* û navên *Şeytân*; *Iblîs*, *'Ezâzîl*, *Ehremen*, *Ebyed* û *Dêw* bi gîştî 16 caran derbas dibin. Hem ji aliyê zêdebûna navan û hem ji aliyê hejmaran va Melâyê Cizîrî li pêş e.

⁴⁹⁵ Di menzûmeya Feqîyê Teyran *Bersîsê 'Âbid* da navê wî şeytanê ku bersîs ji rê derdixe Ebyed e.
Şeytên li Ebyed lewme kir *Te b xatirê babê xwe kir*
Îman ji Bersîs çênekir *Rabe here kifayetê.*
 Sadînî, *Feqîyê Teyran- Jiyan, Berhem û Helbestên Wî*, r 375.

Herdû şa'iran jî têkilîyek di navbera *Şeytân* û Hezretî Âdem da ava kirine. Ev xaleke hevpar be jî, avakirina vê têkilîyê di nêrînên cuda da tîn dîtin. Hâfîzê Şîrâzî bi bûyera ku *Şeytân* Hezretî Âdem dixapîne têkilî ava kirîye. Melâyê Cizîrî, têkilîyê di secdenekirina *Şeytân* ji Hezretî Âdem ra ava dike û meseleyê bi nêrîneke felsefî-tesewufî va girêdide. Xaleke din ya hevpar ev e ku, herdû şa'iran jî ji mîtolojîyê sûd wergirtine. *Ehrimen*, ew *Şeytân* e ku gustîla Hezretî Suleymân revandîye, di dîwana herdû şa'iran da ev bûyer di Qur'ânê da derbas nabe. Dîsa wekî xaleke hevpar, *Dêw*, heman reqîbê 'aşîqî ye ku nahêle 'aşîq bigihêje Me'şûqê.

'*Ezâzîl*, ku di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabe, di dîwana Melâyê Cizîrî da bi bûyera secdeya Melâiketên ji Hezretî Âdem ra di nêrînên felsefî-tesewufî da cih digire. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da eger '*Ezâzîl* tecellîya Cemelâ Xweda di Hezretî Âdem da bidîya ew ê dê biçûya secdeyê. *Ebyed*, di dîwana Melâyê Cizîrî da wekî *Dêw* bi hîleyan astengîyan ava dike di navbera 'aşîq û me'şûqê da.

2.8 'Unsûrên Îbadetê

2.8.1 Nimêj - Nemâz (نماز)

Nemaz, di navbera zimanên awestayî, pehlewî, farsî, hindî, efxanî, belûcî û kurdî de, bi hin nuansên biçûk, bêjeyeke hevpar e. Bi 'erebî *Şelâat* (صلاة) û bi kurdî *Nimêj* tê gotin. *Nimêj*, di ferhengên da bi wateya xizmet û bendegî, xizmetkarî, îta'et û fermanberî hatîye. Wekî istilah, îbadet û niyaza ji Xweda ye bi şiklê di şerî'etên peyxemberan da cih girtîye.⁴⁹⁶ Çawa ku tê zanîn cûreyeke 'îbadeta dînê Îslamê ye ku di şev û rojê de pêwîst e ku pênc caran were kirin.

Hâfîzê Şîrâzî, di dîwana xwe da *Nemazê* derbas dike. Lê tu taybetîyên nimêja dînê Îslamê ji me ra rave nake. Nêrînên wî bi tevahî nêrînên 'aşîqâne ne. Di cihekî da mutleq *nimêj* gotibe jî di heman malikê da rewşa 'aşîqtîyê bi nîyazê anîye ziman. Di nêrîna wî da mestî û niyaza wî ji *nimêja* zâhidê xwe 'ecibandî bi erziştir e.

زاهد و عجب و نماز و من و مستی و نیاز تا تو را خود ز میان با که عنایت باشد

Zâhid û xwe 'ecibandin û nimêj, ez û mestî û niyaz, ka em bînêrin tê ji me kîjanî pipejirînî. (HŞ 271. 3)

Ew kesên ku dilê wan bi 'îşqê ne zinde ye pêwîst e li ser wan *nimêja mirîyan* were kirin. (HŞ 393-1) Di *nimêja* 'aşîqan da qible birûyên yarê ye. (HŞ 112-5) Yar, ji

⁴⁹⁶ دهخدا، ج ۱۴، ص ۲۲۷۳۲.

bedel *nimêja* mirîyan divê bi xemze û nazên xwe were ser kuştîyên xwe. (h. 627-5) Tehareta 'âşiqî lazim e bi xwîna cegera wî be, yan na *nimêja* wî ne durust e.

طهارت ار نه به خون جگر کند عاشق به قول مفتی عشقش درست نیست نماز

'*Âşiq eger bi xwîna cegera xwe teharet negire,*⁴⁹⁷ *bi qewlê muftîyê 'îşqê nimêja wî nedurust e.* (HŞ 413-4)

Di malikên Melâyê Cizîrî da *nimêj* di nêrînên 'âşiqâne da tê dîtin. Tu taybetîyên *nimêja* ku misilman dîkin di malikên Melâyê Cizîrî da nayê dîtin. Birûyên yarê mihrab e ji bo 'âşiqan. Dema *nimêjê* xuyabûna birûyên yarê ye. Di wê demê da niyaza 'âşiqî *Nimêj* e.

Mihrâbê du ebrû ko ji bālā ve xuyā bin
Der secdegehê 'îşqê niyāzê me nemāz in (MC 174-3)

Çi dema dîlber xuya bibe li ser 'âşiqî *nimêj* ferz dibe. Secdeyek 'âşiqî ji sed *nimêjê* kesên ne 'âşiq bi qîmettir e.

'Eqdê ihrâmê demā dilber xuyā bî ferdu 'eyn
Secdeyek ber wān du birhān nāgirî cih sed nimāz (MC 114-7)

2.8.2 Rojî (روژی) - (Şiyām (صيام) - Rûze (روزه))

Ji rojîyê ra bi 'erebî *Şewm* (صَوْم) tê gotin. Wateya sewmê vekişandina ji tişteki ye, xwarin be yan vexwarin be, peyv be yan meş be.⁴⁹⁸ *Rûze*, ji *rûz* (roj) a farîsî hatîye⁴⁹⁹ bi wateya bistûçar se'etên demê ye ku jê ra yek roj tê gotin. Di heman demê da, di farsî da ji bo *rojîyê* jî tê bikaranîn. Wekî istilah *rojî*, di dînê Îslamê da navê wê 'îbadetê ye ku ji fecrê (spêdê) heta roj diçe ava perhîza ji xwarin, vexwarin û têkilîya

⁴⁹⁷ Melâyê Cizîrî jî di vê babeta destmêj girtina bi xwîna cegerê wiha dibêje:

Derê meyxaneyā 'îşqê seher 'arîf ziyāret kir
Bi ābi çeşm û xwûnê dil wudû best û tehāret kir (MC 104-1)

Gotina teharet girtina bi xwîna cegerê pêkane ku ji gotina Huseyn bin Mensûrê Hellac hatibe wergirtin. Hellac wiha dibêje: (ركعتان في العشق لا يصح وضوءهما الا بالدم) "Nimêja 'îşqê du rek'et e û destmêja wê ne duruste encax bi xwînê." (خالق، ص ٣٤١) Li ser vê agahîyê em dikarin bibêjin ku di malika Hâfizê Şîrâzî da *muftîyê 'îşqê* Hellac e. Herwiha di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da *muftîyê zeman* jî kesekî din e. (HŞ 629-4) Di dîwana Melâyê Cizîrî da *muftîyê 'îşqê* (MC 3-246) û *muftîyê zeman* (MC 2-330) Melâyê Cizîrî bi xwe ye ku di malikeke din da rasterast dibêje; *ez muftî me* (MC 4-161)

⁴⁹⁸ el-Îsfehanî, s 609.

⁴⁹⁹ دهخدا، ج ٨، ص ١٢٣٦٤.

cinsî ye. Li ser her misilmanê ku *rojî* girtin li ser wî ferz bûye, di salekê da mehekê pêwist e *rojî* bigire ku navê vê mehê bi 'erebî *Remedan* e.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem *Siyam* û hem *Rûze* (rojî) derbas dibe. Hâfizê Şîrâzî di malikên xwe da bi temambûna meha *rojîyê* xweşhalîya xwe bi; *sâqî bade bîne û qedehê dagire meha rojîyê çû* (HŞ 172-1) tîne ziman. Piştî temambûna meha rojîyê cejna rojîyê tê. Di vê rojê da kêf û şahî heye. Hâfizê Şîrâzî vê şahîyê bi meye û bi me'sûqa xwe ra di nava gul û yasemînan da pîroz dike.

حافظ منشین بی می و معشوق زمانی کایام گل و یاسمن و عید صیام است

Hâfiz! Rûnenê bê mey û me'sûqê, lewra rojên gul û yasemînan e û cejna rojîyê ye. (HŞ 119-11)

Rûze (rojî), di malikên Hâfizê Şîrâzî da bi hizrên 'aşîqâne cih digire. Kesên *rojî* digirin bi gelemperî beriya şefeqê, sihorê (paşîv) dixwin. Kesên 'aşîq bi vexwarina şerabê, sihora xwe dixwin. (HŞ 396-7) 'Işq bi çûna meyxaneyê hatîye şibandin. Bêyî çûna meyxaneyê xêra 'îbadetên hec û rojîyê nayê qebûlkin.

ثواب روزه و حج قبول آن کس برد که خاک میکده ی عشق را زیارت کرد

Xêra rojî û hecca wî kesî qebûl dibe ku xaka meyxaneyê 'işqê ziyaret kiribe. (HŞ 234-2)

Di nava malikên Melâyê Cizîrî da *Sewm* derbas nabe lê carek kesê rojîgir (saîm) û carek jî *Rûze* (rojî) derbas dibe. Nêrînen Melâyê Cizîrî nêrînen 'aşîqâne ne her çend ku di wan da hinek taybetîyên rojî girtinê hebin jî.

Sāīmu'd-dehr (صائم الدهر) ew kes e ku saleweqt rojî digire û tenê di cejnê da difitire. Teqwîma koçî li ser tevgera hîvê ava bûye. Çi dema hîv xuya bibe meh dest pê dike. Di serê mehê da, yekem roja mehê da hîv ziravik û xwar e. Birûyên yarê hem bi ziravbûna xwe û hem bi xwarbûna xwe hatîye şibandin bi hîva nuh. Ew kesê saleweqt rojî digire çi dema birûyên yarê xuya bibe pêwist e ku rojîya xwe bişkîne. Lewra bi dîtina birûyên yarê ku wekî hîva nuh e, dema rojîgirtina wî xilas dibe û cejn dest pê dike.

Bilā bêt sāīmu'd-dehr ī ū bila iftāre cārek bit
Kesê zānî jî dilber wê xuyā bin her dū sal ebrū (MC 222-3)

Bi xelasbûna meha rojîyê fesla 'îdê vedibe û di vê fêslê da kêf û şahî heye. Lê ev fesla 'îdê bi xuyabûna birûyên yarê dest pê dike. Bi gotineke din ji bo rojîya kesên

'âşiq demeke dîyarkirî tuneye. Heta birûyên yarê xuya bibe, dibe ku salê carek be jî, 'âşiq her bi rojî ye. Di şahîya cejnê da amûrên kêfê mey, fincan, camên şerabê û awazên neyê ye.

*Nāme t̄ey kir r̄ūzeyê 'idê vekir f̄eşlā meyê
Lê bi zimzim t̄en bi āwāzê ney û f̄incān û cām* (MC 169-3)

2.8.3 Hec (حج)

Hec, di ferhengên da bi wateya qesda bi bal wî tiştê ku hatîye mezinkirin cih digire. Wekî istilaheke şerî'etê, qesda mala Xweda ye bi sifetekî taybet, di demeke taybet da û digel hin şertên taybet.⁵⁰⁰ Yek ji şertên Îslamê yê sereke ye.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. (HŞ 234-2) Wekî di mijara rojîyê da amaje pê hate kirin û malika mînak hate dayîn ku digot; hecca kesên 'âşiq qebûl nabe heta ku neçin meyxaneyê 'işqê.

Di sê malikên Melâyê Cizîrî da em rastî bêjeya *Hecê* tên. Melâyê Cizîrî, bi hizreke 'âşiqâne li hecê dinihêre. Tevî vê du istilahên hecê yê girîng jî di malikên xwe da cîbicî dike. *Hecca Mebrûr* û *Heccu'l-ekber*.

Mebrûr, ew tiştê pejirandî, meqbûl e.⁵⁰¹ *Heca Mebrûr*, ew hec e ku ji teref Xweda hatîye qebûlkinin. *Heca Mebrûr* di zimanê Melâyê Cizîrî da ew hec e ku li dor çavên yarê yên reş hatibe kirin û çavên yarê tîran biweşîne dilê 'âşiqî.

Cohtê hebeş tîr dān bi weş heccā mi xweş mebrûri bû (MC 226-1)

Di derbarê *Heccu'l-ekberê* (Hecca herî mezin) da nêrînên cuda werin dîtîn jî di nava gel da ew heca ku roja 'erefeya (roja berya 'idê) cejna qurbanê roja îne be *Heccu'l-ekber* hatîye qebûlkinin. Xêra wê hecê ji heftê hecên ku ne *Heccu'l-ekber* in mezintir e. Melâyê Cizîrî dema dibêje *kesê ku rabe û mehderîya wî bike li ba yara wî xêra heftê heccî û belkî jê zêdetir ew ê bistîne* (MC 1-334) bi îşaret behsa *Heccu'l-ekberê* dike. Di malika jêrîn da dibêje secdeya ber herdû çavên yara xwe ez bi sed *Heccu'l-ekberan* nadim.

*Secdeyā ber eswedān nādīm bi sed hecekberān
Sond dixum b wān zulf û xālān heç wekī bêjim we ye* (MC 196-2)

⁵⁰⁰ الجرجاني، ص ٧٣.
⁵⁰¹ معین، فرهنگ معین، ج ٢، ص ١٦٠٠.

2.8.4 Zekât (زكاة)

Zekât, yek ji şertê Îslamê ye. Qur'ân wiha ferman dike: *Nimêj bikin û zekâtê bidin.*⁵⁰² *Zekât*, di ferhengan da bi wateya zêdebûnîyê ye.⁵⁰³ Ew zêdebûnîya ku ji bereketa Xweda çêbûye jê ra *zekât* hatiye gotin.⁵⁰⁴ *Zekât*, wekî istilaheke fiqhê bi kurtasî ji malekî derxistina qederekî ye û dayîna bi hin kesên taybet e. Çi dema malek gihişte qederekî, ji wî malî li gorî pîvana ku fiqhê jê ra dîyar kirîye tê derxistin û tê dayîn ji bo wan kesên ku musteheqqê zekâtê ne.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di du malikan da em rastî bêjeya *zekâtê* tèn. Ew tiştên ku ji teref me'şûqê tê dayin û 'aşîq pê kêfxweş û dilxweş dibe *zekât* e. *Zekât*, çawa tê dayîn ji bo kesên musteheqqê *zekâtê*, herwiha 'aşîq, xwe jî yek ji wan musteheqqan dibine.

من اگر کامروا گشتم و خوشدل چه عجب مستحق بودم و این ها به زکاتم دادند

Ez eger kêfxweş û dilxweş bûme ne 'ecêb e, lewra ez musteheq bûm û ew tişt wekî zekâtê dane min. (HŞ 306-2)

Di fiqhê da ji bo *zekâta* her malekî pîvanek heye. Heta malek negihêje wê pîvanê *zekâta* wî malî/milkî nayê dayîn ku ji vê ra bi 'erebî *Niṣāb* (نصاب) tê gotin. Kesên musteheqqê *zekâtê* ne di Qur'ânê da hatine hejmartin.⁵⁰⁵ Miskîn û feqîr ji wan kesan in ku musteheqqê *zekâtê* ne. Kesê herî xweşik ê di çavê 'aşîq da me'şûq e. Ji ber vê xweşikahîya wê di asta mukemmelîyê da ye û nîsaba xweşikahîyê derbas kirîye. 'aşîq xwe wekî miskîn û feqîrekî dibîne û daxwaza *zekâta* xweşikahîya me'şûqa xwe dike.

نصاب حسن در حد کمال است زکاتم ده که مسکین و فقیرم

Nîsaba xweşikahîya te gihiştîye asta kemalê, zekâta min bide ku ez miskin û feqîrê te me. (HŞ 512-2)

Bêjeya *zekâtê* di şî'rên Melâyê Cizîrî da, di du malikan da tê dîtin. *zekât*, weslet, gihiştina yarê, dîlberê ye ku 'aşîq dixwaze.

Telbe kir weşli ji dilber mi bi 'unwânê zekât
Go: Tu 'ebdî we bi 'ebdê xwe zekâtê nâdim. (MC 168-1)

⁵⁰² Qur'âna Pîroz, Beqer 43.

⁵⁰³ الجرجاني، ص ۹۹.

⁵⁰⁴ el-Îsfehanî, s 459.

⁵⁰⁵ Bnr: Qur'âna Pîroz, Tewbe 60.

'Âşiq, li hember yarê di asta miskin û feqîran da ye, yar bi husn û Cemâla xwe di asta mukemmeliyê da ye û 'âşiq wekî mafê feqîr û miskînekî ji yarê daxwaza zekâtê dike ku zekâta yarê weslet e.

*Ji wişālā xwe zekâtê bide miskîn û feqîrān
Ko cemālā te ye kāmîl di kemālā xwe nişāb e. (MC-198-10)*

2.8.5 Berawird û nirxandin

Tablo 10: 'Unsûrên 'Îbadetê

| Rêz | 'Unsûrên 'Îbadetê | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|-------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Nimêj | 11 | 0,231 | 2 | 0,088 |
| 2 | Rojî | 6 | 0,126 | 2 | 0,088 |
| 3 | Hec | 1 | 0,021 | 3 | 0,133 |
| 4 | Zekât | 2 | 0,042 | 2 | 0,088 |
| Gîştî | | 20 | 0,420 | 9 | 0,398 |

Her çar 'unsûrên Îbadetê Nimêj, Rojî, Hec û Zekât di dîwanên herdû şa'iran da derbas dibe. Hâfizê Şîrâzî herî zêde Nimêj, Melâyê Cizîrî herî zêde Hec di malikên xwe da bi cih kirîye. Hinek istilâhên bi ûnsûrên 'îbadetê ra têkildar di şî'rên herdû şa'iran da werin dîtîn jî ev, di çarçoweya şî'ra klasîk da ye.

Nimêj, di dîwana Hâfiz Şîrâzî da, di 11 malikan da hate dîtîn. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê di du malikan da derbas bû. Ev, ferqa hejmarî ye. Xala hevpar ev e ku herdû şa'iran jî bêjeya *nemaz* bi kar anîne. *Nimêj*, di dîwana herdû şa'iran da ji bo ravekirina hizrên 'âşiqâne wekî amraz cih girtîye. Derbarê bîr û bawerîyên herdû şa'iran derheqê *nimêjê*, ji aliyê î'tîqadî tu agahî nayê bidestxistin. Bes ev heye ku di bawerîya Îslamê da li ser mirîyan *nimêja mirîyan* tê kirin. Ev *nimêj* ji teref Hâfizê Şîrâzî ji bo ravekirina cewra me'sûqê di malikan da derbas dibe.

Rojî, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi bêjeya *Rûze* 6 caran, di dîwana Melâyê Cizîrî da carek bi *Rûze* û carek jî bi *Saîmu 'd-dehr* derbas dibe. *Rojî*, di dîwana herdû şa'iran da remz û nişana neditina yarê, mehrûm mayina ji dîtina me'sûqê ye. Ev, bingeha xwe ji wateya istilâhî standîye. Ji ber vê di hestên 'âşiqâne da cih girtîye. Ev xaleke hevpar e û ji edebiyata klasîk hatîye vergirtin. Di malikên herdû şa'iran da têkilî di navbera *rojîyê* û cejnê hatîye avakirin ku cejn jî remza dîtina yarê ye. Ev jî, bingeha xwe ji kultura Îslamê werdigire. Ev xal jî xaleke hevpar e.

Hec, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 3 caran derbas dibe. Ev ferqa hejmarî ye. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *hec*, mutleq *hec* e ku kesên diçin *hecê* xwedîxêr dibin. Hâfizê Şîrâzî, di hizrên 'aşîqâne da *hec*, ne wekî çûna Mekkeyê û tewafa Ke'bê nîşan dide, *heca* Hâfizê Şîrâzî li derdora meyxaneyê pêk tê. Nêrînek bi vî rengî di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Melâyê Cizîrî, di malikên 'aşîqâne da bêjeya *hecê* bi cih bike jî *heca* wî li derdora çavên yarê dizivire. Di vir da nukteyêke zirav heye. Melâyê Cizîrî di navbera çavên reş yên yara xwe û Heceru'l-eswed (berê reş) têkiliyê ava dike. Ev di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nayê dîtîn. Du istilahên *hecê*, *Heccu'l-ekber* û *Heca Mebrûr* di malikên Melâyê Cizîrî da cih digirin ku Melâyê Cizîrî di vir da zanebûna xwe ya 'ilmê fiqhê dide ber çavan.

Zekât, di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. Ji aliyê hejmaran va wekhevîyek heye. Hem di dîwana Hâfizê Şîrâzî da û hem di dîwana Melâyê Cizîrî da *zekât*, xweşikahî û wesleta yarê ye. Ev xal jî xaleke hevpar e ku bingeha xwe ji edebiyata klasîk werdigire. Herwiha herdû şa'ira ji têgihên fiqhî wekî *Nisab*, *Miskîn* û *Feqîr* sûd wergirtine ku têkildarê *zekâtê* ne. Ev xal jî hevpar e.

2.9 Çar Xelîfe

2.9.1 Hezretî Ebûbekir (ابوبکر)

Navê *Hezretî Ebû Bekir*, 'Ebdullah e. Lawê *Ebû Kuhafe* ye. Dayika wî *Ummu'l-Xeyr Selma Binti Sehr* e. Ji qebîleya Qureyşîyan e. Piştî herba Fîlê bi sê salan li Mekkê ji dayik bûye. Keça xwe 'Aîşe daye Pêxemberê Xweda (s.a.s.) û bûye xwezûrê Pêxember (s.a.s.). Piştî wefata Pêxember (s.a.s.) yekem xelîfeyê Îslamê ye. Di 634ê zayîne da wefat kirîye. Li Medîne li kêleka Pêxember hatiye definkirin. Bernavka wî ya herî meşhur *Siddîq* (pirr rastgo) ye.⁵⁰⁶

Navê *Hezretî Ebûbekir* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê carekê navê *Hezretî Ebûbekir* derbas dibe. *Hezretî Ebûbekir*, ji Resûlê Xweda (s.a.s.) zêde hez kirîye û ji ber vê hezkirinê her dem bi nalîn hatiye wesifdayîn di malika Melâyê Cizîrî da. Bi kurtasî Melâyê Cizîrî dibêje ew kesên ku ji te hez bikin, ji hezkirina te her tim bi ah û nalîn in ku Hezretî Ebûbekir mînak e.

⁵⁰⁶ Fayda, Mustefa, "Ebû Bekir", *DÎA*, c.10, r. 101-106. (ترجمه: لکنوی، عبدالشکور، زندگانی خلفای راشدین، تهران ۱۳۹۳، کتابخانه عقیده، ص ۳۵ - ۵۰.

Būbekr ū 'Umer herdū ji ħubbā te dinālin. (MC 220-1)

2.9.2 Hezretî 'Umer (عمر)

Navê wî 'Umer, leqeba wî *Farûq* û kunyeya wî *Ebû Hefs* e. Navê bavê wî *Xettab* e. Piştî bûyera Fîlê bi sêzde salan hatîye dinyayê. Resûlê Xweda (s.a.s.) bi keça wî Hefse ra zewicîye. Leqeba wî ya meşhur *Farûq* e ku wateya wê; *yê ku heq û batil ji hev vediqetîne* ku ev leqeb ji teref Resûlê Xweda ve (s.a.s.) hatîye dayîn. Di 27 salîya xwe da bûye misilman. Piştî Hezretî Ebûbekir, xelîfeyê Îslamê yê duyemîn e. Deh sal û şeş meh û pênc roj xelîfetî kirîye. Li ser nimêja spêdê ji teref yekî mecûsî va hate birîndarkirin û di sala 644ê zayînê da rehmet kiriye. Li kêleka Hezretî Ebûbekir hatîye veşartin.⁵⁰⁷

Navê *Hezretî 'Umer* di malikên Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di malikên Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. *Hezretî 'Umer* tevî ku ji ber birîndariyê rehmet dike û di berheman da bi şehîdî tê nasîn jî Melâyê Cizîrî wî bi hezkirina Resûlê Xweda (s.a.s.) dipesînîne. Di heman malikê da ew û Hezretû Ebûbekir tîmsalên hezkirina Resûlê Xweda (s.a.s.) ne.

Būbekr ū 'Umer herdū ji ħubbā te dinālin. (MC 220-1)

Hezretî 'Umer, dema Resûlê Xweda (s.a.s.) rehmet dike, derdikeve ser mînberê û dibêje: *Pêxember nemirîye. Muheqqeq Xweda ew ê dîsa wî bişîne nava me û ew kesên wusa dibêjin ew ê dest û nigê wan jêke.*⁵⁰⁸ Ev gotina wî ji ber hezkirina wî ye ku wefata hezkirîyê xwe qebûl nake. Bi îhtîmalek mezin Melâyê Cizîrî ji ber vê, hezkirina wî xistîye pêşîya şehîdbûnîya wî.

2.9.3 Hezretî 'Uşmān (عثمان)

Navê wî 'Uşmān, leqeba wî *Zû'n-nûreyn* e.⁵⁰⁹ Navê bavê wî *'Effan* e. Piştî bûyera Fîlê bi şeş salan li Taîfê hatîye dinyayê. Bi vexwendina Hezretî Ebûbekir bûye misilman. Piştî Hezretî 'Umer xelîfeyê sêyemîn yê Îslamê ye. 11 sal 11 meh û 18 rojan xelîfetî kirîye. Di serdema xelîfetîya wî da nakokî kete navbera misilmanan. Li hember xelîfetîya wî serhildan çêbûn. Ji teref wan kesên ku mala wî dorpêç

⁵⁰⁷ Fayda, Mustefa, "Ömer", *DIA* c.34, r. 44-51. (لكنوى، ص ٧٥ - ٨٢).

⁵⁰⁸ الزهري، محمد بن سعد بن منيع، *الطبقات الكبرى*، محقق: علي محمد عمر، مكتبة الخانجي، القاهرة ١٩٢١، ج ٢ ص ٢٣٢.

⁵⁰⁹ Zi'n-nûreyn bi wateya du nûran e. Ji ber ku Hezretî Osman bi du nûrên çavên Resûlê Xweda (Rûqîye û Ummukulsum) ra zewicîye ev leqeb lê hatîye kirin. (لكنوى، ص ١٥٣).

kiribûn di 656ê zayînê da hate şehîdkirin. *Hezretî 'Usmân*, bi heya (fedî) û camêrtîya xwe meşhur bû.⁵¹⁰

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî *Hezretî 'Usmân* cih negirtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. Di malika Melâyê Cizîrî da hem telmîha bi kuştina *Hezretî 'Usmân* heye û hem *Hezretî 'Usmân* û *Hezretî 'Elî* timsal û pêşengên kuştîyên fîraqa Resûlê Xweda (s.a.s.) ne.

Meqtûl ji firâqâ te çî 'Uşmân û 'Elî ne (MC 220-1)

2.9.4 *Hezretî 'Elî* (علی) - (Ebu'l Ĥesen (أبو الحسن), Ĥeyderê Kerrâr (حیدر کرار), Şêrê 'Elî (شری علی))

Xelîfeyê Çarem ê İslamê ye. Navê wî *'Elî* ye. Navê bavê wî *Ebî Talib* e. Kunyeyên wî *Ebû'l Ĥesen* û *Ebû Tûrab* in. Leqebên wî *Esedullah*, *Murteza*, *Heyder* an *Heyderê Kerrar* in. Di nava Kurdan da ji ber mêrxasîya xwe bi *Şêrê 'Elî* navdar bûye. Li Mekkeyê di sala 600ê zayînê da hatîye dinyayê. Lawê Apê Pêxember (s.a.s.) *Ebî Talib* e. Yanî pismamê Pêxember e (s.a.s.). Di zaroktîya xwe da dînê İslamê pejirandîye. Bi keça Pêxember (s.a.s.) zewicîye û bûye zavayê pismamê xwe. Li ser nimêja spêdê bi xencereke jehrî hatîye birandîrkirin û du roj piştê di 661ê zayînê da diçe ber dilovanîya Xwedê. Merqeda wî li Kûfe (Necf) ye.⁵¹¹

Navê *Hezretî 'Elî* di malikên Hâfizê Şîrâzî da rasterast derbas nabe. Di malika jêrin da hebûna bêjeya Necf, ku meqbera *Hezretî 'Elî* li wîr e û ji sîyaqa malikê hatîye deranîn ku di vê malikê da bi kinaye ji *Hezretî 'Elî* hatîye behs kirin.⁵¹²

حافظ اگر قدم زنی در ره خاندان به صدق بدرقه ی رهت شود همت شحنه ی نجف

Hâfiz, eger sadiqane di rêya xanedanê da gav bavêjî, hîmmeta mezin û nîgehbanê Necfê ew ê bibe rehnumayê rêya te. (HŞ 463-9)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Hezretî 'Elî* hem bi navê xwe û hem bi bernavkên xwe derbas dibe. Wekî di sernava *Hezretî 'Usmân* da hate gotin *Hezretî 'Elî* jî mînak e ji bo kuştîyên fîraqa Resûlê Xweda (s.a.s.).

Meqtûl ji firâqâ te çî 'Uşmân û 'Elî ne (MC 220-1)

⁵¹⁰ Yiğit, İsmail, "Osman", *DİA*, c. 33, r. 438-443.

⁵¹¹ Fiğlalî, Ethem Ruhi, "Ali", *DİA*, c. 32, r. 371-374. (لکنوی، ص ۱۸۳-۱۹۴)

⁵¹² خالقی، ص ۶۹۲.

Wateya *Heyder*, şêr e.⁵¹³ *Hezretî 'Elî*, bi mêrxasî û gernasîya xwe hatîye şibandin bi şêrî. *Kerrar*, ew ê ku bi tekrar êrîşan dike. Ji ber ku *Hezretî 'Elî* di cengan da bê tirs tekrar tekrar êrîş dibir ser dujmin, ev nasnav lê hatîye kirin.⁵¹⁴ Di malikên şa'iran da geh *Heyder*, geh *Kerrar* û geh herdû bernavk bi hev ra *Heyderê Kerrar* cih girtîye. Wekî ku ji wateya bernavkan dixuyê *Hezretî 'Elî* remz û nîşana mêrxasîyê ye.

*Ehlê dunyâyê serâser dijminên min bin Melâ
Piştêmêrê min 'Elî bi, Heyderê Kerrârî bes* (MC 125-4)

Yar, hatîye şibandin bi *Hezretî 'Elî* ji layê mêrxasîyê ve. Di malika jêrîn da Melâyê Cizîrî yara xwe bi gelek mêrxasan dişibîne ku yek ji wan *Hezretî 'Elî* ye. Melâyê Cizîrî di malika xwe da wateya *Heyder* ya ferhengî bi kurdî bi cih kirîye. *Şêrê 'Elî*.

*Rostem û Cemşîd û Xâlid, Hemze yân Şêrê 'Elî
Âferîn ya şehsiwârê turk û rimbazê 'ereb* (MC 56-5)

Teqdîra ku Xweda danîye kesek nikare biguhere. Li hember teqdîra Ilâhî kesek nikare rabe bi mêrxasîya xwe, her çend ku di mêrxasîyê da wekî *Hezretî 'Elî* be.

*Mâ quwwetê defê heye wer Şêrê 'Elî bit
Lâmi' ko bidît şa'iqeyâ teqdîrê* (MC 288-6)

Navê şûrê *Hezretî 'Elî Zûlfeqar* e. Melâyê Cizîrî di helebesteke xwe ya felsefi-tesewufî da qedera Ilâhî dişibîne şûrê *Hezretî 'Elî* ku kes nikare ji ber wê qederê reha bibe.

*Râst û çep gāv û se'et her li me ew dâtînit
Zûlfeqârê qîdemê Heyderê Kerrârê hudûş* (MC 80-7)

Ebû'l Hesên, kunyeya *Hezretî 'Elî* ye. *Duldul*, navê hespa *Hezretî 'Elî* ye. *Hezretî 'Elî*, bi axaftineke rewan diaxivî. Melâyê Cizîrî, şîrên xwe dişibîne rewanbêjîya *Hezretî 'Elî* û xwe jî di qada şîrê da dişibîne *Hezretî 'Elî* ku li *Duldulê* siwar e û di dest da *Zulfeqar* heye.

*Te'bê lâmi' weş zi minnet Bu'l Hesên
Min di dest dâ zûlfeqâr û duldul e.* (MC 216-3)

⁵¹³ دهخدا، ج ۶، ص ۹۲۴۰.
⁵¹⁴ دهخدا، ج ۱۲، ص ۱۸۲۲۶.

2.9.5 Berawird û Nirxandin

Tablo 11: Çar Xelîfe

| Rêz | Çar Xelîfe | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Ebûbekir | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 2 | Umer | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 3 | 'Usmân | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 4 | 'Elî | 1 | 0,021 | 7 | 0,309 |
| Gîştî | | 1 | 0,021 | 10 | 0,442 |

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji navên her çar xelîfeyên Îslamê yê pêşîn navê *Hezretî 'Elî* bi kîneye cih digire, yê mayî cih nagirin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da navên herçar xelîfeyan jî derbas dibe. Ev, ferqa sereke ye. Melâyê Cizîrî herî zêde cih daye navê *Hezretî 'Elî*. *Hezretî 'Elî* bi navê xwe, bi bernavkên xwe û bi kunyeya xwe 7 caran malikên Melâyê Cizîrî rengîn dike. Xelîfeyên mayî her yek carekê derbas dibin.

Nebûna navên her sê xelîfeyan û tunebûna rasterast navê *Hezretî 'Elî* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da dikare were şîrovekirin. Hâfizê Şîrâzî nexwestîye bikeve nava nakokîyên mezhebî. Melâyê Cizîrî, rengê xwe eşkere dike û wekî 'âlîmek-ş'irekî sunnî navê her çar xelîfeyan di malikên xwe da derbas dike.

Hezretî Ebûbekir û *Hezretî 'Umer*, di malikên Melâyê Cizîrî da remz û nîşana hezkirina Resulê Xweda ne. *Hezretî 'Usmân* sembola fîraqa Resulê Xweda ye.

Hezretî 'Elî, di dîwana Melâyê Cizîrî da cihekî taybet digire. Melâyê Cizîrî hem navê wî, hem bernavkên wî û hem kunyeya wî di malikên xwe da bi cî kirîye. Di malika ku navê *Hezretî 'Elî* û *Hezretî 'Usmân* derbas dibe, *Hezretî 'Elî* wekî *Hezretî 'Usmân* remza fîraqa Resulê Xweda ye. Di malikên din da *Hezretî 'Elî* nîşana mêrxasîyê ye. *Hezretî 'Elî*, di nava Kurdan da gelek tê hezkirin. Ev hezkirin ji cesaret û mêrxasîya wî ye. Kurdan, ji ber karakterê wî yê cesaret û mêrxasîyê *Hezretî 'Elî* wekî îdol dîtine. Ji vê hezkirinê ye ku di nava Kurdan da Wekî *Şêrê 'Elî* hatîye binavkirin. Melâyê Cizîrî jî li ser vê kevneşopîya Kurdan *Hezretî 'Elî* ji xwe ra sembola mêrxasîyê dibîne.

BEŞA SÊYEM

NAVÊ PÊXEMBERAN DI DÎWANA HÂFIZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ DA

Telmîh, yek ji hunerên edebî ye. Di ferhengên da tê wateya dîtin, lê nêrîn, eşkere kirin û îşaret kirinê.⁵¹⁵ Wekî istilaheke edebî amaje pêkirina bi dastan, bûyer û şî'rê ye bi şertê ku temamê dastan, bûyer û şî'rê neyê gotin.⁵¹⁶ Telmîhên Îslamî ku ji jîyana pêxemberan hatine wergirtin di edebîyatê da cihekî girîng digirin. Jîyan, sifet û taybetîyên pêxemberan bi gelek layan bala şa'iran kişandîye û şa'iran ji bo ravekirina gelek mebestên xwe ji wan sûd wergirtine.

Di vê beşê da qisseyên pêxemberên ku di dîwana Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da derbas dibin li gorî rêza pêxemberan ew ê werin ravekirin.

3.1 Hezretî Âdem (آدم)

Hezretî Âdem, yekem însan, bavê hemû beşerîyetê (ebul beşer, peder), û yekem pêxember e di baweriya Îslamê da. Derbarê *Hezretî Âdem* da Qur'ân wiha dibêje. Xweda, xwest ku xelîfeyekî bişîne ser rûyê erdê.⁵¹⁷ *Hezretî Âdem* ji axê hate afirandin.⁵¹⁸ Hevjîna wî jî ji wî afirand.⁵¹⁹ Piştî Xweda ji hemû fireşteyan ra got ji *Hezretî Âdem* ra secde bikin. Hemû firişte secde kirin, lê Şeytân secde nekir.⁵²⁰ Xweda, ji *Hezretî Âdem* û hevjîna wî Hewwa ra got li behîştê bisekinin lê nêzîkî vê darê nebin.⁵²¹ Şeytân bi wesweseyan ew xapandin û ji wê dara qedexê da xwarin.⁵²² Piştî xwarina dara qedexê *Hezretî Âdem*, Hezretî Hewwa û Şeytân ji behîştê hatin avêtin.⁵²³ Piştî *Hezretî Âdem* ji Xwedayê xwe hin kelîme wergirtin û bi wan kelîmeyan bi bal Xwedayê xwe va tobe kir.⁵²⁴ Piştî pejirandîna tobeya *Hezretî Âdem*, Xweda ew li ser 'âlemê mezin gerand⁵²⁵ û bi pêxembertî hilbijart.

Hâfîz di malikên xwe da cih dide hin alîyên jîyana *Hezretî Âdem*.

⁵¹⁵ کدکنی، محمد رضا شفیعی، صور خیال در شعر فارسی، انتشارات آگاه، چاپ ششم، تهران ۱۳۸۵، ص ۲۴۳؛ گرگانی، حاج محمد حسین شمس العلماء، ابداع الابداع، انتشارات احراز، تیریز ۱۳۸۸، ص ۲۶۷.

⁵¹⁶ شمیسا، سیروس، فرهنگ تلمیحات (اشارات اساطیری، داستانی، تاریخی، مذهبی در ادبیات فارسی)، میترا، چاپ پنجم، تهران ۱۳۷۵، ص ۷.

⁵¹⁷ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 30.

⁵¹⁸ *Qur'âna Pîroz*, Alî 'Îmran 59.

⁵¹⁹ *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 1.

⁵²⁰ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 34.

⁵²¹ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 35.

⁵²² *Qur'âna Pîroz*, Taha 120.

⁵²³ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 36.

⁵²⁴ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 37.

⁵²⁵ *Qur'âna Pîroz*, Alî 'Îmran 33.

Di hedîseke qudsî da derbas dibe ku Xweda bi destê xwe herîya *Hezretî Âdem* çil sibehî stirandîye.⁵²⁶ Hâfiz di malika xwe da stirandina herîya *Hezretî Âdem* bi bîr tîne:

بر در میخانه عشق ای ملک تسیح گوی کاندرا آن جا طینت آدم مخمر می کنند
Ey melek! Li ber derê meyxaneya 'işqê tesbîhê Xweda bike. Lewra li vî cihî herîya Hezretî Âdem tê stirandîn. (HŞ 330-7)

Xweda, piştî ku *Hezretî Âdem* ji herîyê afirand, emrî firişteyan kir ku ji *Hezretî Âdem* ra secde bikin. Hâfizê Şîrâzî vê secdeyê bi nûra Cemâla Xweda ve girêdide ku di *Hezretî Âdem* da tecellî kirîye.

ملک در سجده ی آدم زمین بوس تو نیت کرد که در حسن تو لطفی دید بیش از حد انسانی
Di hengama secdeya Âdem da mebesta firişteyan maçîkirina dergahê te bû, lewra lutfâ di xweşikahîya te da ji meqamê însanîyetê bilindtir bû. (HŞ 699-5)

Xweda, piştî ku *Hezretî Âdem* û Hewwa afirandî di behîştê da cih da wan. Hâfizê Şîrâzî bi nêrîneke 'âşîqâne şibandineke wiha dike;

من آدم بهشتی ام اما در این سفر حالی اسیر عشق جوانان مهوشم
Ez Âdemê behîştî me, lê di jîyana dinê da, niha ez, girîftarê 'işqa ciwanên mehrû me. (HŞ 519-3)

Xweda, ji *Hezretî Âdem* û Hewwa ra got li behîştê bisekinin lê ji vê darê tiştêkî nexwin. Şeytân, bi dek û dolaban ew xapandin û ji wê dara qedexekirî bi wan da xwarin. Hâfizê Şîrâzî vê bûyerê ji bo ramanên xwe yên tesewufî bi kar tîne.

دام سخت است مگر یار شود لطف خدا ورنه آدم نبرد صرفه ز شیطان رجیم
Feqa Şeytân zor û zehmet e, eger alîkarîya Xweda nebe. Âdem, ji xapandina Şeytânê qewirandî xwe reha nekir. (HŞ 557-10)

Hezretî Âdem û Hewwa bi dek û dolabên Şeytân xapîyan û bê emrîya Xweda kirin, ji dara qedexe xwarin. Xweda, vê bêemrîyê wekî 'isyankirinê di Qur'ânê da bi nav dike.⁵²⁷ Hâfizê Şîrâzî ji bo zehmetîya parastina ji gunehan ji vê bûyerê sûd wergirtîye.

جایی که برق عصیان بر آدم صفی زد ما را چگونه زبید دعوی بی گناهی
Di cihê ku Âdem, tevî ku bijarteyê Xweda bû, nedikarî xwe ji gunehan biparêze, em çawa dikarin de'wa bêgunehîyê bikin. (HŞ 721-3)

⁵²⁶ فروزانفر، (خمّرت طینة آدم بییدی اربعین صباحاً) Xweda herîya Hezretî Âdem bi destê xwe çil sibehî stirand. (ص ۵۴۵)

⁵²⁷ (وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ) Âdem li hember rebbê xwe 'isyan kir û rêya xwe şaş kir. (*Qur'âna Pîroz*, Taha 121.)

Di Qur'ânê da ji bo fêkîyê dara qedexe tîstek nehatîye gotîn. Tenê dar hatîye gotin. Hâfizê Şîrâzî di şî'ra xwe da, vê darê wekî dara genim dinasîne.

پدرم روزه رضوان به دو گندم بفروخت من چرا ملک جهان را به جوی نفروشم
Bavê min behîşt bi du hebê genim frot. Ez çira hemu mulkê cîhanê bi hebek

ceh nefiroşim? (HŞ 522-6)

Pîştî ku *Hezretî Âdem* û Hewwa bêemrîya Xweda kirin ji behîştê hatin derxistin. Hâfizê Şîrâzî vê bûyerê ji xwe ra wekî delîl dipejirîne ji bo dûrketina ji teqwayê.

نه من از پرده ی تقوا به درافتادم و بس پدرم نیز بهشت ابد از دست بهشت
Bes, ne ez tenê perhîzkarê teqwayê bûm û jê dûr ketim. Bavê min jî (Hezretî

Âdem) behîsta ebedî di cih da hişt (HŞ 166-6)

Erd, ezman û çiyayan Emanetê Xweda hilnegirtin û xwe nexistin bin vî barî. Lêbelê însan (*Hezretî Âdem*) emanetê Xweda hilgirt.⁵²⁸ Di nêrîna Hafîzê Şîrâzî da ev emanetê Xweda 'îşq e.

جلوه ای کرد رخت دید ملک عشق نداشت عین آتش شد از این غیرت و بر آدم زد
Xweşikahîya çehra te yek car cîlweger bu, dît ku firîşte dûr in ji 'îşqê, ji ber

vê, agirê xîretê di wucûda te da şu'le da û bi canê Âdem ket. (HŞ 262-2)

Di dîwana Melâyê Cizîra da ev telmîh ji jîyana *Hezretî Âdem* tên dîtîn. Melâyê Cizîrî di serî da bi nêrîneke felsefî/tesewufî li afirandina *Hezretî Âdem* û *Hezretî Hewwa* dinihêre. Husn, xweşikahîya Xweda dibe du perçe û tecellî dike. (MC 44-3) Perçeyek jê bû ruhê e'zem ku çira û ronahîya 'âlemê ye. Xweda ji vê ruhê e'zem *Hezretî Âdem* û Hewwa afirand. Wekî ku di Qur'ânê da derbas dibe Xweda ji ruhê xwe pifî *Hezretî Âdem* kir.⁵²⁹

Yek 'eql û rûhê e'zem e Mişbâh û nûrâ 'âlem e
Hewwâ û neqşê Âdem e Bê mudde hem bê mādde dā (MC 44-4)

Xweda, ji firîşteyan got: "Ez ê li ser rûye erdê xelîfeyekî biafirînim." Firîşteyan got: "Tu dixwazî kesekî biafirîni ku li ser rûyê erdê xerabîyan bike û xwînê birijîne." Xweda ji wan ra got: "Tîştê Ez dizanim hûn nizanin". Xweda, navê hemû tiştan fêrî *Hezretî Âdem* kir û ew pêşkêşî firîşteyan kir.⁵³⁰ Melâyê Cizîrî piştî

Me, (إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا) ⁵²⁸ ev emanet pêşkêşî asîman, zemîn û çiyayan kir, ji hilgirtina emanetê tirsîyan û revîyan. Însan emanet hilgirt ser milê xwe ku ew pir sitemkar û nezan e. (*Qur'âna Pîroz*, Ehزاب 72.)

⁵²⁹ Min ji ruhê xwe pifî wî kir. (*Qur'âna Pîroz*, Hicr 29)

⁵³⁰ *Qur'âna Pîroz*, Beqer 30-31.

we'ellem a ku bi bêjeyeke ayetê telmîhê bi bûyerê dike, xwe di wê asta ku Xweda hemû nav bi *Hezretî Âdem* fêr kirîye dibîne.

Bārî ji "we'ellem" ko xeberdār kirîn
Îro tu bizān Âdemê esmāyi mi ez (MC 111-2)

Xweda, piştî *Hezretî Âdem* afirand, ji firişteyan got; ji *Hezretî Âdem* ra secde bikin. Firişteyan secde kirin. Li gor Melâyê Cizîrî secdeya firişteyan ji bo dîtîna tecellîyata Cemâla Xweda bû ku di *Hezretî Âdem* da xuya dikir.

Binê berqā tecellāyê *Melek hiştin di Âdem dā* (MC304-4)

Hemû firişteyan ji *Hezretî Âdem* ra secde birin. Lê Şeytân secde nebir. Xwe ji *Hezretî Âdem* mezintir û çêtir dît. Got; "ez ji agir im û ew ji axê ye."⁵³¹ Li gorî Melâyê Cizîrî sedema secde nekirina Şeytân têngihiştina sirra Xweda bû ku di *Hezretî Âdem* da veşartîbû. Ew sir jî wekî di malika jorîn da derbas bû tecellîyata nûra Cemâla Xweda bû.

Ger di Âdem bidiyā sirrê 'ilim Iblîsî
*حينما أبصره كبر حيناً وسجد*⁵³² (MC 97-2)

Hezretî Muhemmed, ji ber ku serwerê Âdemîyan e û çêtirînê wan e, pêxemberê herî dawî ye û dînê Îslamê ku dînê herî mikemmel e, bêkêmasî ragihandî ye, ji hemû pêxemberan mezintir e.

Miślê Te, ne Âdem we ne Îbrāhîm û Nūḥ in
Yūsif bi Te meḥbūb ū li Ye'qūbî şirîn e. (MC 219-4)

3.2 Hezretî Nūḥ (نوح)

Li gorî rêza pêxemberên ku navê wan di Qur'ânê da derbas dibin pêxemberê sêyem e. Taybetîyên *Hezretî Nūḥ*; avakirina keştîyê, tofan û temendirêjîya wî ye. *Hezretî Nūḥ*, bi tekoşîneke mezin qewmê xwe bi bal dînê Xweda vedixwîne.⁵³³ Ji qewmê wî kêr kesan bawerî bi pêxembertîya wî anîne.⁵³⁴ Qewmê wî tevî ku bawerî bi wî nedianîn, zilm û sîtemek mezin li wî dikirin. Ji ber sîtema qewmê xwe hew debar kir û li wan nifrîn kir.⁵³⁵ Xweda, emrî wî bi çêkirina keştîyê kir.⁵³⁶ Piştî

⁵³¹ *Qur'âna Pîroz*, Sad 73-76.

⁵³² Ev niv malik bi tevahî bi 'erebî ye. Wate: Gava ku ew didît, tekbîr dida, wê gavê diçû secde.

⁵³³ *Qur'âna Pîroz*, Hûd 25.

⁵³⁴ *Qur'âna Pîroz*, Hûd 36.

⁵³⁵ *Qur'âna Pîroz*, Şu'ara 118.

⁵³⁶ *Qur'âna Pîroz*, Hûd 37.

çêkirina keştîyê tofanek mezin li qewmê wî rabû. Ji vê tofanê ew û kesên ku bi wî bawerî anîbûn – ku hejmara wan gelek kêr bû – reha bûn.⁵³⁷

Di diwana Hâfizê Şîrâzî da qisseyaya *Hezretî Nûh* bêtir derbarê tofanê de cih girtî ye. Hâfizê Şîrâzî, bi hunera îxraqê⁵³⁸ hêstirên çavên xwe ji tofanê mezintir dibîne. (HŞ 95-2) Tofana *Hezretî Nûh* hemû tiştan bi xwe ra dibe, tune dike, lê hêstirên çavên wî neqşê hezkirina yara wî ji dilê wî nabe.

از آب دیده صد ره طوفان نوح دیدم
وز لوح سینه نقشت هرگز نگشت زایل
Tevî ku hêstirên çavên min sed carî ji tofana Hezretî Nûh tûndtir e, tu carî neqşê 'işqa te ji dilê min neşûşt. (HŞ 479-7)

Hâfizê Şîrâzî, keştîya *Hezretî Nûh* wekî cihê silametiye dinasîne. Hevaltîya bi dostên Xweda jî şibandîye keştîya *Hezretî Nûh*. Çawa ew kesên ku li keştîyê siwar bûn ji hemû xeteran rizgar bûn herwiha ew kesên ku bibin dostê hevalên Xweda jî ji hemû xeteran xwe diparêzin. (HŞ 69-6)

یار مردان خدا باش که در کشتی نوح
هست خاکی که به آبی نخرد طوفان را
Hezretî Nûh, ji qewmê xwe gelek azar didît. Li hember van renc û azarên qewmê xwe sebir kir. Bi çêkirina keştîyê û hatina tofanê kesên ku bi wî bawerî neanîn hemû helak bûn û Hezretî Nûh ji hemû zehmetîyan reha bû. Hâfizê Şîrâzî, ev sebra Hezretî Nûh ji bo kesên ku zehmetîyê dikêşin tewsiye dike.

گرت چو نوح نبی صبر هست در غم طوفان
بلا بگردد و کام هزارساله برآید
Eger tu wekî Nebî Nûh li hember tofanên zehmetîyan sebir bikî, ew ê bela û musibet biqedin û tu yê bigihêjî arezûyên xwe yên hezar sale. (HŞ 377-6)

Hezretî Nûh, ji ber ku keştî ava kirîye wekî keştîban, herwiha bi sedema ku keştî û rêwîyên wê bi silameti gihandîye peravê, keştîbanekî mahir e. Hâfizê Şîrâzî, wezîr an siltanên dema xwe dişibîne Hezretî Nûh ku piştevanîya şa'iran dike û wan ji xerterên demê diparêze.

ای دل ار سیل فنا بنیاد هستی برکند
چون تو را نوح است کشتیبان ز طوفان غم مخور
Xema mexwe ey dil, eger lehîya fenayê bixwaze te ji holê rake, Nûh keştîban e ew ê te ji tofanê reha bike. (HŞ 407-6)

⁵³⁷ *Qur'âna Pîroz*, Hûd 40.

⁵³⁸ Hunera îxraqê yek ji cûreyên mubalexê ye. Di hunera îxraqê da şa'ir peyvekê dibêje ku hiş vê peyvê dipejirîne lê di jîyana rojane da ne pêkane ku pêk were. (ابن رشيق، العمدة في محاسن الشعر (وآداب، بيروت ١٤٠١، ص ٢٤٧؛ داد، ص ٤٢)

Keştîya *Hezretî Nûh* ji ber ku bi silametî gihiştîye peravê, remz û sembola filitandinê nîşan dide. Hâfîzê Şîrâzî, cama şerabê dişibîne keştîyê ji bo ku wî ji tofan û bûyerên demê reha bike.

حافظ از دست مده دولت این کشتی نوح
ور نه طوفان حوادث ببرد بنیادت
*Hâfîz, bextewarîya keştîya Nûh (cama şerabê)*⁵³⁹ *ji dest bernede, yan na bûyerên demê ew ê te ji binî da tune bikin.* (HŞ 82-7)

Hezretî Nûh, di dîwana Melâyê Cizîrî da sê caran derbas dibe. Wekî li jor hate gotin yek ji taybetîyên *Hezretî Nûh* temendirêjî ye. Wekî nêrîneke giştî hatiye gotin ku *Hezretî Nûh* hezar sal temen borandîye.⁵⁴⁰ Melâyê Cizîrî di şî'rên xwe da ji temendirêjîya *Hezretî Nûh* sûd wergirtîye. Dema ku fîrset bikeve dest divê mirov bilez be, xwe sist meke, molet neyê dayîn. Lewra kesek bi qasî *Hezretî Nûh* temen naborîne ku dîsa bigihêje fîrseteke din.

Tâli' ko têt û furset muhlet li nik herâm e
Min 'umrê Nûhî nîne wer saqîyo bi lez xwoş (MC 126-7)

Melâyê Cizîrî di pesindayînê da ji temendirêjîya *Hezretî Nûh* sûd werdigire. Dixwaze ku memduhê wî wekî *Hezretî Nûh* xwedî temenekî dirêj be.

Mâ te 'umrê Xiðr û Nûh û mulkê Zulqerneyn bitin
Gunbedâ çerxê mulemmê' her bi te me'mûri bî (MC 286-9)

Hezretî Muhammed (s.a.s.) ji layê mezinbûnîyê ji hemû aferîdeyan mezintir e. Melâyê Cizîrî dema pesnê *Hezretî Muhammed* (s.a.s.) dide û mezinantîya wî dide ber çavan navê hinek pêxemberan dijmêre ku yek ji wan *Hezretî Nûh* e.

Miðlê Te, ne Âdem we ne Îbrâhîm û Nûh in
Yûsif bi Te mehbûb û li Ye'qûbî şîrîn e (MC 219-4)

3.3 *Hezretî Ibrâhîm* (إبراهيم) (*Xelîlullâh*-خليل الله)

Hezretî Ibrâhîm, yek ji wan pêxemberan e ku di Qur'ânê de behsa wî gelekî hatiye kirin. Xweda, di biçûkatîya wî da rêya rast dabû ber wî,⁵⁴¹ paşê wî bi pêxembertî hilbijart⁵⁴² û herî dawî ew ji xwe ra wekî xelîl (dostê sadiq, dostê mihriban) qebûl kir.⁵⁴³ Piştî bû pêxember pêşî bavê xwe de'wetî ser dînê Xweda⁵⁴⁴

⁵³⁹ Hâfîzê Şîrâzî, di şî'rên xwe da cama şerabê bi gelek tiştan dişibîne ku yek ji wan jî keştî ye. Wekî di vê xezelê da ku di malika metle'ê û di misraya yekem da wiha dibêje: (بیا و کشتی ما در شط شراب انداز): *Were keştîya me di şetê şerabê da ke* (h. 418-1)

⁵⁴⁰ ابن كثير، عماد الدين أبو الفداء إسماعيل بن عمر، *قصص الأنبياء*، مكتبة الطالب الجامعي، مكة، ١٤٠٨، ص ١٠٧.

⁵⁴¹ *Qur'âna Pîroz*, Enbiya 51.

⁵⁴² *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 13.

⁵⁴³ *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 125.

⁵⁴⁴ *Qur'âna Pîroz*, Meryem 41.

kir û paşê jî qewmê xwe.⁵⁴⁵ Lê bavê wî û qewmê wî dînê wî qebûl nekirin. Ibrâhîm pêxember di rojê cejnê da dikeve pûtixaneya qewmê xwe û hemû pûtan dişkîne û bivir di sutîyê pûtê herî mezin da dadileqîne.⁵⁴⁶ Ji bo wî ceza bikin mencinîqekê çêdikin û wî davêjên nava agir.⁵⁴⁷ Xweda, emrê agir dike ku *Hezretî Ibrâhîm* neşewitîne û agir *Hezretî Ibrâhîm* naşewitîne.⁵⁴⁸ Piştî vê bûyerê *Hezretî Ibrâhîm* ji welatê xwe koç dike.⁵⁴⁹ Du lawên *Hezretî Ibrâhîm* çêdibin. Hezretî Îsma'îl û Hezretî Îshaq. Bûyera ku *Hezretî Ibrâhîm* xwestîye Hezretî Îsma'îl bike qurban⁵⁵⁰ di Qur'ânê da bi berfirehî cih digire.⁵⁵¹

Şa'iran herî zêde di şî'rên xwe da ji bûyera avêtina *Hezretî Ibrâhîm* ya nav agir û bûyera ku *Hezretî Ibrâhîm* xwestîye lawê xwe qurban bike sûd wergirtine.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *Hezretî Ibrâhîm* carekê bi sifetê Xelîl derbas dibe ku Xweda ev sifet daye wî. Hâfîzê Şîrâzî, di malika xwe da agirê 'işqê dişîbîne agirê ku *Hezretî Ibrâhîm Xelîl* avêtine navê û ji Xweda dixwaze ku wî agirî sar bike.

يا رب اين آتش که در جان من است
سرد کن زان سان که کردی بر خليل
Ya Reb! Ev agirê ku di canê min da ye, sar bike çawa ku te agir ji bo Ibrâhîm

Xelîl sar kir. (HŞ 480-3)

Melâyê Cizîrî, di yek malikê da sifetê *Hezretî Ibrâhîm Xelîlullah* derbas dike û agirê qisseyaya *Hezretî Ibrâhîm* dike mijar. Melâyê Cizîrî bi hunera mûbalexeyê germ bûna naz û cîlweya yara xwe dişîbîne agirê ku *Hezretî Ibrâhîm* avêtine navê.

Ger ji wê hûrêsiştê 'işweyek izhâri bit
Dê bibit nârê Xelîlullâh û dojah sâri bit (MC 64-1)

Melâyê Cizîrî di meznantîya Hezretî Muhammed (s.a.s.) da navê *Hazretî Ibrâhîm* jî di malikan da bi cih dike.

Mişlê Te, ne Âdem we ne Îbrâhîm û Nûh in
Yûsif bi Te mehbûb û li Ye'qûbî şîrîn e. (MC 219-4)

3.4 Hezretî Ye'qûb (يعقوب) (Pîrê Ken'an- پير كنعان)

Hezretî Ye'qûb, lawê Hezretê Îshaq e ew jî lawê Hezretî Ibrâhîm e. Yek ji wan pêxemberan e ku navê wî di Qur'ânê da derbas dibe. Wehî jê ra hatîye.⁵⁵² *Hezretî*

⁵⁴⁵ *Qur'âna Pîroz*, Enbîya 52-72.

⁵⁴⁶ *Qur'âna Pîroz*, Enbîya 57-63.

⁵⁴⁸ *Qur'âna Pîroz*, Enbîya 69.

⁵⁵⁰ Ji bo agahiyên berfireh bnr: ۱۹۶-۱۹۰ ص ابن كثير، قصص الأنبياء،

⁵⁵¹ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Safat 99-113.

⁵⁵² *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 163.

⁵⁴⁷ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ۱۶۶.

⁵⁴⁹ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ۱۷۴.

Ye'qûb bi tewsîya dayika xwe, diçe Herranê cem xalê xwe. Li Herranê pêşî bi keça xalê xwe ya mezin û paşê bi ya biçûk re dizewice. Ji keça xalê wî ya biçûk ku navê wê Rahîl e Hezretî Yûsif û Hezretî Bunyamîn tên dinyayê. Paşê koçî welatê xwe Ken'anê dike.⁵⁵³

Hezretî Ye'qûb, di edebîyatê da bêtir bi Hezretî Yûsif ra têkildar e. Birayên Hezretî Yûsif wî di bîrê de werdikin.⁵⁵⁴ Paşê ji teref karwanekî va ji bîrê tê derxistin⁵⁵⁵ û li Misrê wekî kole tê firotin.⁵⁵⁶ Çendîn sal *Hezretî Ye'qûb* bi hesreta Hezretî Yûsif dimîne. Ji xwe ra qulûbeyekê çêdike (qulûbeya huznê) û di wê da jîyana xwe didomîne. Ji ber vê yekê ew wekî tîmsala sebrê ye wekî Qur'ân ji wî ra dibêje *Sebra Cemîl* (sebra xweşik).⁵⁵⁷ Ji hesreta Hezretî Yûsif, ronahî di çavê Hezretî Ye'qûb da namîne. Piştî ku agahdar dibe Hezretî Yûsif li jîyanê ye bêhna wî fireh dibe. Hezretî Yûsif ji bavê xwe ra gumlekê xwe rê dike û bavê wî gumlek di çavên xwe dide û ronahî dike çavên wî.⁵⁵⁸

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navê *Hezretî Ye'qûb* derbas nabe. Ji ber ku welatê wî Ken'an e û di temenê xwe yê dawî da hesret kişandîye wekî *Pîrê Ken'an* derbas dibe. *Hezretî Ye'qûb*, di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da mînaka xem û derdê dûrbûnîya ji yarê ye. Ji bo dûrbûnîya yarê wiha dibêje; "*Min gotinek xweş ji Pîrê Ken'an bihistîye ku gotîye dûrbûnîya yarê tişekî wusa dike ku tu nikarî rave bikî.*" (HŞ 177-1) Xema dûrbûnîya ji Yarê wiha tîne ziman:

يوسف عزيزم رفت ای برادران رحمی كز غمش عجب بينم حال پير كنعانى
Ey birader û hevalên min! Rehmê bi min bikin ku 'ezîzê min Yûsif çû. Ez

dibînîm ku Pîrê Ken'an ji xemê di halekî ecêb de ye. (HŞ 697-8)

Di dîwana Melâ da *Hezretî Ye'qûb* û Hezretî Yûsif bi hevra di malikan da cih girtine. Li gorî Melâyê Cizîrî ew hezkirina Hezretî Yûsif ku di dilê *Hezretî Ye'qûb* da ye ji ber Nûra Muhememdî ye ku di enîya Hezretî Yûsif da xuya dikir. (MC 219-4) Di malika jêrîn da Melâ, şandina gomlekê Hezretî Yûsif û rohnîbûna çavên *Hezretî Ye'qûb* bi telmîh îşaret dike.

Şukur bînâhiyâ min hât û Ye'qûb dîde rewşen bû

⁵⁵³ ابن كثير، عماد الدين أبو الفداء إسماعيل بن عمر، *البدائية والنهاية*، تحقيق: عبدالله بن عبدالمحسن التركي، مكتبة المعارف، بيروت ١٤١٠، ج ١، ص ٤٤٨-٤٥٠.

⁵⁵⁴ ابن كثير، *البدائية والنهاية*، ج ١، ص ٤٦٣.

⁵⁵⁵ ابن كثير، *البدائية والنهاية*، ج ١، ص ٤٦٥.

⁵⁵⁶ ابن كثير، *البدائية والنهاية*، ج ١، ص ٤٦٦.

⁵⁵⁷ *Qur'âna Pîroz*, Yûsif 18.

⁵⁵⁸ ابن كثير، *البدائية والنهاية*، ج ١، ص ٤٩٥-٤٩٦.

3.5 Hezretî Yûsif (يوسف)

Wekî di qisseyaya Hezretî Ye'qûb da derbas bu, *Hezretî Yûsif*, yek ji lawê Hezretî Ye'qûb e. Qisseyaya *Hezretî Yûsif* wekî ku Qur'an dinasîne xweşiktirîn qisse ye.⁵⁵⁹ Birayên wî, hesûdiya wî dikin û wî davêjin bîrekê. Karwanek tê ser bîrê û wî ji bîrê derdixe û li Misrê wekî kole difroşe. 'Ezîzê Misrê wî dikire û wekî dîyarî dide hevîna xwe Zuleyxayê. Piştî ku mezin dibe Zuleyxa dildarî wî dibe. Ji ber ku *Hezretî Yûsif* berê xwe nade Zuleyxayê, Zuleyxa wî dixê zîndanê. Çendîn sal, di zîndanê da dimîne. Piştî ji zîndanê reha dibe, dibe 'Ezîzê Misrê. Di vê naberê da bavê wî tu agahîyan derbarê wî da nastîne, gelek xema wî dikêşe, ji ber hesreta wî ronahî di çavê wî de namîne. Li Ken'anê xela çêdibe, birayên wî tene Misrê zad dikirin. Hevudu li wir dinasin. Rewşa bavê xwe ji birayên xwe dibihîze. Gomlegê xwe ji bavê xwe ra dişîne. Bavê wî ji dûrva bihna wî hiltîne. Gomlek di çavên xwe da dide, çavên wî rohnî dibin. Paşê malbata wî koçî Misrê dike. Qisseyaya *Hezretî Yûsif* di Qur'anê da bi berfirehî derbas dibe.⁵⁶⁰

Qisseyaya *Hezretî Yûsif* bi balkêşîya xwe bi gelek layan îlham daye şa'iran û bi taybet şa'iran di ravekirina hestên xwe yê 'aşîqâne da ji qisseyê sûd wergirtine.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *Hezretî Yûsif* wiha cih digire. Bi wendabûna *Hezretî Yûsif* bavê wî gelek xemgîn dibe (HŞ 697-8) û ji xwe re kolikê ava dike. Qulûbeyaya Hezretî Ye'qûb geh Kulbeê Ehzan (كلبه احزان) qulûbeyaya xemgînîyê (HŞ 495-8) û geh Beytu'l-hezen (بيت الحزن) mala xemgînîyê ye. (HŞ 441-6) Peydabûna *Hezretî Yûsif* û derketina bavê wî ji qulûbeyaya huznê hevîya gihiştina yarê ye. (HŞ 730-8). Di malikeke din da wiha dilê xwe xweş dike:

يوسف گمگشته بازآید به کنعان غم مخور
كلبه ی احزان شود روزی گلستان غم مخور
Yûsifê wendabûyî dê bizîvire Ken'anê xem mexwu, qulûbeyaya huznê rojekê ew ê bibe gulistan xem mexwu. (HŞ 407-1)

Hezretî Yûsif, piştî ji bîrê têderxistin birayên wî, wî bi bihakî hindik ew firotin serwanî.⁵⁶¹ Firotina *Hezretî Yûsif* bi bihakî hindik di malikên Hâfîzê Şîrâzî da mînak e ji bo firotina axretê bi dinyayê. (HŞ 703-3) Herwiha destjêberdana yarê jî hatîye şibandîn bi firotina *Hezretî Yûsif*.

⁵⁵⁹ (نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ) Em bi şandina Qur'anê qisseyên herî xweşik ji te ra vedibêjin. (*Qur'âna Pîroz*, Yûsif 3.)

⁵⁶⁰ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Yûsif 1-111. Ji bo agahîyên berfireh Bnr: (ابن كثير، البداية والنهاية، ج ١، ص ٥٠٦-٥٠٤؛ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ٢٦٧-٣١٠.)

⁵⁶¹ *Qur'âna Pîroz*, Yûsif 20.

یار مفروش به دنیا که بسی سود نکرد آن که یوسف به زر ناسره بفروخته بود
*Yara xwe mefroşe bi dinyaya naçiz û ji dest xwe bernede, ew kesên ku Hezretî
Yûsif bi zêrên qelp firotin jê sûd wernegirtin. (HŞ 346-7)*

Hezretî Yûsif, ji ber ku li Misrê dimîne wekî *Yûsifê Misrî* cih girtîye di malikên Hâfîzê Şîrâzî da. (HŞ 650-4) *Hezretî Yûsif*, ji Misrê gomlekê xwe ji bavê xwe ra dişîne. Bavê wî bêhna wî ji dûr va hiltîne.⁵⁶² Hâfîzê Şîrâzî, gomlek, bihnê û hesûdîya birayên wî di yek malikê da bi cih dike. Xwe dişibîne Hezretî Ye'qûb, mixalifên xwe jî dişibîne birayên *Hezretî Yûsif*.

پیراهنی که آید از او بوی یوسفم ترسم برادران غیورش قبا کنند
*Gomlekê ku bihna Yûsifê min jê tê ditirsim ku birayên wî yên hesûd perçe
perçe bikin. (HŞ 325-9)*

Xweşikahîyek zêde ya *Hezretî Yûsif* hebûye. Hâfîzê Şîrâzî, xweşikahîya yara xwe dişibîne xweşikahîya *Hezretî Yûsif*. Yara wî Yûsifê duwem e. (HŞ 700-1) Bi hunera mubalaxeyê xweşikahîya yara wî wisa zêde ye ku hezar Yûsif di kortala erzinka wê da wunda dibin. (HŞ 89-3) Xweşikahîya meşûqê, 'âşiq ruswa dike. Sedema 'işqa Zuleyxayê û serpêhatîya wê jî xweşikahîya *Hezretî Yûsif* e.

من از آن حسن روزافزون که یوسف داشت دانستم که عشق از پرده عصمت برون آرد زلیخا را
*Min ji wê xweşikahîya zêde ya Yûsif dizanî ku 'işqa Yûsif ew ê perdeya rûyê
Zuleyxayê biqetîne û wê ruswa bike. (HŞ 60-5)*

Melâyê Cîzîrî di dîwana xwe da ji bûyera *Hezretî Yûsuf* gelek sûd wergirtîye. Xweşikahîya *Hezretî Yûsif* ji Hezretî Muhammed (s.a.s.) hatîye û ji ber vê li ber dilê Hezretî Ye'qûb şêrîn e.

*Mîslê Te, ne Âdem we ne İbrâhîm û Nûh in
Yûsif bi Te mehbûb û li Ye'qûbî şîrîn e. (MC 219-4)*

Hezretî Yûsif, hem ji aliyê birayên xwe ve û hem ji teref serwanî li Misrê hatîye firotin. Ev firotin hatiye şibandin bi destjêberdana yarê û encama destjêberdana yarê her xesaret e.

*Bi dînârê denî zinhâr dâ yârê xwo nefroşî
Kesê Yûsif firotî wî di 'âlem dâ xesâret kir (MC 104-7)*

Hezkirina şa'irî li hember yara wî hatîye şibandin bi hezkirina Hezretî Ye'qûb a li hember *Hezretî Yûsif*. Bi vî rengî şa'ir xwe dişibîne Hezretî Ye'qûb û yara xwe jî dişibîne *Hezretî Yûsif*. Hesreta ku şa'ir dikêşe hesreta evîna Hezretî Ye'qûb e. Çi dema ku bêhna yarê tê, hesret diqede û çavên şa'irî rohnî dibe. (MC 27-6) Di bûyera

⁵⁶² *Qur'âna Pîroz*, Yûsif 93-96.

Hezretî Yûsif û Zuleyxayê da ku *Hezretî Yûsif* bersîva evîna wê nade, dikeve zindanê. Ketina zindanê hem hatîye şibandin bi cewr û cefaya yarê û hem hatîye şibandin bi dûrbûnîya yarê.

Yûsifê cur'ekeşê hicrân im
Nuqteyê dâireyê zindân im (MC 249-3)

Şa'iran xweşikahîya yara xwe şibandine xweşikahîya *Hezretî Yûsuf*. Yara Melâyê Cizîrî wekî *Hezretî Yûsif* şekir ji lêvên wê dirêje. (MC 252-3) Yara Melâ, di xweşikahîyê da Yûsifê dûyem e. (MC 277-2) Yara wî di xweşikahîyê da Yûsifê dewr û demê ye. (MC 209-9) Tevî ku yara Melâyê Cizîrî di husn û Cemâlê da Yûsifê dewr û demê ye herwiha nîşaneke wê jî (wekî gomlekê *Hezretî Yûsif* dermanê çavan e) dermanê hemû nexweşîyan e.

Yûsifê dewrê zemânî *Go nesim: hân vî nişânî*
Bê ji bo beghê dehânî *Nexwoşân ew lê şifâ ye* (MC 203-15)

3.6 **Hezretî Şu'eyb** (شعيب)

Hezretî Şu'eyb, yek ji wan pêxemberan e ku navê wî di Qur'ânê da derbas dibe.⁵⁶³ Derheqê neseba wî da lihevkirinek nayê dîtin. Tiştê ku ji Qur'ânê tê famkirin, qewmê ku *Hezretî Şu'eyb* pêxembertîya wan kirîye *Medyen* û *Eyke*⁵⁶⁴ ye. *Hezretî Şu'eyb*, qewmê xwe vexwendîye bal Xwedayê yekane. Di pîvan û weznan da rastî, dadmendîya navbera însanan û terkkirina fesadîyê ji qewmê xwe re tewsiye kirîye.⁵⁶⁵ Qewmê wî ji ber ku guh lê nekirîye, helak bûye. *Hezretî Şu'eyb*, ji ber zarê wî yê xweş û hêza axaftinê bi leqeba *Xetîb 'ul Enbîya* hatîye binavkirin.⁵⁶⁶ *Hezretî Şu'eyb*, ji ber ku xezûrê *Hezretî Mûsa* ye, di edebîyatê da bêtir bi *Hezretî Mûsa* ra cih girtîye. Lê di vî warî da agahîyên teqez li ber destê me tune.

Di nav şî'rên Hâfîzê Şîrâzî da yek car navê *Hezretî Şu'eyb* derbas dibe. Di malika mînak da Hâfîzê Şîrâzî dibêje; kesek ku bixwaze bigihêje mirazê xwe divê bi dil û can di wê rêyê da xizmet bike. Ji bo vê jî ji şîvantiya ku *Hezretî Mûsa* ji *Hezretî Şu'eyb* kirîye ji bo bi keça wî ra bizewice sûd wergirtîye.

شبان وادی ایمن گهی رسد به مراد که چند سال به جان خدمت شعيب کند
Şivanê Newala Eymenê dema ku giha mirada xwe, çend sal bi dil û can xizmeta

Şu'eyb kir. (HŞ 312-6)

Hezretî Şu'eyb bi tu layên xwe di malikên Melâyê Cizîrî da peyda nabe.

⁵⁶³ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Yûsif 20.

⁵⁶⁴ *Qur'âna Pîroz*, Hûd 84. ; Şu'ara 176.

⁵⁶⁵ *Qur'âna Pîroz*, Hûd 84-86.

⁵⁶⁶ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ٢٤٢.

3.7 Hezretî Mûsâ (موسى)

Hezretî Mûsa, yek ji wan pêxemberên mezin e ku bi *Ūlū'l-'Ezm* (أولو العزم)⁵⁶⁷ hatine saloxdayîn. Xwedî kitêbek serbixwe ye ku navê wê *Tewrat* e. Ji nesla Hezretî Ibrâhîm e.⁵⁶⁸ Fir'ewn, ji stêrnasên xwe dibihîze ku ew ê zarokek were dinyayê û yê wî helak bike. Ji ber vê, fermana kuştina hemû zarokên ku ew ê werin dinyayê dide. Dayika *Hezretî Mûsa* lawê xwe dixê sendoqekê û bera çem dide. Hevjîna Fir'ewn rastî wê sendoqê tê û *Hezretî Mûsa* di koşka Fir'ewn da mezin dibe.⁵⁶⁹ *Hezretî Mûsa*, bi şaşî zilamekî dikuje û ji ber vê bûyerê ji Misrê direve diçe Medyenê.⁵⁷⁰ Li vir şivantîya Hezretî Şû'eyb dike û bi keça wî ra dizewice. Piştî qewlê şivantîya wî xilas dibe, ew û hevjîna xwe ji bo vegerin Misrê bi rê dikevin. Di şeveke tarî ya zivistanê da digihêjin çîyayê Tûrê.⁵⁷¹ Li wir agirekî dibîne. Dema nêzî agir dibe bangî wî dibe, bi pêxembertî tê hilbijartin û tê hinartin ji bo Fir'ewn û qewmê wî.⁵⁷² *Hezretî Mûsa* û kesên bawerî pê anîne ji ber zilma Fir'ewn direvin. Li ber behrê *Hezretî Mûsa* 'esayê xwe li behrê dixê, behr diqelişe, ew û hevalên xwe derbas dibin, Fir'ewn û hevalên xwe di behrê da difetisin. Tê çîyayê Tûrê. Li wir *Hezretî Mûsa* diçe li serê çîya dikeve înzîwayê. Dema vedigere dibîne ku qewmê wî ji golikê re perestîne dike.

Xweda, gelek mu'cîze dane *Hezretî Mûsa*. 'Esa û destê sipî û qelişîna behrê çend mu'cîzeyên wî ne.

Hezretî Mûsa, bi gelek nukteyên jîyana xwe di edebîyatê da cih girtîye. Wekî; avêtina wî ya çem, mezinbûna wî di kaxa Fir'ewn de, reva ji Misrê, şivantî, agir û nûr, Çîyayê Tûr, Newala Eymenê, qelişandina deryayê, çil roj mîqata wî, xwestina dîtina Xweda, axaftina bi Xweda re. Li vir em ê tenê li ser malikên ku rasterast navê *Hezretî Mûsa* di wan da derbas dibe rawestin.

Piştî ku qewlê şivantîya *Hezretî Mûsa* bi Hezretî Şû'eyb ra diqede, bi keça wî ra dizewice. Ew û hevjîna xwe vedigerin Misrê. Di şeveke sar û tarî da li Newala Eymenê hevjîna wî dikeve ber welidandinê. *Hezretî Mûsa* ji dûr va agirekî dibîne. Bi

⁵⁶⁷ Bêjeya Ūlū'l-'ezm (أولو العزم) tenê carekê di Qur'anê da derbas dibe. (فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ). *Sebir bike çawa ku Resûlên Ūlū'l-'ezm sebir kirine. (Qur'ana Pîroz, Ehqaf 35.)* Ji bo wan pêxemberan hatîye gotin ku li hember emr û fermanên ku Xweda li wan kirîye bi sebr û sebat sekinîne. (ابن منظور، ج ١٢، ص ٣٩٩) Pêxemberên 'Ulu'l-'ezm ev in. Hezretî Nûh, Hezretî Ibrâhîm, Hezretî Mûsa, Hezretî 'Îsa û Hezretî Muhemmed. Ji bo agahîyên berfireh bnr: (عمر، احمد عمر، أولو العزم من الرسل، دار حسان، دمشق، ص ١٤٠٩.)

⁵⁶⁸ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ٣٤٨.

⁵⁶⁹ شميسا، فرهنگ تلمیحات، ص ٥٥٢.

⁵⁷⁰ *Qur'ana Pîroz*, Qeses 14-17.

⁵⁷¹ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ٣٤١-٣٤٣.

⁵⁷² *Qur'ana Pîroz*, Qeses 29-32.

hêvîya ku hinek ji wî agirî bîne, berê xwe dide agir û diçe.⁵⁷³ Qur'ân di vê babetê da wiha dibêje: *Dema wî agir dîtibû ji malîyên xwe ra got: Hûn bisekinin, belkî ez ji we ra bizotekî bînim yan kesekî rêber li wir peyda bikim.*⁵⁷⁴ Hâfizê Şîrâzî vê bûyerê bi nêrîneke tesewufî di malika xwe da wiha bi cih dike û dibêje ji tecelliyatên Xweda ne ez tenê kêfxweş im, Hezretî Mûsa jî ber bi wê hêvîyê çû:

زآتش وادی ایمن نه منم خرم و بس
موسی آنجا به امید قبسی می‌آید
Bi dîtina agirê Newala Eymenê ne ez tenê şad im, belkî Hezretî Musa jî bi hêvîya şu'leyê ber bi agir hat. (HŞ 378-3)

Dema *Hezretî Mûsa* ber bi agir va çû ji alîyê rastê newalê, di wê serzemîna pîroz da dengê hat, jê ra got: *Ez Xwedayê yekta û perwerdegarê 'âleman im.*⁵⁷⁵ Piştî vê bihîstinê li darê nêrî ku agirekî sipî û bê dû jê diçe.⁵⁷⁶ Hâfizê Şîrâzî gula sor wekî nîşana agirî dinasîne. Di nêrîna wî da ji dara gula sor nukteyên tewhîdê dikare were bihîstin.

یعنی بیا که آتش موسی نمود گل
تا از درخت نکته ی توحید بشنوی
Gul heman agirê Hezretî Mûsa ye ku di çiyayê Turê da xuya bubû, Were! Ji dara gulê nukteyên letîfyên tewhîdê bibihîze. (HŞ 715-2)

Hezretî Mûsa diçe ser Çîyayê Tûrê ji bo ku bi Xweda ra biaxive. Li wî cihê ku ew ê bi Xweda ra biaxive ji Xweda ra dibêje *Xuya bibe ez te bibînim*. Di bersîvê da Xweda ferman dike: *Tu min nabînî* di vê guftogoyê da du bêje; *bibînim* (Erînî - اَرْنِي) û *tu min nabînî* (لَنْ تَرَانِي - len-terânî)⁵⁷⁷ ji teref şa'iran gelek hatîye bikaranîn. Hâfizê Şîrâzî vê bûyerê di hestên xwe yên 'aşîqâne da bi kar tîne. Xwe dişîbîne *Hezretî Mûsa* û bi vî rengî daxwaza dîtîna me'şûqa xwe dike.

با تو آن عهد که در وادی ایمن بستیم
همچو موسی ارنی گوی به میقات بریم
Bi wê peymanê ku di Newala Eymenê da me dabû hevûdû, Wekî Hezretî Mûsayê "erînî" go em herin cihê hevîdîtinê. (HŞ 564-4)

Hezretî Mûsa, bi serpehatîyên xwe malikên Melâyê Cizîrî jî rengîn dike. Agirê ku *Hezretî Mûsa* li Çîyayê Tûrê dîtibû tecellîya nûra Xweda bû. Ev tecellî di heman demê da di xweşikên dinyayê da jî peyda dibe. Ji ber vê ew kesên ku tecellîya Xweda di xweşikên dinyayê da bibîne û ber bi wan va here wekî *Hezretî Mûsa* ne di rêyek xelet da ye.

⁵⁷³ شمیس، فرهنگ تلمیحات، ص ۵۵۷.

⁵⁷⁴ Qur'âna Pîroz, Taha 10.

⁵⁷⁵ Qur'âna Pîroz, Qeses 30.

⁵⁷⁶ شمیس، فرهنگ تلمیحات، ص ۵۵۶.

⁵⁷⁷ Qur'âna Pîroz, 'Eraf 143.

Mişlê Mûsâ wî tecellâyâ te dî
Ê tu dî kânê xetâ kânê xelet (MC 139-2)

Çîyayê Tûr çawa cihê tecellîyê ye ji *Hezretî Mûsa* ra her wiha dilê rehrewê rêya Xweda jî wargehê tecellîyan e. Melâyê Cizîrî, dilê xwe dişîbîne Çîyayê Tûrê û xwe jî peyrewê *Hezretî Mûsa* dinasîne.

Tûr im bi dil û peyrewê Mûsâ yimî ez
Ateşperesê nûrê tecellâ yimî ez (MC 111-1)

Agirê ku *Hezretî Mûsa* dîtibû û ku bi rastî nûr bû, remza tecellîya Xweda ye ku di xweşikên dinyayê da xuya dibe. Ew nûra di xweşikan da 'aşîq wekî *Hezretî Mûsa* xwe lê digirin û dilê wan ber bi wan va diçe. Ew nûr wekî pirekê ye di navbera 'işqa mecazî û 'işqa heqîqî da ku di encamê da Melâyê Cizîrî dibêje bi alîkarîya Xweda ez gihîştîm armancê û min bêhna xwe veda.

Ji vê nûrê ji vê nârê *me Mûsâyî qebes îsâ*
Bi rojê râst û çep târî *bi teyrê dil qefes îsâ*
Ji mihra neqşê Cebbârî *ji âgir min nefes îsâ* (MC 304-2)

Hezretî Mûsa daxwaza dîtina Xweda kiribû. Melâyê Cizîrî di 'işqê da xwe dişîbîne *Hezretî Mûsa* û ji xwe ra rewa dibîne ku ew jî daxwaza dîtina me'sûqa xwe bike.

Eger de'wâyê Mûsâyî di 'işqê dâ bikim câiz
Melâ dâim tecellâ ye ji wê terhâ şelâl ebrû (MC 223-5)

Dil ji ber ku wargeha tecellîyan e wekî Tûrê Sîna, divê 'aşîq daxwaza dîtina mehbûba xwe bi çav neke, dîtina bi dil bike. Yan na ew ê wekî *Hezretî Mûsa* bersiva *tu min nabînî* bibihîze.

Dilo er ne, meke gâzî cewâbâ "len terânî" dâ
Ji ber fikrê di Mûsâyî dilê min tûrê sînâ ye (MC 221-3)

Yek ji mu'cîzeyên ku Xweda dabû *Hezretî Mûsa* spîbûna destê wî bû. Dema destê xwe ji bêrika xwe derdixist bêyî ku zerer bigihêje wî spî dibû.⁵⁷⁸ Melâyê Cizîrî bi telmîh amaje bi vê mu'cîzeyê dike. Canê wî yekser bi agirê 'işqê wekî destê *Hezretî Mûsa* di îse.

Min cân yedê beydâ ye ji 'Îsâ çî xeber dim
Min âteşê Mûsâ diye gulnârê şerâbê (MC 246-5)

3.8 **Hezretî Xiðir (خضر)**

Di tefsîrên Qur'ânê da û berhemên ku jîyana pêxemberan vedikolin derbarê nav, neseb, pêxembertî û jîyana wî da lihevkirinek neyê dîtîna jî, di kultura Îslamê da

⁵⁷⁸ Qur'âna Pîroz, Neml 12.

li gorî gelek rîwayetan navê wî *Xidir* e û pêxember e.⁵⁷⁹ Di Qur'âna Pîroz da navê wî derbas nabe. Di sûreyê *Kehf* da ji bo wî wiha hatîye gotin; *Bendeyek ji bendeyên me, ji teref me rehmet⁵⁸⁰ jê ra hatîye dayîn û bi 'ilmê ledun hatîye perwedekirin.*⁵⁸¹

Hezretî Xidir, bi du layên xwe derdikeve pêş. Yek, di Qur'ânê da wekî heval û murşidê *Hezretî Mûsa* amaje pê hatîye kirin û kiryarên wî yên bi sir û raz hatîye vegotin. Kunkirina keşfîyê, kuştina zarokekî, avakirina dîwarekî xerabe ji van sir û raza ne. Qur'ân, paşê bê aramîya *Hezretî Mûsa* di van kiryarên bi sir û raz da û di encamê da şîroveya sir û razan tîne ziman.⁵⁸² Di tesewufê da ev bûyer gelek girîng hatîye dîtîn. Di vê bûyerê da *Hezretî Xidir* mezherê îsmê *Bâtîn* e û *hezretî Mûsa* Mezherê îsmê *Zâhir* e.⁵⁸³ Yanî *Hezretî Mûsa* xwedîyê 'ilmê zâhir e ku şerî'et e û *Hezretî Xidir* xwedîyê 'ilmê bâtin e ku me'rîfet e.

Aliyê *Hezretî Xidir* yê duyem lêgerîn û peydakarina *Ava Heyatê* ye. *Hezretî Xidir*, *Hezretî Ilyâs* û *Hezretî Îskender* ji bo peydakirina *ava heyatê* ber bi welatê zilûmatê (tarîfîyê) diçin. *Hezretî Xidir* û *Hezretî Ilyâs* kanîya *ava heyatê* peyda dikin, jê vedixwin û digihêjin temenê ebedî. Lê Îskender nagihêje wê avê û jê venaxwe.⁵⁸⁴

Di malikên Hâfizê Şîrâzî da bêtir têkilîya *Hezretî Xidir* û *ava heyatê* cih girtibe jî di çend malikan da hin taybetîyên din jî tîn dîtîn.

Hezretî Xidir, wekî îstî'are ji bo murşidê kamil û rehnumayên rêka seyr û silûkê cih digire. Hâfizê Şîrâzî ji bo pêdîvîya hebûna murşidekî kamil ji *Hezretî Xidir* sûd werdigire.

قطع این مرحله بی هم‌راهی خضر مکن
ظلمات است بترس از خطر گمراهی

Bê hevaltîya Xidir di vê rêyê da nemeşe, tarîfî ye, bitirse ji xetera wendabûnîyê. (HŞ 719-2)

Di kultura Îsalmê da *Hezretî Xidir* alîkarê kesên ketî ye. Çawa ku Melâ Xelîlê Sêrtî (1754-1843) di 'eqîdenameya xwe da ji bo *Hezretî Xidir* û *Hezretî Ilyâs* dibêje, pêxember in, dijîn û alîkar in.⁵⁸⁵ Herwiha *Hezretî Xidir* nîşana bereketê ye. Lewra devera ku *Hezretî Xidir* di wê ra derbas bibe yan li wir rûdinê (bi taybet devara ku

⁵⁷⁹ Ji bo delîlên pêxembertîya *Hezretî Xidir* bnr: (ابن کثیر، قصص الأنبياء، ص ۵۲۲-۵۲۴)

⁵⁸⁰ Ensarî, bêjeya rehmê ku di ayetê da derbas dibe bi *Pêxembertî, 'ilm, ta'et û temenê dirêj* watedar dike. (المبيد، ج ۵، ص ۷۱۹)

⁵⁸¹ *Qur'âna Pîroz*, *Kehf* 65.

⁵⁸² *Qur'âna Pîroz*, *Kehf* 60-73.

⁵⁸³ زمانى، ج ۲، ص ۵۶۱.

⁵⁸⁴ شميسا، فرهنگ تلمیحات، ص ۲۴۹.

⁵⁸⁵ *Xweşin Xidr û Îlyasî her vê demê*

Nebî nin, li derdan dîkin melhemê (Sêrtî, Melâ Xelîlê, *Nehcu'l-Enam*, Guhartin ji tîpên erebî: Zeynelabîdîn Kaya, Weşanxana Kurdistan, Stockholm 1988, r 15.)

hişk be) hişîn dibe, gul û gîya şîn tê.⁵⁸⁶ Ji ber vê, jê ra *Xidrê pî pîroz*- خضر پی خجسته hatîye gotin. Hâfizê Şîrâzî jî van herdû taybetîyan di yek malikê da bi cih dike.

تو دستگیر شو ای خضر پی خجسته که من
پیاوه می روم و همهران سوارانند
Tu alîkarîya min bike ey Xidrê pî pîroz, ez piyade dimeşim û hevalên min hemî siwar in. (HŞ 323-7)

Hezretî Xidir, wekî li jor hate gotin ji ber ku ava heyatê vexwarîye heta dawîya dinyayê ew ê li jîyanê be. Ev temendirêjî ji bo ravekirina tiştên fânî wekî mînak tê dayîn. Lewra di encamê da *Hezretî Xidir* jî ew ê mirinê tam bike.

نه عمر خضر بماند نه ملک اسکندر
نزع بر سر دنیی دون مکن درویش
Ey derwêş! Ber serê dinya fânî ceng û cîdalê neke, ne temenê Xidir û ne selteneta Îskender dimîne. (HŞ 454-7)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Hezretî Xidir* bêtir bi gihastina ava heyatê cih digire. Bûyera *Hezretî Xidir* û *Hezretî Mûsa* di yek malîkekê da derbas dibe.

Hezretî Xidir ghiştîye ava heyatê û jê vexwarîye. Melâyê Cizîrî tevî ku telmîha vê bûyerê dike regekî din dide bûyerê. Li gorî Melâyê Cizîrî *Hezretî Xidir* vajî çûye. Lewra bêyî çûna nava tarîtiyê bi dil dikare ava heyatê were peydakirin ku Melâyê Cizîrî dibêje ez ghiştîmê.

*Ez gihâm avā heyâtê xef ji dil
Xidrî vājî çûye heywânê xelet* (MC 139-6)

Peyda kirina ava heyatê ji teref *Hezretî Xidir* û *Hezretî Ilyâs* û peyda nekirina *Hezretî Îskender* alîkarîyekî me'newî destnîşan dike. Ev alîkarî di malîka Melâyê Cizîrî da tecellî ye ku bi vê tecellîyê ghiştîye ava heyatê. Bi zimanê Melâyê Cizîrî ava heyatê çeşmeya dilî ye.

*Seherê Xidrê 'ināyet ko birîn çeşmeyê dil
Bi cehānê me nezer dā ko cehān 'eynê serāb* (MC 53-1)

Hezretî Xidir, remz û nîşana murşidê kamil e. Melâyê Cizîrî dema dibêje; *eger destegîr ne Hezretî Xidir be bi çek û leşkeran tu nagihêjî ava heyatê* (MC 2-310) bi hunera îstî'areyê alîkarîya murşidê kamil destnîşan dike. Kesê ku bixwaze di seyr û silûkê da bigihêje armanca xwe divê hevaltîya *Hezretî Xidir* bike. (MC 2-25) *Û* di malîka jêrîn da *Hezretî Xidir* ew rehrewê rêya sulûkî ye ku ghiştîye heqîqetê;

*Ê bi Xidrî rā divêt avā heyâtê bit neşîb
Dê bi se'y û cehdê yeksān bin li bāl wî rûz û şeb* (MC 57-2)

⁵⁸⁶ غزنوی، ابی نصر محمد بن قطان، سراج القلوب، انتشارات کتابچی، تهران بی تاریخ، ص ۶۰.

Cihê ku Hezretî Mûsa û *Hezretî Xidir* li kêleka deryayê hevûdû dibînin.⁵⁸⁷ Li kêleka deryayê masîyê Hezretî Mûsa û hevalê wî ku masî biraştibû û ji bo di rê da bixwin amade kiribû zindî dibe û xwe davêje deryayê. Hezretî Mûsa li pey masî di deryayê da dimeşe û rastî *Hezretî Xidir* tê.⁵⁸⁸ Melâyê Cizîrî hem amaje bi vê bûyerê dike hem sir û razên ku bi Hezretî Xidir ra hene, bi bîr tîne.

*Xidrê di remz û mu'cizê mesti me dî di dengizê
Hati peyâleyek di dest eşkere sed peyâle kir (MC 103-1)*

Hezretî Xidir, di malikeke din a Melâyê Cizîrî da remza temen dirêjîyê ye.

*Mâ te 'umrê Xidr û Nûh û mulkê Zulqerneyn bitin
Gunbedâ çerxê mulemme' her bi te me'mûri bî (MC 286-9)*

3.9 Hezretî Ilyâs (إلياس)

Hezretî Ilyâs, yek ji wan pêxemberan e ku navê wî di Qur'ânê da derbas dibe.⁵⁸⁹ Derbarê neseba wî da di berheman da lihevkirinek nayê dîtin. Qewmê xwe vexwendîye bi bal perestina Xweda. Kêm kesan bawerî bi wî anîye. Qewmê wî xwestine wî bikujin. Ji ber qewmê xwe revîyaye û di şikefteke çîyê da jîyaye. Qewmê wî bi birçîbûnîyê helak bûye.⁵⁹⁰ Di bawerîya Îslamê da yek ji wan pêxemberan e ku heta dawîya dinyayê ew ê zindî bimîne. Wekî ku Melâ Xelîlê Sêrtî di *Nehcu'l-Enamê* da gotîye.⁵⁹¹

Di edebîyata klasîk a kurdî da *Hezretî Ilyâs* û Hezretî Xidir bi lêgerîna ava heyatê û peydakirina wê cih werdigirin.⁵⁹² Wekî li jor hate gotin *Hezretî Ilyâs* gihiştîye ava heyatê û ji wê avê vexwarîye.

Em di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da rastî *Hezretî Ilyâs* nayên. *Hezretî Ilyâs*, di dîwana Melâyê Cizîrî da bi Hezretî Xidir û ava heyatê di malikekê da tê dîtin. Di vê malikê da Hezretî Ilyâs remza hêza leşkerîyê ye. Li gorî Melâyê Cizîrî, ew kesê ku alîkarîya Hezretî Xidir bo wî nebe, bi hêza xwe nikare xwe bigihîne ava heyatê.

*Destigîrê te nebit Xuḍrê 'ināyet li qidem
Nagihê âbê heyātê bi du 'esker Ilyās (MC 122-7)*

3.10 Hezretî Dawûd (داوود)

Hezretî Dawûd, yek ji wan pêxemberan e ku Qur'ân behsê jê dike. Neseba wî digihêje Hezretî Ye'qûb. Bavê Hezretî Suleymân e. Zebûr, ku yek ji çar kitêbên

⁵⁸⁷ *Qur'âna Pîroz*, Kehf 60-61.

⁵⁸⁸ المبيد، ج ٥، ص ٧١٧.

⁵⁸⁹ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Saffat 123-130.

⁵⁹⁰ المبيد، ج ٨، ص ٢٩٥.

⁵⁹¹ Bnr: tez, r 165, jêrenot, 585.

⁵⁹² شميسا، فرهنگ تلمیحات، ص ٢٤.

asîmanî ne, ji bo wî hatîye hinartin.⁵⁹³ *Hezretî Dawûd* bi dengê xwe yê xweş tê nasîn. Qur'ân dibêje me *fezîletek, serdestîyek, qencîyek*,⁵⁹⁴ daye wî. Tefsîr dibêjin ev serdestî xweşavazî û nermkirina hesinî ye. *Hezretî Dawûd* dema ayetên Zebûrê dixwendin teyr dihatin guhdarîya wî dikirin û çîya bi wî ra hevaltîya xwendinê dikir. Qur'ân, di heman ayetê da vê yekê dide zanîn. Qur'ân, dîsa di heman ayetê da amaje bi nermkirina hesinî jî dîke ku ev jî yek ji taybetîyên *Hezretî Dawûd* e.⁵⁹⁵

Hezretî Dawûd, bi wê qencîya ku Xweda lê kiribû ji hesin zirx amade dikir û bi firotina wan zirxan debara xwe dikir.⁵⁹⁶ Di nava kultura Îslamê da rojîya *Hezretî Dawûd* wekî cûreyek taybet a rojîyê tê nasîn. *Hezretî Dawûd* rojek bi rojî bû û rojek jî fîtar bû. Ji rojîya bi vî rengî ra *Rojîya Dawûd* tê gotin.⁵⁹⁷

Di du malikên Hâfîzê Şîrâzî da em rastî navê *Hezretî Dawûd* tên. Di herdû malikan da navê wî û navê *Hezretî Suleymân* bi hev ra derbas dibe. Di heman demê da, di van malikan da *Hezretî Dawûd* bi dengê xwe yê xweş cih girtîye.

برکش ای مرغ سحر نغمه ی داوودی باز
که سلیمان گل از باد هوا باز آمد
Ey bilbil, were nexmeyên xwe yê Dawudî bixwîne, lewra gula sor wekî

Suleymân bi bayê seba bi bax û çîmenê hat. (HŞ 292-2)

Hezretî Dawûd di dîwana Melâyê Cîzîrî da cih nagire.

3.11 *Hezretî Suleymân* (سلیمان)

Hezretî Suleymân kurê *Hezretî Dawûd* e. Navê wî û qisseyên wî di Qur'ânê da derbas dibin. Taybetîyên wî yên derdikevin pêş ev in: Xweda wî hînî zimanê hemû ajalan kiribû.⁵⁹⁸ Ba, di bin emrê wî da bû.⁵⁹⁹ Xwedî seltenet bû. Ango hem pêxember bû û hem serokê dewletê bû. Ji bo selteneta wî Xweda her tişt dabû wî.⁶⁰⁰ Wekî, leşker, amrazên cengê, zanebûna kar û barê dinyayê, zanebûna tiştê dilê însanan, hikmet, fermanarîya li ser cin, însan, Şeytân û ajalan.⁶⁰¹ Wezîrekî wî bi navê Asef hebû ku zêde zîrek bû. Bûyera *Hezretî Suleymân* bi gêrikan ra û bi Belqîsa Melîkeya Sebayê ra girîng e.

⁵⁹³ *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 123.

⁵⁹⁴ *Qur'âna Pîroz*, Sebe 10.

⁵⁹⁵ شميسا، فرهنگ تلمیحات، ص ۲۶۷-۲۶۹.

⁵⁹⁶ المبيد، ج ۸، ص ۱۱۲.

⁵⁹⁷ النووي، ص ۳۹۳.

⁵⁹⁸ *Qur'âna Pîroz*, Neml 16.

⁵⁹⁹ *Qur'âna Pîroz*, Sebe 12, Enbiya 81, Sad 36.

⁶⁰⁰ *Qur'âna Pîroz*, Neml 16.

⁶⁰¹ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ۵۷۸.

Hezretî Suleymân bi van taybetîyên xwe pêxemberekî pir layane ye. Di edebîyatê da şa'iran li gorî mebestên xwe ji taybetî û bûyerên *Hezretî Sûleyman* sûd wergirtine.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da yek ji wan pêxemberên ku zêde navê wî derbas dibe *Hezretî Suleymân* e. Hâfizê Şîrâzî 21 carî navê wî di malikên xwe da bi kar anîye.

Di Qur'âna Pîroz da bi hîkmet û 'ilmê *Hezretî Suleymân* îşaret hatîye dayîn.⁶⁰² Hâfiz îşaretî bi bal 'ilmê wî, hikmeta wî û zanebûna wî dike. Hâfizê Şîrâzî memduhê xwe dişîbîne *Hezretî Suleymân* ku Xweda zanebûn û hîkmet daye wî.

در حکمت سلیمان هر کس که شک نماید
بر عقل و دانش او خندند مرغ و ماهی

Di hikmeta Suleymân da ew kesê ku bikeve gumanan, balende û masî dê bi hiş û zanebûna wî bikenin. (HŞ 720-3)

Dîsa Di Qur'ânê da derbas dibe ku cin û îns û hemû ajal dibin fermanîya wî da bûn⁶⁰³ û Xweda famkirina zimanê perende û heşeratan bi wî dabû zanîn.⁶⁰⁴ Hâfizê Şîrâzî di malika xwe da amaje bi zanebûna zimanê perende û heşeratan dike û heman bêjeya Qur'ânê *Mentiqe't-teyr-*⁶⁰⁵ *مَنْطِقُ الطَّيْرِ* iqtîbas dike. Hâfizê Şîrâzî ji bo zewala tiştên maddî mînakê ji taybetîyên *Hezretî Suleymân* werdigire.

شکوه آصفی و اسب باد و منطق طیر
به باد رفت و از او خواجه هیچ طرف نیست

Hêza Asefî, hespê bayê û zimanê perendeyan bayê bir, di encamê da jê sûd wernegirt. (HŞ 92-1)

Xweda, ba jî xistibû bin emr û fermana *Hezretî Suleymân*. *Hezretî Suleymân* dema bixwesta biçe cihekî bayê, wî û textê wî di heman demê da dibir wî cihî.⁶⁰⁶ Hâfiz di gelek malikên xwe da bi hunera îhamê amaje bi bayî dike. Di malika jêrîn da ba remza tiştên nepayîdar e. Di heman demê da, di malikê da telmîha bûyera *Hezretî Suleymân* û gêrikê jî heye.⁶⁰⁷

گره به باد مزن گر چه بر مراد وزد
که این سخن به مثل باد با سلیمان گفت

Qîmet nede bayê her çend ku bi daxwaza te biwez e, ku ev gotin wekî metela bayê ji Suleymân ra got. (HŞ 177-7)

⁶⁰² Qur'âna Pîroz, Enbîya 79.

⁶⁰³ Qur'âna Pîroz, Sad 27-28.

⁶⁰⁴ Qur'âna Pîroz, Neml 15.

⁶⁰⁵ Qur'âna Pîroz, Neml 16.

⁶⁰⁶ شمیس، فرهنگ تلمیحات، ص ۳۳۳.

⁶⁰⁷ Hezretî Suleyman dema ji girêkê pend dixwaze, gêrik wiha dibêje; "Ya Resûlê Xweda, tu dizanî çima Xweda ba ji bo te musexxer kirîye?" Hezretî Suleyman dibêje: "Na". Gêrik dibêje; "Ji bo ku tu bizanibî karê cihanê seraser ba ye. Ji nişkave ew ê ji ber te here û payîdar namîne." (غزنوی، ص ۴۰)

Yek ji nîşana selteneta *Hezretî Suleymân* gustîla wî bû. Qur'ân behs jê nake. Lê di qîseyên derbarê *Hezretî Suleymân* da derbas dibe. Hungulîstek *Hezretî Suleymân* hebû ku hemû selteneta wî bi wê bû.⁶⁰⁸ Navê Xweda yê herî mezin; *Îsmê E'zem* li ser nivîsandîbû.⁶⁰⁹ Hâfîzê Şirazî di malikên xwe da ji vê gustîlê gelek sûd werdigire.

گر انگشت سلیمانی نباشد چه خاصیت دهد نقش نگینی
Eger tilîka Suleymân nebe, tu taybetîyê nade ew neqşa li ser gustîlê. (HŞ 711-

1)

Di qîseyan da derbas dibe ku hungulîska *Hezretî Suleymân* bi şikleki dikeve destê Şeytân. Şeytân xwe weki *Hezretî Suleymân* nîşan dide û çil rojî hukum dike. Çi dema ku Şeytân biryarên dijî şerî'etê dide 'âlim û hukemayên demê fam dikin ku ne *Suleymânê* heqîqî ye. Bi alîkarîya Asef gustîl dîsa digihêje *Hezretî Suleymân*.⁶¹⁰ Hâfîz vê bûyerê bi telmîh dixwe nav malikên xwe.

من آن نگین سلیمان به هیچ نستانم که گاه گاه بر او دست اهرمن باشد
Ez, wê gustîla Hezretî Suleymân ku carînan di destê ehremen da ye qet naxwazim. (HŞ 274-2)

Du ajal di qîseyaya *Hezretî Suleymân* da cihekî taybet digirin. Yek jê Gêrik e û yek jî Hudhud e. Dema *Hezretî Suleymân* û leşkerên xwe di Newala Nemlê ra derbas dibin, serokê gêrikan hevalên xwe hişyar dike ji bo ku di bin lingên leşkeran da payîmal nebin. Ev bûyer di Qur'ânê da jî cih girtîye.⁶¹¹ Hâfîzê Şîrazî bi vê bûyerê amaje dike.

نظر کردن به درویشان منافی بزرگی نیست سلیمان با چنان حشمت نظرها بود با مورش
Xwedî derketina li derwêşan ne dijî mezinantîyê ye, Suleymân bi hemû mezinahîya xwe li girêkên xwe xwedî derdiket. (HŞ 439-6)ś

Hezretî Suleymân dema ku hemû perendeyan kom dike û rewşa wan dipirse Hudhudî di nava wan da nabîne. Ji tunebûna wî hêrs dibe. Hudhud vedigere û bi kêfxweşî mizginîyê dide *Hezretî Suleymân* ku agahîyeke girîng ji welatê Sebayê anîye. Behsa Belqîsê dike. *Hezretî Suleymân* nameyekê ji Belqîsê ra dinivîsîne û bi Hudhudî jê ra dişîne. Ev bûyer di Qur'ânê da di Sûreyê Neml da derbas dibe.⁶¹²

⁶⁰⁸ فروزانفر، ص ۳۸۰-۳۸۱.

⁶⁰⁹ هاشم جاوید، حافظ جاوید۔ شرح دشواری های ابیات و غزلیات دیوان حافظ - انتشارات فرزانه روز، تهران ۱۳۷۵، ص ۱۷۷.

⁶¹⁰ شمیس، فرهنگ تلمیحات، ص ۳۳۵.

⁶¹¹ *Qur'âna Pîroz*, Neml 18-19.

⁶¹² *Qur'âna Pîroz*, Neml 20-28.

Hâfizê Şîrâzî di hestên xwe yên 'aşiqâne da îşaretê bi vê bûyerê dike. Bayê sebayê dişîbîne Hudhudî ku xeberên xweş tîne.

صبا به خوش خبری هدهد سلیمان است که مزده طرب از گلشن سبا آورد
Bayê sebayê bi anîna agahîyên xweş wekî Hudhudê Suleymân e, ku mizgînîyên şadîyê ji gulşena yarê tîne. (HŞ 253-5)

Navê Hezretî Suleymân di malikên Melâyê Cizîrî da çar caran derbas dibe. Lê di van çar malikan da mirov dikare hemû qîsseya *Hezretî Suleymân* jê derxîne. Melâyê Cizîrî, di malika xwe da bi telmih, gustîla *Hezretî Suleymân* a ku nîşaneya hukumraniya wî bû, tîne ziman. Melâyê Cizîrî vê telmîhê ji bo yara xwe bi kar tîne. Ji bo ku yar, serdestiyê li ser 'aşiqê xwe bike pêdivîya wê bi gustîlê tune, xweşikahîya dev û diranê wê yên wekî le'l û gewher tenê bes in, ji bo vê hukumraniyê.

*Te çi hâcet bi Suleymāniyê husnê
Xatemek le'le bi gewher ānī (MC 277-8)*

Melâyê Cizîrî bûyera gêrikan û *Hezretî Suleymân* bi bîr tîne. Melâyê Cizîrî Memduhê xwe dişîbîne *Hezretî Suleymân* û kesên li dîwana wî jî dişîbîne gêrikan. Di vê telmîhê da *Hezretî Suleymân* sembola hêz û quwwetê ye û kesên berdestê wî jî remza bêhêzî û bê taqetîyê ne.

*Gerçî der dîwānê heçret pîr heqîr in şubhê mûr
Çeşmê te çeşmê Suleymānî bi hālê mûri bî (MC 287-1)*

Hudhud wekî li jor hate gotin peykê agahîyan e. Di malika Melâyê Cizîrî da jî heman peywîrê digire ser milê xwe. Di malikê da Melâyê Cizîrî xwe şibandîye *Hezretî Suleymân* ku Hudhud mizgînî jê ra anîye. Di malikê da herçend amaje pê nehatibe kirin jî yara Melâyê Cizîrî ew Belqîs e ku Hudhud agahîyan ji wê tîne.

*Suleymānî me ez dîsā
Seher hudhud bişāret dā (MC 302-2)*

Me li jor got ku Hezretî Suleymân nameyekê ji Belqîsê ra dişîne. Belqîs biryar dide ku biçe nik *Hezretî Suleymân*. *Hezretî Suleymân* ji 'ifrît û cinan daxwaz dike ku berya Belqîs bigihêje ba wî, textê wê, ji Sebayê bîne. Asif, di demek gelek kurt da textî amade dike.⁶¹³ Anîna textê Belqîsê di Qur'ânê da derbas dibe.⁶¹⁴ Telmîha bûyerê di hestên Melâyê Cizîrî ya 'aşiqâne da cih digire.

*Minnet ji t̄ālî' her ji bext Āsif bi text ū bext ū rext
Belqîs ewī anī bi text Īro Suleymān ī Melā (33-8)*

⁶¹⁴ *Qur'āna Pîroz*, Neml 38-40.

⁶¹³ ابن كثير، قصص الأنبياء، ص ٥٨٣-٥٨٥.

3.12 Hezretî 'Îsâ (عیسی), Mesîh (مسیح)

Hezretî 'Îsa, yek ji pêxemberên *Ûlu'l-'ezm* e. *Xweda*, kitêba bi navê *Încîl* bo wî hinartîye. Navê dayika wî *Meryem* e. *Hezretî 'Îsa*, yekem kes e ku bê bav hatîye dinyayê. Bêbav hatina dinyayê ya *Hezretî 'Îsa* di *Qur'ânê* de cih werdigire.⁶¹⁵ *Taybetîyên Hezretî 'Îsa*, bi gotineke din mu'cîzeyên ku *Xweda* dabûne wî ku di heman demê da di edebîyatê da jî ji wan sûd tê wergirtin, ev in; dema ku zarok bû û di dergûşê da bû axivîye û pêxembertîya xwe anîye ziman,⁶¹⁶ *Hezretî 'Îsa* kesên mirî zindî dikir, kesên ji dayika xwe kor hatibû dinyayê çavên wan ronî dikir û kesên gurî û kotî (bi 'erebî beres û bi tirkî cuzzam) baş dikir.⁶¹⁷

Hezretî 'Îsa, yek ji wan pêxemberan e ku hêj li heyatê ye. Wekî *Qur'ân* ferman dike; *nehatîye kuştin, nehatîye daliqandin, Xweda ew bi bal xwe va bilind kirîye*.⁶¹⁸ Li ser vê agahîya ku *Qur'ân* dibêje, *Xweda ew bi bal xwe va bilind kirîye*. Derbarê çiyê wî da, di nav zanayên *Îslamî* de lihevkirinek tune.⁶¹⁹

Di dîwana *Hâfizê Şîrâzî* da heft caran *Hezretî 'Îsa* û heft caran *Mesîh* derbas dibe. *Hezretî 'Îsa* di malikên *Hâfizê Şîrâzî* da bêtir bi zindî kirina mirîyan cih girtîye. Di van malikan da kesê mirî yan nesax heman şa'ir bi xwe ye û *Hezretî 'Îsa* jî me'şûqa wî ye. Siha yara wî wekî *Hezretî 'Îsa* dema bê ser cismê wî yê bê can, wî zindî dike. (HŞ 106-7) Ew nefesa *Hezretî 'Îsa* ku mirîyan zindî dike nukteyek zirav e ji lêvên yarê yên sor û ava *Xidir* (ava heyatê) ku kesên vedixwe herdem zindî dimîne remzek ji lêvên yarê ne. (HŞ 647-2) Barê xema 'îşqê ku piştî 'âşiqî di bin da xûz bûye tenê bi hatina me'şûqa wekî *Hezretî 'Îsa* dikare sivik bibe. (HŞ 174-5)

جان رفت در سر می و حافظ به عشق سوخت عیسی دمی کجاست که احیای ما کند

Can di vexwarina şerabê da çû û Hâfiz bi 'îşqê şewitî, Me'şûqa wekî Hezretî 'Îsa li ku ye me dîsa ji nû vejîne? (HŞ 310-8)

Mesîh û *Mesîha* leqebên *Hezretî 'Îsa* ne. Ji *Suryanî* bi wateya *pîroz* an ji *'Îbranî* bi wateya *padîşah* û *pêxember* ketîye zimanê êrebî.⁶²⁰ Di malikên *Hâfizê Şîrâzî* da herdû jî tîn dîtin. Ev herdû leqeb jî di hizrên 'âşiqâne da cih digirin. Di malika jêrîn ya *Hâfizê Şîrâzî* da 'îşq hatîye şibandin bi *Hezretî 'Îsa*.

طبيب عشق مسیحادم است و مشفق ليک چو درد در تو نبیند که را دوا بکند

⁶¹⁵ *Qur'âna Pîroz*, Nîsa 171.

⁶¹⁶ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, *Meryem* 29-35.

⁶¹⁷ *Qur'âna Pîroz*, *Maîde* 110; *Alî 'Îmran* 49.

⁶¹⁸ *Qur'âna Pîroz*, *Nîsa* 157-158.

⁶¹⁹ شمپسا، فرهنگ تلمیحات، ص ۳۲۲-۳۲۳.
⁶²⁰ دهخدا، ج ۱۳، ص ۲۰۹۱۰.

'Işq, bijişkê dilsoz e û nefesa Mesîha pê ra ye, lê bi te ra derd nebîne wê çi dewa bike. (HŞ 311-4)

Di malikên Melâyê Cizîrî da hem navê *Hezretî 'Îsa* û hem leqebên wî derbas dibin. Malikên ku nav û bernavkên *Hezretî 'Îsa* di wan da cih girtîye bi gelemperî ramanên 'aşiqâne rave bikin jî di malika jêrîn da em nêrîneke tesewufî jî dibinin.

*Min cān yedê beydā ye ji 'Îsā çî xeber dim
Min āteşê Mūsā diye gulnari şerabê (MC 246-5)*

Di malikên 'aşiqâne da yar hatîye şibandin bi *Hezretî 'Îsa* ku mirîyan vedijîne û nesaxan dewa dike. Yar, tenê ne wekî *Hezretî Mûsa* xwedî mu'cîzeyaya destê spî ye, di heman demê da wekî *Hezretî 'Îsa* bi nefesa xwe mirîyan vedijîne. (MC 231-2) Armanca yarê ew e ku ji bo wekî *Hezretî 'Îsa* mu'cîzeyaya xwe nîşan bide, dil û canê 'aşiqî talan bike. (MC 270-4) Her mizgînîyek yarê wekî nefesa *Hezretî 'Îsa* can dibexşîne. (MC 302-3) Yar, wekî *Mesîh* şîfakirox e li nesaxên xwe yên ku bi herdû çavên xwe yên wekî reşmaran ew birîndar kirine û li kuştîyên birûyên xwe yên wekî şûr û xenceran. (MC 256-5) Di malika jêrîn da di saloxetên yarê da rasterast telmîha zindîkirina mirîyan hatîye kirin.

*Meyyitān ew rādikit yekser dilān yexmā dikit
Ismê e'zēm mā dizānit yā Mesîhā ew b xwo ye (MC 195-1)*

3.13 *Hezretî Muḥammed (محمد) (Eḥmed (احمد)– Muştefā (مصطفى)*

Hezretî Muhemmed (s.a.s.) pêxemberê herî dawî ye.⁶²¹ Piştî Wî tu pêxember nayên hinartin. Navê dîne wî Îslam e.⁶²² Navê berhema ku Xweda jê ra şandîye Qur'ân e. Navê bavê wî 'Ebdullah e. Navê dayika wî Amîne ye. Di sala 570ê yê zayîne da li Mekkeyê ji dayika xwe ra bûye.⁶²³ Di çil salîya Wî da pêxembertî jê ra hatîye. 23 salan pêxembertî kirîye. Li Medîneyê di sala 632yê zayîne, di 63 salîya xwe da rehmet kirîye.⁶²⁴ Her pêxember li heman mekanê ku Xweda wan ji dunyayê dibe tîn veşartin. Ji ber vê *Hezretî Pêxember* (s.a.s.) li heman jûreke mala xwe hate definkirin.⁶²⁵

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navên Resûlê Xweda (s.a.s.) derbas nabe. Yek ji leqebên Wî *Mustefa* di yek malikê da derbas dibe. Di vê malikê da leqeba Pêxember

⁶²¹ *Qur'âna Pîroz*, Ehزاب 40.

⁶²² *Qur'âna Pîroz*, Maide 3.

⁶²³ الزهري، محمدابن سعد، الطبقات الكبرى، تحقيق: علي محمد عمر، مكتبة الخانجي، القاهرة 1321، ج 1 ص 81.

⁶²⁴ سبحانی تبریزی، جعفر، فروغ ابدیت، بوستان کتاب، ایران 1385، ج 2، ص 664.

⁶²⁵ الزهري، ج 2 ص 223-224.

(s.a.s.) bi "y" ya nisbetê *mustefewî* – مصطفوی – hatîye bikaranîn ku di edebiyata Îranê da rabirdûyeke wê heye.⁶²⁶ Hâfîzê Şîrâzî di malika xwe da hebûna tiştên dijber dide ber çavan. Nûra hîdayeta *Hezretî Muhemmed Mustefa* (s.a.s.) û nebaşîyên Ebû Leheb⁶²⁷ dide berhev. Yekî bi gulê û yekî jî bi sitrîyê dişîbîne. Nûra hîdayetê îqfîbasa ayetê ye. Xweda di Qur'ânê da ji bo Pêxember (s.a.s.) di saloxetên Wî da dibêje *tu wekî çirayeke rewşen tî*⁶²⁸ Herwiha xerabî û nebaşî jî bi kiryarên Ebû Leheb hatîye şibandin.

در این چمن گل بی خار کس نچید آری
چراغ مصطفوی با شرار بولهی ست
Di vê çemenê da kesêkî gul bê sitrî berhev nekir, çiraya Mustefa (s.a.s.) û pêta agirê Ebû Leheb bi hev ra ye. (HŞ 143-3)

Di şîrên Melâyê Cizîrî da ji navên Hezretî Pêxember (s.a.s.) *Ehmed* di malikekê da cih girtîye. Ev nav di Qur'âna Pîroz da derbas dibe.⁶²⁹ Melâyê Cizîrî, navê *Ehmed* (s.a.s.) di hizrên felsefî-tesewufî da bi kar tîne. Ev nêrîn piştî xwe dide hizra *Heqîqeta Muhemmedî* û yan *Nûra Muhemmedî* ku me berê jî amaje pê pêkiribû.⁶³⁰ Li dor vê hizrê Xweda, pêşî *Nûra Muhemmedî* diafirîne û hemû gerdûn û tiştên mayî ji vê nûrê tîn afirandin. Melâyê Bateyî afirandina *Nûra Muhemmedî* wiha tîne ziman;

*Girtî yek qebde ji nûrâ xwe Xwedâ,
Gote wî konî hebîbê Ehmedâ*⁶³¹

Şêx 'Ebdurrehmânê Aqtepî heman hizrê wiha rave dike;

*Ji ewwel ve yek qebde nûrâ 'ezîm
Ji nûrâ xwo girtî Xwudâyê Kerîm
Bi emrê Xwudâ nûrê pākê Xudâ
Mûhewwel şude bû îmâmê Hudâ*⁶³²

Melâyê Cizîrî li ser vê boçûnê îşaret dike ku agirê ji nûra *Ehmedî* serçêşmeya hemû sifaten Xweda ye ku hemû gerdûn bi wan ava bûye.

*Nârê ji nûrâ Ehmedî Sîrrâ sifâtê sermedî
Di ayîneyâ zâtê xwo dî Keşfâ kemâlâtê xwo dâ* (42-2)

⁶²⁶ خرمنشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۳۴۰.

⁶²⁷ Ebû Leheb, navê apê Pêxember (s.a.s) e. Yek ji mezênên Qureysîyan e. Yek ji serokên muşrikan e. Tu xerabî û nebaşî nema ku nekir ji bo ku Îslamê vemirîne. Di sala duduyê koçî dimire. Ji ber ku dijî Îslamê bû Xweda di Qur'ânê da di sûreyê *Mesed* da behsa nebaşîyên wî û çûna wî ya dojhê dike. Bnr: *Qur'âna Pîroz Mesed* 1-5.

⁶²⁸ *Qur'âna Pîroz*, Ehزاب 46.

⁶²⁹ Bnr: *Qur'âna Pîroz* Sef 6.

⁶³⁰ Bnr; tez, r 80.

⁶³¹ Bateyî, Melâ Huseynê, *Mewlud'in-Nebî*, Dini Neşriyat Kitabevi, Diyarbakır (Bê tarîx), r 6.

⁶³² Aqtepî, Şêx 'Ebdurrehman, *Rewdi'n-Ne'im*, Mektebetî Seyda, Diyarbakır 2016, r 30.

3.14 Berawird û Nirxandin

Tablo 12: Navê Pêxemberan

| Rêz | Navê Pêxemberan | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|-----------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Âdem | 15 | 0,315 | 5 | 0,221 |
| 2 | Nûh | 7 | 0,147 | 3 | 0,133 |
| 3 | Ibrâhîm | 1 | 0,021 | 2 | 0,088 |
| 4 | Ye'qûb | 2 | 0,042 | 2 | 0,088 |
| 5 | Yûsif | 12 | 0,252 | 8 | 0,353 |
| 6 | Şû'eyb | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 7 | Mûsa | 3 | 0,063 | 6 | 0,265 |
| 8 | Xidir | 23 | 0,482 | 7 | 0,309 |
| 9 | Ilyâs | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 10 | Dawûd | 2 | 0,042 | 0 | 0,000 |
| 11 | Suleymân | 21 | 0,441 | 4 | 0,177 |
| 12 | 'Îsa | 14 | 0,294 | 8 | 0,353 |
| 13 | Muhemmed | 1 | 0,021 | 1 | 0,044 |
| Gîştî | | 102 | 2,140 | 47 | 2,076 |

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navê 12 Pêxemberan derbas dibe, di dîwana Melâyê Cizîrî da navê 11 pêxemberan derbas dibe. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navê *Hezretî Ilyâs* ku di dîwana Melâyê Cizîrî derbas dibe cih negirtiye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da navê *Hezretî Şû'eyb* û navê *Hezretî Dawûd* ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas dibin nayên dîtin. Hâfizê Şîrâzî ji Melâyê Cizîrî bêtir navê pêxemberan xistîye dîwana xwe. Ji aliyê bikaraanîna navê pêxemberan ev ferqa navbera herdû şa'iran e.

Navên pêxemberan ji aliyê hejmaran va di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 102 caran derbas dibin, di dîwana Melâyê Cizîrî da 47 caran derbas dibe. Ji aliyê hejmarê ve Hâfizê Şîrâzî ji Melâyê Cizîrî zêdetir xuya dike. Lê ji aliyê rêjeyê (Hâfizê Şîrâzî %2,140, Melâyê Cizîrî % 2,076) gelek nêzikî hevin.

Hâfizê Şîrâzî di dîwana xwe da herî zêde ji *Hezretî Xidir* (23 car), *Hezretî Suleymân* (21 car), *Hezretî Âdem* (15 car) û *Hezretî 'Îsa* (14 car) behs kirîye. Melâyê Cizîrî herî zêde ji *Hezretî Yûsif* (8 car), *Hezretî 'Îsa* (8 car), *Hezretî Xidir* (7 car), *Hezretî Mûsa* (6 car) û behs kirîye. Di tercîhên herdû şa'iran da, ji aliyê pir bikaranînê jî ferq derdikeve holê.

Hezretî Âdem, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 15 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 5 caran derbas dibe. Ji alîyê hejmarê Hâfizê Şîrâzî sê qat zêdetir bi kar anîye. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di rêza sêyem da ye û di dîwana Melâyê Cizîrî di rêza pêncem daye. Ji alîyê girîngîyê jî Hâfizê Şîrâzî di pêşîya Melâyê Cizîrî da ye. Hâfizê Şîrâzî di dîwana xwe da, di derbarê xuliqandina *Hezretî Âdem* jî Hedîsên Qudsî sûd werdigire ev di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtin. Melâyê Cizîrî, bi nêrîneke felsefeya tesewufî li xuliqandina *Hezretî Âdem* û *Hezretî Hewwa* dinihêre û mijarê bi berfirehî rave dike. Di malikên Hâfizê Şîrâzî da ev nayê dîtin. Derbarê secde nekirina Şeytân jî *Hezretî Âdem* ra nêrînên herdû şa'iran weka hev in û ev xaleke hevpar e ku hem nêrîneke felsefî ye û hem nêrîneke tesewufa 'aşîqâne ye. Hâfizê Şîrâzî, di malikên xwe da dema dibêje; "Ez Âdemê behîştî me lê îro esîrê 'îşqê me, *Hezretî Âdem* nekarî xwe jî gunehan biparêze ez ê çawa bikaribim, bavê min behîşt bi du hebê genim frot, bavê min behîşt hêla û hat, barê 'îşqê jî bavê me jî me ra mîrat ma" û bi vî şiklî poşmanî û xemgînîya xwe dide der. Ev nêrîn di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtin ku ferqa sereke ev e. Melâyê Cizîrî bi bixwebawerîyeke mezin xwe di zanebûnê da di asta *Hezretî Âdem* da dibîne ku *Hezretî Âdem* bi zanebûna xwe firişte li xwe heyirandî hiştibûn. *Hezretî Âdem* remz û sembola xapîn, poşmanî û xemê ye di dîwana Hâfizê Şîrâzî da û remz û sembola zanebûna asta bilind e di dîwana Melâyê Cizîrî da.

Hezretî Nûh, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 7 caran bi rêjeya %0,147, di dîwana Melâyê Cizîrî da 3 caran bi rêjeya %0,133 derbas dibe. Ji layê hejmaran ferqek xuya bike jî, rêjeya wan gelek nêzî hev in. *Hezretî Nûh*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bêtir bi tofanê ra di malikan da cih digire. Û wekî jî navê wê tê zanîn tofan; bela, mûsîbet bêhêvîbûnî ye. Herwiha keşîya *Hezretî Nûh* jî warê selametê ye. *Hezretî Nûh*, di malikên Melâyê Cizîrî da remza temendirêjîyê û bi vê temendirêjîyê sûd wergirtina jî firsetan e. Û ev di nêrîna herdû şa'iran da ferqa sereke ye. Hâfizê Şîrâzî li hember bûyer û serpêhatîyên dinyewî bi xem û derd e. Bûyeran bi tofanê dişîbîne û ji bo rehabûna ji van xem û derdan jî xwe davêje keşîya *Hezretî Nûh*. *Hezretî Nûh*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da remz û nîşana xeman e, di malikên Melâyê Cizîrî da remza temendirêjîyê û sûd wergirtina jî firsetan e.

Hezretî Ibrâhîm, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carek û di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. Ji alîyê hejmaran va Melâyê Cizîrî di pêşîya Hâfizê Şîrâzî da ye. Di malikên herdû şa'iran da xala hevpar ev e ku herdû şa'iran jî di serpêhatîya

Hezretî Ibrâhîm da avêtina wî ya nav agir anîne ziman. Lê nêrînên wan li bûyerê cuda ye û ferqa sereke jî ev e. Hâfizê Şîrâzî dema ku dibêje *Ya Reb! Ev agirê ku di canê min da ye, sar bike çawa ku te agir ji bo Ibrâhîm Xelîl sar kir* bi gazinde ye ji 'îşqê û ji agirê 'îşqê. Melâyê Cizîrî dema dibêje; *Ger ji wê hûrîsiriştê 'îşweyek izhari bit, dê bibit nârê Xelîlullâh û dojah sâri bit* bi hunera îxraqê kêfxweşîya xwe li hember nazên me'şûqa xwe tîne ziman. *Hezretî Ibrâhîm* û agir ji bo Hâfizê Şîrâzî sembola xemgînîya 'îşqê ye û ji bo Melâyê Cizîrî remza naz û cilweyên yarê ye.

Hezretî Ye'qûb, ji aliyê hejmarî va di dîwanên herdû şa'iran da weka hev, di her yekê da du caran cih girtîye. Ev xala hevpar e. Nêrînên herdû şa'ira derbarê *Hezretî Ye'qûb* da ji hev cuda ne û dijberî hev in. Hâfizê Şîrâzî xwe dişîbine *Hezretî Ye'qûb* ji layê kişandina derd, bela û hesreta evînê. Yara wî jî di şexsîyata *Hezretî Yûsif* da ew yar e ku ji wî dûr ketîye. Di malika wî da ku dibêje; *Ey birader û hevalên min! Rehmê bi min bikin ku 'ezîzê min Yûsif çû. Ez dibînîm ku Pîrê Ken'an ji xemê di halekî ecêb de ye*, *Hezretî Ye'qûb* wekî remz û sembola xema 'îşqê û hesretkêşê yarê eşkere xuya dibe. Melâyê Cizîrî bi nêrîneke felsefî ku pala xwe dide Heqîqeta Muhemmedî li *Hezretî Ye'qûb* dinihêre. Sedema mehbûbîyeta *Hezretî Yûsif* di dilê *Hezretî Ye'qûb* da hebûna Nûra Muhemmedî ye. Di heman demê da *Hezretî Ye'qûb* remz û mînaka kêfxweşîya gihiştina yarê ye. Dema Melâyê Cizîrî dibêje; *Şukur bînâhiyâ min hât û Ye'qûb dîde rewşen bû, bi bûyâ Yûsifê Mişrî li Ken'anê beşer pê dâ kêf û şahî û xwe dide ber çavan*.

Hezretî Yûsif, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 12 caran derbas dibe û di rêza pêncem da ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 8 caran derbas dibe û di rêza yekem da cih girtîye. Ji aliyê hejmaran Hâfizê Şîrâzî li pêş xuya bike jî ji aliyê rêjeyê Melâyê Cizîrî (%0,353) di pêşîya Hâfizê Şîrâzî (%0,252) da ye. Şibandina yarê bi xweşikahîya *Hezretî Yûsif* û şibandina devjêberdana yarê bi firotina *Hezretî Yûsif* du xalên hevpar in di navbera herdû şa'iran da. Hâfizê Şîrâzî, dema dibêje; *Yûsêfê wunda ew ê rojekê were xem mexu*, navlêkirina qulûbeyê *Hezretî Ye'qûb* *bi Kulbeê Ehzan û Beytu'l-hezen*, ez ditirsim ku birayên çavnebar gomlekê *Yûsif* perçe bikin tirs û xemgînîya xwe, û bi gotina; *min dizanî xweşikahîya Yûsif ew ê Zuleyxayê ruswa bike*, tirsê di 'îşqa xwe da tîne ziman. Bi vî rengî *Hezretî Yûsif* di malikên Hâfizê Şîrâzî da xem û tirsê simbolîze dike. Di malikên Melâyê Cizîrî da *Hezretî Yûsif* her çend remz û îşareta dûrbûnê, hesret û hicrana yarê be jî bi sedema hezkirina ji me'şûqî her bi çavê şahî û şadî lê dinêhire. Dema ku xwe dişîbine *Yûsifê* di zîndanê

da gotina xwe bi iftîxarî dibêje. Û ev ferqa sereke ye di navbera herdû şa'iran da ji aliyê hizrî va. *Hezretî Yûsif* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da remz û sembola xem û tîrsa negihiştina yarê ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da remz û sembola hesreta me'şûqa dûrketî ye, lê Melâyê Cizîrî bi xweşbînîyekê û bi hêvîyeke bêhempa lê dinihêre.

Hezretî Şû'eyb, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe. Ev ferqa sereke ye ji aliyê bikaranîna navê *Hezretî Şû'eyb*. Nêrîna Hâfîzê Şîrâzî nêrîneke tesewufa 'âbidane ye. Kesê ku di xwaze bigihêje armanca xwe di rêya seyr û silûkê da divê xizmeta pîr û murşide xwe bike. Bêjeya (مراد) ku di malikê da derbas dibe bi hunera îhamê dikare hem wekî *Mirad* were xwendin bi wateya armancê û hem wekî *Murad*⁶³³ were xwendin bi wateya murşidê kamil. Di nêrîna me da xwendina *Murad* bêtir munasibê sîyaqa malikê ye. Bi vî rengî *Hezretî Şû'eyb* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da rengê murşidê kamil li xwe digire.

Navê *Hezretî Mûsa* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da sê caran derbas dibe û di dîwana Melâyê Cizîrî da 6 caran derbas dibe. Melâyê Cizîrî ji Hâfîzê Şîrâzî bêtir cih daye *Hezretî Mûsa* ku ev ferqa hejmarî ye. Tevî ku gelek serpêhatîyên *Hezretî Mûsa* hene, di dîwanên herdû şa'iran da herî zêde bi tecellîyatên Ilâhî hatîye bîranîn. Ev xaleke hevpar e di navbera herdû şa'iran da. Di vê xala hevpar da Hâfîzê Şîrâzî dibêje min tecellîyat dîtîye. Lê gotina wî dikare were tewil kirin jî, ne zelal e. Melâyê Cizîrî rasterast dibêje di vî warî da ez peyrevê *Hezretî Mûsa* me. Ji vê zêdetir wiha dibêje; ez di 'îşqê da de'wa Mûsayî bikim ji min ra caîz e. *Hezretî Mûsa* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî û di dîwana Melâyê Cizîrî da remz û nîşana tecellîyatên Ilâhî ye.

Hezretî Xidir, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 23 caran derbas dibe û di rêza yekem da bi cih bûye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 7 caran derbas dibe û di rêza duyem da disekine. Hem ji aliyê rêzê û hem ji aliyê hejmarên bi kar anînê, Hâfîzê Şîrâzî bêtir cih daye *Hezretî Xidir* ku ev ferqa hejmarî ye. Mijara têkilîya *Hezretî Xidir* û ava heyatê di dîwanên herdû şa'iran da mijareke hevpar ya sereke ye. Ev têkilî ji kevneşopîya edebiyata klasîk e. *Hezretî Xidir*, bi taybetîyênen xwe; îstî'are ye ji bo murşidê kamil, remza alîkarî û xêr û bereketê û sembola temendirêjîyê ye. Bi van taybetîyên xwe di malikên herdû şa'iran da xaleke hevpar e. *Hezretî Xidir* nîşana murşidê kamil, bereket û temendirîjîyê ye di dîwanên herdû şa'iran da.

⁶³³ Ji bo wateya *Murad* bnr; tez, r 192

Hezretî Ilyâs, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. Ji alîyê bikaranîna navên pêxemberan ev ferqa sereke ye. *Hezretî Ilyâs*, di malika Melâyê Cizîrî da remza hêz û quwweta takekesî ye. Ev hêz û quwwet kesekî nagihîne armancê – di seyr û silûkê da - lazim e ku alîkarîyek Ilâhî hebe.

Hezretî Dawûd, di du malikan da, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî cih digire, welî, di dîwana Melâyê Cizîrî qet cih nagire. Ji alîyê bikaranîna navên pêxemberan ferqa sereke ev e. *Hezretî Dawûd* di herdû malikên Hâfîzê Şîrâzî da remz û sembola deng û awazên xweş e ku ev taybetîyek sereke ya *Hezretî Dawûd* e. Wekî di jîyana Hâfîzê Şîrâzî da derbas bû hatîye gotin ku Hâfîzê Şîrâzî jî mûsîqîşinas, xweşawaz û xezelxwan bûye.⁶³⁴ Bi vî alî *Hezretî Dawûd* û Hâfîzê Şîrâzî dişibin hevûdû. Pêkane ji ber vê şibandîne *Hezretî Dawûd* di malikên Hâfîzê Şîrâzî da cih girtibe. *Hezretî Dawûd*, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da remza xweşawazîyê ye.

Hezretî Suleymân, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da piştî *Hezretî Xidir* di rêza duyem da bi 21 bikaranînan cih digire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 4 caran derbas dibe. Hem ji alîyê hejmar û hem ji alîyê pir bikaranîne Hâfîzê Şîrâzî di pêş da ye. Di dîwanên herdû şa'iran da hem xalên hevpar hene û hem xalên ciwayaz tên dîtin. Xalên hevpar ev in: Herdû şa'iran jî memduhên xwe ji alîyê hukumdarî û seltenetê şibandîne *Hezretî Suleymân*. *Hezretî Suleymân*, remza merhemet û şefqetê ye, şa'ir sembola hewcedarîya merhemeta hukumdarîye (dibe ku ev hukumdar, memduh be û dibe ku me'sûq be) ne. Hudhudê *Hezretî Suleymân* remza agahîyên ji yarê ye.

Xalên cuda jî ev in: Ba, ku di bin fermanrewanîya *Hezretî Suleymân* da bû sembola tiştê nepayîdar e di malikên Hâfîzê Şîrâzî da û ev xal Di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtin. Hungilîska *Hezretî Suleymân* bi nêrîneke hîkemî remza layiqbûnîyê û sembola guheztina tiştê bi qîmet bi yê bê qîmet e di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da. Melâyê Cizîrî, di hizrên 'aşîqâne da gustîlê bi hakîmtîya yarê li ser 'aşîqî bi kar tîne. Melâyê Cizîrî, di wîsala yarê da xwe şibandîye *Hezretî Suleymân* ku Belqîs çewa gihiştîye wî. Gihiştina wîsala bi vî rengî di malikên Hâfîzê Şîrâzî da nayê dîtin. *Hezretî Suleymân* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da remza seltenet, merhemet, agahîyên ji yarê, tiştên ne payidar, layiqbûnîyê ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da sembola seltenet, merhemet, agahîyên ji yarê û wîsalê ye.

⁶³⁴ Bnr; tez, r 13

Hezretî 'Îsa, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bi 14 bi kar anînan û di dîwana Melâyê Cîzîrî da bi 8 bi kar anînan cih girtîye. Ji alîyê hejmaran ji du qatî zêdetir di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da were dîtin jî ji alîyê rêjeyê Melâyê Cîzîrî pêşketî ye (Hâfîzê Şîrâzî %0,294, Melâyê Cîzîrî %0,353). *Hezretî 'Îsa*, di malikên herdû şa'iran da jî me'şûqa 'âşîqî ye. Me'şûq e ku dikare mirîyan zindî bike, vejîne, şîfakurox e, dikare can bibexşîne. Ev xalên hevpar in di navbera hedû şa'iran da. Lê herdû şa'iran ji van taybetîyan bi nêrînên cuda sûd wergirtine. Nêrînên Hâfîzê Şîrâzî bi tevahî nêrînên 'âşîqâne ne. Nêrînên Melâyê Cîzîrî hem 'âşîqâne û hem tesewufî bin jî nêrînên 'âşîqâne bêtir derdikevin pêş. Ev ferqek e di navbera herdû şa'iran da. Hâfîzê Şîrâzî, di nêrînên xwe da xembar e. *Barê xema 'îşqê piştta wî xûz kirîye û dixwaze me'şûq (Hezretî 'Îsa) were wî barî sivik bike. Ji 'îşqê şewitîye û dixwaze me'şûq were wî dîsa sax bike.* Melâyê Cîzîrî, bi xweşbînîyekê meseleyê rave dike. Erê, me'şûq şîfakrox e, lê divê pêşî 'âşîqê xwe nesax bike paşê dewa bike, me'şûq divê pêşî 'âşîqê xwe bikuje û paşê wî ji nû va vejîne ji bo careke din wî bikuje. Qesta yarê ev e ku serdestîya xwe nîşanî 'âşîqî bide. Ji bo vê yekê pêşî dil û canê 'âşîqî wêran dike û paşê wekî *Hezretî 'Îsa* hukmê xwe, mu'cîzeyên xwe nîşan dide. *Hezretî 'Îsa* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da remza alîkarîya rehabûna ji xema 'îşqê ye. Di dîwana Melâyê Cîzîrî da sembola wê me'şûqa hukumran e.

Hezretî Muhammed (s.a.s.), di dîwanên herdû şa'iran da, di heryekî da carekê derbas dibe. Ji alîyê hejmarê wekhevîyek heye. Resûlê Xweda (s.a.s.) di malika Hâfîzê Şîrâzî da remza başîyê û nûra hîdayetê ye. Ev nêrîneke Îslamî ye û pala xwe dide Qur'âna Pîroz. Di malika Melâyê Cîzîrî da remza serçeşmeya xuliqandîna hemû mexlûqan e. Ev nêrîn, nêrîneke felsefî-tesewufî ye û bîngeha xwe ji Heqîqeta Muhammedî werdigire. Ferqa navbera herdû şa'iran di nêrînên wan da derdikeve holê. Hâfîzê Şîrâzî, bi nêrîneke Îslamî, Melâyê Cîzîrî bi nêrîneke felsefî tesewufî li Resûlê Xweda (s.a.s.) dinihêre.

BEŞA ÇAREM

KESAYETÊN TESEWUFÎ Û KESAYETÊN TESEWUFÎ YÊN DÎROKÎ DI DÎWANA HÂFİZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ DA

4.1 Derbarê Tesewufê

Tesewuf, perçeyek ji kultura Islâmê ye ku tesîreke mezin li civaka Islâmê kirîye, tesîreke mezin li edebîyatê kirîye û di roja me da wekî zanistêke serbixwe di zanîngehan da cihê xwe girtîye. Di vê beşê da kesayetên tesewufê, kesayetên dîrokî yên tesewufê, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da derbas dibin ew ê werin vekolîn.

4.1.1 Rayeka Bêjeya Sofî û Pênaseya Tesewufê

Di destpêka Islâmê da ku jê ra 'esra se'adetê tê gotin, em rastî bêjeya *sofî* û *tesewufê* nayên. Ev jî tê wateya ku piştê ev herdû bêje ketine lîteratura Islâmê. Derbarê rayek, menşe û wateya bêjeya *Sofî* da nêrînîn cîyawaz derketine holê. Li gorî Quşeyrî (w. 465/1072) rayeka bêjeya *Sofî* ne 'erebî ye, leqebeke ku ji taîfe yan firqeyêke taybet ra hatîye gotin.⁶³⁵ Di nêrîna Ebû Reyhan Bîrûnî da (w. 453/1061?) bêjeya *Sofî*, ji *Soph* a yewnanî ku bi wateya hîkmet û zanîne ye hatîye. Bêjeya *Feylesof* ku ji *Phila* û *Sophia* pêk hatîye di wateya kesên hezkirîyê hikmetê de hatiye bikaranîn. Di Islâmê da hin zanyar derketin holê ku nêrînên wan nêzî nêrînên zanyarên yewnanîyan bû, ji ber vê jî wan ra *Sofîye* hatîye gotin.⁶³⁶ Ji ber vê ye ku hin zanyar dibêjin tesewufa Islâmê bîngeha xwe ji felsefeya yewnanê wergirtîye.⁶³⁷

Hin zanyaran ev îhtîmal dane ber çavan ku bêjeya *Sofî* ji *Suffe* (صَفَه) hatîye û hatîye nisbet kirin bi bal *Ehlê Suffeyê*. Ehlê Suffe, sehabîyên feqîr yên muhaciran bûn û li mizgeftê diman.⁶³⁸ Derbarê rayeka *Sofî* da yek ji fikrên navdar ev e ku

⁶³⁵ القشيري، أبو القاسم عبد الكريم بن هوازن، الرسالة القشيرية، تحقيق: عبد الحلیم محمود- محمود بن شريف، دار الشعب، القاهرة ١٩٨٩، ص ٤٤٤.

⁶³⁶ عز الدين محمود بن علي كاشاني، مصباح الهداية و مفتاح الكفاية، تصحیح: جلال الدين همایي، سخن، تهران ١٣٩٤، ص ٦٦، به نقل از کتاب الهند، چاپ لایبزیك، ص ١٦.

⁶³⁷ Kesên ku li dijî vê nêrînê derdikevin jî tînen dîtî. Li gorî nivîskarên wekî 'Ebdul'ezîz Islambolî, Muhemmed Letîfî û Zekî Mûbarek tu îhtîmala ku tesewufa Islâmî bîngeha xwe li ser felsefeya yewnanîya ava kiribe tune. Lewra, di felsefeya yewnanîya da bêtir layê tebî'etê heye ne layê Îlâhîyatê. Ji ber vê ye ku 'ereban felsefe bi tip û hîkmetê û feylesof jî bi tebîb û hekîm tercume kirine. Ji ber hindê ye hîkmeta rûhanî ku di tesewufa Islâmî da ye dîr e ku ji *Sophia* û *Philosophia* yewnanîya hatibe wergirtin. Pêkane ku eslê bêjeya *Sophiya* ji *Sûf* (صوف) a 'erebî hatibe wergirtin. Çira ku tesewuf ji zûda di nava 'ereban da hebû û cil û bergên hirî ji demên qedîm da nişana zâhid, derwêş û 'âbidan bû. Ji ber vê, belkî tesewufa 'ereban esasê mesîhîyetê be û bêjeya *Sofî* gihîştibe perestgehên yewnanîyan. (عز الدين كاشاني، ص ٦٧. به نقل از زكى مبارك، كتاب التصوف الاسلامي، مصر ١٣٥٨، ج ١، ص ٦٦.)

⁶³⁸ السراج، أبى نصر عبد الله بن علي الطوسي، اللمع فى التصوف، تحقيق رنولد الن نيكلسون، مطبعة بريل، ليدن ١٩١٤، ص ٢٦. القشيري، ص ٤٤٤.

dibêjin ji *Sefâ* (صفا) û *Sefwet* (صفوت) ê hatîye bi wateya hilbijartî, îxlasa di hezkirinê da û safîbûna ji her tiştî, bi sedema ku ev taybetîyên sofîyan e.⁶³⁹ Hin lêkolîneran gotine ku bêjeya *Sofi* ji *Sûfe* (صوفه) hatîye ku pêkane ji navê qebîleya *Benî Sufe* hatibe wergirtin ku xizmetkarên Ke'beyê bûn, an ji mûyê kamçika serî hatibe wergirtin û yan bi wateya qefileyên ku ne ji yek nijadê ne.⁶⁴⁰ Kesên ku gotine *Sofi* ji *Sefiyy* (صفى) hatîye wateya kesên hilbijartî, ehlê sefa û dostî dilsafi dane ber çavan.⁶⁴¹

Hin zanyaran gotine bêjeya *Sofi* ji rayeka *Sûfâne* (صوفانه) ku navê giyayê kinik û jar hatîye bi minasebeta nefsbîçûkîya sofîyan.⁶⁴² Hin kesan bi minasebeta ku kesên sofî di nêzîkahîya Xweda da di rêza pêşî da ne gotine ji *Seff* (صفت) ê hatîye. *Seff* bi wateya rêzê ye.⁶⁴³ Yek ji teoriya/fikra derbarê rayeka *Sofi* ev e ku ji *Sûf* (صوف) ê hatîye. *Sûf* bi wateya hirîyê ye. Bi minasebeta ku sofîyan cil û bergên hirî li xwe dikirin û ev yek ji berê da di nava zâhid û feqîran da hebû.⁶⁴⁴ Nêrîneke cuda jî wiha mijarê rave dike. *Sofi*, ji tu bêjeyê nehatîye û ne ji tu zimanî ye. Belkî hin herfên bi remz in. *Sofi* ji *Sûfê* hatîye û *Sûf* ji sê herfan pêk hatîye. Sad (ص) bi wateya sebr, sidq û sefayê ye. Waw (و), remz û nîşana wud, wird û wefayê ye. Fê (ف), ferd, feqr û fenayê tîne ziman.⁶⁴⁵ Bêjeya *Sofi* hem di berhemên tesewufê da hem di edebîyatê da û hem di kultura gel da cihekî girîng digire. *Sofi*, di berhemên edebî da, bi taybet di şî'rê da bi hirîyê ra hatîye zikirkirin. Di nêrîna şa'iran da – herdû şa'irên me jî di nav da – ji rayeka *Sofi* ji hirîyê hatîye.

Gelek pênase li tesewufê hatine kirin. Wekî ku Suhrewerdî dibêje ji hezarî zêdetir pênaseyên mutesewufan tên dîtîn.⁶⁴⁶ Lê eger kesek aşînayê tesewufê be û bi hûrgulî li ser van pênaseyan raweste ew ê bibîne ku her çend lefz cuda bin jî, di rastîyê da ev pênase nêzîkî hev in û hemû bi yek wate û yek heqîqetê girêdayî ne. Sedema cudahîya pênaseyan bi famkirin û têgihîştin,⁶⁴⁷ cudahîya mertebe, meqam, derece û halên mutesewifan û di pênaseyan da behskirina mutesewifan ji hal û

⁶³⁹ الفشيرى، ص ٤٦٤؛ الطوسى، ص ٣٦٤.

⁶⁴⁰ عز الدين كاشانى، ص ٦٨-٦٩.

⁶⁴¹ الكلابادى، أبوبكر محمد بن إسحاق، التعرف لمذهب أهل التصوف، تحقيق وتعليق، محمود، عبد الحليم & سرور، طه عبد الباقي، مكتبة الثقافة الدينية، القاهرة، مصر، ١٩٦٠، ص ٢٧.

⁶⁴² قشبرى، عبدالكريم بن هوازن، رساله قشيرييه، مترجم: حسن بن احمد عثمانى، تصحيح: بديع الزمان فروزانفر، شركت انتشارات علمى و فرهنگى، تهران، ايران، ١٣٧٤؛ ص ١٨٢.

⁶⁴³ سهروردى، شهاب الدين، عوارف المعارف، (Gihîştin:12.10.2021) [http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(52\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(52).php)

⁶⁴⁴ هجویری، ص ٢٢.

⁶⁴⁵ سجادی، ص ٥٣٦-٥٤٤.

⁶⁴⁶ محمد، يوسف خطار، الموسوعة اليوسفية في بيان أدلة الصوفية، مكتبة دارالآليات، دمشق، سورية ١٩٩٩، ص ٢٨.

⁶⁴⁷ إبراهيم، محمد زكى، أبجدية التصوف بعض ماله وما عليه، مطبوعات ورسائل العشيرة المحمدية، الطبعة الخامسة، القاهرة، مصر ٢٠٠٦، ص ١٤.

meqamên xwe derketîye holê. Sedemeke din jî ji layê zanîstî va pênasekirina layên tesewufê yên cuda hatîye destnîşan kirin.⁶⁴⁸ Tiştê ku ji pênaseyên hatine dayîn tê famkirin wekî puxte; *tesewuf*, jîyaneke li gorî Qur'ân û sunnetê, yanî jîyaneke pêxemberwarî ye ku mebest di encamê da ghiştina mi'raceke rûhanî ye.

4.1.2 Derketina Tesewufa Islâmê

Tiştêkî asayî ye ku zuhd, îbadet, terkkirina dinê, xelwet ku bingeha tesewufê ne, di dînên beriya Islâmê da jî werin dîtîn. Eger em tesewufê wekî terbiyeyeke me'newî, tesfîyeya dilî, tezkîyeya nefsê, bi destxistina me'rîfetullahê pênase bikin û bibêjin, di encamê da mebest ji tesewufê bidestxistina exlaqê hesen e û ghiştina asta însanê kamil e. Em dikarin bibêjin; di destpêka Islâmê da tesewuf bi perwerdehiya Pêxemberê Xweda (s.a.s.), Qurana Pîroz û bi sehabeyan dest pê kirîye. Di vê serdemê da ji tu kesekî ra *sofî* û ji tu kiryanan ra *tesewuf* nehatîye gotin. Mirov dikare bibêje ku jîyana Pêxember û Sehabeyan jîyaneke tesewufî bû ku loma pêdivî bi navekî din nehatîye dîtîn. Tiştê ku ji berhevan tê famkirin û wekî nêrîneke giştî hatîye pejirandin,⁶⁴⁹ *sofî* û *tesewuf* wekî istilah di nivê yekem ya sedsala duyem a koçî da derketîye holê. Yekem kesê ku leqeba *sofî* lê hatîye kirin Ebû Haşimê Sofî (w. 150 koçî) ye.⁶⁵⁰

Quşeyrî, meseleya derketina peyva *sofî* û *tesewufê* wekî puxte wiha anîye ziman. *Efdel û xewasên Misilmana di serdema Pêxemberê Ekrem (s.a.s.) bi navê sehabî, û piştî wan bi navê tabî'în û carînan jî bi 'inwana zuhhad û 'ubbad dihatin binavkirin. Piştî ku bid'et derketine holê û gengeşî kete navbera tebeqe û firqeyên Misilmana, ji kesên xewasên dîn ra sofî û ji pîşeya wan ra tesewuf hate gotin. Û derketina van istilahan beriya sala dused (200) ê hicrî bû.*⁶⁵¹ Tiştê ku ji gotina Quşeyrî tê famkirin di destpêka Islâmê da jîyan, jîyaneke tesewufî bû û piştê kesên ku ev jîyan domandin bi *sofî* û ji vê jîyanê ra *tesewuf* hate gotin. Bi gotineke din çavkanîyên tesewufê Quran û sunneta cenabê Pêxember e (s.a.s.).

Piştî geşbûna tesewufê, di navbera edebiyat û tesewufê da têkilîyek ava bû. Ya rastî ev e ku em bibêjin tesewufê karîgerîyeke mezin danî ser edebîyatê. Karîgerîya tesewufê li ser edebîyatê ghişt astekê ku tesewuf di edebîyatê da karibû bi navê *Edebîyata Tesewufî* ji xwe ra beşekê ava bike. Di edebiyata tesewufê da

⁶⁴⁹ Ji bo nêrînên cuda bnr: ٩٠-٨٦ ص عز الدين كاشانى،

⁶⁴⁸ عز الدين كاشانى، ص ٨٣.

⁶⁵⁰ عز الدين كاشانى، ص ٨٦.

⁶⁵¹ القشيري، ص ٨٧.

kesên peyrewên *tesewufa 'âbidâne*⁶⁵² berhemên pexşan yê derbarê adab, resm û rêçên tesewufê ku îro ji wan ra klasîkên tesewufê tê gotin nivîsandin. Kesên peyrewê *tesewufa 'âşiqâne* jî berhemên menzûm nivîsandin ku di van berheman da 'işqa xwe ya Ilâhî anîn ziman.⁶⁵³ Şa'irên mutesewif di şî'rên xwe da ne tenê 'işqa Ilâhî û rewşa xwe ya rûhanî anîn ziman di heman demê da 'ilm, hikmet, 'irfân, pend û exlaq jî di şî'rên xwe da cibîcî kirin ku ji bo perwerdehiya civakê rolek girîng daye ser milê xwe.

Tesewuf, di edebîyatê da ji xwe ra zimanekî taybet ava kir. Ev ziman, zimanê remz û îşaretan e. Ji bo têngiştina vî zimanî ferhengên taybet hatine amadekirin. Di zimanê tesewufê da hem ji bo ravekirina hestên rewşa derûnî û me'newî hin istilah hatine danîn û hem ji bo kesên di astên seyr û silûkê da ne hin nav li wan hatine kirin.

4.2 Kesayetên Tesewufî

Armanca tesewufê tekamula însan e û bi vê tekamulê gihiştina Xweda ye. Her çend ku bi giştî ji bo kesên ku dikevin rêya tesewufê *sofî* were gotin jî, ji bo kesên di rêya tesewufê da seyr û silûka xwe didomînin li gorî rewşa jîyana wan û li gorî meqamên wan yê me'newî nav li wan hatine kirin.

Hin navên ku li rehrewên seyr û silukê hatine kirin di edebîyatê da û di jîyana rojane da jî tên bikaranîn. Wekî 'âşiq ku hem di jîyana rojane da û hem di edebîyatê da tê bikaranîn. Di vê binbeşê da kesayetên tesewufî yê dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî ew ê werin nirxandin. Navên kesayetên tesewufî ku hem di tesewufê da, hem di edebîyatê da û hem di jîyana rojane da hevpar in ew ê ji layê tesewufî va werin nirxandin.

4.2.1 Âbid (عابد)

'Âbid, ew kesê ku ji Xweda ra perestîşî, 'îbadetê dike, perestîşkar e. 'Âlim, wêrisê gotinên Resûlê Xweda (s.a.s.) ye di fêrbûnê û di fêrkirinê da bi şertê ku îxlasê û 'ilmê xwe negerîne ji bo berjewendiyên dinyewî. Eger na bi tevahî ji wêristiyê dikeve. 'Âbid, wêrisê kiryarên Resûlê Xweda (s.a.s.) ye.⁶⁵⁴ Hatîye gotin ku taybetîya 'âbidî ev e ku li hember 'îbadetên xwe tiştêkî ji dunyayê û ji kesên din naxwaze. Wî,

⁶⁵² Te'bîra *Tesewufa 'Âbidâne* û *Tesewufa 'Âşiqâne* ji (عز الدين كاشاني، ص ٤٥) hate wergirtin.

⁶⁵³ زرین کوب، عبدالحسین، *ارزش مرآت صوفیه*، انتشارات آریا، تهران ۱۳۴۴، ص ۱۵۶.
⁶⁵⁴ العجم، رفیق، *موسوعة مصطلحات التصوف الاسلامي*، مكتبة لبنان ناشرون، لبنان ۱۹۹۹، ص ۵۹۰.

hêvî û daxwaza xwe spartiye axretê.⁶⁵⁵ *'Âbid*, di heman demê da asteke ji asta 'işqê hatîye hesibandin.⁶⁵⁶

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da em di sê malikan da rastî *'âbid* tên. *'Âbid*, kesayetekî neyînî ye. Hâfizê Şîrâzî derbarê sedema neyînîya wî tiştekî dest nîşan nake. Ji ber ku *'âbid* û *zâhid* di yek malikê da hatine rexnekirin, mirov dişê bibêje di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da kiryarên herdu kesayetên dişîbin hevûdu.

از دست زاهد کردیم توبه و از فعل عابد استغفر الله

Ji destê zâhidî tobe dikim û ji kiryarên 'âbidî daxwaza bexşandinê ji Xweda dikim. (HŞ 620-4)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê carek *'âbid* derbas dibe. Di malikê da wateya perestîşkar were dîtin jî, perestîşa xweşikahîya yarê ye. Kesê perestîşa xweşikahîya yarê dike şa'ir bi xwe ye.

*Sond bi wê zulfâ siyâh ez 'âbidê husnâ te me
Xef dinoşim vê şerâbê xweş şerâb û qehwe ye* (MC 196-3)

4.2.2 'Ārif (عارف)

Wateya *'arif* ya ferhengî zana, agahdar û nasyarê kes û karan e.⁶⁵⁷ Wekî istilah *'arif*, ew kes e ku Xweda wî gihandîye şihûda zat, esma û sîfatên xwe. Ev meqam bi rêya hal û keşfê li ber wî vebûye, ne bi rêya 'ilm û me'rîfetê. Di nasandina *'arifî* da hatîye gotin ku *'arif*, meqamê Fenafillahê bi dest xistîye lê negihîştîye meqamê Beqâbillahê. *'Ārif*, ew kes e ku ta'et û perestîşê ji Xweda ra dike ji bo ku di nêrîna wî da Xweda şayeste û musteheqqê perestîşê ye.⁶⁵⁸ Û ev jî cudahîya navbera *'arif* û *'âbidî* ye.

Di nava şî'rên Hâfizê Şîrâzî da em di deh malikan da rastî *'arifî* tên. *'Ārif* kesayetekî erênî ye di malikên Hâfizê Şîrâzî da. Tenê di yek malikê da ji bo ku, dema tecelliyatên Ilâhî tînin dilê 'arifî, bi wehmeke xeyalî îddî'aya bidestxistina hemû sir û razan û nasîna Heq dike (HŞ 111-1), hatîye rexnekirin. Hâfizê Şîrâzî, bi nêrîneke 'irfânî 'arifî wiha dinasîne; *ew kes e ku di her spêdê da dema diçe meyxaneyê zîyaret dike bi şeraba pak û zelal destmêj digire* (HŞ 235-1). Dîsa 'arif, *ew kes in ku dilên xwe bi dinya û tiştê di dinyayê da girênadin* (HŞ 294-6) hatîye saloxdayîn ku ev jî nêrîneke hîkemî ye.

⁶⁵⁵ سجادی، ص ۵۶۵.

⁶⁵⁶ العبادي، ص ۲۱۰.

⁶⁵⁷ دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۵۶۳۸.

⁶⁵⁸ الكاشاني، ص ۱۲۴؛ العجم، ص ۵۹۱-۵۹۲؛ سجادی، ص ۵۶۵؛ ألحفي، عبد المنعم، معجم مصطلحات الصوفية، دار المسيرة، بيروت ۱۴۰۷، ص ۱۷۹.

Hâfizê Şîrâzî, xwe wekî 'ârifê dema xwe⁶⁵⁹ nîşan dide, lê ji ber ku badeyê vedixwe rexne lê têne kirin.

من اگر باده خورم ورنه چه کارم با کس حافظ راز خود و عارف وقت خویشم
"Eger ez badeyê vexwim yan venexwim çi karê kesî bi min heye, ez Hâfizê razên xwe û 'ârifê dema xwe me." (HŞ 523-7)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da 18 caran behsa 'ârifî hatîye kirin û hin taybetîyên wî hatine destnîşankirin. 'Ârif ji bo ku bigihêje meqamê welayetê pêwiste ji destê meyfiroşî şerabê vexwe û bi wê şerabê mest û sermest bibe. (MC 72-4) 'Ârif, divê ruhê xwe yê çalak û şareza nexwe binê karîgerîya arezûyên dinyewî. (MC 87-1) Dilê 'ârifî wekî behrê ye û wekî pêlên behrê tecellî têtin ser dilê wî. (MC 82-14) 'Ârif, ji neçarî bi çawanî û çendîn saloxetên me'şûqa xwe dide ji bo me'şûqa xwe bide nasîn. (MC 87-6) Di dema sipêdê da 'ârif derê meyxaneya 'îşqê zîyaret dike, bi hêstirên çavan û bi xwîna dilê xwe teheret û destmêjê digire. (MC 104-1) 'Ârif ji bo gel zêde girîng e. Lê, gel wî nas nake, di nava gel da veşartîye. 'Ârif ji bo gel wekî çavê mirovî ye. Di nava sipîtîya çav da wekî bîbika çav 'ebayekî reş li xwe kirîye ku nayê nasîn. (MC 129-2) Melâyê Cizîrî xwe wekî 'ârifê dema xwe nîşan dide.

Kerixîn em di qiyâmê me ji dil perde dirând
'Ârifê weqt im û Me'rûfî bilâ bête ji Kerx (MC 95-4)

4.2.3 'Āşiq (عاشق)

'Āşiq, bêjeveke 'erebî ye. Di ferhengên da bi van wateyan cih girtiye; kesê ku di hezkirina kesî yan tişkî da gihiştîye nîhayetê, dil girtî, dilda, dil şewitî, dil ji dest çûyî.⁶⁶⁰ Wekî istilaheke tesewufî, ew kesê ku bi daxwazî û cehdekê temam li Xweda digere, jê ra 'âşiq hatîye gotin.⁶⁶¹ Taybetîyên 'âşiqê heqîqî yê sereke ev e ku ji Xweda pê ve li kesî negere û daxwaz neke.⁶⁶² 'Îşq, îfrat, ji hed bihurîna hezkirinê ye.⁶⁶³ Ji ber

⁶⁵⁹ Divê were gotin kesên ku dîwana Hâfizê Şîrâzî şerh kirine di vê malikê da mebesta Hâfizî ji 'ârifê dema xwe wekî mezintirîn 'ârifê serdema xwe şerh nekirine. Ev malik wiha hatîye şîrovekirin *ez ji dema xwe îstîfade dikim û ez dema xwe vala nahêlim*. (1912, ج 3, ص 1912). *Ez 'ârifê qedrê dema xwe me*. (استعلامی، ج 2، ص 876). *'Ârifê weqtê xwe, yanî, kesê rewşa halê xwe baş dizane*. (خالقی، ص 782). *Ez, 'ârif û zanayê çawanîya dema xwe me*. (انتشارات گنجینه، تهران). (1388، ص 341). Tenê di şerha Cemâlê Afîtab da ev malik bi wateya mezintirîn 'ârifê dema xwe hatîye şîrovekirin. (سعادت پرور، ج 8، ص 135).

⁶⁶⁰ دهخدا، ج 10، ص 15661.
⁶⁶¹ تبریزی، شرف الدین حسین بن الفتی، *شف الالفاظ فی کشف الالفاظ*، تصحیح: نجیب مایل هروی، انتشارات مولی، تهران 1362، ص 42؛ بقلی شیرازی، *روزبهان*، شرح شطحیات، تصحیح: هنری کرین، کتابخانه طهوری، تهران 1360، ص 60؛ عراقی، فخرالدین ابراهیم، *رساله اصطلاحات*، ص 3 (Gihaştin:09.10.2021)

⁶⁶² ابو القاسمی، سیده مریم، *اصطلاحات و مفاهیم عرفانی دیوان شمس*، سازمان چاپ و انتشارات وزارت فرهنگ و ارشاد اسلامی، تهران 1373، ص 620.

vê ji bo hezkirinê ast hatine nîşandayîn. Li gorî Neseî di 'îşqa heqîqî da çart ast hene ku ew kesên di asta dawî da, di asta 'îşqê da bin ji wan ra *'âşiq* tê gotin.⁶⁶⁴ Di berhema *Sofînameyê* da neh pileyên hezkirinê hatine hejmartin û ji bo kesên di pileya dawî da *'âşiq* tê gotin.⁶⁶⁵ Li ser van agahîyan dikare were gotin ku; 'îşq, di hezkirinê da asta herî dawî ye. Kesê ku di hezkirinê da gihiştibe asta herî dawî, gihiştibe pileya 'îşqê jê ra *'âşiq* tê gotin.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 96 caran *'âşiq* û bêjeyên bi *'âşiqî* ra têkildar; *'âşiq* 59 car, *'âşiqan* 24 car, *'âşiqî* 11 car, *'âşiqâne* 2 caran derbas dibin.⁶⁶⁶ *'Âşiq*, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da kesayetekî sereke û girîng e. Meqamê *'âşiqî* bilind e û gelek taybetîyên wî hatîye destnîşankirin. Hâfîzê Şîrâzî bê tirs û perwa xwe *'âşiq* dinasîne.

عاشق و رند و نظربازم و می گویم فاش
تا بدانی که به چندین هنر آراسته ام
Eşkere dibêjim; ez 'âşiq û rind û nezerbaz im. Ta bizanî ku ez bi çendîn huner

hatime xemilandîn. (HŞ 484-2)

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da hem taybetîyên *'âşiqê* 'îşqa însanî, mecazî û hem taybetîyên *'âşiqê* 'îşqa 'irfânî-felsefî tînin. Taybetîyên *'âşiqê* 'îşqa 'irfânî yê sereke wiha dikare were destnîşan kirin.

Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da 'îşq qedîm e. (HŞ 483-3; h. 339-4) Ji ber vê *'âşiq* jî ji ezel da *'âşiq* e û heta ebed ew ê *'âşiq* bimîne. (HŞ 298-6) *'Âşiqî*, bi daxwazî û xebatê nayê bidestxistin, belkî dîyarî û bexşandina Xweda ye. (HŞ 486-5) Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da kaînat, cihana fânî û bâqî bi 'îşqê hatîye avakirin. (HŞ 539-5) Heyînên di kaînatê da çî însan û çî perî hemû mêvanên dawetnekirî yê 'îşqê ne. (h. 666-1) Ji ber vê yekê; ji bo tîgihiştina mebesta avakerê kaînatê, tîgihiştina sir û razên afirandinê pêwîste mirov *'âşiq* bibe. (HŞ 644-2) 'Îşq emanetê Xweda ye,⁶⁶⁷ kesên ev emanet hilgirtine û danîne ser milên xwe *'âşiq* in. (HŞ 348-2) Ji ber hindê *'âşiq* ehlên Xweda ne, (HŞ 544-4) *'âşiq*, tîkilîya xwe ji dinyayê birîye, mal û can û serwet ne di bala wî da ye. (HŞ 154-11) Serçeşmeya 'îşqa *'âşiqî* xweşikahîya Ilahî ya bê dawî ye. (HŞ 330-6) *'Âşiq* belakêş e, (HŞ 320-7) ji ber hindê serê *'âşiqî* divê xaka derîyê me'sûqê be ji bo ku ji mihmeta sergerdanîyê reha bibe. (HŞ 695-9) Di 'îşqa 'irfânî de *'âşiq* muhtacî me'sûqê ye. (HŞ 339-5) Li hember naza me'sûqê *'âşiq* bi niyaz e. (HŞ392-5) 'Îbadet û perestîşên *'âşiqê* bi 'îşqê rengê pejirandinê digire, eger

⁶⁶³ عراقی، ص ۲.

⁶⁶⁴ نسفی، ص ۵۱.

⁶⁶⁵ العبادی، ص، ۲۱۰.

⁶⁶⁶ Pêwîste were gotin di vê hejmarê da bêjeya 'îşqê cih negirtîye.

⁶⁶⁷ Bnr; beş 3, r 152, jêrenot; 528

destmêj û tehareta *'âşiqî* ne bi fêrmisk û xwîna cegera wî be nimêj û ta'etên wî ne şayesteyê pejirandinê ne. (HŞ 413-4) *'Âşiq*, rind û mest e û bi vî rengê xwe bednam e. (HŞ 764-2) *'Âşiq* heman rind û mecnûn e ku ji wî, başî, tobe û teqwa nayê hêvîkirin. (HŞ 190-8). Di encamê da kesê di rêya seyr û silûkê da ne *'âşiq* be, behra wî di *'işqê* da tunebe munafiq û derewker e.

ساقيا جام دمام ده در سير طريق هر كه عاشق وش نيامد در نفاق افتاده بود

Ey sâqî cama şerabê li pey hev bide, zîra di rêça seyra terîqetê da her kesê ku ne 'âşiq be di nava nîfaq û durûtîyê da ye. (HŞ 347-4)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da 53 caran bêjeya *'âşiq* û 6 caran jî bi pirjimarî *'âşiqan* cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da taybetîyên *'âşiqî* wiha dikare werin senifandin.

Di serî da divê were gotin Melâyê Cizîrî xwe *'âşiq* dinasîne. (MC 98-4) Tenê ne *'âşiq* e, di *'işqê* da ghiştiye asta herî bilind ku bûye *pîrê 'işqê*. (MC 198-1)⁶⁶⁸ Di vê astê da wekî muftiyekî dikare meseleyên *'işqê* çareser bike, çawa ku di malika jêrîn da saloxetên xwe bi *Muftiyê 'İşqê* dide.

*'Âşiqê mes'elexwâh im were em muftiyê 'işq in
Destekî sunnet e tê dâ di yekî neşşê kitâb e* (MC 198-10)

Di nêrîna Melâyê Cizîrî da *'işq* ezeli ye. Berîya afirandina her tişteki *'işq* hebû. Di vê mertebeya beriya afirandina her tişteki *'âşiq* Xweda bi xwe ye.

*'İşq û mehebbet her hebû
Heq 'âşiqê zatê xwe bû.* (MC 35-6)

⁶⁶⁸ Malika Melâyê Cizîrî wiha ye:

*Xweş perîşānşifet û mecme'eyê sûretê hal in
Pîrê 'işq in û ciwanêb' û dilê 'ehdê şebâb e* (m. 198-2)

Di malikekê da wiha dibêje;

*Min di bendâ zulfekê dil dâ bi destê pîrê 'işq
Lew di 'işqê dâ ko best îhrām û yek zunnâri bes* (m. 124-2)

Di malikeke din da jî wiha dibêje;

*'Eqdê îhrāmê di 'işqê da ko pîrê 'işqê best
Dê çî xem ger xerqe rehnê xaneyê xemmâri bit* (m. 64-7)

Eger di herdû malikên jorîn da ku Melâyê Cizîrî dibêje "min dilê xwe daye *pîrê 'işqê* û *pîrê 'işqê* îhrama me girêda", eger em *pîrê 'işqê* bi murşidekî kamil rave bikin, em ê bigihêjin wê encamê ku Melâyê Cizîrî pêgirtiyê şêxekî ye. Li ser vê boçûnê em dikarin bibêjin ku di malika pêşîn da ku dibêje *pîrê 'işqê me* encama şêxîtiya wî derdikeve holê.

Bi gotina Melâyê Cizîrî ev malik were şîrovekirin *'âşiq* û *me'şûq* yek bûn. (MC 229-3, m. 229-7, m. 36-4, m. 45-4) Xweşikahîya Cemâla Xweda hezkirin anî holê û eslê 'âlemê ji vê 'îşqê hate afirandin. (MC 229-6) Piştî afirandina kaînatê û heyînan xweşikahîya Cemâla Xweda di ciwan û xweşikên mecazî da derket holê û ew bûn *me'şûq*, hezkirin jî kete qelbê ehlê dil û ew jî bûn *'âşiq*. (MC 229-5) Melâyê Cizîrî wiha hizir dike ku di seyr û silûkê da du cûre *'âşiqên* Ilahî hene. Cûreyek ji wan ku Melâyê Cizîrî wan bi *'âşiqên bêçare* bi nav dike, di maqamên fenayê da dimînin, derbasî meqamên beqâyê nabin, û di meqamê fenayê da mehû dibin. Sifetên wan 'âşiqan her tim ah û nalîn e. Cureya duyem ew *'âşiq* in ku derbasî meqamê beqâyê bûne, bi rêka vexwarina meya 'îşqê, ji destê pîrê terîqetê. Sifetên wan 'âşiqan gihiştina wîsalê, sotin û deng jê nehatin e. (MC 230-1,2,3,4,5,6) Şertê wîsala *'âşiqî* ew e ku *'âşiq* ji meqamê fenayê derbasî meqamê beqâyê bibe. Ji bo bigihêje beqâyê pêşî pêwîst e fânî bibe.

Lew di 'îşqê dā fenā bû dā bibit bāqī bi dost
'Āşiqê fānī nebū wāşil hetā bāqī nebū (MC 230-7)

Li gorî Melâyê Cizîrî ji bo *'âşiq* bigihije 'îşqa heqîqî divê di 'îşqa mecazî ra derbas bibe.

'Āşiq er cārek ji bālāyê bidit berqā mecāz
Dē li nik sāhibdilān hetā ebed bit serferāz (MC 113-1)

'Āşiq ji zumreya hukema û 'aqilmendan e. (MC 67-5) *'Āşiq* mestê 'îşqê ye, ji ber vê pêdivîya wî bi meyê tune ye (MC 70-8) Serçeşmeya 'îşqê ciwanî û xweşikahîya yarê ye, û ew xweşikahî ye ku *'âşiqî* dike. (MC 86-5) Dilê *'âşiqî* ji ber ku yek e, *'âşiq* tenê dikare ji yarekê hez bike. (MC 124-1) Armanca *'âşiqî* ji wîsalê; wehdet û yekîtîya ruhê wî û ruhê me'şûqê ye. (MC 133-7) *'Āşiq* sotîyê vîyana me'şûqê ye. (MC 142-2, m. 144-3, m. 147-5, m. 205-8) Xwîna *'âşiqî* li me'şûqê helal e. (MC 86-1) Lê *'âşiqên* rastgo, ew ên ku sed carî xwe gorî yara xwe dikin, kê m in. (MC 201-9) Dilê *'âşiqî* ji ber derbê xencerên me'şûqê her dem bi xwîn e. (MC 106-2) *'Āşiq* di îşkenceya me'şûqa xwe da nazîkî û xweşikahîya yara xwe bi bîr tîne ji bo sivikbûna azirandinê. (MC 90-3) Her tim qêrîn û nalîn ji nava dilê *'âşiq* tê ji ber remz û nazîkîya yarê ku wekî birûskan bi ser wan da tê. (MC 113-6) *'Āşiq* nikarin 'îşqa xwe veşêrin, lewra hezkirina me'şûqê di rûyê wan da dide der. (MC 159-7) Pîşe, mesleka me'şûqê naz e, sifetê *'âşiqî* li hember wê niyaz e.

Pîşe mehbûb xenc û nāz e
Weşfetê 'āşiq niyāz e (MC 206-1)

4.2.4 Derwîş (درویش)

Derwêş,⁶⁶⁹ di ferhengan da, bi wateya gedayê ku bi dengê xwe yê xweş şî'r dixwîne û bi pirsan tiştê dixwaze; feqîr, miskin, miflis, bênewa, mihtac, destvala cih girtîye.⁶⁷⁰ Wekî istilâhê 'irfânî ji bo kesên sofî, goşenişîn, qelender û zâhid jî *derwêş* hatîye gotin.⁶⁷¹ Bi wateyeke giştî ew kesê ku pûte bi dinyayê û tiştê di dinyayê da nade, peywendîyên xwe ji dinyayê qut kiribe *derwêş* e.⁶⁷² Helbet ev wateyeke giştîye û di binê vê wateyê da taybetîyên *derwêşî* cih digire. Sâikê rêya silûkê çî dema ku peywendîyê xwe ji dinyayê dibire dilê wî yê pîroz bi nûrên tecellîyatên Ilahî tê dagirtin, bi birqandina nûrên tecellîyatên Ilahî ji xwe fânî dibe û bi beqâya Heq bâqî dimîne, ji kesên di vê merheleyê da, ji wan ra *derwêş* hatîye gotin.⁶⁷³ Piştî beqâya bi Heq hasil dibe pêdivî bi tu tiştêkî din namîne. Kesên di vê merheleyê da *derwêş* e.⁶⁷⁴ Di batin da qaîlbûnî û di zâhir da gazinde nekirin ji adabê *derwêşan* hatîye hesibandin.⁶⁷⁵ Li ser van pênase û teybetîyên *derwêşî* mirov dişê bibêje ku *derwêşî* di seyr û silûkê da asteke gelek bilind e.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da em 39 caran rastî navê *derwêşî* tên. *Derwêş* di şî'rên Hâfîzê Şîrâzî da kesayetêkî musbet e. Gelek pûte pê hatîye dayîn. Ji girîngîya wî ye ku Hâfîzê Şîrâzî xezeleke xwe bi paşserwaya " درویشان است "⁶⁷⁶ honandîye.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *derwêş* kesê bênewa ye ku ev wateya ferhengî ye.

ای صاحب کرامت شکرانه ی سلامت روزی تفقدی کن درویش بی نوا را

Ey comerd! Ji bo sipasîya 'afiyet û selameta ku Xweda daye te rojekê rehmê li derwêşê bê newa bike. (HŞ 63-5)

Taybetîyên *derwêşî* wiha hatîye saloxdayîn. Xêr û bexşandina axretê ne di bala *derwêşî* da ye. (HŞ 77-3) Meyla *derwêşî* bi saz û bergên kaxa padîşah tune. (HŞ 266-5) Bi rengê 'irfânî em van taybetîyên *derwêşî* di malikên Hâfîzê Şîrâzî da dibînin: *Behîşt cihê xelweta derwêşan e û xizmeta wan dibe sedemê mezinahîyê. Gelek tilismê xezîneya xelwetê hene ku vekirina van tilisma bi nezerek mîhrîbanî ya*

⁶⁶⁹ Herçend ku rastnivîsa vê bêjeyê bi 'erebî *Derwîş* be, ji vir pê da em ê kurdîya wê *derwêş* bi kar bînin, ji ber ku zimanê teze kurdî-kurmançî ye.

⁶⁷⁰ دهخدا، ج ۷، ص ۱۰۶۹۶.

⁶⁷¹ معین، ج ۱، ص ۶۷۲.

⁶⁷² سجادی، ص ۳۸۳.

⁶⁷³ گوهرین، شرح اصطلاحات تصوف، ج ۵، ص ۲۰۹؛ لاهیجی، شمس الدین محمد، مفاتیح الاعجاز فی شرح گلشن راز، مقدمه، تصحیح و تعلیقات محمد رضا برزگر خالقی و عفت کرباسی، چاپ چهارم، انتشارات زوار، تهران ۱۳۷۱، ص ۱۷۱.

⁶⁷⁴ غزنوی، عبد الباقی هیل من، نکته ها و صلاحتی از عرفان، مرکز نشرات اسلامی، پشاور ۱۳۷۴، ص ۱۰۸.

⁶⁷⁵ غزالی، ابو حامد محمد طوسی، کمیای سعادت، به کوشش: حسین خدیوچم، شرکت انتشارات علمی و فرهنگی، چاپ نهم، تهران ۱۳۸۰، ج ۲، ص ۴۲۸.

⁶⁷⁶ یوسفی، ص ۱۲۳-۱۲۴.

derwêşan e. Kîmya û îksîra ku dilê reş pak dike hevaltîya bi derwêşan ra ye. Derwêş di asteke wusa bilind da ne ku roj li ber wan serê xwe xwar dike. Bext û îqbala ku teqez zewal jê ra nîne tenê dewleta derwêşan e. Heçî şah û siltan in ji ber ku di xizmeta derwêşan da ne, dibin qiblegaha hewcedaran. Ji ezel ta ebed Xweda firset daye derwêşan ku dikarin zilm û sîtema li ser seranserê cîhanê bidin alî. Bela û mûsîbeta hate serê Qarûn, ji ber xedeb û qehra derwêşan bû. (HŞ 123- 1,12)

حافظ ار آب حیات ازلی می خواهی منبعش خاک در خلوت درویشان است
Hâfiz! Eger tu ava heyatê ya ezelî dixwazî, kanîya wê xaka derîyê xelwetgaha derwêşan e. (HŞ 124-3)

Hâfizê Şîrâzî di gelek malikên xwe da xwe bi *derwêşî* dinasîne. (HŞ 198-5, 253-8, 454-1, 582-2) wekî mînak di malika jêrîn da wiha gotiye;

زمام دل به کسی داده ام من درویش که نیستش به کس از تاج و تخت پروایی
Ez derwêş im û min hefsarê dilê xwe daye kesekî ku êdî pêdivîya min bi kesekî tune ye û tac û text bala min nakêşe. (HŞ 725-6)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da, em di du malikan da rastî navê *derwêş* tînin ku di herdû malikan da jî bi pirjimari *derwêşan* cih girtîye. Di malikekê da *me derwêşan* derbas dibe ku mirov bi sanahî dikare bibêje Melâyê Cizîrî xwe ji *derwêşan* hesibandîye. Di heman malikê da *derwêş* rengê 'âşiqî li xwe digire ku mubtelayê burûyên yarê bûne û ev yek ji teref Xwedayê Heq ji ezel da ji bo wan nivîsandîye.

Ko Heq ev herf û xet kêşan li tîlâyê me derwêşan
Du qewsân goşe lê bādān we ser peyweste mān ebrū (MC 227-2)

Di malika jêrîn da wateya *derwêşî* ya ferhengî dîyar be jî *derwêş* geda û bê newayê yarê ye û ji yarê daxwaza nezereke bi rehm dike.

Tu pir ihsān û xwoyrehm î Li derwêşan ā bê xeşm î
Çi bitin ger bi nêv çeşm î Nezer kî tu li āstānê (MC 239-1)

4.2.5 Meczûb (مجنوب)

Meczûb, bingeha xwe ji bêjeya *cezebe* (جذب) yê digire. Pirjimara wê *meczûbûn* (مجنوبون) an *meczûb* (مجانیب) e. *Cezebe*, di ferhengan da bi wateya kişandin, ew kesê ku hatîye kişandin, bi alîyê xwe da kişandin, bi hev zeliqandin, serkeftina di tekoşînê, ziwabûnîya ava dev û hişkbûnîya şîrê pêsîrê cih girtîye.⁶⁷⁷ Di tesewufê da ji wî kesê ku di halê cezbeyê⁶⁷⁸ da ye, jê ra *meczûb* tê gotin. *Meczûb*, ew

⁶⁷⁷ دهخدا، ج ۵، ص ۷۵۸۱.

⁶⁷⁸ Ji bo cezbeye bnr: tez, xala Cezbe, r. 230-231.

kes e ku cezbeya Ilâhî wî zeft kirîye û di de'fika 'işqa Xweda da bûye esîr û bende.⁶⁷⁹ Yek ji taybetîyên sereke yên *meczûbî* ev e ku bê cehd û renc digihêje meqam û mertebeyên bilind.⁶⁸⁰ Taybetîyeke din jî ev e ku ji *meczûbî* ra di halê cezbeyê da ehlîyeta destegîrîyê û îrşadê tune.⁶⁸¹

Meczûb, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di nava helbestên Melâyê Cizîrî da em çar çaran rastî *meczûb* dibin. *Meczûb*, di malikên Melâyê Cizîrî da bi wateyên cuda cih digire. Di malika jêrîn da bi wateya ferhengî cih girtîye.

Me'sûq û 'âşiq herdu lât Meczûbî yek dê bin şifât
Ĥînâ ku bû yek iltifât Be'dek şifâtân hişse dâ (MC 45-4)

Cezbe rewşek e ku hiş ji serî dibe. Kesên *meczûb* di merheleyeke jîyana xwe ya di temamê jîyana xwe da ji xwe diçin. Karên xwe yên rojane nikarin sererast bikin. Di zâhir da rî'ayeta fermanên dîn jî nakin. Ji ber vê yeke, ji *meczûban* re, *dîwane* û *mecnûn* jî hatiye gotin.⁶⁸² Melâyê Cizîrî di du malikan da *meczûb* di wateya kesê ji 'işqê dîn bûye bi kar tîne wekî di malika jêrîn da.

Pursê li mihrdârê xwo ke L meczûb û ĥâldârê xwo ke
Bes qehr û âzârê xwo ke Qestâ birîndârê xwo ke (MC 268-5)

Di nêrîna Melâyê Cizîrî ya tesewufî da *meczûbîyet* sifetekî 'âşiqan e. Ev 'âşiqên *meczûb* her tim dilê wan bi mehbûban va girêdayîye. Lê divê mehbûbên wan jî zêde xweşik bin. Bi gotina Melâyê Cizîrî *şox* û *şeng* û *esmer* bin.

Melâ zānim ji meczûbān Tenê nājî tu bê xūbān
Demā dil dī bi mehbūbān Bî şox û şeng û esmer de (MC 193-5)

4.2.6 Murîd (مريد)

Murîd, bêjeyeke 'erebî ye û ji mesdera *irâdeh* (ارادة) ê hatiye. Di wateya kesê îrade dike, daxwaz dike, xwedî îrade de hatiye bikaranîn.⁶⁸³ Di tesewufê da du wate ji bo *murîdî* hatiye dayîn. Yek; bi wateya *muqtedî* (مقتدى) pêgir e.⁶⁸⁴ Li gorî vê wateyê divê *murîd* ji bo gihiştina Heq, daxawaza pêgirîya yek ji ewlîya an qutbê zeman an pîrê weqtê bike û bi îta'etê mutleq di emr û fermanên wî da be.⁶⁸⁵ Dudu: *murîd* bi

⁶⁷⁹ زمانى، ج ۱، ص ۹۲۵.

⁶⁸⁰ شوان، ر ۲۹۹.

⁶⁸¹ همایى، جلال الدين، مولوى نامه، مولوى چه مى گوید، نشر هما، چاپ نهم، تهران ۱۳۷۶، ج ۱، ص ۹۳.

⁶⁸² Suleyman Uludağ, *Meczûb*, DİA, c 25, r 285-286.

⁶⁸³ دهخدا، ج ۱۳، ص ۲۰۷۳۰.

⁶⁸⁴ عز الدين كاشانى، ص ۱۰۷.

⁶⁸⁵ بخارایى، احمد على رجایى، فرهنگ اشعار حافظ، انتشارات علمى، چاپ هفتم، تهران ۱۳۷۵، ص ۶۳۵.

wateya kesê hez dike, *muhibb* (محبّ) e. Di vê wateyê da *murîd* sâlikê meczûb e. Ango ew sâlikê ku hatîye cezb kirin, kişandin.⁶⁸⁶

Di nav helbestên Hâfizê Şîrâzî da, di heft malikan da têgiha *murîd* derbas dibe. Di van malikan da hem wateya ferhengî û hem wateya istilahî tê dîtin. *Murîdê* Hâfizê Şîrâzî ne *murîdê* tekke û dergâhan e. *Murîdê* Hâfizê Şîrâzî *murîdê* xerâbâtê ye. (HŞ 229-6) Qiblegaha *murîd*, xaneyaya meyfiroş e. (HŞ 71-2) Hâfizê Şîrâzî bi xwe *murîdê* cama meyê ye. (HŞ 66-8) Ji ber vê yekê, şeyxê wî jî pîrê meyfiroş e ne şeyxê dergâhê ye çawa ku di malika jêrîn da cudahîya herdu şeyxan dide ber çavan.

مرید پیر مغانم ز من مرنج ای شیخ
چرا که وعده تو کردی و او به جا آورد
Ez murîdê pîrê muxan im ji min dil negire ey şeyx, ji ber ku te soz da û wî soza xwe bi cih anî. (HŞ 253-7)

Di malika jêrîn da *murîd* bi wateya ferhengî, bi wateya kesê daxwaz dike, cih girtîye.

مرید طاعت بیگانگان مشو حافظ
ولی معاشر رندان آشنا می باش
Ey Hâfiz! daxwaza perestîşa kesên biyanî meke, lê bibe hemdemê rindên aşîna. (HŞ 434-7)

Di şîrên Melâyê Cizîrî da em çar caran liqayî *murîd* dibin. *Murîdê* Melâyê Cizîrî pêgirê pîrê xerâbâtê ye. Wekî di wateya tesewufî da hate dayîn pêgireke ku ji emr û fermanên pîrê xwe dernakeve. 'ita'eteke mutleq li hember pîrê xwe nîşan dide.

*Bi Qur'ânê bi âyâtê eger pîrê xerâbâtê
Bebêjit secde bin lâtê murîdên wî dibin qâtê*

مرید ار بی بصر نبود ز فرمانش بدر نبود⁶⁸⁷

(MC 16-5-6) که سالک بی خبر نبود ز راه و رسم منزل ها⁶⁸⁸

Di tesewufê da li hember *murîdî murâd* (مراد) heye bi wateya kesê tê daxwaz kirin. Ji bo *Murâd* jî du wate hatîye dayîn. Di wateya yekem da li hember *muqtedî* (مقتدی) pêgir, *muqtedâ* (مقتدا) pîşewa heye. Di wateya din da li hember kesê hez dike, *muhibb* (محبّ), kesê jê tê hezkirin *mehbûb* (محبوب) heye.⁶⁸⁹ Bi wateyeke kurt; li hember rehrewê rêya terîqetê murşid heye. Melâyê Cizîrî di malika xwe da herdu istilahên tesewufê bi cih kirîye. Bi vî rengî têkilîya navbera herduyan daye ber çavan.

⁶⁸⁶ عزالدین کاشانی، ص ۱۱۰.

⁶⁸⁷ Ev malik bi tevahî bi farsî ye. Wate: Eger murîd ne kor be ji emr û fermanên pîrî dernakeve. Lewra sâlik (pîr) ji resm û rahên seyr û silûkê agahdar e.

⁶⁸⁸ Melâyê Cizîrî, ev niv malik ji xezela Hâfizê Şîrâzî wergirtîye.

⁶⁸⁹ عزالدین کاشانی، ص ۱۰۷-۱۱۰.

Pîremerd im 'āšiq im îro murādā min bibexş
يا حبيبي يا مرادي يا منا قلبي المرید⁶⁹⁰ (MC 98-4)

Di malika jêrîn da Melâyê Cizîrî dîsa *murād* û *murîd* di yek malikê da bi cih kirîye. Di nîv malika duyem da bêjeya *murād* bi hunera îhamê hem bi wateya ferhengî û hem bi wateya tesewufî dikare were watedarkirin. Li gor me, wateya tesewufî serdestir e, lewra di nîv malika yekem da hêvî û daxwaz heye û di nîv malika duyem da mehrûm nekirina *murîdan* ji *murâdî* heye.

Pâbûs e murādā me ji yārā xwe di 'îdān
Meħrûm nekî mā ji murādā xwe murîdān (MC 298-1)

4.2.7 Murşid (مرشد)

Murşid, yek ji istilahên tesewufê ye ku ji Quranê hatîye wergirtin.⁶⁹¹ Li gorî Qur'ânê *murşid*, ew kes e ku rêya rast nîşan dike. *Murşid*, ji mesdera *Irşād* (ارشاد) ê hatîye. *Irşād* bi wateya rê nîşandayîn, rêya rast nîşandayîn, rêberî, rehnumayî û hîdayetê ye.⁶⁹² *Murşid* jî ew kesê rê nîşan dide, rêya rast dide ber kesan, rêber, delîl, rehnuma, hadî û destegîr e.⁶⁹³ Wekî istilaheke tesewufê, ji wî kesê ku terbîye, irşad û hîdayeta sofîyan li xwe girtîye, pîr, pîrê sofîyan, pîrê terîqetê û şêyx ra *murşid* hatîye gotin.⁶⁹⁴ Di tesewufê da ji kesê ku mezherê 'eql e *murşid* hatîye gotin ku di heman demê da mezherê navê *Ellah* û *Rehîm* e. Ji wî kesê ku mezherê nefîsê ye *delîl* hatîye gotin ku mezherê navê *Rehîm* e.⁶⁹⁵ *Murşid*, bi vê mezherîya xwe pêgirên xwe di rêya seyr û silûkê da irşad dike.

Murşid, di şîrên Hâfîzê Şîrâzî da carekê derbas dibe. *Murşidê* Hâfîzê Şîrâzî pîrê muşan e. Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da tu cudahî di navbera pîrê muşan û pîrên mayî (pîrên terîqet û dergâhan) da tune. Lewra heman sîrên ku pîrên terîqetê dizanin, pîrê muşan jî ji wan agahdar e.

پیر مغان مرشد من شد چه تفاوت
در هیچ سری نیست که سری ز خدا نیست
Eger pîrê muşan bibe murşidê min çi cudahî heye? Tu sir tune ye ji razên

Xweda ku di wî da tunebe. (HŞ 150-9)

⁶⁹⁰ Ev nîvmalik bi tevahî 'erebî ye. Wate: Ey hezkirîyê min, ey muradê min, ey hêvîya qelbê murîdan.

⁶⁹¹ " مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضَلِّلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا " Xweda kê hîdayet bike ew gihiştîye rêya rast. Kê ji rê derxîne hevalekî ku rê nîşan bide peyda nake." (Qur'âna Pîroz, Kehf 17)

⁶⁹² دهخدا، ج ۲، ص ۱۸۶۰.

⁶⁹³ دهخدا، ج ۱۳، ص ۲۰۶۶۶.

⁶⁹⁴ گوهرین، فرهنگ لغات و تعبیرات مثنوی، ج ۸، ص ۲۹۱.

⁶⁹⁵ سجادی، ص ۷۱۲.

Di nav malikên Melâyê Cizîrî da em du caran liqayê *murşid* dibin. Li gorî Melâyê Cizîrî, *murşid* ew kes e ku irşadê dike. Pêdivîya sâlikî û kesên daxwaza irşadê dikin bi *murşidî* heye. Ev nêrîna Melâyê Cizîrî ya tesewufî ye.

Ne xereç vêkkinā yek weliyek murşidî bit
Sâlik û tâlibê irşadê bi Bexdâdi çî kit (MC 71-1)

Di malika jêrîn da Melâyê Cizîrî di hestên 'aşiqâne da me'sûqa xwe wekî *murşidî* dinasîne.

Rohniyā çehvên nebînān *Murşidê meczûb û dînān*
Dârûyê derd û birînān *Min teleb dînā te ye* (MC 210-5)

4.2.8 Sâlik (سالک)

Sâlik, ji fi'la *seleke* (سَلَكَ) hatîye. Wateya ferhengî ya *seleke* şopandina rêyekê, şopandin, meşandin, li pey tişteki çûyin û tevgera bi rêbazekê ye. Wateya *sâlikî* ya ferhengî ev e: Misafir û ew kesê di rê da dimeşe.⁶⁹⁶ Di tesewufê da *sâlik* ew kes e ku meqamên tesewufê bi halê xwe derbas dike ne bi 'ilm û zanebûna xwe.⁶⁹⁷ *Sâlik* di destpêkê da *tâlib* (طالب) e. Ango kesê ku daxwaz dike. Daxwaza wî encama ihsaskirina kêmasîyan e, daxwaza şîretan û meyla bi bal kemalê ye. Piştî ji xwe ra pîr, murşidek peyda kir û bû murîdê wî bi renumayîya wî dikare seyra xwe bigîhîne encamê.⁶⁹⁸ Ji vê tê famkirin ku pêdivîya *sâlikî* bi murşidekî heye.

Sâlik, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da, di 12 malikan da cih girtîye. *Sâlikê* dîwana Hâfîzê Şîrâzî du alî ye. Ji layekî va sifetê pîr (murşid, mirad, rehber) di xwe da digire û ji layekî va sifetê murîd, rehrew li xwe digire.⁶⁹⁹ *Sâlik* dema sifetê pîr li xwe digire pîr, pîrê muşan e (HŞ 57-4) û 'ârif û zana ye (HŞ 391-4) û pîrê 'işqê ye wekî di malika jêrîn da xuya dike.

چو پیر سالک عشقت به می حواله کند بنوش و منتظر رحمت خدا می باش

Çi dema pîrê sâlikê rêya 'işqa te ji bo vexwarina meyê te bişîne, vexwe û li bendeyî rehmeta Xweda be. (HŞ 434-3)

Sâlikê bi sifetê rehrewê rêya seyr û silûkê, *sâlikê* meyxanê û xerâbâtê ye ne *sâlikê* dergâh û xanqahê ye. *Sâlik* çî dema ku berê xwe bide meyxaneyê û xerâbâtê ew ê têbigîhêje ku tu rêyên rast ji wê pê va tune ye. (HŞ 120-1) Ji ber vê, her tiştê di vê rêyê da were pêşîya *sâlikî* ji wî ra xêr e. (HŞ 154-2) Eger *sâlik* li ser soza xwe

⁶⁹⁶ دهخدا، ج ۹، ص ۱۳۳۴.

⁶⁹⁷ الجرجانی، ص ۱۰۰.

⁶⁹⁸ بخاری، ص ۲۴۹.

⁶⁹⁹ خرماهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۹۹.

bisekine, peymanaxwe neşkîne ew ê bigihêje mizgînîyê. (HŞ 310-3) Hemû *sâlik* ne di astekê da ne. *Sâlikên* destpêkê, zêde dema pîrên xwe digirin û reftarên ne şayeste dikin. (HŞ 331.-6) *Sâlik*, bi alîkarî û rêberîya pîr di rê da dikare bimeşe, bê rêber bimeşe ew ê negihêje armancê.

سالک از نور هدایت ببرد راه به دوست که به جایی نرسد گر به ضلالت برود

Sâlik, bi alîkarîya nûra hîdayetê di rêya dost da dimeşe, eger bê rêberîya pîr bimeşe ew ê rêya xwe şaş bike. (HŞ 361-3)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da pênc caran em rastî *sâlikî* tên ku yek ji wan di malika ku ji Hâfizê Şîrâzî hatîye tezmînkirin cih girtîye. Di vê malikê da *sâlik* wekî li jor amaje pê hate kirin pîr e. (n.16-6) Di malikên din da *sâlik* heman *sâlikê* rêya seyr û silûkê ye. Pêdivîya *sâlikî* bi murşidî heye. Ji ber vê divê *sâlik* li murşidekî bigere. (MC 71-1) *Sâlikê* Melâyê Cizîrî *sâlike* rêya 'işqê ye. Hemû *sâlikên* rêya 'işqê cama meyê ji destê pîr vedixwin. (MC 230-1) Herçend Melâyê Cizîrî rasterast nebêje jî, ji malikên wî tê famkirin ku *pîrê sâlikî pîrê xerâbâtê* ye û *sâlik* jî berê xwe dide xerâbâtê. Ev yek taybetîyê rêya 'işqê ye. Çawa ku di malika jêrîn da dibêje çî dema *sâlik* dilberan ji meyê mest bibîne divê ji wê tobeya venexwarina meyê bizîvire.

*Neyşekerên şîrînzebân mestê bi cām û bāde tēn
Ferḍ e dibit ji tewbeyê sâlikê 'işqê tewbe ferḍ* (MC 132-4)

Di hizra Melâyê Cizîrî da *sâlik* ew kes e ku ji 'işqa mecazî derbas bibe û nig avêtibe bi bal 'işqa heqîqî va. Ango 'işqa mecazî ji bo *sâlikî* wekî pirekê ye ji bo derbasbûna bi bal 'işqa heqîqî va.

Sâlik kî ye hatî ji mecāzê bi heqîqet (MC 66-3)

4.2.9 Şeyx (شیخ)

Şeyx, bêjeyeke 'erebî ye û pîr jimara wê *şuyûx* (شيوخ) e. Wateya ferhengî ew kesê ku dewra xortanîya wî bi dawî bûbe, zilamê bi temen ku temenê wî di wî da xuya bûbe, pîr û pîremerd e. Di heman demê da ji hakimê bajar, mezinê qewm û ji mezinê qebîlê ra jî *şeyx* tê gotin. Ji wan kesên ku di zanistekî da pêşketî ne, di 'ilim da xwedî biryar in, ji wan ra jî *şeyx* tê gotin.⁷⁰⁰ Di istilahê tesewufê da *şeyx* ji *murşid*, *murâd* û *qutbî* ra tê gotin ku di şerî'et, terîqet û heqîqetê da kamil bûye. Çawa ku *şeyxîti* asta naîbîya nubûwwetê ye, herwiha *şeyx* jî naîbê Resûlê Xweda (s.a.s.) ye.

⁷⁰⁰ دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۴۶۴۵.

Lazim e ku *şeyx* di sofî da teserrufê bike û ayîneya dilê wî pak bike.⁷⁰¹ Wekî di wateya ferhengî de derbas bû *şeyx*, di zanista tesewufê da pêşketî ye û dikare pêgirên xwe bigihîne mirada wan.

Di helbestên Hâfizê Şîrâzî da *şeyx* di du malikan da (HŞ 418-1, 625-1) bi wateya salmend, temendirêj cih digire û di 21 malikan da bi wateya tesewufî, wekî pîşewayê dergâh cih girtîye. *Şeyx*, di malikên Hâfizê Şîrâzî da kesayetekî menfî ye. Di gelek malikan de bi hunera tenzê wî rexne dike. Weka di malika jêrîn da dema ku dibêje *şeyxê kiraspaqij* di rastîyê da tinazê xwe bi wî dike.

حافظ به خود نپوشید این خرقه می آلود ای شیخ پاک دامن معذور دار ما را
Hâfiz bi xwe li xwe nekirîye ev xirqeyê meygemarî, ey şeyxê kiraspaqij me me'zûr bibîne. (HŞ 63-13)

Sedemên ku *şeyx* kesayetekî neyînî ye, di malikên wî da wiha tê dîtîn: *Şeyx*, bi libên tizbîya xwe însanan dixapîne. (HŞ 689-6) *Şeyx*, soza xwe bi cih nayîne. (HŞ 253-7) Lutf û kerema wî geh heye û geh tune. (HŞ 154-10) Wekî di malika jêrîn da tê dîtîn *şeyx*, Hâfiz, muftî û muhtesib, kesên rîyakar in.

می خور که شیخ و حافظ و مفتی و محتسب چون نیک بنگری همه تزویر می کنند
Şerabê vexwe, dema baş binihêrî tuyê bibînî ku şeyx, Hâfiz, muftî û muhtesib kesên rîyakar in. (HŞ 331-10)

Wekî istilaheke tesewufî *şeyx*, di dîwana Melâyê Cizîrî da pênc caran cih digire. *Şeyx*, bi piranî di helwestên 'aşîqâne da cih girtine. *Şeyx* û zâhid bi hev ra ji destê mehbûbê meyê vedixwin. (MCD 21-6) Bi sedan *şeyx* wekî Melâyê Cizîrî muhtelayê suhbeta yarê ne, lewra ew suhbet û çerx û sema wekî ava heyatê ye. (MC 94-2) *Şeyx*, nûra dilî ye, çiraya dilî bi nûra xwe geş dike, qibleya dilî ye, rê û rêçan nîşan dide. (MC 121-3) Herçend di vê malikê da hin taybetîyên *şeyx* hatibe destnîşankirin jî *şeyx* me'şûq bi xwe ye. Melâyê Cizîrî xwe ji *şeyx* û îmam mezintir dibîne.

Feydâ me şubhê Nîl e em Dicle û Furât in
Ger şeyx û wer îmam e vê rā ye min keşākeş (127-6)

Bi wateya ferhengî Melâyê Cizîrî *şeyxî* wekî pîşewayê zanistekê dibîne. Ev zanist 'işq e. Melâyê Cizîrî xwe wekî *şeyxê* duyem yê zanista 'işqê dinasîne. Di dîwana wî da *şeyxê* 'işqê yê yekem kî ye bi zelaî ne dîyar e.

Di 'işqê şeyxê şānî me, bi dil behrê me'ānî me

⁷⁰¹ سجادی، ص ۵۱۷.

(MC 242-10) لذي حجر وذی قلب شفاء فی اشاراتی⁷⁰²

4.2.10 Zāhid (زاهد)

Zāhid, ji rayeka *zehede* (زهد) hatîye. Pirjimara *zāhidî*, *zuhhâd* (زهد) û *zâhidûn* (زاهدون) e. *Zehede*, bi wateya pîvana tişteki, bi qasî tişteki ye.⁷⁰³ Ev kesê ku terka tişteki dike û berê xwe jê dizivîrîne wateya *zāhidî* ya ferhengî ye.⁷⁰⁴ Di tesewufê da *zāhid* ew kes e ku berê xwe ji dinya û hemû tiştên dinyewî zivîrandîye.⁷⁰⁵ Hatîye gotin ku *zāhid* ew kes e ku zuhda wî bi kiryarên wî ye, *zāhidnuma* jî ew kes e ku zuhda wî bi zimanê wî ye.⁷⁰⁶ Ferîduddînê 'Ettar (w. 618/1221) di dîwana Xwe da *'âşiqî* bi *zāhidî* ra miqayese dike û di vê bawerîyê da ye ku; *eger tu 'âşiqî, me'sûq dûr e, eger tu zāhidî, me'sûq horî ye. Dilê zāhidî her tim di xeyalê da ye, dilê 'âşiqî her tim di aramîyê da ye. Meşreba 'âşiqî xerabûna di xerabûnê da ye, meşreba zāhidî xirûra di xurûrê da ye.*⁷⁰⁷ Bi vî rengî taybetîyên *zāhidî* dide ber çavan. Mewlana Celâleddînê Rûmî, *zāhidî* wekî mînaka hişkbûnîyê nîşan dide. Wiha dibêje; *wekî metela zāhidan hemû çîmen hişk bû.*⁷⁰⁸ Ji van herdû mînanan tê famkirin ku *zāhid* kesayetekî ne zêde pesendîde ye.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *zāhid* yek ji kesayetên neyînî yê sereke ye. Bi taybetîyên xwe yê neyînî 42 caran di malikên Hâfizê Şîrâzî da cih girtîye. Taybetîyên *zāhidê* dîwana Hâfizê Şîrâzî yê sereke wiha dikare were destnîşankirin:

Zāhid, zâhirperest e.

زاهد ظاهرپرست از حال ما آگاه نیست در حق ما هر چه گوید جای هیچ اکراه نیست

Zāhidê zâhirperest ji rewşa me bê agah e, ji ber vê tiştê derbarê me da dibêje nabe sedema gilî û gazinan. (HŞ 154-1)

Zāhid li pey ni'metên axretê ye.

زاهد اگر به حور و قصور است امیدوار ما را شراب خانه قصور است و یار حور

Zāhid ger bi hêvîya horî û qesra ye, ji me ra şerabxane qesr e û yar jî horî ye.

(HŞ 406-5)

⁷⁰² Ev niv malik bi tevahî bi 'erebî ye. Wate: Di remz û îşaretê min da şîfa heye ji bo kesên hişmend û xwedî dîl.

⁷⁰³ دهخدا، ج ۹، ص ۱۳۰۲۷.

⁷⁰⁴ دهخدا، ج ۸، ص ۱۲۵۷۷.

⁷⁰⁵ سجادی، ص ۴۴۱.

⁷⁰⁶ کی‌منش، عباس، پرتو عرفان: شرح اصطلاحات عرفانی کلیات شمس، انتشارات سعدی، تهران ۱۳۶۶، ج ۲، ص ۵۸۹.

⁷⁰⁷ عطار نیشابوری، فرید الدین محمد، دیوان عطار، تصحیح: تقی تفضلی، انتشارات علمی و فرهنگی، چاپ پنجم، تهران ۱۳۶۸، ص ۴۹.

⁷⁰⁸ مولانا جلال الدین محمد مولوی، کلیات دیوان شمس، بقلم: فروزانفر، محمد حسن بدیع الزمان، امر کبیر، تهران ۱۳۷۶، ص ۸۳۹.

Zâhid bi xirûr e.

زاهد غرور داشت سلامت نبرد راه
رند از ره نیاز به دارالسلام رفت
Zâhid, bi sebeb kibr û xirûrê rêya xwe bi selametî nebîr serî, rind bi nîyazê

rêya behîştê girt. (HŞ 172-6)

Zâhid xwodbîn e.

برو ای زاهد خودبین که ز چشم من و تو
راز این پرده نمان است و نمان خواهد بود
Bimeş ey zâhidê xwodbîn ku ji çavên min û te razên vê perdeyê (afirandinê)

veşartî ye û ew ê veşartî bimîne. (h, 338-4)

Zâhid 'âbidnuma ye

زاهد و عجب و نماز و من و مستی و نیاز
تا تو را خود ز میان با که عنایت باشد
Zâhid û xwepesendî û nimêj û ez û mestî û nîyaz, ka em binihêrin tuyê ji me

herdûyan kîjan bipejirînî. (HŞ 271-3)

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi van taybetîyên xwe *zâhid* heman *zâhidê* Ferîduddînê 'Ettar e.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di çar malikan da *zâhid* derbas dibe. *Zâhid*, kesayetekî ji rêzê ye, tu taybetîyên wî yên neyînî nayên dîtin. *Zâhid, şeyx, sofî û melâ* di heman kategorîyê da di helwestên 'âşiqâne da cih digirin. *Zâhid û Şeyx* mestê çavên me'şûqî ne. (MCD 21-6) Husn û xweşikahîya me'şûqê sed *zâhid* ji rê derxistîye. (MC 273-6) Zulfa yarê *zâhid, sofî û melâ* wekî jar û feqîr û mubtelayan bi sed belayan dikuje.

Zâr û feqîr û mubtelâ Zâhid û sofî û melâ
Kuştine ew bi sed belâ Kes nekevit belâyê zulf (MC 144-4)

Di yek malikê da Melâyê Cizîrî behs ji sîreta *zâhidî* dike. Li gorî Melâyê Cizîrî *zâhid* xwedî tebî'eteke hişk e û pêwîst e bi cama şerabê tebî'eta wî were nerm kirin. Ev nêrîna Melâyê Cizîrî derbarê hişkbûnîya tebî'eta *zâhidî* yek ji taybetmendîyên *zâhidê* Mewlana ye.

Zâhidê hişkişîbi'i sewdâ ye
Bi du cāmān tebî'etê ter ke (214-4)

4.2.11 Pîr (پیر)

Pîr, di farsî û kurdî de bêjeyeke hevpar e. Pirjimara wê *pîran* e. Erebiya wê *şeyx* e. Di ferhengan da bi wateya kesên salmend, ixtîyar û li gorî bikaranîna bêjeyê bi wateya kevn, kevnare û qedîm jî cih digire. Dijberê peyvên *ciwan* û *xort* e. Ji bo mezinê dewletê yan ji bo mezinê gel jî *pîr* hatîye gotin ku rêberîyê ji bo gel û dewletê

dikin.⁷⁰⁹ Bêjeya *pîr* di tesewufê da ji wan elfazan e ku gelek wateyan li xwe digire. *Pîr* bi wateya şeyx, mirad, merdê kamil, welî, însanê kamil, rêberê rê, murşid, rehnuma, pîşewa, îmam, destegîr, qutb, pîşewayê terîqet cih digire.⁷¹⁰ Xuya ye ku wateya tesewufî ji mezinatî û rêberîya wateya ferhengî hatîye wergirtin.

Pîr, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bi sê rengan cih digire. Bi wateya ferhengî ku dijberê gênc, xort û ciwan e. (HŞ 174-2) *Pîr* Wekî leqeb û sifet cih digire. *Pîrê* Ken'an (HŞ 177-1) û *Pîrê* Ken'anî (HŞ 697-7) wekî leqeba Hezretî Ye'qûb e. *Pîr* bi wateya murşid û rêberê terîqetê.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bi wateya tesewufî *pîr* û terkîbên bi *pîrê* hatine ava kirin bi 21 şiklan cih digire. Li gor hejmarên van: 1- *Pîrê* Muxan (25 caran) 2- *Pîr*, *Pîrê* Ma, *Pîrê* Men (17 caran) 3- *Pîrê* Meyfiroş (5 caran) 4- *Pîrê* Xerâbât (4 caran) 5- *Pîrê* Meyxane (3 caran) 6- *Pîrê* Dana (2 caran) 7- *Pîrê* Meykede (2 caran) 8- *Pîrê* Terîqetê (1 carî) 9- *Pîrê* Sum'e (1 carî) 10- *Pîrê* Dihqan (1 carî) 11- *Pîrê* Durdîkeş (1 carî) 12- *Pîran* (1 carî) 13- *Pîrê* Gulreng (1 carî) 14- *Pîrê* Xired (1 carî) 15- *Pîrê* Badefiroş (1 carî) 16- *Pîrê* Suhbet (1 carî) 17- *Pîrê* Sâlik (1 carî) 18- *Pîrê* Ferzane (1 carî) 19- *Pîrê* Peymanekes (1 carî) 20- *Pîrê* Sahibfen (1 carî) 21- *Pîranê* Soxen (1 carî). Bi tevahî 71 caran *pîr* û terkîbên bi *pîrê* hatine çêkirin tê dîtin.

Herçend Hâfîzê Şîrâzî di dîwana xwe da eşkera navê murşidê xwe negotibe jî, ji malikên wî wusa xuya ye ku di nêrîna wî da pêdivîya kesên di rêya seyr û silûkê da bi murşidekî, pîrekî heye.

ظلمات است بترس از خطر گمراهی
قطع این مرحله بی هم‌رهی خضر مکن

Di vê rêyê da bê hevaltîya Xidir nemeşe, tarî ye, bitirse ji xetera wendabûnê.

(HŞ 719-2)

Dîsa di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da divê kesên dikevin rêya seyr û silûkê bê dudilî, bê çima û çira di emrê murşidên xwe da bin. Murşide wan çi ferman bike lazim e ku pêk bînin.

به می سجاده رنگین کن گرت پیر مغان گوید
که سالک بی خبر نبود ز راه و رسم منزل ها⁷¹¹

Eger pîrê muxan bibêje seccadeya xwe bi meyê rengîn bike, bipejirîne. Lewra ew ji rê û rêçên seyr û silûkê baş agahdar e. (HŞ 57-2)

⁷⁰⁹ دهخدا، ج ۴، ص ۵۹۰۲.

⁷¹⁰ گوهرین، شرح اصطلاحات تصوف، ج ۲، ص ۳۵۷-۳۶۱.

⁷¹¹ Di misraya duyem da sâlik, ne bi wateya rehrewê terîqetê û murîd e. Bi wateya pîrê muxan e. (استعلامی، ص ۶۸)

Pîr di malikên Hâfizê Şîrâzî da kesayetekî erênî ye û li hember *şeyxê* dergâhê li meyxaneya 'işqê disekine. Ji ber vê hemû terkîbên wekî; *Pîrê Xerâbât*, *Pîrê Meyfiroş*, *Pîrê Meyxane*, *Pîrê Meykede*, *Pîrê Terîqet*, *Pîrê Sum'e*, *Pîrê Durdîkeş*, *Pîrê Gulreng*, *Pîrê Badefiroş*, *Pîrê Peymanekêş* û yên mayî di şexsîyeta *Pîrê Muxan* da dicivin.

Herçend ku di edebîyatê da rabirdûyek *pîrê muxan* hebe jî, bi wesf û taybetîyên ku Hâfizê Şîrâzî lê kirîye wekî şexsîyetekî cih digire di malikên wî da. Ev şexsîyet, şexsîyetekî rasteqîn e yan şexsîyetekî xeyalî ye ne dîyar e. Lewra em nizanin ku Hâfizê Şîrâzî di jîyana xwe da bûye murîdê kesekî yan nebûye murîdê kesekî. Tiştê teqez ev e ku ev şexsîyet, *pîrê muxan*, di dîwanê da pîrê Hâfizê Şîrâzî ye. Ev *pîr* e ku muşkilên Hâfizê Şîrâzî çareser dike. (HŞ 249-1) Alîkarîyê ji *pîrê muxan* dixwaze. (HŞ 342-5) Penahî tenê li dergâhê *pîrê muxan* e (HŞ 427-3) Tenê minneta *pîrê muxan* dikêşe. (HŞ 513-6) Di malika jêr da eşkera wiha dibêje;

مرید پیر مغانم ز من مرنج ای شیخ چرا که وعده تو کردی و او به جا آورد
Ez murîdê pîrê muxan im ji min dil negire ey şêx, ji ber ku te soz da û wî soza xwe bi cih anî. (HŞ 253-7)

Pîrê muxan li hember *şeyxê* dergâh û xanqahê cih digire di malikên Hâfizê Şîrâzî da. Wargeh û cihê wî *dêra muxan* e, (HŞ 58-2) *meykede* ye, (HŞ 535-6) *gundê meyfiroşan* e, (HŞ 689-1) *gundê 'işqê* ye, (HŞ 709-1) *xerâbât* (HŞ 119-7) û *meyxane* ye.

منم که گوشه ی میخانه خانقاه من است دعای پیر مغان ورد صبحگاه من است⁷¹²
Ez ew kesim ku koşeya meyxanê dergâhê min e, wirdên min yê spêdê jî dû'ayên ji bo pîrê muxan e. (HŞ 129-1)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *pîr* bi sê rengan cih digire. Bi wateya ferhengî ku dijberê ciwan e. (MC 218-2, 98-4) Bi wateya mezinê huner û pîşeyê û bi wateya tesewufî. Bi wateya mezin, pîşewayê hunerê em di malika fexrîyê da dibînin. Melâyê Cizîrî xwe wekî pîş û pîşewayê şî'rê dide nasîn û vê yekê bi bêjeya *pîr* tîne ziman.

Pîrê şe'âr e di şî'rê we melê şālîfiroş
Tu nişânî min mede Ferxî ko li nik min bûye fêrx (MC 95-6)

⁷¹² Mîsraya duyem bi du wateyên din jî dikare were watedar kirin. 1) Ez wê du'a û zîkrî dibêjim ku pîrê muxan ji min xwestîye. 2) Ez wê dû'a û zîkrê dikim ku di her spêdê da pîrê muxan bi lêv dike. (خالقی، ص ۱۴۹)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *pîr*, wekî istilahê tesewufê 11 caran û bi şeş terkîban derbas dibe. Pîrê Muxan (3 caran), Pîrê 'Işqê (3 caran), Pîrê Melâ (1 Carî), Pîrê Hikmetbîn (1 carî), Pîrê Terîqê (1 carî), Pîrê Xerâbât (1 carî) û Pîr (1 carî).

Pîr, bi wateya tesewufî di malikên Melâyê Cizîrî da murşidê kamil e ku rehrewên terîqetê bi rehnumayîya wî digihêjin armanca xwe. Di nêrîna wî da xizmeta *pîr*;

*Xidmetâ pîrê muxân dê kit kesê meqşûd e mey
Şîşe û cāmā zucācê ê divêt dê ret Heleb (MC 57-3)*

û bicihanîna emr û femanên *pîr* bêyî çima û çira pêwist e.

*Bi Qur'ânê bi âyâtê eger pîrê xerâbâtê
Bebêjit secde bin lâtê murîdên wî dibin qātê (MC 16-5)*

Herçend di malikekê da bibêje *pîrê muxan* ji şîşeyê mey daye me jî (MC102-6) *pîrê* Melâyê Cizîrî *pîrê 'işqê* ye. Di qeyd û benda zulfekê da dilê xwe daye destê *pîrê 'işqê*;

*Min di bendâ zulfekê dil dā bi destê pîrê 'işq
Lew di 'işqê dā me best iħrām ū yek zunnāri bes (MC 124-2)*

û ew *pîrê 'işqê* ye bi qesta çûna rêka 'işqê îhramê li Melâyê Cizîrî dike. Ew warê ku Melâyê Cizîrî xirqeyê xwe ji bo vexwarina meyê rehîn dide ku cih û mekanê *pîrê 'işqê* ye; *Meyxane* ye.

*'Eqdê iħrāmê di 'işqê dā ko pîrê 'işqê best
Dê çi xem ger xirqe rehnê xāneyê xemmār i bit (MC 64-7)*

Di berhemên li ser Melâyê Cizîrî hatine nivîsîn û jîyana wî vekolandine derbarê şeyx û murşidê Melâyê Cizîrî da tiştek nehatîye bidestxistin. Di dîwana wî da bi zelalî navê tu murşidekî ku em bibêjin Melâyê Cizîrî pêgirê wî û terîqeta wî ye derbas nabe. Melâyê Cizîrî bêjeya *pîr* bi gelemperî di nêrînen 'aşiqâne da bi kar tîne. Taybetiyên wî yê sereke têkilîya wî bi mey û şerabê ye. Sâlikên 'işqê ji destê *pîrê terîqê* meyê vedixwin. (MC 230-1) *Pîrê* Melâyê Cizîrî fetwayê dide ji bo vexwarina meyê. (MC 117-8) Melâyê Cizîrî bi xwe jî ev fetwa ji *pîrê* xwe wergirtiye. (MC 111-8) *Pîrê hikmetbîn* bê şaşî û xeletî fincana meyê dadigire. (MC 141-6) Melâyê Cizîrî di malika xwe da xwe wekî *pîrê 'işqê* dinasin e.

*Xweş perîşānşifet ū mecmu'eyê sûretê hāl in
Pîrê 'işq in ū ciwanṭeb' ū dilê 'ehdê şebāb e (MC 198-1)*

4.2.12 Şofî (صوفی)

Di destpêka vê beşê da em li ser rayeka bêjeya *sofî* bi berfirehî sekinîn.⁷¹³ Wekî istilahekî tesewufê ji rehrewên tesewuf, terîqetê ra *sofî* tê gotin. Armanca *sofî* ew e ku dilê xwe tesfîye bike, safî bike û nefsa xwe tezkiye, paqij bike.⁷¹⁴ Suhrewerdî li ser vê pênasayê *perwerdeya ruh bi sifetên baş zêde dike*.⁷¹⁵

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 33 caran bêjeya *sofî*, 8 caran bi pirjimarî *sofîyan* û carek jî *sofîyane* derbas dibe ku bi tevahî dibe 42 caran.

Wekî nêrîneke giştî rayeka bêjeya *sofî* ji li xwekirina cilên ji hirîyê hatîye. Hâfizê Şîrâzî jî li ser vê kevneşopîyê, *sofî* ew kesên ku cilên ji hirîyê li xwe dike pênasê dike.

صوف برکش ز سر و باده ی صافی درکش
سیم در باز و به زر سیم بری در بر گیر
Cilê ji hirîyê ji xwe bike û şeraba saf vexwe, pere xerc bike û bi zêr û zîv me'şûqa bejinzîv himbêz bike. (HŞ 410-6)

Sofî, di malikên Hâfizê Şîrâzî da kesayetekî du layane ye.⁷¹⁶ Ji layekî kesayetekî menfî û nebaş e. Ji layekî din va kesayetekî musbet e. Lê divê were gotin layê *sofî* yê menfî, taybetiyên wî yên menfî bêtir berbiçav in. Hin taybetiyên *sofîyê* menfî ev in:

Sofî, xwarina bi şubhe dixwe. Ji ber vê Hâfizê Şîrâzî *sofî* wekî heywana pîrxwarek dibîne.

صوفی شهر بین که چون لقمه شبهه می خورد
پاردمش دراز باد آن حیوان خوش علف
*Li sofîyê bajêr binihêre ku çawa luqma bi şubhe dixwe, ez bi hêvî me ku parduma*⁷¹⁷ *vî heywanê xweşxwarek dirêj bibe.* (HŞ 463-8)

Exlaqê *sofî* nexweş e, bihna 'işqê neçûye difnê wî. Lixwekirina cil û bergên ji hirîyê wekî sifetê wan dinasîne.

پشمینه پوش تندخو از عشق نشنیده است بو
از مستی اش رمزی بگو تا ترک هشیاری کند
Sofîyê cilhirî, bedexlaq bihna 'işqê nebihîstîye, remzekî ji mestîya 'işqê jê ra bibêje ji bo terka hişyarîyê bike. (HŞ 317-1)

Sofî, zâhidê rîyakar e.

صوفی گلی بچین و مرقع به خار بخش
وین زهد خشک را به می خوش گوار بخش

⁷¹³ Bnr tez, r. 180-181

⁷¹⁴ عزالدین کاشانی، ص ۴.

⁷¹⁵ سهوردی، عوارف المعارف، ص ۲۴.

⁷¹⁶ Her çend ku Xurremşahî bibêje; *Hâfizê Şîrâzî daîma bi nebaşî behsa sofî kîrîye* (خرمشاهی، حافظ) em dibînin ku di hin malikan da bi alîyê musbet jî derbas dibe. (نامه، ج ۱، ص ۱۳۸)

⁷¹⁷ Pardum, yek ji alavên hespan e ku bi zîna hespê didirûtin ji bo ku zîn neşemite û li bênê zîkê heywanê dihat girêdan. Çi dema heywan qelew bubûya pardum dirêj dikirin. (خالقی، ص ۴۹۲)

Ey sofî! Gulê biçîne û xirqeyê xwe pîne pîne bibexşîne histriya, û vê zuhda xwe ya hişk bi şeraba xweş lezzet veguhezîne. (HŞ 435-1)

Sofî xapînok e, hîleger e.

صوفی نهاد دام و سر حقه باز کرد
بنیاد مکر با فلک حقه باز کرد
Sofî, serê huqqeyê⁷¹⁸ vekir û dest bi xapandinê kir, hetta dixwaze ku felekan jî bixapîne. (HŞ 236-1)

Kiryarên sofî wekî kiryarên deccal xerab in.

کجاست صوفی دجال فعل ملحدشکل
بگو بسوز که مهدی دین پناه رسید
Ew sofîyê deccal kiryar û zâhîren wekî kafîran li ku ye? Jê ra bibêje; bişewite ku mehdîyê piştewanê dîn ghişt. (HŞ 389-6)

Sofî şerabxwar û şehwetperest e.

صوفیان جمله حریفند و نظر باز ولی
زین میان حافظ دلسوخته بدنام افتاد
Hemû sofî hevalên hev yên şerabxwarinê û nezerbaz in, tevî vê, navê Hâfîzê dilşewîtî bi xerabî derket. (HŞ 205-11)

Hâfîzê Şîrâzî, herçend ku di dîwana xwe da gelek te'n dabe sofîyan jî ne dijberê sofîyan e. Belkî dijberê sofîk, sofîrengan e ku bi rengê sofîtiyê gel dixapandin. Lewra di serdema wî da sofîyê rasteqîn hindik û sofîyê xapînok zêde bûn.⁷¹⁹ Ji ber vê ye ku di malikên jêrîn da *sofî* bi rengê xwe yê musbet cih digire. Hâfîzê Şîrâzî gotinên sofîyan bi qîmet dibîne û di bawerîya wî da divê guh li wan werin kirin.

یک حرف صوفیانه بگویم اجازت است
ای نور دیده صلح به از جنگ و داوری
Destur heye ez gotinek sofîyane bibêjim? Ey ronahîya çavan, aşîtî jî şer û cengê baştir e. (HŞ 665-7)

Hafîe Şîrâzî xwe jî ji sofîyan dihesibîne.

صوفی صومعه ی عالم قدسم لیکن
حاليا دیر مغان است حوالنگاهم
Ez sofîyê dêra 'âlema pak a melekût im, lakîn aniha wergeha min dêra muşan e. (HŞ 548-6)

Bêjeya *sofî* di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê şeş caran, di şeş malikan da derbas dibe. *sofîyê* Melâyê Cizîrî heman *sofîyê* rehrewê rêya seyr û silûkê ye. Di pênc malikan da *sofî* di hestên 'âşiqâne da cih digire. Di malikekê da têkilîya *sofî* û murşid heye ku ev malik jî bi nêrîneke 'âşiqâne dikare were ravekirin. Di van şeş

⁷¹⁸ Huqqe, ew alava biçûk e ku tê da eşyayê bi qîmet hebûn. Sindoqa biçûk. Bi taybet yek ji alavên canbazan e ku di wan da eşyayê cambazîyê vedişartin. Di malikê da kinaye ye ji bo xapandinê çawa ku cambaz bi leyistikên xwe mirovan dixapînin. (خالقی، ص ۳۴۴)

⁷¹⁹ بخارایی، ص ۱۸.

malikan da di du malikan *sofi* û xelwet bi hev ra têkildar e. Di du malikan da *sofi* û reqs û sema bi hevra cih digirin.

Xelwet bêjeyeke 'erebî ye û bi wateya tenhayî û înzîwayê ye.⁷²⁰ Di tesewufê da xelwetnişînî yan çillenişînî cûreyeke înzîwayê û pejirandina tenêbûnê ye. Kevneşopîya xelwetê ji jîyana pêxemberan hatîye wergirtin. Hezretî Mûsa çil rojî li mîqatê maye, Hezretî 'Îsa rî'ayetê adabê xelwetnişînîyê kirîye. Hezretî Muhemmed (s.a.s.) ji xwe ra kiribû 'edet ku salê mehekê di şikefta Hîra da bikeve xelwetê. Hikmeta xelwetê ev e ku di çil sibehî da di her sibehê perdeyek ji ber dilê *sâlikî* radibe.⁷²¹ Ev yek pala xwe dide hedîseke Cenabê Pêxember (s.a.s.). Her kesê ji bo Xweda çil sibehî xalis û bê şaîbe be, çeşmeyên hikmet û zanebûnîyê ew ê ji dilê wî biherikin ser zimanê wî.⁷²²

Melâyê Cizîrî amaje bi vê xelwetê dike û piştî temambûna xelwetê wekî nîşana sihheta xelwetê ku dilê *sofi* bi hîkmet û zanebûnîyê tîjî bû, ji ber vê dîyarîya Xweda dema herin secdeya şukrê herdû birhên yarê ji wan ra mihrab û qible ye.

Şofîyê xelwenişîn bên di sucûd
Herdû burhên te ne mihrâbê du'â (MC 30-2)

Di malika din da amaje bi xelwetê û ronîkirina dilê *sofiyan* dike.

Pê li ser dîdeyên Melê dayîn
Xelweyâ şofîyân munewwer ke (MC 214-7)

Di mijara têkîliya reqs û semayê bi *sofi* ra, em dikarin bêjin kêf û şahîya melekên Subbûhî û reqs û semaya firişteyên Quddûsî hatîye şibandin bi coşa cezbeya Sofîyan.

Hây û hüyâ subbûhiyân *Reqş û semâyâ qudsiyân*
Teşbîhê coşâ şofîyân *Feryâd û zikr û lerze dâ* (MC 45-6)

Di malika din da ji yara xwe ra dibêje; ew reqs û semaya ku te li gerdûnê danîye, hem *sofiyên* di tewafê da û hem heta gul û sumbulan jî behra xwe jê wergitine.

Şofîyên her di tewafê Heceru'l eswed e qeşd
Gul û sunbul bi semâ tîn hemiyân zimzim e çerx (95-2)

Di nêrîna Melâyê Cizîrî da ciyawazî di navbera zâhid û *sofi* da tune. Zâhid jî, *sofi* jî 'aşiqên zulfa yarê ne. Ketine de'fika zulfa yarê û di wê de'fikê da bi sed cure belayan têne kuştin.

⁷²⁰ معین، ج ۱، ص ۶۳۵.

⁷²¹ زمانی، ج ۱، ص ۲۰۸-۲۰۹؛ کی‌منش، ص ۴۳۲.

⁷²² فروزانفر، ص ۱۹۴.

Zār ū feqîr ū muhtelā Zāhid ū şofî ū melā
Kuşîne ew bi sed belā Kes nekevît belâyê zulf (MC 144-4)

Wekî di mijara pîr da hate gotin, Melâyê Cizîrî ji bo seyr û silûkê hebûna murşidekî dipejirîne. Di malika jêrîn da heman fikrê tîne ziman. Em dikarin bibêjin di vê malikê da Melâyê Cizîrî *sofî* vedixwîne bi bal 'işqa heqîqî ku murşide vê 'işqê *sâqî* ye, yanî murşidê kamil e.

Were şofî muslimân be bi sâqî secdehê bîne
Ku şûret mezherê zât ū şifâtê Heq Te'âlâ ye (MC 221-2)

4.2.13 Berawird û Nirxandin

Tablo 13: Kesayetên Tesewufê

| Rêz | Kesayetên Tesewufê | Hâfizê Şîrâzî | | | | Melâyê Cizîrî | | | |
|--------------|--------------------|---------------|-------|------------|--------------|---------------|-------|------------|--------------|
| | | Musbet | Menfî | Hejmar | Rêje (%) | Musbet | Menfî | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | 'Âbid | | X | 3 | 0,063 | X | | 1 | 0,044 |
| 2 | 'Ârif | X | | 10 | 0,210 | X | | 18 | 0,795 |
| 3 | 'Âşiq | X | | 83 | 1,741 | X | | 59 | 1,238 |
| 4 | Derwêş | X | | 39 | 0,818 | X | | 2 | 0,088 |
| 5 | Meczûb | | | 0 | 0,000 | X | | 4 | 0,177 |
| 6 | Murîd | X | | 7 | 0,147 | X | | 4 | 0,177 |
| 7 | Murşid | X | | 1 | 0,021 | X | | 2 | 0,088 |
| 8 | Sâlik | X | | 12 | 0,252 | X | | 5 | 0,221 |
| 9 | Şeyx | | X | 23 | 0,482 | X | | 5 | 0,221 |
| 10 | Zâhid | | X | 42 | 0,881 | X | | 4 | 0,177 |
| 11 | Pîr | X | | 71 | 1,489 | X | | 11 | 0,486 |
| 12 | Sofi | X | X | 42 | 0,881 | X | | 6 | 0,265 |
| Giştî | | | | 333 | 6,986 | | | 121 | 5,345 |

Kesayetên tesewifi li gorî qamet û qîmeta xwe ciyekî mezin werdigerin di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da. Li jor rêjeya têgihên derbarî kesayetan, hem ji aliyê musbet hem jî ji layê menfî ve hatine dîtin. Piştî ku ev statîstîk eşkera bû, em ê li jêr tabloyê analîz bikin.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da kesayetên tesewufi bi gelemperî du alî ne; menfî û musbet. Di *sofi* da em hem aliyê musbet û hem aliyê menfî dibînin. Yanî *sofi* du alî ye; musbet-menfî. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hebûna kesayetên menfî layekî jîyana wî dide ber çavan. Bi gotineke din, Hâfizê Şîrâzî menfîbûna kesayetên tesewufi yê serdema xwe dide ber çavan. Di serdema Hâfizê Şîrâzî da kesayetên tesewufi tevî kesayetên dînî, dîn û tesewuf ji xwe ra wekî amrazên xapandinê, ji bo berjewendiyên xwe bi kar dianîn. Kiryarên kesayetên tesewufi yê menfî li jor hatin ravekirin. Ne lazim e were dubarekirin. Kesayetên dînî jî wekî kesayetên tesewufi bi gelemperî ji ber kiryarên xwe di dîwana Hâfizê Şîrâzî da menfî ne. Wa'iz, li ser mînberî tiştêkî dibêje, dema tenê dimîne tiştên dijî gotinên xwe yê li ser mînberê dike. (HŞ 330-1) Muftî, rîyakar e. (HŞ 331-10) Feqîhê medresê xwarina malê weqfê helal dibîne. (HŞ 117-3) Îmamê bajêr, teqwayek zâhirî nişan dide. (HŞ 245-5) Hebûna van kesayetên menfî di serdema Hâfizê Şîrâzî da tê dîtin, û rexnekirina wan ne tenê di dîwana Hâfizê Şîrâzî da heye. Bo nimûne; 'Ubeydê Zakanî ku şa'irekî serdema Hâfizê Şîrâzî

ye û di heman demê da hevalê wî ye, di berhemên xwe da ji Hâfizê Şîrâzî tûndtir û dijiwartir vê rewşa civakî rexne dike.⁷²³

Hâfizê Şîrâzî, tesewufa 'âşiqâne dipejirîne. Kesayetên menfî yên dîwana wî kesayetên tesewufa 'âbidâne ne. Ev jî sedemek be ji bo rexnekirina wan jî, rewşa kesayetên tesewufî yên serdema wî bêtir derdikeve pêş. Eger, di serdema wî da kesayetên tesewufî di gotin û kiryarên xwe da li ser rêya dîn û tesewufê bimeşîyana ew ê nehatina rexnekirin. Bi kurtasî, Hâfizê Şîrâzî, di eslê xwe da ne li dijî tesewuf û kesayetên tesewufî ye. Li dijî wan kesan e ku tesewuf û dîn ji bo cah û meqam, berhevkirina mal û milk, şan û şuhretê bi kar tînin. Delîl û îsbata vê yeke ev e ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da murîd, murşid û sâlik kesayetên musbet in, tevî ku ev hersê kesayet di tesewufê da û di terîqetan da sê kesayetên sereke ne.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navên 11 kesayetên tesewufî, di dîwana Melâyê Cizîrî da navê 12 kesayetên tesewufî derbas dibe. *Meczûb* di malikên Melâyê Cizîrî da cih digire lê di malikên Hâfizê Şîrâzî da nayê dîtîn. Bi vî şiklî em dibinin ku Melâyê Cizîrî ji Hâfizê Şîrâzî bêtir cih daye navên kesayetên tesewufî.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 333 caran kesayetên tesewufî derbas dibin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 121 caran derbas dibin. Her çend ji aliyê hejmaran va bi 212 bikaranînê Hâfizê Şîrâzî li pêş xuya bike jî di rêjeyê da ferqek zêde dernakeve holê. Lewra rêjeya Hâfizê Şîrâzî % 6,986 e û rêjeya Melâyê Cizîrî %5,345 e. Ferqa ku heye ji zêdebûna malikên Hafîzê Şîrâzî ye.

Hâfizê Şîrâzî herî zêde cih daye *'Âşiq, Pîr, Zâhid* û *Sofî*. Melâyê Cizîrî herî zêde cih daye *'Âşiq, 'Ârif* û *Pîr*. Di vê xalê da *'Âşiq* û *Pîr* ji aliyê zêde bikaranînê hevpar in. Hâfizê Şîrâzî piştî *'Âşiq* û *Pîr, Zâhid* û *Sofî* derxistîye pêş, Melâyê Cizîrî piştî *'Âşiq* û *Pîr, 'Ârif* derxistîye pêş.

Xala herî girîng û muhîm hebûna kesayetên musbet û menfî ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da hemû kesayet musbet in. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *'Âbid, Şeyx, Zâhid* bi tevahî kesayetên menfî ne û *sofî* hem bi layê menfî û hem bi layê musbet cih girtîye. Ferqa herî mezin di navbera Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da ev e.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji 333 bi kar anîna kesayetên tesewufî hejmara kesayetên menfî 110 û hejmara kesayetên musbet 223 ne. Yanî sêyeka dîwana wî li ser kesayetên menfî ava bûye.

⁷²³ Bnr, Ciftçi, hb, r 104-130.

'*Âbid*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da kesayetekî menfî ye. Sedema menfîbûna wî fî'l û kiryarên wî ne. Ji ber ku '*âbid* û *zâhid* di heman malikê da cih digirîn em dikarin bibêjin ji ber heman xisletên hevpar, rîyakarî û durutîyê kesayetekî menfî ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da '*âbid* heman Melâyê Cizîrî ye ku '*âbidê* xweşikahîya yara xwe ye. Nêrîna Melâyê Cizîrî li '*âbidî* nêrîneke 'âşiqâne ye.

'*Ârif*, di dîwanên herdû şa'iran da bi alîyê xwe yê musbet hevpar e. Ev têgih, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 10 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 18 caran derbas dibe. Ji layê hejmarî tenê di bêjeya '*arif* da Melâyê Cizîrî ji Hâfizê Şîrâzî bêtir bi kar anîye. Û ev ferqeke sereke ye. Di heman demê da bi hin taybetîyên xwe, wekî têkilîya bi meyxaneyê, qutkirina têkilîya bi dinê jî hevpar in. Lê Melâyê Cizîrî zêde gîrîngî daye '*arifi*. Ji ber vê ye ku xwe wekî '*arifê* dema xwe dinasîne û xwe bi *Me'rûfê Kerxî* ra miqayese dike. Hâfizê Şîrâzî xwe wekî '*arifê* dema xwe binasîne jî ev gotinek sergirtî ye, ne zelal e.

'*Aşîq*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da kesayetekî sereke ye, musbet e û bi berfirehî cih girtîye. Û ev taybetîyeke hevpar e di navbera herdû şa'iran da. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 83 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 59 caran derbas dibe. Nêrînenê herdû şa'iran di derbarê '*âşiqî* da nêrîneke 'irfânî ye ku pala xwe dide felsefeya tesewufê. Ev jî xaleke hevpar e. Dîsa xalek hevpar; di nêrîna herdû şa'iran da seyr û sulûk divê bi rêya 'îşqê pêk were. Melâyê Cizîrî di dîwana xwe da ji Hâfizê Şîrâzî bêtir, eşkeratir mijarên 'îşq û '*âşiqî* anîye ziman. Cûreyên 'îşqê, cûreyên '*âşiqê* tesewufî tevî taybetîyên xwe bi zelalî xuya dike. Di vî warî da Hâfizê Şîrâzî ketûm e. Ev ferqeke sereke ye di navbera herdû şa'iran da. Lewra Hâfizê Şîrâzî 'îşqê wekî *mezheb*, Melâyê Cizîrî wekî *dîn* qebûl dike⁷²⁴ û xwe jî peyrewê wî dînî dinasîne. Herçend ku herdû şa'ir jî xwe '*âşiq* binasînin jî, Melâyê Cizîrî ji Hâfizê Şîrâzî bi cesarettir û bixwe bawertir e. Lewra Hâfizê Şîrâzî tenê '*âşiq* e. Lê Melâyê Cizîrî hem '*âşiq* e, hem di dînê 'îşqê da *muftîyê 'îşqê* û *şêxê 'îşqê* yê *duyem* e û hem di encamê da di seyr û sulûkê da *pîrê 'îşqê* ye.

Derwêş yek ji kesayetên musbet e di dîwana Hâfizê Şîrâzî û di nava kesayetên musbet da pîştî 'âşiq û *pîr* di asta sêyem da cih daye xwe. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 39 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê di 2 malikan da cih digire. Ji alîyê musbetbûnîyê hevpar bin jî, ji alîyê hejmara bi kar anîne ferqeke zêde di navbera wan da heye. Di gelek malikan da tê dîtin ku Hâfizê Şîrâzî

⁷²⁴ Bnr: tez, r 134, jêrenot, 479

xwe bi *derwêşî* dide nasandin. Hâfizê Şîrâzî xwestîye ku kesayetekî ava bike û têkilîya wî bi wateya ferhengî hebe û xwe bi vî rengî veşêre ku ji teref tu kesan va neyê rexnekirin. Lewra piştî '*âşiqî* herî zêde xwe bi *derwêşî* dipesînîne. '*âşiq* ji ber du aliyên xwe, ku hem têgiheke tesewufî ye û hem têgiheke edebî ye, kesek bibêje "ez '*âşiq* im" zêde balê nakişîne. Lê istilahên ku bi tevahî tesewufî ne zêde balê dikêşin ser xwe û rê li rexneyan vedike. Ev ferqa sereke ye di navbera Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tu taybetiyên berbiçav ji bo *derwêşî* nayê dîtin, lê di malikên Hâfizê Şîrâzî da gelek teybetî ji bo *derwêş* hatîye dîyarkirin. Ev jî ferqeke din e di navbera herdû şa'iran da, di vê behsê da.

Meczûb, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 4 caran derbas dibe. *Meczûb* di malikên Melâyê Cizîrî de tevî wateya ferhengî bi wateya tesewufî jî cih daye xwe. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da *meczûbîyet* sifetekî '*âşiqan* e ku '*âşiq* ji ber '*işqa* xwe dîn û sewda dibin, *meczûb* dibin. Loma kesên *meczûb*, di heman demê de *âşiqên* rasteqînin jî.

Murîd di dîwanên herdû şa'iran da kesayetekî musbet e û ev xaleke hevpar e. Hâfizê Şîrâzî 7 caran, Melâyê Cizîrî 4 caran bi kar anî ye. Di hejmarê da Hâfizê Şîrâzî pêşketî xuya bike jî, rêjeya Melâyê Cizîrî (% 0,177) ji ya Hâfizê Şîrâzî (% 0, 147) zêdetir e. Nêrîna Hâfizê Şîrâzî bi tevahî nêrîneke tesewufî ye; *murîd* pêgirê murşid e. Melâyê Cizîrî hem di nêrînen tesewufî û hem di nêrînen '*âşiqâne* da cih daye *murîdî*. Ev, ferqa bikaranîne ye. Xala herî grîng ev e ku Hâfizê Şîrâzî xwe *murîd* dîbîne, lê Melâyê Cizîrî xwe *murîd* nabîne.

Murşid, kesayetekî musbet e di dîwanên herdû şa'iran da. Hâfizê Şîrâzî carekê Melâyê Cizîrî du caran vê têgihê di malikên xwe darbas dike. Musbetbûna *murşidî* xaleke hevpar e, di dîwanên herdu şa'iran da. Bi hejmarî zêdebûna vê têgihê di malikên Melâyê Cizîrî da ferqek e. Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da pîrê muşan *murşid* e û di heman demê da *murşidê* wî ye. Melâyê Cizîrî hem bi nêrîneke tesewufî lê *murşidî* dinihêre û di hizra wî da pêdivîya murîdî bi murşidekî heye û hem bi nêrîneke '*âşiqâne* yar û mehbûba wî bi xwe *murşid* e ji bo '*âşiqan*. Eger murşidekî Hâfizê Şîrâzî hebe ev di binê navê pîrê muşan da veşartî ye. Murşidê Melâyê Cizîrî heman mehbûb û me'sûqa wî ye.

Sâlik, wekî xaleke hevpar di nezera herdû şa'iran da kesayetekî musbet e. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 12 caran, di dîwana Melâyê Cizîrî da 5 caran derbas bibe jî rêjeya wan (Hâfizê Şîrâzî % 0,252, Melâyê Cizîrî % 0, 221) nêzî hev e. *Sâlik*, di

dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem bi wateya *murşid* û hem bi wateya *pêgirê murşid* cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê *pêgir* e, yanî *sâlikê* mutleq e. Ev, ferqa sereke ye di watedarkirinê da. Di nêrîna herdû şa'iran da *sâlik*, *sâlikê 'îşqê* ye. Dema *Sâlik* bû *sâlikê 'îşqê murşidê sâlikî* yan *pîrê xerâbât* e û yan *pîrê muşan* e ku heman tîşt e. Ê ev xaleke hevpar e. Xaleke din ya hevpar; ne Hâfizê Şîrâzî û ne Melâyê Cizîrî xwe *sâlik* nahesibîne.

Şeyx, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da kesayetekî menfî yê sereke ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da kesayetekî musbet e. Ê ev ferqa sereke ye. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem bi wateya ferhengî û hem bi wateya istilahî 23 caran derbas dibe, di dîwana Melâyê Cizîrî da 5 caran derbas dibe. Ji alîyê hejmaran va jî ferqeke mezin heye. Ji layê hejmaran zêdebûna *şeyx* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji nêrîna Hâfizê Şîrâzî derbarê *şeyxên* serdema wî derdîkeve holê. Hâfizê Şîrâzî, bi gelek alîyan di nefsa *şeyxê* dîwana xwe da hemû *şeyxên* dema xwe rexne dike û tinazên xwe bi wan dike. *Şeyxên* dema wî xapînok in, daw û kîrasên wan bi gunehan gemarî bûne, li ser 'ehd û peymanan xwe nasekinin, rîyakar in û bê merhemet in. Melâyê Cizîrî bi nêrîneke 'aşîqâne li *şeyx* dinihêre. Xwe li ser hemû *şeyx* û *îmamên* dewra xwe dibîne. Melâyê Cizîrî, di 'îşqê da xwe *şeyxê duyem* dinasîne.

Zâhid, yek ji wan kesayetên menfî yên sereke ye di dîwana Hâfizê Şîrâzî da. Di dîwana Melâyê Cizîrî da kesayetekî musbet e. Ev ferqa sereke ye di derbarê *zâhidî* da, di dîwanên herdû şa'iran da. Menfîbuna *zâhidî* di helbestên tesewufî da wekî kevneşopîyekê xuya dike çawa ku di helbestên 'Ettar û Mewlana da derbas dibe. Bi zelalî ne dîyar e gelo Hâfizê Şîrâzî li ser vê kevneşopîyê çûye an bi rastî wesfên *zâhidên* dema xwe di dîwana xwe da anîye ziman? Di nêrîna me da Hâfizê Şîrâzî li ser vê kevneşopîyê helbestên xwe honandine. Lewra taybetîyên ku 'Ettar destnîşan kirine, di malîkên Hâfizê Şîrâzî da jî bi heman şiklî tên dîtîn. Lêkolînerên Hâfizê Şîrâzî dema behsa vê mîjarê dikin vê yekê bi rewşa civakî ya serdema wî va girêdidin. Tu têkilîyekê bi vê kevneşopîyê ra ava nakin. Ne mimkîn e ku haya wan ji vê kevneşopîyê tunebe. Tenê ev îhtîmal heye; nexwestine ku bibêjin Hâfizê Şîrâzî di binê tesîra vê kevneşopîyê da maye, wekî gelek xalên din. Nêrîna Melâyê Cizîrî li *zâhidî* nêrînek 'aşîqâne ye. Tu taybetîyên *zâhidê* tesewufî nayê dîtîn. Kesayetekî ji rêzê ye. Lê ne menfî ye, musbet e. Hişkbûna tebî'eta *zâhidê* Melâyê Cizîrî heman sîfete *zâhidê* Mewlana ye jî.

Pîr, di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da kesayetekî hevpar e ji aliyê musbetbûnîyê va. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 71 carî hatîye bikaranîn û bi vê rêjeyê, piştî 'âşiqî di asta duyem da ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 11 caran derbas dibe û piştî 'âşiq û 'ârîfî di asta sêyem da ye. Ev, ji aliyê hejmar û astê da ferqa navbera herdû şa'iran e. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *pîr* û terkîbên bi *pîr* hatine avakirin bi 21 şiklî, di dîwana Melâyê Cizîrî da bi 11 şiklî tê dîtîn. Ev jî girîngîya ku Hâfizê Şîrâzî daye *pîr* dide ber çavan û ferqeke din e di navbera herdû şa'iran da. *Pîrê* Hâfizê Şîrâzî, *pîrê* tesewufa 'âşiqâne ye. Li hember şeyxê tesewufa 'âbidâne rawestîyaye. *Pîr* û hemû terkîbên bi wî ra hatine avakirin di encamê da di şexsîyeta *pîrê muxan* da dicive ku Hâfizê Şîrâzî murîdê *pîrê muxan* e. *Pîrê* Melâyê Cizîrî *pîrê 'îşqê* ye. Hemû terkîbên bi *pîr* hatine avakirin di şexsîyeta *pîrê 'îşqê* da kom dibe. Di encamê da Melâyê Cizîrî bi xwe *pîrê 'îşqê* ye. Û ev yek, ferqa sereke ye di navbera herdû şa'iran da.

Sofî, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da kesayetekî dualî ye. Hem keseyatekî menfî ye û hem kesayetekî musbet e, lê aliyê wî yê menfî 20 qatî ji aliyê wî yê musbet zêdetîr e. Lewra 40 carî bi aliyê menfî û du caran bi aliyê musbet cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî 6 caran bi musbet derbas dibe. Hem ji aliyê musbet/menfîbûnîyê û hem ji aliyê hejmaran ferqeke mezin di navbera herdû şa'iran da heye. Hâfizê Şîrâzî bi sedema ku ne dijberî *sofî* ye aliyê wî yê musbet dide ber çavan û di encamê da xwe jî *sofî* dihêsbîne. Lê ji ber ku sofîtiya dema xwe na'ecibîne, fi'l û kiryarên wan rexne dike. Melâyê Cizîrî bi çavê musbet li *sofî* dinihêre. *Sofî*, bêtir di hizrên 'âşiqâne da cih digire. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da *sofî* peyrewê tesewufa 'âbidâne ye dixwaze ku derbasî tesewufa 'âşiqâne bibe.

4.3 Kesayetên Dîrokî yên Tesewufî

Kesayetên tesewufê di pêşketina tesewufê da, di berbelavbûna tesewufê da cihekî girîng digirin. Tevî vê yekê fikr û ramanên wan bûye sebeb ku ekol û meşrebên tesewufê derkevin holê. Ev ekol û meşrebên tesewufê û fikr û ramanên wan tesîr li şa'iran jî kirîye. Her şa'irek li gorî meşreba xwe ji fikrên wan sûd wergirtine. Di vê bin beşê da em ê kesayetên dîrokî yên tesewufî di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da li gorî kronolojîyê vekolinin.

4.3.1 Ebā Yezîdê Bistāmî (ابا يزيد بسطامى)

Navê wî *Teyfûr* e. Navê bavê wî *'İsa* ye. Bavê wî kesekî dîndar bûye. Derbarê jîyana wî da zêde agahî nayên dîtîn. Di sala 188/804an de li navçeya Bistâmê ku

girêdayî bi Xoresana Faris e hatîye dinê. Bi bernavkên *Ebu'l-Yezîd*, *Bâyezîd* û *Bâyezîdê Bistâmî* navdar bûye. Li Bistâmê di sala 261/875an rehma kirîye. Yek ji mezinê tesewufê ye. Cuneydê Bexdadî derbarê wî da gotîye ku Ebâ Yezîd di nava me da wekî Cebrâîl e di nava firişteyan da.⁷²⁵

Ebâ Yezîd, di nava sofîyan da yekem kes e ku dest bi nivîsandinê kirîye. Îmamê Xezâlî ji nivîsên wî gelek sûd wergirtîye, lê ji nivîsên wî tiştek negihiştîye dema me.⁷²⁶ Hinek nêrînên wî derbarê tesewufê ev in. Di binê cubbeyê min da ji Xweda pê ve tiştek tune. Ez, sâqî, şerab û şerabxwar im. Ez ji Xweda gihiştim Xweda heta ji dûr min dengê ene'l-heq bihîst.⁷²⁷ *Ebâ Yezîdê Bistâmî*, ew sofî ye ku mijara *Fena* û *Sekrê* xistîye tesewufê. Herwiha fikra *wehdetu'l-wucûd* û felsefeya îşrâqî jî li ser nêrînên wî hatine berfirekîrin.⁷²⁸ Bi van taybetîyên xwe şexsiyetekî taybet û girîng e di tesewufê da.

Di malikên Hâfîzê Şîrâzî da carekê em rastî navê wî tên. Di malîka Hâfîzê Şîrâzî da *Bistâmî* hatîye têkildarkirin bir rindî û bi qelenderî û herwiha bi delqê (xirqe). *Ebâ Yezîdê Bistâmî* di nava sofîyan da bi rindî û azadî tê nasîn.⁷²⁹ Hâfîzê Şîrâzî heman têkilîyê di malîka xwe da tîne ziman. Hatîye gotin ku; Şêx 'Usmânê Rûmî (?) diçe dîtina *Bistâmî*. *Bistâmî*, wî dişîne dîtina Cemâlê Sawî (?) ku pîrê qelenderan e. Ev rîwayet e û seneda wê ya tarîxî tune.⁷³⁰ Dibe ku Hâfîzê Şîrâzî telmîh bi vê bûyerê kiribe.

سوی رندان قلندر به ره آورد سفر
دلوق بسطامی و سجاده طامات بریم

Rabe em xirqeyê Bistâmî û seccadeya wî tije tamat wekî ermexan ji rindânê qelendar ra bibin. (HŞ 564-2)

Di malikên Melâyê Cizîrî da em rastî navê *Ebâ Yezîdê Bistâmî* nayên.

4.3.2 Me'rûfê Kerxî (معروف کرخی)

Navê wî *Me'rûf*, kunyeya wî *Ebû Mehîfûz*, leqeba wî *Kerxî* ye. Navê Bavê wî *Fîrûz* yan *Fîrûzan* e. Ji malbateke Mesîhî ye. Li Kerxê hatîye dinê. Ev Kerx, taxek ji taxên Bexdayê ye yan devereke din e ne dîyar e. Piştî dinê Islâmê dipejirîne dibe şagird û xizmetkarê Îmam 'Elî b. Mûsa er-Rida. Tevlî sohbetên Dawudê Taî bûye û

⁷²⁵ لقشیری، ص ۶۳-۶۴؛ رضاقلی خان هدایت، ص ۳۱؛ عطار نیشابوری، تذکرة الاولیاء، ص ۱۳۸-۱۴۵؛ شوشتری، عباس مهین، تصوف، ترجمه: مهرداد مهین، کانون معرفت، تهران ۱۳۳۳، ص ۶.

⁷²⁶ شوشتری، ص ۶.

⁷²⁷ شوشتری، ص ۶.

⁷²⁸ زرین کوب، ارزش میراث صوفیه، ص ۷۳-۷۴.

⁷²⁹ استعلامی، ج ۲، ص ۹۵۹.

⁷³⁰ استعلامی، ج ۲، ص ۹۵۹.

jê sûd wergirtîye. Yek ji mezin û qudemayê meşayixan hatîye hesibandin. Di sala 200/815 an 201/816an da li Bexdayê rehmî kirîye û li wir hatîye defînkirin. Di berheman da derbas dibe ku kesên li ber gora wî dû'a bike dû'ayên wan tèn qebûlkirin. *Li vê dinê sofî mêvanê Xweda ye û pêwîst e li gor wê tevbigere, li ser sofî heqq e ku xizmet bike lê ne heqq e ku tiştekî bixwaze, 'îşq, mewhîbeya Ilâhî ye, ne bi fêrbûnîyê ye, hinek ji nêrînên wî yên tesewufî ne.*⁷³¹

Me'rûfê Kerxî, di malikên Hâfizê Şîrâzî da cih nagire.

Di du malikên Melâyê Cizîrî da em rastî navê *Me'rûfê Kerxî* dibin. Melâyê Cizîrî *Me'rûfê Kerxî* wekî 'ârif dide nasîn. Di malika wî da *Me'rûfê Kerxî* 'ârifê herî mezin e ku xwe bi wî miqayese dike û xwe 'ârifê dema xwe dibîne ku dikare di vê babetê da bi *Me'rûfê Kerxî* ra bikeve mucadeleyê.

Kerixîn em di qiyâmê me ji dil perde dirând
'Ârifê weqt im û Me'rûfî bila bêti ji Kerx (MC 95-4)

Melâyê Cizîrî di hestên 'âşiqâne da navê *Me'rûfê Kerxî* di malika xwe da bi cih dike û wî yek ji wan kesên ku 'îşq di wan da xuya bûye, bi 'îşqê navdar bûne dinasîne. Ev yek dibe ji ber fikr û ramanên *Me'rûfê Kerxî* yên derbarê 'îşqê da bin ku li jor behs jê hate kirin.

Dā kifş bibin kewkeb ji çerx *Rābin hezār Me'rūf ji Kerx*
Şiblî û Se'dî û Âlê Ferx *'İşqê di wān keşfā xwo dā* (MC 38-8)

4.3.3 **Ĥellâcê Menşûr (حلاج منصور)**

Navê wî *Huseyn* e. Navê bavê wî *Mensûr* e. Di sala 244/858an da li Farisa eyaleta Îranê li Tûr a bakurê rojhilatê Beyzayê dikeve hatîye dinê. Di nava 'âlema Islâmê da bêtir bi *Mensûr* û *Hellâcê Mensûr* tê nasîn. Di duwazde salîya xwe da dibe Hâfiz Qur'ân. Li Tuster, Besra û Bexdayê perwerdehîya dînî dibîne. Li Besrayê dizewice û li wir bi cih dibe. Pêşî li Xoresan, Maweraunnehîr, Sicistan û Kirmanê û paşê li Hindistan û deverên din dest bi irşad û we'zan dike. Ji ber hinek gotin û kiryarên wî, di nava gel û 'âliman da nerehetî derdikeve holê. Di 24 ê Zilqe'deya 309 a koçî (26 Adar 922) li Bexdayê tê 'îdamkirin.⁷³²

Di nava 'âlim û zanyarên Islâmê da derbarê *Hellâcê Mensûr* da nêrînên ciyawaz werin dîtî jî, di dîroka tesewufê da gotinên wî cihekî girîng digire. Bi

⁷³¹ جامی، ص ۳۹-۴۰؛ القشیری، ص ۴۹-۵۱؛ شوشتری، ص ۵۰؛ شلماشی، ملا محمدی، مجلسی نولیا، انتشارات کردستان، سنندج ۱۳۷۹، ر ۱۲۵-۱۹.

⁷³² جامی، ص ۱۱۰؛ رضاقلی خان هدایت، ص ۷۸؛ عطار نیشابوری، تذکرة الاولیاء، ص ۵۰۹-۵۲۰؛ شوشتری، ص ۱۵؛ شلماشی، ر ۱۴۱.

kurtasî ramanên *Hellâcê Mensûr* yên tesewufî; Heqîqeta Muhemmedîye, Ene'l-Heq û secde nekirina Şeytân ji Hezretî Âdem ra dikare were rêzkirin.⁷³³

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carek navê *Hellâc* û carekê jî *Mensûr* derbas dibe. Di herdû malikan da jî îdama wî bi bîr tîne.

حلاج بر سر دار این نکته خوش سراید
از شافعی نپرسند امثال این مسایل
Hellâc, li serê sêdarê ev nukte xweş xwend, ji Şafi'î nepirsin meseleyên bi vî rengî. (HŞ 479-3)

Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da *Hellâcê Mensûr* nûnerê 'îşqê ye ku di hemû merheleyên 'îşqê derbas bûye, hemû zehmetîyên 'îşqê kêşaye û di encamê da serê xwe di vê rêyê da daye. 'Âşiqên wekî *Hellâcê Mensûr* layiqê gihiştina dostê heqîqî bûn û mirada wan jî ew gihiştin bû û di vê rêyê da serê xwe dan. Hâfizê Şîrâzî xwe layiqî vê wîsalê nabîne, hêja nebûye 'âşiqê rasteqîn ku bikaribe serê xwe di rêya mehbûba xwe da bide.

چو منصور از مراد آنان که بردارند بر دارند
بدین درگاه حافظ را چو می خوانند می رانند
Wekî Mensûr (Hellâc) kesên ji 'îşqê behra xwe girtibûn çûn serê sêdarê, dema gazî Hâfiz kirin ji bo hatina heman dergâhî ew qewirandin. (HŞ 322-7)

Di helbestên Melâyê Cizîrî da em rastî navê *Hellâc* nayên, lê di du malikan da Melâyê Cizîrî amaje bi Mensûr kirîye. *Mensûr* (منصور) bêjeyek 'erebî ye û bi wateya kesê alîkarî pê hatiye kirin û serkeftî hatiye.⁷³⁴ Di herdû malikên Melâyê Cizîrî da bêjeya Mensûr bi te'bîra *Ene'l-Heq* hunera îhamê ava dike.

Hostâyê 'îşqê dil hevot *Ser tã qedem hingî disot*
Remzâ ene'l-heq her digot *Bâwer bikin menşûr e dil* (MC 165-3)

Di malika jorîn da em têkilîyekê di navbera Mensûr û Ene'l-Heqê ava bikin û malikê bi vî rengî şîrove bikin em dişên bibêjin Melâyê Cizîrî xwe di asta *Hellâcê Mensûr* dibîne ku di meqamê fenayê da Ene'l-Heq dibêje.

Di malika din da jî Melâyê Cizîrî di navbera Mensûr û Ene'l-Heq heman hunerê bi kar tîne lê wate cuda ye. Di vê malikê da serê zulfa yarê hatiye şibandin bi sêdarê. Melâyê Cizîrî xwe dişibîne *Hellâcê Mensûr* ji layê bi sêdarê daliqandin, lê sêdara Melâyê Cizîrî serê zulfa yarê ye.

Ji ene'l-heq bi lebên le'lê xeberdâri bûyîn
Bi gulâbâ serê zulfâ xwe te Menşûri kirin (MC 180-8)

⁷³³ جامی، ص ۱۱۰؛ رضاقلی خان هدایت، ص ۷۸؛ عطار نیشابوری، تذکرة الاولیاء، ص ۵۰۹-۵۲۰؛ شوشتری، ص ۱۵؛ شلماشی، ر ۱۴۱.
⁷³⁴ معین، فرهنگ معین، ج ۲، ص ۱۸۳۳.

Di herdû malikan da jî *Hellâcê Mensûr* nûnerê 'işqê ye. Melâyê Cizîrî di gihiştina 'işqê da xwe di asta wî da dibîne.

4.3.4 Ebûbekir eş-şiblî (أبو بكر الشبلي)

Navê wî *Ce'ferê kurê Yunis* an *Dulefê kurê Ce'fer* û an *Dulefê kurê Cehder* e. Li ser kêlika gora wî *Ce'ferê Kurê Yûnis* nivîsandîye. Kunya wî *Ebûbekir* e. Li Bexdayê hatîye dine, lê bi eslê xwe ne ji Bexdayê ye, ji Misrê koçî Bexda kirine yan ji Xoresanê hatine Bexdayê ne dîyar e. Şagirdê Cuneydê Bexdadî ye û hevalê *Hellâcê Mensûr* e. Malikî mezheb bû. Di mezhebê xwe da feqîh bû. Hem bi halê xwe, hem bi 'ilmê xwe Şeyxê dema xwe û ji mezinê 'arifan bû. Di sala 334/946an da li Bexdayê rehmet dike. *Azadî, azadîya dil e ne ya tiştêkî din, sofî zarokên heqîqetê ne, tesewuf wesîle ye ji bo pêşketina ji dîtina dinyaya maddî bi 'inwanê dinyaya heqîqî. Tewhîd, 'işqeke berdewam e li hember Xweda û li hember Xweda girêdanek mitleq û tewekkuleke bê dawî ye,*⁷³⁵ hinek ji nêrînên wî ne di derbarê tesewufê da.

Navê *Şiblî* di dîwana Hâfizê Şîrazî da nayê dîtin.

Di malikên Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. Di ravekirina işqa Ilâhî da Melâyê Cizîrî, *Şiblî* wekî nûnerekî dibîne ku bi 'işqa Ilâhî navdar bûye.

Dā kifş bibin kewkeb ji çerx Rābin hezār Me'rūf ji Kerx
Şiblî û Se'dî û Âlê Ferx 'İşqê di wān keşfā xwo dā (MC 38-8)

4.3.5 Se'diyê Şîrazî (سعدى)

Navê wî *Şerefeddîn Muslih* û leqeb û mexlesa wî *Se'dî* ye. Li Şîrazê hatîye dinê. Sala ji dayikbûna wî bi zelalî ne dîyar e. Ji Malbatek ehlê 'ilm e. Li şîrazê dest bi xwendina xwe dike. Paşê li Bexdayê di medreseya Nîzamîyeyê da ders dixwîne.⁷³⁶ Li gelek deverên welatên Islâmê digere ku ev gera wî nêzikî sî salî didome. Piştî vê sefera dirêj vedigere Şîrazê. Di sala 691/1292 yan 694/1295an da li Şîrazê rehmet dike.⁷³⁷

Se'dî li Bexdayê bi irşada Şîhabuddîn Suhrewerdî têkilîyê bi tesewufê datîne û dibe pêgirê terîqeta Suhrewerdîye. Di ciwanîya xwe da şuhreteke mezin bi dest dixê.⁷³⁸ *Se'dî* hem berhemên menzûm û hem berhemên pexşan li pey xwe hiştîye. Berhema Bostan, Gulistan û dîwana wî navdartirîn berhemên wî ne.⁷³⁹

⁷³⁵ جامى، ص ۱۲۸-۱۲۹؛ القشيري، ص ۱۰۵؛ شوشتري، ص ۷؛ شلماشى، ر ۱۶۸-۱۷۴؛ رضاقلی خان هدايت، ص ۱۱۵.

⁷³⁶ حالى، الطاف حسين، حیات سعدى، ترجمه: نصرللاه سروش، بنگاه دانش، تهران ۱۳۱۶، ص ۲-۱.

⁷³⁷ دشتى، على، قلمرو سعدى، انتشارات امير كبير، تهران ۱۳۶۵، چاپ پنجم، ص ۲۵.

⁷³⁸ حالى، ص ۱۳۱-۱۴۰.

⁷³⁹ شفق، ص ۲۶۳-۲۶۴؛ حالى، ص ۳۵-۴۶.

Se'dî her çend berîya Hâfizê Şîrâzî jîyabe jî, navê wî di malikên Hâfizê Şîrâzî da nayê dîtin.

Se'dî di dîwana Melâyê Cizîrî da, di du malikan da cih digire. Di malika yekem da mînak û nûnerê navdarîyê ye û Melâyê Cizîrî jî xwe wekî wî navdar dibîne heta ku kesê nexwendî, 'amî jî bi wî hesîyane.

مراژ اول چه برخامی کشاند آخر به بدنمای⁷⁴⁰
Ji rengê Se'dî û Câmî ji şuhret pê hesîn 'amî (MC 16-9)

Di malika duyem da *Se'dî* tevî hin kesayetên din nûnerên 'îşqê ne.

Dā kifş bibin kewkeb ji çerx *Rābin hezār Me'rūf ji Kerx*
Şiblî û Se'dî û Âlê Ferx *'İşqê di wān keşfā xwe dā* (MC 38-8)

4.3.6 'Ebdurrehmân Câmî (عبد الرحمن جامی)

Navê wî 'Ebdurrehmân e. Bernavka wî *Câmî* ye. Bêtir bi *Mewlana Câmî* û *Molla Câmî* tê nasîn. Di sala 817/1414an da li navçeya Harcirdê girêdayî Cam a Xoresanê hatîye dinyayê. Navê bavê wî *Nîzameddîn Ehmed* e. Bavê wî bi qasî ku bikaribe li medreseya Nîzamîyeyê bibe muderrîs 'âlim bûye. Li cem bavê xwe dest bi xwendinê dike. Li ber destê gelek zanyarên mezin xwendina xwe didomîne. Li Semerqendê 9 salan dixwîne. Xwedî zekawetek mezin bû û qabîliyeta vegotinê bi wî ra hebû.⁷⁴¹

Piştî xwendina zanistên dînî berê xwe dide tesewufê. Pêşî dibe pêgirê *Se'deddînê Qaşgarî* (w. 860/1456) ku yek ji meşayîxên terîqeta Neqşebendî ye. Piştî wefata *Qaşgarî* dibe murîdê 'Ubeydullahê Exrar (w. 895/1490). Di sala 877/1472an da diçe Heccê, piştî veqer Heccê li Heratê dest bi dersdayinê dike. Di sala 898/1492an da li Heratê rehmet dike. *Mewlana Câmî* hem bi 'erebî û hem bi farsî bi nezm û peşan xwedî gelek berheman e.⁷⁴²

Mewlana Câmî, ji ber ku piştî Hâfizê Şîrâzî jîyaye, navê wî di malikên Hâfizê Şîrâzî da cih nagire.

Di malikên Melâyê Cizîrî da tenê carekê derbas dibe. Di vê malikê da *Câmî* nîşana şuhretê ye ku Melâyê Cizîrî di şuhretê da xwe wekî wî dibîne. Û belkî ev telmîha gotina *Câmî* bi xwe be. Lewra *Câmî* dibêje; *li ser rûyê erdê ez bi şî'rê wusa navdar bûm ku heta dora gerdûnê bi teraneyên min tijî bû*.⁷⁴³

⁷⁴⁰ Ev riste bi tevahî farsî ye. Wate: Gelo xameyê (qelemê) di destpêkê da der heqê me da çi nivîsî, ku di encamê da navê me bi neqencî nivîsî.

⁷⁴¹ هروی، نجیب مایل، شیخ عبدالرحمان جامی، نشر طرح نو، تهران ۱۳۷۷، ص ۳۵-۳۱.

⁷⁴² هروی، ص ۶۰-۳۶.

⁷⁴³ Turan, hb, r 27

مرا ژ اول چه برخامی کشاند آخر به بدنامی
Ji rengê Se'dî û Câmî ji şuhret pê hesîn 'âmî (MC 16-4)

4.3.7 Berawird û Nirxandin

Tablo 14: Kesayetên Dîrokî Yên Tesewufê

| Rêz | Kesayetên Dîrokî Yên Tesewufê | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|----------------------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Ebâ Yezîdê Bistâmî | 1 | 0,021 | 0 | 0,000 |
| 2 | Me'rûfê Kerxî | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 3 | Hellâcê Mensûr | 2 | 0,042 | 2 | 0,088 |
| 4 | Ebûbekirê Şiblî | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 5 | Se'dîyê Şîrâzî | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 6 | 'Ebdurrehmân Câmî | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| Gîştî | | 3 | 0,063 | 8 | 0,353 |

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navê du kesayetên dîrokî yên tesewufê derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da navê 5 kesayetên tesewufî derbas dibe. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da navên kesayetên tesewufî 3 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da navên kesayetên tesewufî 8 caran derbas dibe. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da rêjeya navên kesayetên tesewufî %0,63 ye, di dîwana Melâyê Cizîrî da %0,353 ye. Ev agahî cudahiya di navbera herdu şa'iran nîşanî me dide.

Ji aliyê navan *Hellâcê Mensûr* hem bi navê xwe û hem bi hejmara bi kar anînê (2 car) kesayetekî hevpar e. Rêjeya *Hellâcê Mensûr* di dîwana Melâyê Cizîrî da (%0,088) du qatî rêjeya dîwana Hâfizê Şîrâzî ye. (%0,042) *Ebâ Yezîdê Bistâmî* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas dibe, lê di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe. *Me'rûfê Kerxî*, *Ebûbekirê Şiblî* û *Se'dîyê Şîrâzî* ku di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas dibin, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagirin.⁷⁴⁴ *'Ebdurrehmân Câmî* jî di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas dibe lê ji ber ku Câmî piştî Hâfizê Şîrâzî jiyaye, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagire.

Ebâ Yezîdê Bistâmî, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Hâfizê Şîrâzî hem bi nêrînên xwe yên felsefî û hem bi meşreba xwe ya rindane nêzîkî *Bistâmî* ye. Tevî vê nêzîkbûnîyê, rexneyek nazîk jî di malika Hâfizê Şîrâzî tê dîtîn. Hâfizê Şîrâzî xirqe û tamatê *Bistâmî* bi zamanekî nazîk rexne dike. Di seranserê dîwana wî da xirqe û tamat du istilahên menfî ne. Delq, yanî xirqeyê *Bistâmî* bi hemû

⁷⁴⁴ Me di vir da 'Ebdurrehmân Câmî nejmart, lewra Câmî, piştî wefata Hâfizê Şîrâzî hatiye dinê.

qîmeta wî, tevî seccadeya wî ku tîjî tamat e wekî dîyarî ji rindânê qelender ra dişîne. *Bistâmî*, di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas nabe.

Me'rûfê Kerxî, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. *Me'rûfê Kerxî*, di hizra Melâyê Cizîrî da yek ji nûnerên 'îşqê ye. Bi vî rengê xwe *Me'rûfê Kerxî*, remz û îşareta 'îşqa Ilâhî ye. Melâyê Cizîrî, *Me'rûfê Kerxî* 'ârif, 'ârifê dema xwe û yek ji mezinê 'ârifan dihesibîne. Bi van taybetîyan *Me'rûfê Kerxî*, nimûneya 'ârifan e. Melâyê Cizîrî, tevî hemû van sifetên *Me'rûfê Kerxî*, xwe ji wî mezintir dibîne. Ev, bi xwe bawerîyek mezin e ku di seranserê dîwana Melâyê Cizîrî da tê dîtin. Gotina Melâyê Cizîrî ku dibêje; *ez 'ârifê dema xwe me û ger bixwaze bila Me'rûfê Kerxî ji Kerxê were pêşberî min*, ne di malika fexrîyê da ye ku em wekî kevneşopîyeke şa'iran behesibînîn û em bibêjin Melâyê Cizîrî di malika fexrîyê da mubalexe kirîye. Bi xwe ewlebûnî û bi xwe bawerî taybetîyeke takekesî ya Melâyê Cizîrî ye.

Hellâcê Mensûr, di dîwana Hâfizê Şîrâzî û di dîwana Melâyê Cizîrî da hem bi navê xwe û hem bi hejmara bi kar anîne - her dû şa'iran jî du caran navê wî bi bîr anîne - kesayetekî hevpar e. Û ev, xaleke muşterek e di dîwana herdû şa'iran da. Bi nêrineke giştî, *Hellâcê Mensûr* nûnerê 'îşqê ye di malikên herdû şa'iran da. Ev xal jî xaleke hevpar e. Tevî ku *Hellâcê Mensûr* di malikên herdû şa'iran da nûnerê 'îşqê ye, di herdû malikên Hâfizê Şîrâzî da 'îdam û daliqandina wî hatîye ziman. Di herdû malikên Melâyê Cizîrî da bi gotina Ene'l-Heq hatîye bîranîn. Ev ferqeke sereke ye.

Hâfizê Şîrâzî, di serdemekê da jîyaye ku îstîqrareke sîyasî tê da tune, keşmekeşî û têkoşînên ji bo desthilatdarîyê dibû sedema gelek qetl û ji holê rakirina kesan. Hâfizê Şîrâzî, di jîyana xwe da ji wan têkoşînên îqtîdarê ewle nebûye, her xwe di xeterê da dîtîye. Ev rengê tirsê ye di jîyana wî da ku di malikên wî da xwe daye der û *Hellâcê Mensûr* her bi daliqandinê cih girtîye. 'Îşq, ji ber ku bi dilî tê jiyîn, bi 'eql derk û fehma wê ne pêkan e. 'Îşq û 'îrfân ne bi 'ilmê zâhir, bi 'ilmê bâtin tê famkirin. Ji ber vê di malika Hâfizê Şîrâzî da *Hellâcê Mensûr* remza 'ilmê bâtin û Îmamê Şafi'î remza 'ilmê zâhir e. Di 'îşqê da asta herî jor ew e ku 'âşiq di rêya me'şûqa xwe da serê xwe bide. *Hellâcê Mensûr*, di heman demê da nûnerê vê yekê ye jî. Xala herî mezin û girîng ev e ku Hâfizê Şîrâzî di 'îşqê da xwe di asteke mezin nabîne, serê xwe nedaye û ji bo vê jî xemgîn e.

Melâyê Cizîrî, di malika xwe da hunera îhamê bi kar anîye. Bêjeya *Mensûr* bi 'îbareya *Ene'l-Heq* ra îhamê derdixe holê. Ji ber vê eger em bibijên di malikê da

mebest ji *Mensûr* Hellâcê Mensûr e – ku li gorî me wusa ye- em dikarin bibêjin Melâyê Cizîrî eşkere û bê xem û tirsax rexneyên ku li *Hellâcê Mensûr* hatine kirin fikra xwe anîye ziman. Eger em bêjeya mensûr bi wateya ferhengî hîlbijêrîn jî gotina Ene'l-Heq bi tena serê xwe *Hellâcê Mensûr* bi bîr tîne û di malikê da eşkera xuya dike ku Melâyê Cizîrî vê fikrê qebûl dike. Malik, bi herdû şîroveyan jî fikra Hellâcê Mensûr tîne ziman. Li vir du îhtîmal derdikevin holê. Yan di serdema Melâyê Cizîrî da, di nav 'âlim û zanayên Cizîrî û yên derdora Cizîrî bi çavekî musbet li *Hellâcê Mensûr* dihate nêrîn û fikrên wî dihatin qebûlkirin yan jî Melâyê Cizîrî hem ji alîyê nezerî û hem ji alîyê 'emelî ku dikare bersîva rexneyên li wî werin kirin bide, bi bixwebawerîyeke mezin malikên xwe honandîye. Îhtîmala yekem qebûlkirina fikrlên *Hellâcê Mensûr* û berbelavbûna hizrên wî di serdema Melâyê Cizîrî dide ber çavan. Îhtîmala duyem cesaret û bixwebawerîya Melâyê Cizîrî dide ber çavan. Di yek malikê da hebûna bêjeya Mensûr û 'îbareya Enel'-Heq ferqeke sereke ye di navbera herdû şa'iran da ku di dîwana Melâyê Cizîrî tê dîtîn û di dîwana Hâfîzê Şîrâzî nayê dîtîn.

Ebûbekirê Şiblî, di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe û di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabe. Melâyê Cizîrî tenê navê wî derbas dike, tu taybetîyên wî nade ber çavan. *Şiblî* û hin kesayetên din ku di malikê da derbas dibin remz û îşareta 'îşqê ne. Tiştê ku li ber çav dike Melâyê Cizîrî di malika xwe da hem mînak ji kesayetên tesewufî anîye û hem mînak ji kesayetên şa'ir anîye. *Şiblî* û *Me'rûfê Kerxî* mînakên kesayetên tesewufî ne.

Se'dîyê Şîrazî, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabe. Di du malikan da di dîwana Melâyê Cizîrî da derbas dibe. Ji alîyê hebûna kesayetên tesewufî ev ferqa sereke ye di dîwana herdû şa'iran da. *Se'dî*, di herdû malikên Melâyê Cizîrî da nûnerê 'îşqê ye. Di malika ku navê wî û navê Şiblî, Me'rûfê Kerxî derbas dibe remz û îşareta şa'irên 'îşqê ye. Di malika ku navê wî û navê Câmî derbas dibe hem ji alîyê tesewufî û hem ji alîyê şa'irtîyê remza 'îşqê ye. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da wekî ku di malikên wî da derbas dibe; 'îşq ruswatî ye.⁷⁴⁵ Kesên mubtelayê 'îşqê bibin ji ber ruswatîya 'îşqê, navên wan bi bednamî di nava 'âlemê da berbelav dibe. Yek ji wan kesên ku Melâyê Cizîrî ji alîyê bednamîya 'îşqê xwe dişibîne wî *Se'dî* ye. Qesd û mebesta Melâyê Cizîrî di vir da ne ruswatîya zâhir e. Dema em li jîyana van kesayetên dinahêrîn ji bo 'îşqeke zâhirî di nava 'âlemê da navê wan derneketîye. Qesda Melâyê

⁷⁴⁵ Melâyê Cizîrî di vê babetê da wiha dibêje; *Riswâyê 'îşqê tenhâ ne ez bûm* (m. 74-6)

Cizîrî gotinên wan in, ne jîyana wan e. Se'dî, ji alîyê şa'irtîya xwe va şa'irê 'îşqê tê nasîn. Edebîyatzanên Îranî di honandina xezelên 'âşiqâne da kesî nagihînin Se'dî.⁷⁴⁶ Se'dî, ji ber ku 'îşq kirîye mijara helbestên xwe û bi vî rengî navdar bûye nûnerê şa'irên 'âşiqâne ye. Bi vî alî, bi alîyê nûnertîya şa'irtîya 'îşqê, Melâyê Cizîrî xwe dişibîne Se'dî.

'Ebdurrehmân Câmî, ji ber ku piştî Hâfizê Şîrâzî hatîye dinê ne pêkan e ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih bigire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. Di malika ku navê *'Ebdurrehmân Câmî* tê da derbas dibe navê Se'dî jî derbas dibe. Di wê malikê da *'Ebdurrehmân Câmî* û Se'dî nûnerên bednamîya 'îşqê ne.

⁷⁴⁶ شميسا، کلیات سبک شناسی ، ص ۱۷۹

BEŞA PÊNCEM

TÊGIH Û 'UNSÛRÊN TESEWUFÊ DI DÎWANA HÂFIZÊ ŞÎRÂZÎ Û MELÂYÊ CIZÎRÎ DA

5.1 Têgihên Tesewufê

Tesewuf, piştî ku wekî zanistekî hate pejirandin, helbet wekî hemû zanistan ew ê têgihên wê yên taybet hebin. Û ev tişteki asayî ye. Di berhemên tesewufê da, bi taybet di yên pexşan da, nivîskarên berheman ji bo ravekirina mijaran ji têgihan sûd wergirtine. Dema ku tesewuf û edebiyatê têkilî bi hev ra ava kir, edebîyata tesewufî derket holê ku nivîskarên vê edebîyatê ji bilî têgihên tesewufî, ji istilahên zanistên din jî sûd wergirtin û di berhemên xwe da cih dane wan. Ji ber vê istilahên tesewufî di binê du beşan da hatine dabeşkirin. Istilahên istî'arî î û istilahên ne istî'arî. Istilahên ne istî'arî bi gelemperî di berhemên tesewufê yên pexşan da cih digirin.

Istilahên istî'arî bêtir di şî'rê da cih dane xwe. Dema em ji bo dîwan an şî'rekê bibêjin tesewufî ye, ew dem hemû istilah çî 'ilmî û çî edebî rengên istî'arî di xwe da digirin û pêwiste li gorî wê werin şerh û ravekirin.⁷⁴⁷ Şa'irên rengsofî di şî'rên xwe yên tesewufî de istilahên hemû zanistan ji bo mebestên xwe bi kar anîne. Bi belavbûna şî'rên tesewufî ji bo ravekirina istilah û te'bîrên wan yên ji zanistên din hatine wertgirtin, ferhengên tesewufî yên taybet hatine nivîsandin. Di van ferhengan da hem istilahên istî'arî û hem istilahên ne istî'arî hatine ravekirin. Di vir da em ê tenê li ser istilahên tesewufî yên ne istî'arî rawestin.

5.1.1 Ābê Ḥeyāt (آب حیات)

Ābê Heyat, terkîbeke du zimanî ye. *Āb*, farsî ye bi wateya avê, *heyat*, 'erebî ye bi wateya jîyanê ye. Ev têgih, di edebîyatê da bi gelek formên cuda cih digire. *Ābê heyewan*, *Ābê xidir*, *Ābê zulûmat* hin ji wan in. Hatiye bawerkirin ku ev av, di dawîya dinê da di cihekî tarîda ye, diherike û kesên ku jê vedixwin temenêkî bê dawî bi dest dixin.⁷⁴⁸

Di efsaneyê da derbas dibe ku Zulqerneyn ji bo bidestxistina vê avê diçe zilûmatê. Lê nikare avê bidest bixe. Xidir Pêxember ku hem wezîr û hem lawê xalê Zulqerneyn bû tevî Ilyâs Pêxember kanîya ava heyatê peyda dikin, jê vedixwin û

⁷⁴⁷ تیریزی، ص ۲۶.

⁷⁴⁸ شمیس، فرهنگ اشارات، ص ۲۴.

jîyaneke bê dawî bi dest dixin.⁷⁴⁹ Ev bûyer bûye sebeb ku di şîrê da ji vê gelek terkîbên cuda were avakirin.

Ava heyatê, Di tesewufê da geh kînaye ye ji serçeşmeya 'îşqê, kesê ku ji vê avê vexwe teqez fânî nabe, geh îşaret e ji bo devê me'şûqê û geh bi wateya gotinên murşidî cih girtîye ku jîyana ebedî dide sâlikî.⁷⁵⁰

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da terkîbên wekî *âbê heyat* (5 caran), *âbê heyewan* (8 caran), *çeşmeê heywan* (1 carî), *âbê xidir* (5 caran), *âbê zendegî* (4 caran) û *âbê zendeganî* (2 caran) cih digire.

Hâfizê Şîrâzî wekî ku li jor derbas bû, bawer dike ku kanîya *ava heyatê* li welatê taristanê ye. Di malika jêrîn da *ava heyatê* xwe ji *ava heyatê* xweştir dibîne.

فرق است از آب خضر که ظلمات جای او است تا آب ما که منبعش الله اکبر است

Ava me, ku serçeşmeya wê çîyayê Ellahu Ekber e, ji ava xidir ku warê wê zilûmat e xweştir e. (HŞ 110-8)

Wateyên ku Hâfizê Şîrâzî li *ava heyatê* kirîye bi vî rengî ne.

Ava heyatê serçeşmeya 'îşqê ye.

دوش وقت سحر از غصه نجاتم دادند و اندر آن ظلمت شب آب حیاتم دادند

Duh, di spêdê da ez ji xema azad kirim û di tarîtiya şevê da ava heyata min dane min. (HŞ 305-1)

'Îşq hatîye şibandin bi *ava heyatê*. 'Îşq, di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da çawa ku ezeli ye, herwiha *ava heyatê* jî ezeli ye û kanîya wê xaka deriyê xelwetgaha derwêşan e.

حافظ ار آب حیات ازلی می خواهی منبعش خاک در خلوت درویشان است

Hâfiz! Ger tu ava heyatê ya ezeli dixwazî, kanîya wê xaka derê xelwetgaha derwêşan e. (HŞ 124-3)

Gotinên ji devê dost derdikevin wekî *ava heyatê* ne.

آب حیوان اگر این است که دارد لب دوست روشن است این که خضر بهره سرابی دارد
Ava heyatê eger lêva dost be, xuya ye ku serab bûye para Xidir. (HŞ 224-6)

Hâfizê Şîrâzî di pesindariya xwe da şî'ra xwe şibandîye *ava heyatê* ji ber ku qelema wî qisseyaya yarê dibêje.

در قلم آورد حافظ قصه لعل لبش آب حیوان می رود هر دم ز اقلام هنوز

⁷⁴⁹ شمپسا، فرهنگ تلمیحات، ص ۱۱۶.
⁷⁵⁰ گوهرین، شرح اصطلاحات تصوف، ج ۷، ص ۵۴.

Bi qelem anî ziman qisseyâ lêvên te yên sor, ava heyatê diherike hêj ji qelemên min. (HŞ 422-5)

Di pesindariya desthilatdarî da kiryarên desthilatdarî hatîye şibandin bi *ava heyatê*.

كلک تو بارک اللہ بر ملک و دین گشاده صد چشمه آب حیوان از قطره ی سیاہی
Bereketa Xweda li qelema te ya ji bo dîn û dewletê be, ku sed kanîyên ava heyatê ji dilopeke hibra wê ye. (HŞ 720-2)

Çem û cûbarên welatê Hâfizê Şîrâzî hatîye şibandin bi *ava heyatê*.

اگر چه زنده رود آب حیات است ولی شیراز ما از اصفهان به
Herçend ku ava çemê Rûd⁷⁵¹ wekî ava heyatê be, lê Şîraza me ji Isfahanê xweştir e. (HŞ 623-2)

Melâyê Cizîrî di dîwana xwe da cih daye terkîbên wekî *ava heyatê* (7 caran), *ava zilûmatê* (1 carî), *âbê heyat* (5 caran), *âbê heywan* (8 caran) û *çeşmeê heywan* (4 caran). Melâyê Cizîrî *ava heyatê* bi van wateyan di malikên xwe da bi cih kirîye:

Ava heyatê kînaye ye ji bo gihiştina armancê di rêya seyr û silûkê da.

*Ê vi Xîdrî rā divêt āvā heyātê bit neşîb
Dê bi se'y û cehdê yeksân bin li bal wî rûz û şeb (MC 57-2)*

Ava heyatê kînaye ye ji gotinên devê yarê. Ev gotinên ji devê yarê derdikevin, li cem Melâyê Cizîrî wusa bi qîmet in ku Melâyê Cizîrî wan bi *ava heyatê* naguhêze.

*Şerbetā lām û beyān ez bi heyātê nādîm
Bādeyā le'lê bi āvā zulumātê nādîm (MC 167-1)*

Ava heyatê mifa ye ji bo derd û kulen 'aşîqî.

*Çeşmeyā āvā heyātê Şerbetā qend û nebātê
Min li dāxān ew mifā tê Cān ji bo şukrāne ye (MC 209-17)*

Melâyê Cizîrî di pesindariya xwe da şî'rên xwe dişîbîne *Ava heyatê*.

*Ji 'înāyet nezerê xaşşe ko her mişre' û beytek
Qedeħên ābê heyātê ne di şî'rā me lebāleb (MC 55-1)*

Ava heyatê di pesindariya memduhî da cih digire. Şa'ir, hespa memduhê xwe dişîbîne Bûraqê û şuna ne'lê wî jî dişîbîne şûna nigê bûraqê ku her deverê hêşîn dike.

*Her derê ne'lê feres şubhet Burāqê vékevit
Çeşmeyê heywān ji ew 'erdê mubārek fûri bî (MC 286-8)*

⁷⁵¹ Rûd, navê çemî ye ku di nava Isfahanê da derbas dibe. (خالقی، ص ۹۴۳)

5.1.2 Xerâbât (خرابات)

Xerâbât, ji mesdera *xerâb* (خراب) ê hatîye. Bêjeyeke 'erebî ye. *Xerâb*, bi wateya wêranî û wêranbûnîyê ye.⁷⁵² *Xerâbât*, di ferhengên da bi wateya qumarxane, bozexane,⁷⁵³ qehpexane, şerabxane, meyxane, meykede cih girtîye.⁷⁵⁴ *Xerâbât*, di istilaha sofîyan da war û mertebeya xerabûna sîfatên beşerî, fânîbûna wucûda cismanî û terka 'eleqeya dinyewî ye. *Xerâbâtî jî*, merdê kamil e ku me'rîfetên Îlâhî bê îxtîyarî ji wî sadir dibin.⁷⁵⁵ Dîsa li nêzî vê wateyê hatîye gotin ku *xerâbât*; xerabûna sîfetên nefsanî, 'adetên heywanî, texrîba quwweta xezebê û şehwetê û veguheztina 'adet û exlaqên nebaş e.⁷⁵⁶ Wateya istilahî wekî xuya ye li dijî wateya ferhengî hatîye.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 38 caran bêjeya *xerâbât* derbas dibe. Yek ji têgihên kîlîdî û girîng yê dîwana Hâfîzê Şîrâzî hatîye hesibandin. Xurremşahî, di berhema xwe da bêjeya *xerâbâtê* bi sê wateyan dabeş dike. Kînaye ji meyxaneyê, bi heman wateyê, bi wateya meyxaneyê lê li dijî xaneqâh û mescidê û wateya tesewufî.⁷⁵⁷

Xerâbât, wekî kînaye ji meyxaneyê:

تا گنج غمت در دل ویرانه مقیم است همواره مرا کوی خرابات مقام است
Heta xezîneya xema te di dilê wêrane da be, her ew ê gundê xerâbât ji me ra
cih û war be. (HŞ 119-7)

Xerâbât, li dijî xaneqâh û mescidê.

گر ز مسجد به خرابات شدم خرده مگیر مجلس وعظ دراز است و زمان خواهد شد
Min rexne neke ji bo ku ji mescidê çûme xerâbâtê, zîra civîna we'zê dirêje û
dem dike were. (HŞ 278-4)

Xerâbât, bi wateya tesewufî:

قدم منه به خرابات جز به شرط ادب که سالکان درش محرمان پادشهند
Bêyî hurmet û edebê nigê xwe navêje xerâbâtê, lewra sâlikên derîyê wê
mehremên padîşah in. (HŞ 333-5)

Xerâbâta Hâfîzê Şîrâzî dêra muşan e. Di wê dêra da pîrê muşan heye. Ev dêr, ango *xerâbâta* Muşan wargeha tecelliyatên Xweda ye.

⁷⁵² دهخدا، ج ۷، ص ۹۶۲۳.
(خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۱۵۱).
⁷⁵³ Boze, ew şerab e ku bi ardê birinc, garis û ceh hatîye çêkirin.
⁷⁵⁴ التهانوي، ج ۱، ص ۷۴۰؛ دهخدا، ج ۷، ص ۹۶۲۴.
⁷⁵⁵ التهانوي، ج ۱، ص ۷۴۱.
⁷⁵⁶ کیمنش، ج ۲، ص ۴۸۹.
⁷⁵⁷ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۱۵۴.

در خرابات مغان نور خدا می بینم
این عجب بین که چه نوری ز کجا می بینم
*Ez di xerâbâta muxan da nûra Xweda dibînim, ev çi 'ecêb e ku çi nûrê li ku
deverê dibînim. (HŞ 543-1)*

Di dîwana Melâyê Cizîrî da, em di çar malikan da rastî bêjeya *xerâbâtê* tèn. Di van her çar malikan da *xerâbât* bi wateya tesewufî cih girtîye. *Xerâbât*, *xerâbâta dêra pîrê muxan* e û kînaye ye ji meyxaneyê.

*Bi heq rindê xerâbât im ji dêrê vê demê hâtim
Çi hevî hûn dikin îro ji vî rindê xerâbâtê (MC 242-9)*

Pîrê muxan, pîrê *xerâbâtê* ye û murîdên wî di emr û fermanên wî da nin.

*Bi Qur'ânê bi âyâtê eger pîrê xerâbâtê
Bebêjit: secde bin lâtê murîdên wî dibin qâtê (MC 16-5)*

Xerâbât, cihekî wusa qedir bilind e ku di wê da guneh û zuhd û mezinahî cih nagire û kesên ku werin ber derîyê wê divê tabî'ê şert û mercên wê bibin.

*Gunâh û zuhd û tāmāt hîlnāgirit xerâbât
Kesê bi vî derî ret divê bikit ri'ayet (MC 72-5)*

Dema kesek hat ber derîyê *xerâbâta pîrê muxan* divê xirqeyê sofîtiya xwe bi meya lişqê veguhezîne.

*Bi meyê şāfî bidîn xirqeyê zerq
Bi xerâbâtê muxān er biresîn (MC 185-4)*

5.1.3 Xirqe, Delq (خرقه - دلقي)

Xirqe, nav e û ji 'erebî hatîye. Pirjimara wê *xirqāt* (خرقات), *xireq* (خرق) û *xirūq* (خُروق) e. Di ferhengan da ji cil û bergên bi pîne, cil û bergên ji pîneyên kevn hatibin çêkirîn û ew cil û bergên ku pêşîya wî vekirîbê *xirqe* hatîye gotin.⁷⁵⁸ Ji *xirqe* ra *delq* jî tê gotin.⁷⁵⁹ Di istilahê sofîyan da ew bergên ji hirîyê û bi gelemperî ji pîneyên bi hev dirûtî re *xirqe* yan *delq* tê gotin. Hinek ji sehabîyan û zâhidên tabî'înan wekî Hezretî 'Elî, Hezretî 'Umer, Uweysê Qerenî bergên bi pîne li xwe dikirin. Pişewayên tesewufî ji bo mutabe'eta wan, bergên bi reng û pîne li xwe dikirin.⁷⁶⁰ Wateya perçe û pîneyên *xirqe* ev e ku *xirqe* di hizra sofîyan da remza perçekirina te'elluqatên nefsanî û şehewatên dinyewî ye.⁷⁶¹

⁷⁵⁸ دهخدا، ج ۷، ص ۹۶۹۷.

⁷⁵⁹ دهخدا، ج ۷، ص ۱۱۰۴۳.

⁷⁶⁰ بخارایی، ص ۲۰۰-۱۹۹.

⁷⁶¹ زمانی، ج ۱، ص ۲۴۵.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 66 caran xirqe û 20 caran jî delq derbas dibe. Herçend ku Xurremşahî bibêje; *xirqe û delq di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi sê cureyan tê dîtin; xirqeyê zâhid, xirqeyê sofî û xirqeyê hâfiz, û Hâfizê Şîrâzî bi nêrîneke baş li wan nanîhirê,*⁷⁶² yanî bi gotineke din bi tevahî istilaheke menfî ye. Lê em dibînin ku di du malikan da bi musbet jî cih girtîye û bi vî rengî bûye istilaheke dulayane; musbet-menfî. Ji alîyê musbet *xirqe, xirqeyê* rindê şerabxwar e. Bi vî rengî *xirqe* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi çar şiklan cih digire.

Xirqeyê zâhid. Xirqeyê zuhd û zâhidî xirqeyê rîya û xapandinê ye. Ji ber vê lazim e ku here xerâbâtê û bi ava xerâbâtê were şûştin. (HŞ 80-5) Xirqeyê zâhidî necis e. Ji ber vê bi heft avan jî tahir nabe. Di malika Hâfizê Şîrâzî da îşaret bi Mezhebê Şafî'î û Mezhebê Henefî hatîye kirin. Di Mezhebê Şafî'î da tiştê necis, carek bi axê û heft car bi avê tahir dibe. (Di mezhebê Henefî û Şi'a da sê caran av bes e)⁷⁶³ Di mezhebê Henefî da agir, yek ji wan amûran e ku tiştên necis tahir dike.⁷⁶⁴

نه به هفت آب که رنگش به صد آتش نرود آن چه با خرقة ی زاهد می انگوری کرد

Tesîra ku şerab li xirqeyê zâhidî dike ne heft av, belkî sed agir jî lê nake. (HŞ 247-4)

Xirqeyê sofî. Di xirqeyê sofî jî heman taybetîyên xirqeyê zâhidî tê dîtin. Xirqeyê sofî jî divê here xerâbâtê. (HŞ 564-1) Xirqeyê sofî gelek gemarî ye, ji vê gemara wî gelek bêhnên nexweş tên û lazim e bi şeraba safî were şûştin. Bêhn, kînaye ye ji nebaşîyên sofî.

بوی یک رنگی از این نقش نمی آید خیز دلوق آلوده ی صوفی به می ناب بشوی

Bêhnek tenê ji vî xirqeyê rengo rengo nayê, rabe ya baş ew e ku em xirqeyê gemarî bi şeraba safî bişon. (HŞ 714-2)

Xirqeyê hâfiz. Xirqeyê hâfiz ew xirqe ye ku bi gunehan gemarî bûye. (HŞ 113-4) Ev xirqe 'eybên wî, gunehên wî vedişêre, (HŞ 298-9) lixwekirina xirqe ne ji dîndarîya wî ye. (HŞ 522-7) Hâfizê Şîrâzî, ji van 'eyb û gunehên xwe bêzar e. Ji ber vê, her dixwaze jê reha bibe. Rêka rehabûnîyê şewitandin (HŞ 511-7) an vexarina şerabê ye û ji bo vê jî divê xirqeyê xwe di xerâbâtê da rehîn bide. (HŞ 606-1) Hâfizê Şîrâzî, nêrînên xwe yên derbarê xirqe da, di vê malikê da wekî xulase tîne ziman.

⁷⁶² خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۱۰۳-۱۰۴.

⁷⁶³ خالقی، ص ۳۶۱.

⁷⁶⁴ Ögüt, Salim, "Tahâret", *DÎA*, c 39, s 384.

آتش زهد و ریا خرمن دین خواهد سوخت حافظ این خرقة ی پشمینه بینداز و برو

Agirê zuhd û rîyayê, ew ê bêndera dîn bişewitîne, Hâfiz, wî xirqeyê hirî derxe û here. (HŞ 608-6)

Xirqeyê Rind. Hâfizê Şîrâzî xirqeyê ku rind li xwe dike dipesinîne. Lewra xirqeyê rindî ne ji bo xapandinê ye.

ترسم که روز حشر عنان بر عنان رود تسبیح شیخ و خرقة رند شرابخوار

Ez ditirsim ku di roja heşrê da tesbîhên şêx û xirqeyê rindê şerabxwar wek hev bi erziş be. (HŞ 396-9)

Di malikên Melâyê Cizîrî da sê caran *xirqe* û carekê jî *delq* derbas dibe. *Xirqe* û *delq* bi yek wateyê di dîwanê da cih girtîye. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da tesewufa 'âşiqâne cih digire. *xirqe* û *delq* remz û îşareta tesewufa 'âbidâne ye. Rehrewên rêya Heq, lazim e ku dev ji tesewufa 'âbidâne berdîn û berê xwe bidin tesewufa 'âşiqâne. Ji ber vê, xirqeyê sofîyan û zuhda wekî zengê gemarî lazim e bi meya meyxaneyê were şûştîn û ev yek di tesewufa 'âşiqâne da karê sereke ye ku Melâyê Cizîrî wê zerûrî dibîne.

*Xirqeyê zerq û jengê zuhd min bi meyê muxâne şust
Şust û şuwek di meykede ewwelê kari ferq e ferq* (MC 132-3)

Li ser heman nêrînê sâlik, dema berê xwe bide rêka 'îşqê, tesewufa 'âşiqâne xirqeyê softîyê ji xwe dike û dest bi vexwarina meya 'îşqê dike.

*Bi meyê şâfî bidîn xirqeyê zerq
Bi xerâbâtê muxân er biresîn* (MC 185-4)

Rehrew, çî dema ku ji teref pîrê 'îşqê cil û bergên 'âşiqîyê lê hate kirin pêdivîya wî bi xirqeyê softîyê namîne.

*'Eqde îhrâmê di 'îşqê dâ ko pîrê 'îşqê best
Dê çî xem ger xirqe rehnê xaneyê xemmâri bit* (MC 64-7)

Piştî ku sâlik berê xwe da rêka 'îşqê, qible û mihraba wî tenê birûyên yarê ne. Li ber birûyên yarê divê secdeya şukrê bike ji bo ku berê wî ketîye rêya rastîyê, rêya 'îşqê. Di vê secdeyê da tenê hêstirên çavên wî yên poşmanîyê dikare hemû kiryarên wî yên di tesewufa 'âbidâne da ku *delq*, *şeml* û *seccade* remza wê ye, pak bike.

*Tenê ew secdeyâ şukrê te bit mihrâbê qewseynân
Ko delq û şeml û seccade bi vê âvê qeşâret kir* (MC 104-8)

5.1.4 Tewbe (توبه)

Tewbe, ism e, mesdera wê *tâbe* (تاب) ye, pirjimara wê *tewbât*, *tewebât* û *tewb* e (تَوْبَات - تَوْبَات - تَوْب). Wateya ferhengî vegerandin e. Vegerandina ji karên nebaş, kêr

û nedirust, poşmanî û bilêvkirina ji kirinên nebaş jî wateyên ferhengî ne.⁷⁶⁵ Sê cure 'uzur xwestin heye. Yekem; kesê ku 'uzur dixwaze bibêje min nekirîye. Duyem; kesê ku 'uzur dixwaze bibêje ji bo vê yekê min ev tişt kirîye. Sêyem; bibêje min kir, lê min nebaş kir, êdî ez ji wê vegeřiyam. Ji vê cureya sêyem ra *tewbe* hatiye gotin.⁷⁶⁶ Ji vê tete famkirin ku di *tewbeyê* da bilêvkirin û vegeř du şertên sereke ne.

Tewbe, bêjeyeke Qur'ânî ye. Di Qur'ânê da di gelek ayetan da derbas dibe⁷⁶⁷ û herwiha navê sûreyê nehem yê Qur'ânê ye. *Tewbe*, di seyr û silûkê da merheleya yekem e, destpêk e. Di heman demê da yekem meqamê tesewufê ye. Ji bo pênesaya tesewufî ya *tewbeyê* wiha hatiye gotin. Vegera bi bal Xweda, israra bi qelb li ser vê vegeřê û edakirina hemû mafên Xweda ye.⁷⁶⁸ *Tewbe*, hişyarîya ruh e ji xeflet û bêxeberîyê. Şertê *tewbeyê* jî ev e; ku *tewbekar* bi tevahî jî gunehan vegere û êdî gunehan neke.⁷⁶⁹ *Tewbe*, dûrbûnîya ji hemû tiştên ku muxalîfê şerî'etê ne. Û ev yek esas û temel e ji bo hemû kiryanan. Eger di vî esasî da sistî hebe hemû kar ew ê xira bibe. *Tewbe*, di hemû meqaman da lazim e. Lewra ji bo her meqamê silûkê gunehêkî munasibî wî meqamî heye. Di wî meqamî da ji bo wî gunahî *tewbe* lazim e.⁷⁷⁰

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 33 sê caran bêjeya *tewbe* derbas dibe. Her çend ku Xurremşahî bibêje; *emma (Hâfiz), hemware bi tenz ji tewbeyê behs kirîye û hetta di cihekî tenê jî nayê dîtîn ku tewbe nebûbe mezmûnên tenzê*⁷⁷¹, û bi vî şiklî *tewbe* wekî istilaheke bi tevahî menfî destnîşan kiribe jî, em dibînin ku di malikên Hâfîzê Şîrâzî da *tewbe* bi alîyê musbet jî cih girtîye. Bi vî şiklî bi kar anîna *tewbeyê* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bi du şiklî cih digire; menfî û musbet.

Hâfîzê Şîrâzî, *tewbeyê* hem di hestên xwe yên 'aşîqâne da û hem di fikr û ramanên xwe yê derbarî Sofî û Zâhidî da bi kar tîne. Di hestên 'aşîqâne da bikaranîna *tewbeyê* wekî istilaheke musbet dikare were pejirandin. Lewra di malikên bi vî rengî da *tewbe* nehatîye rexnekirin, lê di heman demê da ne pesindîdeye jî.

Di hestên 'aşîqâne da Hâfîzê Şîrâzî *tewbeya* li ser venexwarina şerabê tişteki efsane dibîne ku, 'eqil wî tîştî qebûl nake. Lewra pêdivîya 'aşîqî her bi vexwarina

⁷⁶⁵ دهخدا، ج ۵، ص ۷۰۹۶.

⁷⁶⁶ el-Îsfahanî, r 200.

⁷⁶⁷ Wekî mînak bnr: *Qur'âna Pîroz*, Beqer 54, Nûr 31, Maîde 74, *Tewbe* 117.

⁷⁶⁸ الجرجانی، ص ۶۳.

⁷⁶⁹ زمانى، ج ۱، ص ۴۴۷.

⁷⁷⁰ نجم الدين الرازي، ص ۱۵۴.

⁷⁷¹ خرشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۲۱۶-۲۱۷.

şerabê heye. (HŞ 466-5) Dema ku gul dibişkivin hestên 'âşiqî bilindtir dibin. Di vê demê da *tewbekirina* ji vexwarina şerabê şerm e. (HŞ 476-1) Fesla biharê ji bo 'âşiqî dema *tewbeşikandinê* ye (HŞ 536-1) Hâfizê Şîrâzî, bi xwe rind û 'âşiq e ku di fesla biharê, di dema bişkiftina gulan da nikare *tewbe* bike.

من رند و عاشق در موسم گل آن گاه توبه استغفر الله
Ez rind û 'âşiq bim û di fesla biharê, di fesla gulan da tewbe bikim, Xwedê min ji vî tiştî bisitirîne. (HŞ 621-4)

Hâfizê Şîrâzî, ji alîyekî va *tewbeyê* rexne dike. Bi vî rengî *tewbe* istilaheke menfi ye. Ev menfîbûna *tewbeyê* ji tîkîliya bi sofî û zâhidî tê. Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da tu bawerî bi fi'lên Zâhid, Sofî û 'Âbidî nayê, heta bi *tewbeya* wan jî. Ji ber vê, dibêje; mizgînîyê bidin gundê meyfiroşan ku Hâfiz ji zuhd û rîyayê *tewbe* kirîye. (HŞ 233-9) Di malika jêrîn da sebebê menfîbûna *tewbeyê* û tîkîliya wê bi şexsîyetên menfî wiha tîne ziman.

از دست زاهد کردیم توبه و از فعل عابد استغفر الله
Min ji destê Zâhidî tewbe kir û Xweda min ji fi'lên 'Âbidî biparêze. (HŞ 620-4)

Tewbe, wekî istilaheke musbet di malika jêrîn da wiha derbas dibe.

من از رندی نخواهم کرد توبه و لو آذیتنی بالهجر و الحجر
Ez naxwazim ji rindîyê tewbe bikim, eger bi dûrketinê û bi nedîtinê ezîyetê li min bikin jî. (HŞ 403-4)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da bêjeya *tewbeyê* tenê di malikekê da du caran derbas dibe. Nêrîna Melâyê Cizîrî derbarê *tewbeyê* da nêrîneke 'âşiqâne ye. Digel vê, nêrîneke tesewufî jî di fikrên 'âşiqâne da cih digire. Di tesewufê da wekî li jor hate gotin ji bo her meqamekî *tewbe* lazim e. *tewbe* kirina ji *tewbeyê* jî di berhemên tesewufê da cih girtîye⁷⁷² ku Melâyê Cizîrî di heman demê da vê bi bîr tîne. Li gorî Melâyê Cizîrî, ji sâlikên rêya 'îşqê ra dema mehbûba bejinzirav û şêrînziman bi mestbûna cam û badeyê xuya bike *tewbeya* ser *tewbeyê* li ser wî ferz dibe.

Neyşekerên şîrînzebân mestê bi cām û bāde tēn
Ferḍ e dibit ji tewbeyê sālîkê 'îşqê tewbe ferḍ (MC 132-4)

5.1.5 Şebr (صَبْر)

Sebr, mesdera fi'la *şebere* (صَبَرَ) ye. Di ferhengên de bi van wateyan derdikeve pêşberî me; Tehemmul kirin, aram bûnî, sekinandin, ji Xweda pê ve ji

⁷⁷² Bnr; ص ٦٥؛ أحمد بن عبيدة، معراج المشوف إلى حقائق التصوف و بلبه كتاب كشف النقاب عن سر لب الألباب (قشیری، ص ٦٥؛ أحمد بن عبيدة، معراج المشوف إلى حقائق التصوف و بلبه كتاب كشف النقاب عن سر لب الألباب)، (بدون تاريخ)، ص، ٢٧، (تحقيق الدكتور عبد المجيد خيالي، مركز التراث الثقافي المغربي الدار البيضاء، ص، ٢٧،

kesekî gazinde nekirina ji belayan. *Sebr*, ziddê feryadkirinê ye.⁷⁷³ *Sebr*, Bêjeyeke Qur'ânî ye. Bêjeyên ku ji *sebrê* ava bûne di Qur'ânê da nêzî sed carî cih girtine. *Sebr*, di Qur'ânê da wekî yek ji xisletên girîng ê însanan⁷⁷⁴ û sunnet û secîyeya Pêxemberên Ûlu'l-'ezm hatîye jimartin.⁷⁷⁵

Wekî istilaheke tesewufî, ji bo *sebrê* gelek pênase hatîne dayîn. Di pêşîyê da lazim e were gotin ku *sebr*, yek ji meqamên tesewufê ye.⁷⁷⁶ Derbarê *sebrê* da wekî xulase wiha hatîye gotin. *Sebr*, pêşî devjêberdana gazinde û şikayetan e, paşê razîbûn e bi tiştê li ser wî hatîye teqdîrkirin. Û di encamê da hezkirin û mehebbeta wan tiştan e ku Xweda ji bo wî dixwaze.⁷⁷⁷ *Sebr*, bi sê cureyan hatîye ravekirin; *sebra* li ser bela û mûsîbetan, *sebra* li ser nekirina gunehan û *sebra* li ser kirina ta'et û 'îbadetan.⁷⁷⁸ Bi cih anîna her emrê şerî'etê û terka her guneh û şehwetê bêyî *sebrê* ne pêkan e. Ji ber vê eger sâlik li ser hemû tiştan *sebrê* neke şî'ara xwe, ji silûka xwe tiştêkî bi dest naxe. *Sebra* li ser ni'metên Xweda ji *sebra* li ser bela û mûsîbetan zortir hatîye hesibandin.⁷⁷⁹

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî bêtîya *sebrê* 33 caran derbas dibe. Di malikên Hâfîzê Şîrâzî da *sebr* di nêrînên 'aşîqâne da bi wateya ferhengî û di nêrînên tesewufî da bi wateya istilahî cih digire. Di nêrîna tesewufî da *sebr* yek ji meqamên tesewufê ye.

گویند سنگ لعل شود در مقام صبر آری شود ولیک به خون جگر شود
Dibêjin kevir di meqamê sebrê da dibe le'l, rast e, lê bi xwîna cegerê wusa

dibe. (HŞ 366-2)

Di hizr û ramanên 'aşîqâne da *sebr* bi wateya ferhengî cih digire. 'Aşîq her li ser azar û qehrên me'sûqê yan li ser fîraqa yarê her bi *sebr* e.

کوه صبرم نرم شد چون موم در دست غمت تا در آب و آتش عشقت گدازانم چو شمع
Çîyayê sebra min nerm bû wekî mûmê ji destê xema te, ji zemanê ku ez ketim

nav av û agirê 'işqa te ya wekî mûmê. (HŞ 480-8)

Di dîwana Melâyê Cîzîrî da bêtîya *sebrê* deh caran derbas dibe. Melâyê Cîzîrî tenê di fikr û ramanên 'aşîqâne da bi wateya ferhengî cih daye bêtîya *sebrê*.

Zihê derdê mezin furqet Ceger sot âteşî dā dil
Cihê sebrê nemā çendān Ferec min dī di sebrê dā (MC 29-5)

⁷⁷³ دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۴۷۵۳؛ الجرجانی، ص ۱۱۲.؛ el-İsfahanî, r 576.

⁷⁷⁴ Bnr; *Qur'âna Pîroz*, Şûra 43.

⁷⁷⁵ Bnr; *Qur'âna Pîroz*, Ehqaf 35.

⁷⁷⁶ Bnr; (الطوسي، ص ۴۹).

⁷⁷⁷ گوهرین، شرح اصطلاحات تصوف، ج ۷، ص ۹۴.

⁷⁷⁸ ابو القاسمی، ص ۵۷۲.

⁷⁷⁹ زمانی، ج ۱، ص ۵۵۱.

5.1.6 Cezbe (جذبہ)

Cezbe, nav e û pirjimara wê *cizzab* (جذاب) e. Di ferhengan da bi wateya kişandin, mesafeya dûr, hêrsbûnî, xedeb û qehrê cih digire.⁷⁸⁰ *Cezbe*, di tesewufê da 'înayet, alîkarîya Ilâhî ye ku Xweda, 'ebdê xwe bêyî zor û zehmetîya seyr û silûkê bi bal xwe va nêzîk dike.⁷⁸¹ Ev kişandin eger ji teref Heq be navê wê *cezbe* ye. Eger ji teref 'ebda be navê wê *Meyl*, *Îrade*, *Mehebbet* û *'işq* e. Çi dema teweccuha bende bi Hedretê Heq zêde bû, her biçe ew ê bigihêje astekê ku di vê astê da bi yekcarî terka hertiştî dike û rûyê xwe dizivirîne bi bal Xweda ve. Êdî qibleya wî tenê dibe Xweda û di *'işqa* Xweda da dijî. Ji vê rewşê ra *cezbe* tê gotin.⁷⁸² Ev layê *cezbeyê* yê tesewufî ye ku di encamê da *'işq* derdikeve holê.

Cezbe, di mijarên felsefeya tesewufê da jî cih digire. Di nêrîna Mewlana da afirandina mexlûqa jî bi wasîteya kişandin û *cezbeya* Xweda ye. Bi gotineke din eger *cezbeya* Xweda nebûya teqez tunebûnî lîbasê hebûnê li xwe nedikir.⁷⁸³ Bi kurtasî hemû gerdûn û mexlûq bi *cezbeya* Ilâhî hatîne hebûnê.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da tenê di malikekê da derbas dibe. Hâfîzê Şîrâzî, di malika xwe da *cezbe* bi wateya tesewufî bi cih kirîye û têkilîyek di navbera gotina Ene'l-Heq⁷⁸⁴ û *cezbeyê* da ava kirîye. Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da kesên di rewşa *cezbeyê* da dikarin sir û razên gotina Ene'l-Heq fehm bikin.

رموز سر انا الحق چه داند آن غافل که منجذب نشد و از جذبہ های سبحانی

Remzên sirra Ene'l-Heq çî dizane ew xafil, eger ew nehatibe kişandin bi cezbeya Ilâhî. (HŞ 737-19)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da 19 caran em rastî bêjeya *cezbeyê* carek jî bêjeya *cezb* û *cezbate* tên. Di vê were gotin *cezbe*, yek ji wan bêjeyên kilîdî yên dîwana Melâyê Cizîrî ye û ji bo derk û têgihîştina fikr û ramanên Melâyê Cizîrî gelek girîng e.

Melâyê Cizîrî, di şîrên xwe da istilaha *cezbeyê* di sê mijaran da 'emilandîye. Di mijara felsefeya tesewufê da, di mijara tesewufê da û di mijarên *'işqê* da.

⁷⁸⁰ دهخدا، ج ۵، ص ۷۵۸۳.

⁷⁸¹ کی‌منش، ج ۱، ص ۳۸۴.

⁷⁸² زمانی، ج ۱، ص ۹۲۵.

⁷⁸³ ابو القاسمی، ص ۲۶۹.

⁷⁸⁴ Ji bo Ene'l Heq bnr; tez; 262-263

Di mijarên felsefeya tesewufê da Melâyê Cizîrî wekî Mewlana têkilîyekê di navbera afirandina kaînatê û *cezbeyê* da ava dike. Di hizra Melâyê Cizîrî da ji wê nûra Xweda ku 'âlem jê hatîye avakirin tîrêjek wekî şefeqa sadiq kete qelbê 'âşiqî, û 'âşiq bi *cezbeyê* ket.

Ew nûr e dā bū şewq ū tāv 'Ālem xwuyā bū hem di nāv
Berqên xwe āvētin belāv Reng renga ew nûr berqe dā
Subhān ji remzā Xāliqī Nūrā sipêdā şādiqī
Avête qelbê 'āşiqī Lerzîn ū tā ū cezbe dā (MC 36-1,2)

Melâyê Cizîrî di nêrînên xwe yên tesewufî da ji bo rehrewên silûkê û ji bo gihiştina asta *cezbeyê*, mehebbetê şertê sereke dinasîne.

Cezbe ū seyrā sulûkê bê mehebbet nābitin
Cehdeyā bê 'işq ū hub çendī ko kir bêfeyde bū (MC 229-8)

Cezbe, di dîwana Melâyê Cizîrî da di fikr û ramanê 'âşiqâne da remz û nîşana hezkirina me'şûqê ye. Me'şûq, bi husn û Cemâla xwe ew qeder xweşik û dilreva ye ku xemlên bejna wê wekî bazin, ristîk, zîv û zêr jî ji 'işqa wê dinalin. Çi dema ku Melâyê Cizîrî digihêje vê remzê dilê wî jî ji 'işqa me'şûqê bi *cezbeyê* dikeve.

Lew ji 'işqā wê dinalin bāzin ū berg ū wereq
Cezbeyā dil min ji remzā wān gihāyê rāst ū çep (MC 62-5)

5.1.7 Zuhd (زهد)

Zuhd, ji fi'la *zehide* (زهد) hatîye. *Zehide*, bi wateya tiştê hindik e.⁷⁸⁵ *Zuhd*, bi wateya bê rexbetî û terkkirina meyla bi bal tişteki ye.⁷⁸⁶ *Zuhd*, bêjeyeke Qur'ânî ye. Di Quranê da wateya bêdilî û bêrexbetîyê nîşan dide.⁷⁸⁷ Di şerî'etê da hatîye gotin; wergirtina tişteki ji malê helal bi qederê ihtîyacîyê *zuhd* e.⁷⁸⁸ *Zuhd*, yek ji meqamên tesewufê ye. Di tesewufê da buxda ji dinê û rûzîvirandina ji wê, terka rehetîya dinê ji bo bidestxistina rehetîya axretê pênaseyek *zuhdê* ye.⁷⁸⁹ Ji bo *zuhdê* wiha jî hatîye gotin: "Terka heraman *zuhda* kesên 'ewam e, terka tiştên zêde ji helalî *zuhda* xewasan e û terka tiştên ku 'ebd ji Xweda xafil dike *zuhda* 'ârifân e."⁷⁹⁰ Ev pênase wekî cureyên *zuhdê* dikare were pejirandin.

⁷⁸⁵ el-Îsfehanî, r 463.

⁷⁸⁷ *Qurana Pîroz*, Yûsuf 20.

⁷⁸⁶ الجرجاني، ص ٩٩؛ دهخدا، ج ٩، ص ١٣٠٢٧.

⁷⁸⁸ خالقي، ص ١١٠٨.

⁷⁸⁹ الجرجاني، ص ٩٩.

⁷⁹⁰ القشيري، ص ٢٢٢.

Zuhd, di Islamê da wekî sifetê sehabîyan û tabi'înan hatîye qebulkirin. *Zuhd*, bi derbasbûna zeman, piştî serdema tabi'înan taybetîyên din werdigire, veduguhêze. Ji bêrexbetîya dinê, hirs û şehwetê, ku sifetên musbet yên sofîyan bû, bi şiklê îfrata di 'îbadetan da û munzewîmayîne tehevvl bû.⁷⁹¹ Di nava sofîyan da ew *zuhda* ku ji xelqê dûr, meşxûlê bi 'emelê şerî'etê yên zâhirî ye û bê 'işq û hal e, nehatîye 'ecibandin. *zuhda* bi vî rengî wekî nîşana zâhirperestî û bê xeberîya ji heqîqetê hatîye hesibandin. Ev zumre, ji ber ku bi zâhirê şerî'etê digirin û dev ji 'emelê qelbî û 'işqa bi Xweda berdidin ji teref hin sofîyan hatîye rexnekirin.⁷⁹² Helbet ev rexne ne ji bo *zuhda* heqîqî ye, belkî ji bo *zuhda* zâhirperestî ye.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 27 caran bêjeya *zuhdê* derbas dibe. *Zuhd*, di nava wan bêje û istilahên ku di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da menfî ye cihê xwe digire. Ev nêrîneke giştî ye. Lê di dîwana wî da malikên ku *zuhd* di wan da wekî istilaheke musbet derbas dibîn jî tene dîtin. Bî vî şiklê *zuhd*, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da istilaheke hem musbet û hem menfî ye.

Zuhd, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bi layê xwe yê menfî van taybetîyan di xwe da digire;

Zuhd, di malikên Hâfîzê Şîrâzî da bêtir bi sifetên rîyayê têkildar e.

باده نوشی که در او روی و ریایی نبود بهتر از زهدفروشی که در او روی و ریاست
Bade vexwarin ku di wê da xapandin û rîya tune ye, baştir e ji zuhda ku
seraser durûyî û rîyakarî ye. (HŞ 85-4)

Yek ji sifetê ku Hâfîzê Şîrâzî li *zuhdê* kirîye hişkbûnî ye.

ز زهد خشک ملولم کجاست باده ی ناب که بوی باده مدام دماغ تر دارد
Ji zuhda hişk melûl im, badeya saft li ku ye ku bêhna wê her tim me şad dike.

(HŞ 212-5)

Ji bo kesek ji *zuhda* bi rîya xwe reha bike divê ji *xaneqâhê* were meyxaneyê.

ز خانقاه به می خانه می رود حافظ مگر ز مستی زهد ریا به هوش آمد
Hâfîz, ji xaneqâhê bi meyxanê diçe, ji bo ku ji mestîya zuhda bi rîya were ser

hişê xwe. (HŞ 293-8)

Zuhd, giran e. *Zuhda* giran ew *zuhd* e ku nayê qebûlkirin û ne pesendîde ye.

زهد گران که شاهد و ساقی نمی خرنند در حلقه ی چمن به نسیم بهار بخش
Ew zuhda giran ku sâqî û şâhid wê nakirin, di bezma çîmenê da bide ber bayê

biharê. (HŞ 435-3)

⁷⁹¹ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۹۷۰.
⁷⁹² کی منش، ص ۶۹۴-۶۹۵.

Hâfîzê Şîrâzî ji rîyakarîya *zuhdê* metirsîyê dike ku ew ê esasê dîn xira bike.

آتش زهد و ریا خرمن دین خواهد سوخت حافظ این خرقة ی پشمینه بینداز و برو

Agirê zuhd û rîyayê dike bêndera dîn bişewitîne, Hâfîz, vî xirqeyê hirî derxe û here. (HŞ 608-6)

Di destpêka rindîyê da *zuhd* heye. Lê ev derbasdar e. Di destpêkê da ev *zuhd* tê pejirandin. Ev yek, bi me dide zanîn ku Hâfîzê Şîrâzî ne li dijî *zuhda* heqîqî ye, belkî dijminê rîyakarî ye ya di *zuhdê* da xuya dike. Malika jêrîn nîmûne ye ji bo layê *zuhdê* yê musbet.

زهد رندان نوآموخته راهی بدهی ست من که بدنام جهانم چه صلاح اندیشم

Zuhda rindên mubtedî rêyek eşkera ye, ez ku bednamê dinê me çi meslehetê bifikirim. (HŞ 523-2)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di sê malikan da em rastî *zuhdê* tên. Melâyê Cizîrî di du hizrên xwe da *zuhd* bi kar anîye ku yek jê rasterast hizrên 'âşiqâne ye û yek jî hizrên tesewufa 'âşiqâne ye. Lê *zuhd* di nêrîna Melâyê Cizîrî da ne istilaheke menfî ye.

Di hizrên 'âşiqâne da mehbûb bi yek xemzeyek xwe *zuhda* 'âşiqê xwe ji binî da dihedimîne. Ev yek, tê wateya ku Melâyê Cizîrî di 'îşqê da cih nade *zuhdê*.

Turkê xwûnrêz û xumarê me bi yek xemzeyekê

Zuhdê çilsâle li min zîr û zeber kir ji esas (MC 123-2)

Xerâbât cihê vexwarina meya 'îşqê ye. Di vê derê da cihê *zuhdê* nîne, lewra kes nikare berê xwe ji vexwarina meya 'îşqê bizîvirîne. Herwiha kesê ku berê xwe bide xerâbâtê lazim e rî'ayeta şert û mercê wê bike.

Gunâh û zuhd û tāmāt hîlnāgîrît xerābāt

Kesê bi vî derî ret divê bikit rî'ayet (MC 72-5)

Di tesewufa 'âşiqâne da ji bo ku sâlik derbasî asta 'âşiqîyê bibe divê dev ji softî û *zuhdê* berde. Helbet ev softî û *zuhd*, softî û *zuhda* hişk e. Ji bo vê jî lazim e ku reng û rûyê softî û *zuhdê* bi meya meyxaneyê were şuştin. Û ev yek karekî şert yê destpêka 'âşiqîyê ye.

Xirqeyê zerq û jengê zuhd min bi meyê muxâne şust

Şust û şuwek di meykedê ewwelê kari ferq e ferq (MC 132-3)

5.1.8 Şeṭḥ û Ṭāmāt (شَطْح - طامات)

Şeth, mesdereke 'erebî ye. *Şeth*, di ferhengan da bi wateya hereket û tevgerê cih digire.⁷⁹³ Ehmed 'Elî Recai, di berhema xwe da *şethê* wekî istilaheke tesewufê wiha rave dike. *Di istilahê sofîyan da hereket û bêqerariya dilî ye ku di hengama xelebeya wecdê da beyankirina wî halî ye. Ev beyankirin ji hin gotinan pêk tê ku ji kesên ne ehil ra xerîb û famkirina wan zehmet e. Carinan zâhirê van kelîmeyan, dijî edeb û hetta dijî şerî'etê xuya dike. Lê di bâtin da ew gotin rast û dirust in. Yê ku dibêje, bi nîyeta safî wusa beyan dike ku kesên din nikarin agahîyan ji sirrên wî bidest bixin.*⁷⁹⁴

Li ser bingeha *tamatê* lihevkirinek naye dîtîn. Li gorî gelek lêkolîneran ji zimanê 'erebî hatîye û pirjimara *ṭammet* (طامة) ê ye.⁷⁹⁵ *Tammet*, bêjeyeke Qur'ânî ye û kîneye ye ji qîyametê.⁷⁹⁶ *Tamat*, di ferhengan da bi wateya mûsîbet û belayên mezin hatîye.⁷⁹⁷ *Tamat*, wekî istilaheke tesewufê; ew îddî'ayên mezin, de'wa kerametan û xarîqul'adeyên 'ecêb û nadir têne dîtîn, hatîye.⁷⁹⁸

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da du caran bêjeya *şethê* û şeş caran bêjeya *tamatê* derbas dibe. Lazime were gotin bêjeya *şethê* her bi bêjeya *tamatê* di malikan da cih digire. Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da *şeth* û *tamat* gotinên xurafe ne û karê sofîyan e.

خیز تا خرقة صوفی به خرابات بریم شطح و طامات به بازار خرافات بریم

Rabe, em xirqeyê sofî bibin xerâbâtê, şeth û tamatan jî bibin bazara xurafeyan. (HŞ 564-1)

Hâfîzê Şîrâzî, çawa ku *şeth* û *tamatê* karê sofîyan dizane herwiha karê zuhd û zâhidîyî jî dizane û xwe ji wan sofîyan nahesibîne.

ما مرد زهد و توبه و طامات نیستیم با ما به جام باده صافی خطاب کن

Em ne kesên zuhd, tewbe û tamatê ne, ji me ra behsa badeya safî bike. (HŞ 594-5)

⁷⁹³ سجادی، ص ۵۰۵.

⁷⁹⁴ بخارایی، ص ۳۶۷.

⁷⁹⁵ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۲، ص ۱۰۴۲.

⁷⁹⁶ Bnr: *Qurana Pîroz*, Nazî'at 34.

⁷⁹⁷ دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۵۲۷۵.

⁷⁹⁸ بخارایی، ص ۴۷۳.

Di malikên Melâyê Cizîrî da *şeth* cih nagire û *tamat* jî tenê carekê derbas dibe. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da cihê *tamat* û *zuhdê* di xerâbâta pîrê muşan da tune. Kesê ku bixwaze were Xerâbâtê divê xwe ji van tiştan dûr bike.

Gunâh û zuhd û tāmāt hilmāgirit xerābāt
Kesê bi vî derî ret divê bikit ri'ayet (MC 72-5)

5.1.9 Xāneqāh (خانقاه)

Xaneqāh, peyveke farsî ye û ji farsî derbasî 'erebî bûye. Di nêrînekê da eslê bêjeyê *xānegāh* (خانگاه) e. Ji bêjeya *xane* û paşgira cih *gah* pêk hatîye bi wateya menzîlê wekî menzîlgah.⁷⁹⁹ Û di nêrînekê da eslê bêjeyê *xwānegāh* (خوانگاه) e. Bi wateya cihê xwarin lê tê pehtin û xwarin.⁸⁰⁰ Wekî istilah ew mekanê ku sofî di wê da dicivîn û zikir dikin, cihê îqameta derwêş û sofîyan ra *xaneqāh* hatîye gotin.⁸⁰¹ Bêjeya *xaneqāhê* li bakurê Efrîka bi *zawîye*, li Enedolê *tekke* û li hinek deverên 'Ereban bi *ribat* ê tê zanîn.⁸⁰²

Xaneqāh, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem bi şiklê *xaneqāh* û bi vî şiklî di 9 malikan da û hem bi şiklê *xaneqeh* (خانقه) û bi vî şiklî jî di şeş malikan da ku bi tevahî di 15 malikan da cih digire. *Xaneqāh*, di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da istilaheke hem erênî, musbet û hem neyînî, menfî ye.

Xaneqāha Hâfizê Şîrâzî ji dêleva *xaneqāha* sofî û derwêşa meyxane ye. (HŞ 129-1) Bi nêrîneke felsefeya tesewufî, tu ferq di navbera *xaneqāh* û xerâbâtê nayê dîtî lewra li her deverê pertewa nûra mehbûbê xuya dike.

در عشق خانقاه و خرابات فرق نیست هر جا که هست پرتو روی حبيب هست

Di 'işqê da ferqa xaneqāh û xerâbâtê tune ye, her devera ku heye pertewa xweşikahîya mehbûbê têda xuya dike. (HŞ 142-3)

Ev herdû mînakên jor alîyê musbetbûnîya *xaneqāhê* nîşan dide. Ji layê menfî tu têkilîya 'işqê û *xaneqāhê* bi hevra tune, ji ber vê, esrarê 'işqê di *xaneqāhan* da nayê dîtî. (HŞ 266-4) *xaneqāh*, cih û warê xwe 'ecibandîne ye.

ساقی بیار آبی از چشمه ی خرابات تا خرقة ها بشویم از عجب خانقاهی

⁷⁹⁹ دهخدا، ج ۶، ص ۹۲۲۳.

⁸⁰⁰ عزالدین کاشانی، ص ۱۵۴.

⁸⁰¹ سجادی، ص ۳۳۸.

⁸⁰² دهخدا، ج ۶، ص ۹۲۲۳.

Sâqî avê ji çeşmeya xerâbâtê bîne, ji bo em xirqeyê xwe ji xwe'ecibandina xaneqâhê bişon. (HŞ 720-9)

Hafîzê Şîrâzî, gelek caran meyxane û *xaneqâhê* bi hev mûqayese dike.

بر آستانه میخانه هر که یافت رهی ز فیض جام می اسرار خانقه دانست

Her kesê ku rêya meyxaneyê ji xwe ra girt, bi bereketa cama meyê ji razên xaneqâhê agah dibe. (HŞ 120-3)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *xaneqâh* derbas nabe.

5.1.10 Şewme'e (صومعه)

Şewme'e, bêjeyeke 'erebî ye, bi wateya her avahîya ku seqf, arîka wê bi hev ve be hatiye. Pîrjîmara wê *şewâmî'* (صَوَامِع) e.⁸⁰³ *Sewme'e*, bi wateya 'îbadetgaha tersa û nesara (bi zimanê me yê îroyîn: fille) û bi wateya mutleq, mekanê 'îbadetê ye.⁸⁰⁴ Pîrjîmara wê, *sewamî'* di Qur'ânê da derbas dibe.⁸⁰⁵ Di Qur'ânê da bi wateya manastirê/keşîxane, dêra fillehan cih digire.⁸⁰⁶ Di edebiyata farsî da bi wateya 'îbadetgaha sofîyan cih girtîye,⁸⁰⁷ ku Hâfîzê Şîrâzî jî bi vê wateyê di malikên xwe da cih daye vê bêjeyê.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da, di 20 malikan da bêjeya *sewme'e* derbas dibe. *Sewme'e*, di zimanê Hâfîzê Şîrâzî da yek ji wan bêjeyên du alî ye. Bi nêrîneke giştî bêjeyeke menfi be jî bi alîyê xwe yê musbet jî di malikan da tê dîtin. Sebeba menfîbûna vê istilahê ev e ku têkildarî sofî ye. Lê çî dema ku Hâfîzê Şîrâzî di şî'irê da dibe Sofî, istilah bi alîyê musbet vediguhêze.

صوفی صومعه ی عالم قدسم لیکن حالیا دیر مغان است حوالتگاهم

Ez sofîyê sewme'e ya 'âlema pak û cihana melekût im, lê aneşa dêra muxan bûye cihê min. (HŞ 548-6)

Di malika jêrîn da têkilîya *sewme'e* û dêra fillehan dide ber çavan.

آن جا که کار صومعه را جلوه می دهند ناقوس دیر راهب و نام صلیب هست

Di wê devera ku karê sewme'eyê dixemilînin, naqosa dêra rahiban û navê selîb jî bi kar tînin. (HŞ 142-4)

⁸⁰³ el-Îsfehanî, r 601.

⁸⁰⁴ دهخدا، ج ۱۰، ص ۱۵۱۰۳.

⁸⁰⁵ Bnr: *Qurana Pîroz*, Hec 40.

⁸⁰⁶ el-Îsfehanî, r 601.

⁸⁰⁷ استعلامی، ص ۷۵.

Sewme'e ji alîyê xwe yê menfî ve wargeha sofîyan e û heman taybetîyên sofîyên menfî, bi rîyayê têkildar e.

خوش می‌کنم به باده‌ی مشکین مشام جان کز دلق پوش صومعه بوی ریا شنید
Ez canê xwe bi bêhna badeyê xweşbêhn dikim, lewra ji xirqepûşên sewme'eyê bêhna rîyayê hate me. (HŞ 391-3)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *sewme'e* derbas nabe.

5.1.11 Riḍā (رضا)

Rida yan *reda* di zimanê 'erebî da mesder e. Di ferhengan da bi wateya qaîlbûnî, dilxweşî û xwoşnûdî cih digire.⁸⁰⁸ Bêjeyeke Qur'ânî ye û di Qur'ânê da bi wateya qaîlbûnîyê cih girtî ye.⁸⁰⁹ Herwiha kelîmeyeke îlmê Kelamê ye û di vî 'ilmî da bi wateya îradeyê li hember cebrê ye.⁸¹⁰

Rida, meqamek ji meqamên tesewufê ye.⁸¹¹ Îmamê Xezâlî derbarê *ridayê* da wiha gotîye: Bizan ku razîbûna li hember qeder û qedaya Heq Te'ala bilindtirîn meqam e. Ê tu meqam ji wê bilindtir tune ye, tevî ku mehebbet meqamê baştirîn e. Lewra *ridaya* bi her tiştê ku Heq Te'ala dike, fêkîyê mehebbetê ye. Lê ne fêkîyê her mehebbetê, belkî fêkîyê mehebbeta ber bi kemalê va diçe.⁸¹² Ji pênaseya Îmamê Xezâlî tê famkirin ku *rida*; li hember hemû tiştên ku ji Xweda tên; çî bela û çî ni'met, bi hezkirin qaîlbûnî ye.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da, di 13 malikan da bêjeya *rida* û di du malikan da bêjeya *Radî* derbas dibe. Di van malikan da bêjeya *rida* bi bêjeya Meqam ra di du malikan da bi hev ra hatîye bikaranîn. Di van malikan da bêjeya Meqam bi wateya tesewufî ye yan bi wateya ferhengî ye ne zelal e, lewra malik ji îham û îşaretan ne xalî ye.

بیا که هاتف میخانه دوش با من گفت که در مقام رضا باش و از قضا مگریز
Were, hâtîfê meyxañê duh ji min ra got, di meqamê ridayê bimîne û ji qedayê nereve. (HŞ 423-7)

⁸⁰⁹ Bnr: *Qurana Pîroz*, Maîde 119.

⁸¹¹ Bnr: (الطوسي، ص ۵۲-۵۳؛ هجویری، ص ۲۲۶)

⁸⁰⁸ دهخدا، ج ۸، ص ۱۲۱۰۷.

⁸¹⁰ دهخدا، ج ۸، ص ۱۲۱۰۷.

⁸¹² غزالی، کمیای سعادت، ج ۲، ص ۶۰۶.

Di fikr û ramanên 'âşiqâne da qaîlbûnîya bi derdê 'işqê wekî ruknekî 'işqê ji teref 'âşiqî va tê qebûlkin.

من و مقام رضا بعد از این و شکر رقیب که دل به درد تو خو کرد و ترک درمان گفتم

Piştî vê ez berê xwe didim meqamê ridayê û sipasîya reqîb (nîgehbanê yarê) dikim, ji ber ku dilê min hogirî derdê te bû, terka dermanan kir. (HŞ 177-5)

Di malika jêrîn da bêjeya rida wekî istilaheke 'ilmê Kelamê cih girtîye

رضا به داده بده وز جبین گره بگشای که بر من و تو در اختیار نگشاداست

Bi ew tiştê ku Xweda daye te qaîl bibe û gazindeya meke, lewra ji min û te ra ixtiyarî (hilbijartin) nehêlan e. (HŞ 107-8)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da bêjeya rida derbas nabe.

5.1.12 Beqâ- Bâqî û Fenâ- Fânî (بقا - باقی - فنا - فانی)

Beqâ, bêjeyeke 'erebî ye û mesder e. Isfehânî, *beqâyê* wiha pêname dike; mayina tiştêkî li ser halê xwe yê ewwel *beqâ* ye.⁸¹³ Dewam, sebat, jîyan, mayina li dinê jî wateyên *beqâyê* ne.⁸¹⁴ *Beqâ*, bêjeyeke Qur'ânî ye. Di Qur'ânê da bi gelek formên cuda cih digire.⁸¹⁵ *Bâqî*, sifetê fa'ilî ye û ji mesdera *Beqâyê* hatîye bi wateya ew tiştê xwedî dewam û sebat, payidar, cawîd, sermedî, bê zewal.⁸¹⁶ *Fenâ*, ziddê *beqâyê* ye û *fânî* jî ziddê *bâqî* ye.

Wekî istilah *fenâ* û *beqâ* cara yekem ji aliyê Ebû Se'îd Ehmed b. 'Îsa Heraz Bexdadî (w. 279/892) ketîye lîteratura tesewufê.⁸¹⁷ Derbarê pênameya *fenâ* û *beqâyê* gelek tişt hatine gotin. Wek numûne; *fenâ*, 'îbaret e ji nîhayeta Seyr Ilallah û *beqâ* jî 'îbaret e ji bîdeyata, destpêka Seyr Fillah. *Fenâ* du cure ye. *Fenâya zâhirî* û *fenâya bâtinî*. *Fenâya zâhirî*, *fenâya* ef 'al e. Ev, netîceya tecellîya e'falê Ilâhî ye. Di vê rewşê da sâlik wusa xerqê behra e'falê Ilâhî dibe ku ne di xwe da û ne di tiştêkî din da ji mimkunatan tu fi'l, îrade û îxtiyarê nabîne, tenê fi'l, îrade û îxtiyara Ilâhî. *Fenâya bâtin* fenâya sifate. Di vê rewşê da sâlik geh di muqâşefê û geh di muşahedê xerqî sifaten qedîmî dibe û wucûda Heq li ser wî xalib dibe û wî dorpêç dike. *Beqâya* ku li hember *Fenâyê* zâhir dibe ev e ku; Xweda bendeyê xwe hildibijêre, wî dike

⁸¹³ el-Isfehânî, r 601.

⁸¹⁵ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Qeses 119, Kehf 46.

⁸¹⁴ دهخدا، ج ۴، ص ۴۹۰-۴۹۰.

⁸¹⁶ دهخدا، ج ۳، ص ۴۲۳.

⁸¹⁷ بخارایی، ص ۵۲۵.

malik di îrade û îxtiyarîyê da û teserrufek mutleq dixê destê wî, heta her çi bixwaze bi îradeya Heq pêk bîne.⁸¹⁸

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 10 caran bêjeya *fenâ* û 5 caran jî bêjeya *fânî* derbas dibe. Di malikên Hâfizê Şîrâzî da *fenâ* û *fânî* bi wateya tesewufî cih nagirin. *Fenâ*, di fikr û ramanên 'âşiqâne da bi wateya xwe tune kirin, tune kirina bedenê û mirinê tê dîtin.

آن کشیدم ز تو ای آتش هجران که چو شمع جز فنای خودم از دست تو تدبیر نبود

Ey agirê hicranê! Min çi kişand ji destê te, ji bilî ku ez wekî mûmê xwe tune bikim, tu çare nema. (HŞ 344-2)

Fânî, bêtir bi bêjeya 'âlemê hatîye bikaranîn û kîneye ye ji nepayîdarbûna dinyayê.

زان پیشتر که عالم فانی شود خراب ما را ز جام باده ی گلگون خراب کن

Beriya ku ev 'âlema fânî wêran bibe, me ji cama badeya gulreng mest û serxweş bike. (HŞ 594-2)

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *beqâ* 7 caran û *bâqî* 11 caran derbas dibin. Hem *beqâ* û hem *bâqî* bi wateyên ferhengî cih digirin, bi wateyên tesewufî cih nagirin. Lê wateyên ferhengî jî bi nêrîneke giştî di hizrên 'âşiqâne da tên dîtin.

غبار خط بیوشانید خورشید رخس یا رب بقای جاودانش ده که حسن جاودان دارد

Xetên hûrik ruyê wekî rojê veşartîye, Xwedaya 'umrekî herheyî bide, lewra xweşikahîyeke wê ya herheyî heye. (HŞ 218-2)

عرضه کردم دو جهان بر دل کارافتاده بجز از عشق تو باقی همه فانی دانست

Min herdû cîhan pêşkêşî dilê xwe kir ji bo yekê hîlbijêre, tenê 'îşqa te ya bâqî hîlbijart, yên din hemî fânî dît. (HŞ 122-3)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da em 7 caran bêjeya *fenâyê* û carekê jî bêjeya *fânî* dibînin. Bêjeya *beqâyê* û bêjeya *bâqî* her yek 4 caran cih digire.

Di malikên Melâyê Cizîrî da *fenâ*, *beqâ* û *bâqî* hem bi wateya ferhengî û hem bi wateya tesewufî û hem di fikrên 'âşiqâne da cih digirîn. Bêjeya *fânî* tenê bi wateya tesewufî hatîye bikaranîn.

⁸¹⁸ عزالدین کاشانی، ص ۴۲۶-۴۲۸.

Fenâ, bi wateya ferhengî tunebûna bedenê, mirinê tîne ziman.

Lew 'āqîbet dê bîn fenâ bigrin terîqā şer'îyân (MC 190-4)

Beqâ, bi wateya ferhengî bi bêjeyên neyînî, di forma *fenâyê* da hatîye bikaranîn, bî wateya tunebûna dewamê ye.

Beqâ nînin li bo tîştî hetâ kengî bikîn piştî
Di 'îşqâ wân perîrûyân werin dinyâyê dâ deynî (MC 292-4)

Bâqî, bî wateya ferhengî, payîdarmanî ye.

Ku dâ ji nû ve vejî bāqî bit di heyâtê (MC 314-5)

Melâyê Cizîrî di nêrîna xwe ya tesewufî da bêjeyên *bâqî* û *fânî*, *beqâ* û *fenâyê* di heman malikan da bi kar tîne û têkilîyê di navbera wan da ava dike.

Di nêrîna Melâyê Cizîrî da 'âşiqê ku badenoşê 'îşqê be rasterast digihêje meqamê *beqâyê* ku ji meqamê *fenâyê* bilindtir e. Lê 'âşiqê bêçare, ew 'âşiq e ku meya 'îşqê venexwaribe, bi gotineke din di rêya 'îşqê da seyr û silûka xwe neşopandibe, di *fenâyê* da mehew dibe û nagihêje meqamê *beqâyê*.

Ê birî 'eynê beqâyê badenoşê 'îşqê bû
Ê bûyî mehewê fenâyê 'âşiqê bêçare bû (MC 230-3)

Dîsa li gorî fikra Melâyê Cizîrî lazim e ku sâlikê rêya seyr û silûkê di 'îşqê da *fânî* bibe ji bo ku bi me'şûqa ebedî ra *bâqî* bimîne. 'Âşiq, heta ku di meqamê *fenâyê* ra derbas nebe, wasilê meqamê *beqâyê* nabe. Û ev nêrîn, pala xwe dide fikra Hucwîrî (w. 465/1062?). Hucwîrî dibêje; çî zemanê bende ji ewsafê xwe *fânî* bû, *beqâyê* bi temamî îdraq dike.⁸¹⁹

Lew di 'îşqê dâ fenâ bû dâ bibit bāqî bi dost
'Āşiqê fânî nebû wāşil hetâ bāqî nebû (MC 230-7)

Melâyê Cizîrî, di dabeşkirina 'îşqê da ji bo ravekirina 'îşqa mecazî ji bêjeya *beqâyê* sûd werdigire. Hezkirina cismanî, 'îşqa mecazî hatîye şibandîn bi neqşên nepayîdar.

Hubbê cismānî du roj in Gerçi dil pir pê disojin
Xef ceger peykān dinojin Mîslê neqşê bêbeqā ye (MC 202-6)

⁸¹⁹ هجويرى، ص ۱۴۹.

5.1.13 Melâmet (ملاّمت)

Melâmet, mesdereke 'erebî ye. Di ferhengan da bi wateya "azirandin, lomandin, şerzeniş, 'itab, te'n, li serî xistin û zemê hatîye.⁸²⁰ Yek ji çavkanîyên pêşî ku li ser *melâmetê* rawestîyaye Hucwîrî ye. Di nêrîna Hucwîrî da *melâmet*, pala xwe dide vê ayeta Quranê: *Û ji lomeyên lomekeran natirsin. Ev ji fedla Xweda ye, ew kê bixwaze dide wî. Xweda bi kerema xwe mezin e û zana ye.*⁸²¹ Li gorî Hucwîrî, *melâmet* tesîreke mezin dide xalisbûna mehebbetê. Meşrebekî tamam e û xasê ehlên Heqq e.⁸²² Hucwîrî bi vî şiklî têkilîyekê di navbera hezkirin û *melâmetê* da ava dike. Dîsa di nêrîna Hucwîrî da *melâmetî* bi Ebû Salih Hemdîn b. Ehmed b. 'Emmaretu'l-Qessar (w. 271/884) berbelav bûye û gotineke wî ya meşhur neqil dike ku di heman demê da pênaseya *Melâmetê* ye: "melâmet, terka selametê ye".⁸²³

Hinek pênaseyên derbarê *melâmetê* ev in; Ew kesên ku rewşa wan ya batin di zâhir da xuya nake bi *melâmetî* hatine nasandin, ango ew kesên ku kiryarên xwe yên baş vedişêrin û kiryarên xwe yên nebaş jî venaşêrin.⁸²⁴ Herwiha *melâmetî* dixwaze ku hin kiryarên dijî şerî'etê ne, bikin, ji bo ku însan ji wan nefret bikin û bi vî rengî xwe ji însanan dûr bixînin da ku kes ji kiryar û halên wan agahdar nebin.⁸²⁵ Ji ber hindê, ji teref gel lome li wan tene kirin û tene azirandin. Li gorî Xezâlî, *melâmetî*, kemala 'işqê ye.⁸²⁶ Li gorî Îbn 'erebî, *melâmetî* asta sâlikî ya herî bilind e.⁸²⁷ Di nêrîna Mewlana da têkilîyek zêde di navbera 'işq û *melâmetîyê* heye. Cihê ku 'işq li wir be, *melâmetî* jî li wir amade ye.⁸²⁸

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di 16 malikan da em rastî bêjeya *melâmetê* tên. Di nav malikên wî da hem bi wateya ferhengî bêjeya *melâmetê* tê dîtin û hem bi wateya tesewufî.

Bi wateya ferhengî

حافظ مکن ملاّمت رندان که در ازل ما را خدا ز زهد ریا بی نیاز کرد

Hâfiz! Lomeyan li rindân neke, lewra di ezel da Xweda em ji zuhda bi rîya dûr xistîye. (HŞ 236-9)

⁸²¹ *Qur'âna Pîroz*, Maîde 54.

⁸²⁰ معین، فرهنگ معین، ج ۲، ص ۱۸۱۰؛ دهخدا، ج ۱۴، ص ۲۱۴۴۳.

⁸²² هجویری، ص ۳۷.

⁸²³ هجویری، ص ۳۹.

⁸²⁴ سهوردی، عوارف المعارف، ص ۲۱.

⁸²⁵ العجم، ص ۹۳۴-۹۳۵.

⁸²⁶ طوسی، احمد غزالی، سوانح، ص ۷ (Pêgihîn: 10.04.2021) ([http://www.sufi.ir/MysticalBooks\(19\).php](http://www.sufi.ir/MysticalBooks(19).php))

⁸²⁷ عقیفی، أبو العلاء، الملاّمتیة والصوفیة وأهل الفتوة، الجمل، بیروت، لبنان، ۲۰۱۵، ص ۲۰.

⁸²⁸ ابو القاسمی، ص ۷۴۸.

Melâmet, wekî istilaheke tesewufî di malikên Hâfizê Şîrâzî da van taybetîyan li xwe digire. Kesê ku meyê vexwe çima tê azirandin, çi 'eyb heye di ji'aqildûrketin û di jixweçûyînê da? (HŞ 85-3) Di malikên Hâfizê Şîrâzî da têkilîyek di navbera hezkirin û *melâmetîyê* tê dîtin. *Dil û dînê min ji dest çû û dîlberê bi serzenîş ji min ra got ji min dûr bibe, lewra selametî û 'afîyet ji te dûr bûye.* (HŞ 86-1) 'Âşiq lazim e barê *melâmetê* bikişîne. (HŞ 150-10. *Melâmet* û hinek xisletên din şêweya terîqeta Hâfizê Şîrâzî ne.

وفا کنیم و ملامت کشیم و خوش باشیم
 که در طریقت ما کافری ست رنجیدن
Em bi 'ehd û peymanaxwe wefadar bin, lomeyan tehemmul bikin û şad û kêfxweş bin, zîra di terîqeta me da azirandina kesên din kufr û bêspasî ye. (HŞ 590-2)

Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da hezkirin û *melâmetî* her bi hevra ye.

گفتم ملامت آید گر گرد دوست گردهم
 و الله ما راینا حبا بلا ملامه
Min go ew ê lewma bikin ku ez li dora yarê herim û werim, sond bi Xweda me hezkirana bê melâmet nedîtîye. (HŞ 632-1)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê carekê bêjeya *melâmetê* derbas dibe. Di vê malikê da têkilîya di navbera *melâmet* û hezkirinê da tê dîtin. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da *melâmet*, riswabûna di 'îşqê da ye û ew bi xwe jî yek ji wan kesan e ku ruswayê 'îşqê ye.

Riswâyê 'îşqê tenhā ne ez bûm
Kê dî zemānān hub bê melâmet (MC 74-6)

5.1.14 Şâhid (شاهد)

Şâhid, ji bêjeya *şehîde* (شَهِيد) hatîye. *Şâhid*, bi wateya kesê li bûyer yan tiştêkê dinihêre, dibîne, muşahede dike, hazir, amade, kesê şehadetê dike, gewah e. Pirjimara wê *Şuhûd* (شهود) e.⁸²⁹ Bêjeyeke Qur'ânî ye.⁸³⁰ Wekî istilah 'îbaret e ji ew tiştê ku di qelbê însan da hazir dibe û zikra, bilêvkirina wî tiştî li ser wî xelebe dike. Eger 'ilm li ser wî xalib be *şâhidê 'ilmê* ye. Eger wecd li ser wî xalib be *şâhidê wecdê* ye. Eger Heq li ser wî xalib be *şâhidê Heqq* e.⁸³¹ Di berfirehkirina vê wateyê da hatîye gotin *şâhid*; ew tişt e ku dil bi wî ve girêdayî ye. Divê bila sûretekî xweşik be, awazek be, mulk û mi'ameleyek be, wateyek be, demek be.⁸³²

⁸³⁰ Bnr; *Qur'âna Pîroz*, Burûc 3.

⁸²⁹ دهخدا، ج ۹، ص ۱۴۰۷۱.

⁸³¹ الجرجانی، ص ۱۰۶.

⁸³² العبادى، ص ۲۱۱-۲۱۳.

Di zimanê sofîyan da ji bo mirovê sûretciwan û ji bo hemû tiştê xweşik cih digire. Li ser vê wateyê ji bo ku Xweda me'dena Cemâlê û kana xweşikahîyê ye ji Xweda ra *şâhid* hatîye gotin bi 'itîbara Hudûr û Zuhûra Xweda. Zîra ku Heq, di sûretê eşya da zâhir dibe. Hem sofîyan *şâhid* ji bo tecellîyê jî bi kar anîne. Dî nezera wan da tecellî, mutecellî û mutecellî leh yek e. Bi vê 'itîbarê jî ji bo Xweda *şâhid* tê gotin.⁸³³

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da, di 38 malikan da bêjeya *şâhid* derbas dibe. Bi nêrineke giştî *şâhid* di malikên Hâfîzê Şîrâzî da bi wateya xweşik, serçavxweşik, zîba hatîye bikaranîn. *Şâhid*, heman ew xweşik e ku dikare Zâhidan jî ji rê derxe û wan ji zuhdê dûr bike.

شاهدان گر دلبری زین سان کنند زاهدان را رخنه در ایمان کنند

Eger şâhid bi vê rengê dilberîyê cilwe û nazan bike, ew ê di îmana zâhidan da sistî çêbibe. (HŞ 327-1)

Di nêrina Hâfîzê Şîrâzî da *şâhid* ew me'sûq e ku divê xwedî cazîbeyeke me'newî be, ne tenê xwedî xweşikahîyeke zâhirî be. Di malika Hâfîzê Şîrâzî da bêjeya *şâhid* û *An* bi hev ra wateyeke tesewufî derdîxe holê. *Şâhid*, di nêrina Hâfîzê Şîrâzî da ew kes e ku Xwedî cazîbeya me'newî ye.

شاهد آن نیست که مویی و میانی دارد بنده ی طلعت آن باش که آنی دارد

Şâhid ne ew e ku bejinzirav be û mûyên wê xweşik be, bibe bendeyê serçav xweşikek ku xwedî "an"⁸³⁴ be. (HŞ 226-1)

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *şâhid* û *sâqî* bi hev ra di malikan da cih girtîye. (HŞ 236-3, 351-1, 435-3, 476-2, 731-2) Wekî di malika jêrîn da tête dîtîn *şâhid* û *sâqî* bi hev ra di hizrên 'âşiqâne da cih digirin ku rengê tesewufê jî di wan da xuya dike.

جهان فانی و باقی فدای شاهد و ساقی که سلطانی عالم را طفیل عشق می بینم

Cîhana fânî û bâqî feda be ji bo şâhid û sâqî, ez dibînim ku siltanê 'âlemê jî girêdayê 'işqê ye. (HŞ 539-5)

Şâhid di dîwana Melâyê Cizîrî da 20 caran derbas dibe. Di malikên Melâyê Cizîrî da *şâhid* bi sê wateyan cih digire. Bi wateya xweşik, bi wateya mutleq me'sûq û di nêrinên felsefî da cih girtîye.

⁸³³ بخارایی، ص ۳۶۳.

⁸³⁴ An, istîlâhekî tesewufî ye. An, ew hal û keyfîyet e ku tê derkkirin lê nayê gotin. Xweşikahîya derûnî û bâtinî ye ku ne qabilê wesfê ye. Cazîbeyeke me'newî ye. Di vê cazîbeya me'newî da nukteya zerîf ev e ku bi esbabên xweşikahîya zâhirî û sûrî wekî lêv, dev, xet û xal têkiliyek tune ye. (خالقی، ص ۳۲۳.)

a- *Şâhid*, heman xweşik in:

*Şâhid hezâr reng xemmilîn
Îro Melâ em sed dil î*

*Reqs û semâ pê kemmilîn
Sâqî werîn cāmâ zucâc* (85-4)

b- *Şâhid*, me'şûq e:

*Weh ko bê şâhid û mehbûbi te 'umrê xwo buwâr
Karekî rābe bike weqt e ko êvār e dereng* (MC 159-3)

c- *Şâhid*, di nêrînên felsefî da:

Di nêrîna felsefî ya Melâyê Cizîrî da, hemû sûretên mecazî *şâhid* in ji bo pertewên nûra Xweda ku di wan da bi cih bûne. Heta di me'şûqên mecazî yên xweşik da jî xweşikahîya wan *şâhidê* vê yekê ye. Bi gotineke din, wekî li jor di pênaseyê da hate gotîn *şâhid*, tecellîya Heqq e. Ê ev nêrîn piştî xwe dide hizra Wehdet'ul-wucûdê.

*'Āşiq ew e, dilber ew e
Ruħ her ew e gewher ew e
Di her şâhidek dā dēm ji dur
Xeṭṭê xubārî nuqtepur*

*Zâhir ew e, mezher ew e
Di her şâhidek durdâne dā
Pur nazidār û remz û sur
Kâtib ji bālā nusxe dā* (MC 36-6,7)

Dîsa di nêrîna felsefî da *şâhid* Nûra Muhemmedî ye ku hemû kaînat ji wê ava bûye.

*Husnek munezzeh şewwirānd
'Ālem di kunhê heyirānd
'Erşê cihāt lê bû heyāt
Jê bû te'eyyun nûrê zāt*

*Nūrā hebîb jê āfirānd
Rūhu 'l-quḍus can nefxe dā
Ew şâhidê qudsî şifāt
Seywānê şewqê hāle dā* (MC 41-5,6)

5.1.15 Sâqî (ساقی)

Di zimanê 'erebî da îsm e. Pirjimara *sâqî*, *suqât* (سقات) e. *Sâqî*, bi wateya kesê avê dide, ew ê ku têrav dike, şerabdar, ew ê ku şeraba meyê digêrîne, ew ê ku qedeha şerabxwaran dadigire, ew xulamên xweşikrû ku di bezma meyê da meyê didin meyxweran.⁸³⁵ *Sâqî*, di Qur'ânê bi formên cuda lê bi wateya vexwarinê di gelek ayetan da tê dîtin.⁸³⁶ Yek ji 'adetên siltanên rojhilat ev bû ku li ser sifra xwarinê qedeh nedihêlan. Belkî qedeh di dest da digêrandin.⁸³⁷ Dîsa yek ji karekî muhîm yê seraya siltan ev bû ku kesek qedehê dagire û bide destê siltan. Ê sâqî reîsek bû di seraya siltan da.⁸³⁸

⁸³⁵ دهخدا، ج ۹، ص ۱۳۳۲۰-۱۳۳۲۱.

⁸³⁶ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Însan 21, Muhammed 15, Şû'era 79, Murselat 27.

⁸³⁷ Ê belkî berdewama vê kulturê be ku heta demek nêzîk li welatê me; li berîya Qoserê, Serêkanîyê, Wêranşar û Qerecaxê di xwarin dayina dawet, mewlûd û 'ezayîyê da hin kes her surahî di dest da li dora sifra xwarinê qedehên ku vala dibûn dadigirtin. Ê çendîn car min ev rewş dîtîye.

⁸³⁸ دهخدا، ج ۹، ص ۱۳۳۲۱.

Sâqî, di şî'ra klasîk da lehengekî sereke ye û her bi wateya ew rûxweşikên di meyxaneyê da qedeha şerabê dadigirin cih girtîye. Tesewufê bi îstî'arî ev bêje deyn kirîye û di gelek mebestên xwe da anîye ziman. *Sâqî*, di edebiyata 'irfânî da geh Feyyadê Mutleq e, geh *sâqîyê* kewserê ye û geh bi mebesta murşidê kamil tê dîtin.⁸³⁹

Sâqî, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cihekî girîng digire. Ev girîngî jî hejmarên bikaranîna *sâqî* ku di dîwana wî da derbas dibe bi zelaî xuya dibe. Lewra bêjeya *sâqî* di dîwana wî da 131 caran derbas dibe.

Xurremşahî, *sâqîyê* dîwana Hâfizê Şîrâzî di sê kategorîyan da kategorize kiriye. Têkilîya bi muxbeçe û badefroş, xizmetkar û xweşikrûyê xerâbâtê û *sâqîyê* 'irfânî.⁸⁴⁰ Eger em gotina Xurremşahî xulase bikin; di dîwana Hâfizê Şîrâzî da du aliyên *sâqî* derdikeve holê; *Sâqîyê edebî* û *Sâqîyê 'irfânî*. Hewceyê gotinê ye ku wekî kevneşopîyeke edebiyata farsî di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *sâqînameyek* jî cih girtîye.

a- *Sâqîyê Edebî*.

Sâqî, qedeha meyê ji meyxweran ra digirîne. (HŞ 57-1) Di meyxaneyê da sazende û mitrib jî cih digirin. *Sâqî*, qedehê tije dike û mitrib bi saz û newayên xwe kêfê dide şerabxwarî. (HŞ 72-1) *Sâqî*, xweşikrû ye. (HŞ 258-3) *Sâqî*, yarê mihriban e. (HŞ 280-6) *Sâqî*, heman me'şûq e ku bi xemzeyên xwe 'âşiqî wêran dike.

غمزه ساقی به یغمای خرد آهخته تیغ زلف جانان از برای صید دل گسترده دام

Naz û 'işweya sâqî wekî şûr qesda talankirina heş û 'eqil dike, zulfên yarê jî xefik e, ji bo seyda dilî hatîye vedan. (HŞ 481-7)

b- *Sâqîyê 'Irfânî*.

Sâqî, Feyyadê Mutleq e û di roja ezel da 'îşq kirîye nesîb û para hin kesan.

در ازل داده ست ما را ساقی لعل لبت جرعه ی جامی که من مدهوش آن جامم هنوز

Sâqî di ezel da ji lèvên sor qurtek şerab bi me da vexwarin, ji wê rojê da ez mest û medhûş û bê xeber im. (HŞ 422-3)

Hemû tiştên li vê dinê tîn dîtin û hemû xweşikahîya xweşikan yek pertewek ji xweşikahîya *Sâqîyê Ezelî* ye. Ev nêrîn pala xwe dide fikra Wehdetu'l-wucûdê.

این همه عکس می و نقش نگارین که نمود یک فروغ رخ ساقی ست که در جام افتاد

Ev hemû 'eksa ku di meyê û teswîr û neqşên rengoreng ku xuya dikin, hemû ji pertewek xweşikahîya çehreya sâqîyê ezelî ye. (HŞ 205-3)

Û wekî puxte fikra Wehdetu'l-wucûdê û *sâqî* bi wateya Feyyadê Mutleq di malikekê da bi cih kirîye.

⁸³⁹ بخارایی، ص ۴۵۲.

⁸⁴⁰ خرماشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۱۶۰.

ندیم و مطرب و ساقی همه اوست خیال آب و گل در ره بهانه

Nedim, mitrib û sâqî hemû Ew e, xiyala av û herîyê di vê rêyê da tenê behane ye. (HŞ 634-8)

Sâqî, di dîwana Melâyê Cizîrî da, di 24 malikan da cih girtîye. Di dîwanê da em *sâqî* bi du şiklî dibînin. *Sâqîyê edebî û sâqîyê 'irfânî*. *Sâqîyê 'irfânî* jî bi du şiklî xuya dike *Feyyadê Mutleq û murşidê kamil*.

a- *Sâqîyê Edebî*.

Sâqî, mehbûba 'âşiqî ye. Lê ev mehbûb 'âşiqê xwe bi jehra kujer dikuje û vê yekê bi dayîna gulavê dike, ne bi şerab û meyê. (MCD 21-6) *Sâqî*, bi çeng û ney û defê meyê belav dike. (MCD 22-5) *Sâqî*, zêde xweşik e. (MC 28-3) Bi *sâqî* ra mutrib jî bi def û awazên xwe li meyxaneyê cih digire. (MC 247-5) Xweşikahîya *sâqî* û meya wî ku dermanê dilî ye wiha hatîye ziman.

Sâqî ko dê mehweş bitin Kâgul ji şevâ reş bitin
Qerqef bilâ âteş bitin Em dê bi wê dil kîn 'ilâc (MC 84-2)

b- *Sâqîyê 'Irfânî*.

Sâqî, murşidê kamil e. Sofî, divê di bin emr û fermanên murşidê xwe da bin. Lewra murşidên kamil mezherên sifetên Xweda ne.

Were şofî musilmân be bi sâqî secdeê bîne
Ku şuret mezherê zât û şifâtê Heq Te'âlâ ye (MC 221-2)

Sâqî, Feyyadê Mutleq e. *Sâqî* bi sebeb ku ji roja ezel da qedeha meya 'îşqê daye, 'âşiq ji wê meyê her mest û serxweş e.

Sâqî ji ezel yek du qedeş bade bi min dâ
Hetta bi ebed mest û xumâr û teles im ez (109-6)

5.1.16 Tecellî (تجلی)

Tecellî, bêjeyeke 'erebî ye û bingeha xwe ji *celewe* (جلو) digire. *Tecellî*, di ferhengan da bi wateya xuyabûnî, kişifbûnî, peydabûnî, ronahî, rewşenbûnî, aşîkarbûnî, cilwekirin hatîye.⁸⁴¹ *Tecellî*, wekî istilaheke tesewufê bingeha xwe ji Qur'ânê digire. Di Qur'ânê da, du caran; carekê bi wateya xuyabûnîyê⁸⁴² û carekê jî bi wateya tecellîya Xweda derbas dibe.⁸⁴³

⁸⁴¹ دهخدا، ج ۵، ص، ۶۴۵۴.

⁸⁴² Bnr: *Qur'âna Pîroz*, Leyl 2.

⁸⁴³ Bnr: *Qur'âna Pîroz*, 'Eraf 143.

Tiştâ ku ji berhemên tesewufê tê deranîn *tecellî* sê cure ne. Tecellîya ezeli, tecellîya ber dilê hişyar û tecellîya li âxiretê.⁸⁴⁴ Cureya yekem felsefe ye, cureya duwem tesewuf e û cureya sêyem jî mijara 'ilmê Kelamê ye.

Cureya yekem felsefeya tesewufê ye û bingeha wê li ser nêrînên Muhyeddînê 'Erebî ava bûye. Mijara afirandin, xulqîyyetê rave dike. Bi kurtasî wiha dikare were ravekirin. Di ezel da xweşikahîyeke Xweda ya bê dawî hebû. Xweda, xwest ji kenza mexfî [mertebeya e'ma (اعما)⁸⁴⁵ û xeybu'l xuyûbê (غيب الغيوب)] derkeve û bête naskirin. Ji bo vê yekê, tecellîya Zatî çêbû. Bi vê tecellîyê, ji feyda Feydê Eqdes mahîyeta hemû mimkinatan di şiklê 'ilmî, ya di e'yanê sâbite (اعيان سابتة) da xuya bûn. Ev tecellîya yekem e. Tecellîya duyem, tecellîya Xwedayê Wâhid e ber Zatê xwe di şiklê Esmayên Ilâhî da. Ev mertebeya Feyda Muqeddes e ku Xweda di şiklê mewcûdatan da (di wucûda wan ya 'ilmî da) tecellî dike. Ev tecellî heman zuhura e'yanê sâbite ye ji 'âlema me'qûl bi bal 'âlema mexsûs va.⁸⁴⁶

Tecellîya ber dilê hişyar, bingeha xwe ji Quranê werdigire. Ev tecellî bi bûyera Hezretî Mûsa (s.l.) va girêdayî ye. Û di Qur'ânê da, di sureyê 'Eraf, di ayeta 143yan da derbas dibe. Tefsîr, vê ayetê wiha me'ne dikin; *Piştî Hezretî Mûsa (s.l.) 40 rojî di xelwetê da dimîne, diçe ji bo ku hevditînê bi Xweda ra bike. Xweda bi wî ra diaxive. Hezretî Mûsa (s.l.) ji Xweda daxwaz dike ku Xweda xwe nîşanê wî bide. Xweda di bersivê da jê re dibêje; teqez tu yê nikaribî min bibînî. Lê, li çîya binihêre ku çîya di cihê xwe da ma, bizanibe ku tu yê bikaribî min bibînî. Çi dema ku Xweda tecellî dike, çîya perçe û hûr dibe. Hezretî Mûsa (s.l.) ji heybeta tecellîyê bêhiş dikeve.*⁸⁴⁷ Mutesewifan bingeha tecellîya dilê hişyar ji vê ayetê wergirtine.

Tecellîya ber dilê hişyar, bi *Tecellîya Zat*, *Tecellîya Sifet* û *Tecellîya Efal* hatiye dabeşkirin. Nîşana tecellîya zat ev e ku eger ji wucûda sâlikî tiştekek bimîne ev ji wendabûna sifetan e di xelebeya, setweta nûrên tecellîyê. Û ji wê ra Se'qe (صَعْقَة)⁸⁴⁸ tê gotin. Çawa ku di rewşa Hezretî Mûsa da ku ew bi vê tecellîyê ji xwe çû û fânî bû. Nîşana tecellîya sifet ev e ku; eger Zat bi sifetê xwe yê Celâl tecellî bike ji 'ezemet, qudret û kibrîya Xweda xuşû' û xudû' peyda dibe û eger Zat, bi sifetê Cemâl tecellî

⁸⁴⁴ بخارایی، ص ۱۱۷-۱۱۸.

⁸⁴⁵ E'ma ew mertebe ye ku di wê da ne mekan û ne zeman û ne cihet, ne tu tiştekek heye, tenê Zatê Xweda. Xweda berîya xulqîyeta her tiştî yan berî tecellîyê di vê mertebeyê da bû. (خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۶۰۰)

⁸⁴⁶ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۶۰۰-۶۰۱.

⁸⁴⁷ المبدی، ج ۳، ص ۷۱۹-۷۲۰.

⁸⁴⁸ Se'qe ji Ayetê hatiye wergirtin. (فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَاعِقًا) Çi dema Xweda li çîya tecellî kir, çîya perçe perçe bi erdê misêwa bû û Mûsa bêhiş kete erdê. *Qur'âna Pîroz*, 'Eraf 143.

bike ji re'fet, rehmet, lutf û kerama Xweda surûr û uns peyda dibe. Tecellîya e'fal jî ev e ku nêrîna sâlikî ji e'falên xelqê qut bibe û zêdebûna xêr û şer, fêde û zerer ji wî ra musawî be û pesinandin, lomandin, qebûlkirin û neqebûlkirina xelqê li cem wî weka hev be.⁸⁴⁹

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem tecellîya tesewufî û hem tecellîya felsefî tê dîtin. Hâfizê Şîrâzî di malikên xwe da ji bo ravekirina vê mijarê hem ji bêjeya tecellî (3 caran) hem ji bêjeya cilwe (38 caran) hem ji bêjeya firûx (15 caran), hem ji bêjeya pertew (15 caran) û hem jî ji bêjeya nûr (4 caran bi wateya tecellîyê) ateş (6 caran bi wateya tecellîyê) sud wergirtîye.

a- Tecellîya Ezeli yan Tecellîya Felsefî

Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da çî dema Xweda ji xweşikahîya xwe ya ezel û bêpayan xwest ku mimkinatan biafirîne, tecellî kir û ji vê tecellîyê hemû mimkînat û 'îşq di sûretê 'ilmî da derketin holê. Bi tecellîya duwem 'îşq û hemû mimkînat ji sûretê 'ilmî derbasî sûretê xaricî bû û di hemû heyînan da bi cih bû.

در ازل پرتو حسنت ز تجلی دم زد عشق پیدا شد و آتش به همه عالم زد

Di ezel da bi tecellîyê pertewa xweşikahîya te xuya bû, îşq peyda bû û agir bi hemû 'âlemê xist. (HŞ 262-1)

Li dor vê mijarê dibêje; herdû 'âlem ji yek tecellîyek Xweda hatîye meydanê.

هر دو عالم یک فروغ روی اوست گفتمت پیدا و پنهان نیز هم

Herdû cihan yek pertewa (tecellîya) rûyê Wî ye, hem bi dizî û hem eşkera ji bo te dîsa dibêjim. (HŞ 552-6)

b- Tecellîya Tesewufî

Hâfizê Şîrâzî wekî di te'rîfa Kaşanî da derbas bû, qailê bi sê cure tecellîyatan e ku navê du tecellîyatan eşkera di malikên xwe da bi cih kirîye. Hâfizê Şîrâzî di xezeleke xwe da vê mijarê wekî rewşek ku ew bi xwe jîyaye anîye ziman bêyî ku bikeve nav hûrguliyên mijarê. Di malikên wî da tecellî geh bi bêjeya tecellîyê û geh bi bêjeya cilwe û geh jî bi bêjeya pertew hatîye ziman.

واندر آن ظلمت شب آب حیاتم دادند
باده از جام تجلی صفاتم دادند
آن شب قدر که این تازه براتم دادند
که در آن جا خبر از جلوه ی ذاتم دادند

دوش وقت سحر از غصه نجاتم دادند
بی خود از شعشعه ی پرتو ذاتم کردند
چه مبارک سحری بود و چه فرخنده شبی
بعد از این روی من و آینه وصف جمال

⁸⁴⁹عزالدین کاشانی، ص ۱۲۹-۱۳۱.

Duh di dema spêdê da ez ji xema reha kirim, û di tarîfîya şevê da ava heyata min dane min. Ji ronahîya tecellîya Zat ez mest bûm û ji xwe çûm, di wê mestîyê da qedehek ji tecellîya Sifatên Ilâhî bi min dane vexwarin. Çi spêdek mûbarek û çî şevêk pîroz bû, ew şeva Qedrê ku seneda azadîya ji gunehan dane min. Piştra rûyê min ayîneyek dît ku tenê xweşikahîya Me'sûqê di wê da xuya dikir, ku di wê da agahîyên tecellîya Zat didane min. (HŞ 305-1,2,3,4)

Melâyê Cizîrî di dîwana xwe da ji bo mijara tecellîya ezeli û mijarên ku bi wê ra têkildar in, ku pirên wan mijarên felsefeya tesewufê û 'ilmê kelamê ne, menzûmeyek terxan kirîye. Ev menzûme ji 143 malikan pêk hatîye. Di serê menzûmeyê da ji tecellîya ezeli hatîye behskirin û di malikên domahîyê da mijar bi berfirehî hatîye ravekirin. Tenê di vê menzûmeyê da Melâyê Cizîrî ji bo ravekirina mebestên xwe deh 10 caran istilaha tecellîyê di malikên xwe da cîbicî kirîye. Destpêka menzûmeyê wiha ye:

| | |
|-------------------------------|--|
| <i>Ellâh sehergâhâ ezel</i> | <i>Yelmûmê 'îşqê şu'le dâ</i> |
| <i>Nûrâ cemâlâ Lem Yezel</i> | <i>zâtê tecellâyâ xwo dâ</i> |
| <i>zâtê tecellâ dâ li zât</i> | <i>Bê ism û âşâr û şifât</i> |
| <i>Sirrâ hurûfên 'âliyât</i> | <i>Xef bû di sitr û perde dâ (MC 35-1,2)</i> |

Melâyê Cizîrî, ji bo tecellîya ber dilê hişyar di şî'rên xwe da hem ji tecellî (tecellî-tecella 44 caran), hem ji pertew (11 caran), hem ji cilwe (6 caran), hem ji nûr (66 caran bi wateya tecellîyê) û hem jî nâr, agirî (nâr 11 caran, ateş 6 caran, agir 3 caran) sûd werbigire jî, em bêtir rastî nûrê tèn. Herwiha qisseyaya Hezretî Mûsa jî bi telmîh, teşbîh û îqtîbasê ji bo tecellîyê, şî'rên Melâyê Cizîrî dixemilînin. Melâyê Cizîrî di vê mijarê da fikr û ramanên xwe eşkere dibêje. Dema mirov malikên wî dixwîne bi asanî mirov têdigihêje ew agir û nûra ku Hezretî Mûsa li çîyayê Tûrê dîtîye tecellîya Xweda ye.

| | |
|--------------------------------|--|
| <i>Pertew ji 'eynê nûrekê</i> | <i>Tên tèn tecellâ Tûrekê</i> |
| <i>Ew ser didet yek fûrekê</i> | <i>Lew çendî leb leb qetre dâ (37-5)</i> |

Melâyê Cizîrî, di xezeleke din da, di destpêka şî'ra xwe da, di malika metle'ê da mebesta xwe wekî puxteya gotarekê di serî da tîne ziman. Di vê malikê da şeş istilahên bi mijarê girêdayî; tûr, dil, Mûsa, ateş, nûr û tecellî cih girtîye. Ne sergirtî, bi eşkerayî dilê xwe dişîbîne Tûrê, xwe peyrewê Hezretî Mûsa dinasîne, agirperesê wî agirî ye ku nûr jê tecellî kirîye.

Tûr im bi dil û peyrewê Mûsâ yi mi ez
Âteşperesê nûrê tecellâ yi mi ez (MC 111-1)

Melâyê Cizîrî, bi piranî istilahên nâr û nûrê bi istilahê dil bi kar tîne. Dil, dilê 'âşiqî yan dilê sâlikî, di dewsa çîyayê Tûrê da ye. Bi gotineke edebî dil dişibe çîyayê Tûrê. Hunera şibandîne û di heman demê da hunera îqtîbasa bêjeyî û telmîha qisseyê bi bêje û istilahên şev, tarîbûnî, yaban, çîya, Mûsa, agir û nûr tê dîtin ku ji her layî va qisse ketîye şî'rê.

Cilwe, di dewsa tecellîyê da di şî'rên Melâyê Cizîrî da di şeş malikan da tê dîtin. Melâyê Cizîrî di malikên xwe da dibêje; *Roj û 'âlem hemî yek pertewek ji xweşikahiya te ye.* (MC 41-9) *Çi dema pertew ji xweşikahiya Heq be, dê şewqa wê ji bêqusûr be* (311-3) û di malika jêrîn da pertew û nûr bi hevra cih digire

Ger bibim ber te sucûdê di demâ keşf û şuhûdê
Me li dil dê bidirît pertewê nûrâ qîdemê (MC 237-4)

5.1.17 Rind û Rindî (رند و رندی)

Rind, di ferhengên da bi wateya kesê zîrek, hilebaz, kêfxweş, sergerde, laûbalî, xedar, kesên saf û bê 'aqil hatîye. Hem bi wateya rêgir, rêbir, eşqîya, munkirê şerî'etê, kesê ku munkirîya wî ji zîrekî be, ne ji nezanî û ehmeqî be hatîye watedarkirin.⁸⁵⁰ Wekî istilaheke tesewufê *rind*, ew kes e ku di zâhir da bi melâmet be û di batin da bi selamet be.⁸⁵¹ Yanî di zâhir da munkir be û di batin da girêdayî (muqeyyet) be cih girtîye.⁸⁵² Di bikaranîna şa'irên îranî yên 'ârîfmeslek da *rind*, wateya pesindariyê di xwe da dihewîne. Pesnê wî kesî ye ku piştî 'ilm û zanebûneke bêkêmasî (kamil) derbarê hemû tiştên vê dinyayê da xwe ji hemû qeyd û bendan dût û azad bibîne, pêşbîn û bi hizrek azad be.⁸⁵³ *Rind*, ew kes e ku hemû keserat û te'eyyunatên wucûbî yên zâhirî û îmkanî û sîfat û 'eyan ji xwe dût kiribe, serfirazê 'âlem û însanan be û mertebeya tu kesî negihiştibe mertebeya wî ya bilind.⁸⁵⁴ Rindî jî rewş û halê kesê *rind* e.

Rind, di edebiyata farsî da bêyî şî'rên tesewufî kesayetekî gelekî menfî ye. Di derbarê *rindê* edebîyatê da wiha hatîye gotin; *rind, bê ser û pa ye, şehwetperest e, hewesbaz e, derbeder e, bînemaz e, meyxwer e, bê qeyd û bend e, bêşerm e, şev û roj li pey şehwetê ye, di xewa xefletê da ye. Mesela, di berhemên tarîxê da rind bi aware û serserî û rindî bi rezîltî, nebaşî û qelenderî hatîye wesîfdayîn ku bi çend diravan*

⁸⁵⁰ دهخدا، ج ۸، ص ۱۲۲۵۴-۱۲۲۵۵.

⁸⁵¹ گوهرین، شرح اصطلاحات تصوف، ج ۶، ص ۷۹.

⁸⁵² ربانی، اصغر حامدی، فرهنگي سعدي لغات فارسي به فارسي، کتابفروشی سعدي، تهران ۱۳۴۵، ص ۲۴۵.

⁸⁵³ گوهرین، فرهنگ لغات و تعبيرات مثنوی، ج ۵، ص ۷۸.

⁸⁵⁴ ب خاراىى، ص ۴۲۶.

*dikarî her karî bi wan bidî kirin. Di Gulîstan û Bostana Se'dî jî rind bi heman taybetîyan cih digire, di dîwana wî (Se'dî) da rengê musbet werdigire.*⁸⁵⁵

Rind, di şî'rên tesewufî da bi şexsîyetekî şayeste derdikeve holê. Wekî şexsîyetekî musbet, erênî cara pêşî di dîwana Senayî (w 535/1141) da cihê xwe girtîye. Piştî Senayî, Xeyyam (w 527/1133), 'Ettar (w 627/1230), Se'dî, Mewlana (w 672/1273) û Selman giramî dane *rindî*.⁸⁵⁶ *Rind*, piştî ku di tesewufê da kirasê kesayetekî musbet li xwe dike bî vî şîklî veduguhêze; *Meyxaregî û laûbalîyên wî dibe mezherê azadî û xelasîya ji qeyd û bendên dinyewî. Dibe kesek ku şeraba tunebûnîyê dide û bihayê hebûnîyê distîne. Ji keserat û sîfatên maddî derbas dibe û hemûyan tune dike. Bi tişteki ne girêdayî ye ji bilî Xweda*⁸⁵⁷ û ji Şêx, Murîd, Sofî û Zâhid bêzar e. Bi vî şîklî *rind* dibe kesayetê tesewufa 'âşiqâne.

Rind û *rindî* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cihekî taybet digire. Bêjeya *rind*, *rindî*, *rindâne* û *rindân* tevî terkîbên ku bi wan ra hatine avakirin 108 caran derbas dibe. *Rind* û *rindî* di şî'rên Hâfizê Şîrâzî da bi wateya ku di ferhengên da derbas dibe nehatiye bikaranîn. Belkî rasterast dijî wateyên ferhengî ye.⁸⁵⁸ Hin ji taybetîyên *rind* û *rindîya* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da wiha dikare were nîrxandin.

Rindî nayê bidestxistin, ji ezel da divê ji bo kesekî hatibe nivîsandin (HŞ 486-4) û bûbe nesîbê wî. (HŞ 280-3) *Rind*, meyxwir û ehlê xerâbâtê ye, lê kesekî naxapîne. (HŞ 69-10) *Rind*, 'âşiq û nezerbaz (HŞ 96-10) û şâhidbaz e (738-10) *Rind* û *rindî* ziddê zâhid û zuhdê ye. (HŞ 66-2) *Rind*, dujminê rîya û durûtîyê ye. (HŞ 236-9) *Rind*, 'âşiq e, lê mertebeya wî ji ya 'âşiqî bilindtir e. (HŞ 273-1) *Rind*, hemû sir û razên pişt perdeyê dizane. Ev zanebûn li ba zâhidê meqambilind nayê dîtin. (HŞ 66-2) Zanebûna van sir û razên pişt perdeyê nabe were eşkerakirin. (HŞ 157-8) *Rind*, di zâhir da geda ye, ne ehlê cah û meqam e. (HŞ 296-4) Di batin da xwedî meqamê bilind e. (575-5) *Rind*, ehlê niyaz e û rêya wî ber bi behîştê va diçe. (172-6) Hâfizê Şîrâzî, xwe jî *Rind* dihesibîne.

با ما منشین اگر نه بدنام شوی

ما عاشق و رند و مست و عالم سوزیم

⁸⁵⁵ خالقی، ص ۱۱۰۶.

⁸⁵⁶ خر مشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۴۰۳-۴۰۷.

⁸⁵⁷ خالقی، ص ۱۱۰۶.

⁸⁵⁸ اردکانی، رضا داوری، شاعران در زمانه عسرت، ملاحظاتی در باب شعر حافظ و حقیقت شعر و شاعری، انتشارات گروس، تهران ۱۳۷۳، ص ۱۱۸.

Em 'aşiq û rind û mest in û 'âlemê dişewitînin, li ba me rûnenê, yan na ew ê navê te jî bi xerabî derkeve. (HŞ 764-2)

Şi'rên Hâfizê Şîrâzî şî'rên rindâne ne.

همچو حافظ به رگم مدعیان شعر رندانه گفتم هوس است

Wekî Hâfiz, li dijî pejirandina dozdarên min hewes e ku şî'rê rindâne bibêjim. (HŞ 114-7)

Terîqa Hâfizê Şîrâzî terîqa rindîyê ye.

نفاق و زرق نبخشد صفای دل حافظ طریق رندی و عشق اختیار خواهم کرد

Ey Hâfiz! Rîya û durûtî nabe sebebê xweşîya dilî, ji ber vê, ji xwe ra terîqa rindî û 'işqê hilbijêre. (HŞ 239-7)

Mezhebê Hâfizê Şîrâzî mezhebê rindân e.

سال ها پیروی مذهب رندان کردم تا به فتوای خرد حرص به زندان کردم

Min bi salan peyrewîya mezhebê rindân kir, heta bi fetweya hişî min hirs avête zindanê. (HŞ 495-1)

Wekî encam di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da *rind* însanê kamil e. Wate, *rind* welîyê Xweda ye.

رندان تشنه لب را آبی نمی دهد کس گویی ولی شناسان رفتند از این ولایت

Kesek avê nade rindên ku devên wan ji tîna zuha bûne, tu divê qey kesên ku welîyan dinasin ji vî bajarî derketine" (HŞ 185-3)⁸⁵⁹

Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê 7 caran em rastî bêjeya *rind-rend* dibin. *Rind*, di zimanê kurdî da bi wateya xweşik, başî, însanê qenc wate girtîye.⁸⁶⁰ Bi vê wateya ferhengî sê caran di malikan da derbas dibe.

Firâqâ dilberâ rind e Behêtim herwekî fînd e
Musilmânek dirê min de Xeber bit bâlê sulţânê (MC 238-2)

Rind, wekî istilah di 5 malikan da cih daye xwe. *Rind*, rindê xerâbâtê ye û tu hêvîya tiştêkî jê nayê kirin. Ango di zâhir da hêvîya tu 'urf û 'adetan jê nayê kirin.

⁸⁵⁹ Ji bo agahiyên berfireh derbarê *rind* û *rindî* di şî'rên Hâfiz da û nîqaşên li ser hatine kirin bnr: شاملو، احمد، مفاهیم رند و رندی در غزل حافظ، انتشارات آرش، سوئد ۱۳۷۰؛ آشوری، داریوش، عرفان و رندی در شعر (حافظ، نشر مرکز، تهران ۱۳۸۱؛ خرمشاهی، حافظ نامه، ج ۱، ص ۴۰۳-۴۱۳)

⁸⁶⁰ İzolî, D, *Ferheng (Kurdî-Tirkî, Tirkî-Kurdî)*, Weşanên Deng, Amed 2007, r 533.

Bi heq rindê xerâbât im ji dêrê vê demê hâtîm
Çi hevî hûn dikin îro ji vî rindê xerâbâtê (MC 242-9)

Rind, badexwor in. Ji ber vê lome li wan hatine kirin. Melâyê Cizîrî, li hember vê lomeyê derdikeve û di nêrîna wî da ew bade, badeya 'işqa heqîqî ye ku komeleyekê bi vexwarina wê, mertebeyên me'newî derbas kirine.

Dâ 'eybê rendân nekî bi bādê

نفوس قوم بها تسامت⁸⁶¹ (MC 74-8)

Rind, têkildarê Pîrê Muxan e. Sir û razên xwe ji hev ra dibêjin

Câmâ di destê şâhid jengê ji dil dişotin
Pîrê muxân ji rendân weh weh dikir riwāyet (72-8)

Bêjeya *Rend* di malika jêrîn da, baş nayê zanîn, gelo bi wateya ferhengî ye yan bi wateya istilahî ye. Herwiha di nava şerhên dîwana Melâyê Cizîrî da jî ev mijar bi nîqaş e. Eger em wekî istilah qebûl bikin, li gorî me jî istilah e, *rind*, cama meyê ku dilî ji jeng û gemarê paqij dike digêrîne. Di vir da wateya *sâqî* hildigire.

Ji jeng û zerqê dil dâ bişotin
Câmâ sedef bîn rend û kerāmet (MC 74-3)

5.1.18 Berawird û Nirxandin

Tablo 15: Têgihên Tesewufê

| Rêz | Têgihên Tesewufê | Hâfizê Şîrâzî | | | | Melâyê Cizîrî | | | |
|-----|----------------------|---------------|-------|--------|----------|---------------|-------|--------|----------|
| | | Musbet | Menfî | Hejmar | Rêje (%) | Musbet | Menfî | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Âbê Heyat | X | | 25 | 0,524 | X | | 23 | 1,016 |
| 2 | Xerâbât | X | | 38 | 0,797 | X | | 4 | 0,177 |
| 3 | Xîrçe-Delq | X | X | 86 | 1,804 | X | | 4 | 0,177 |
| 4 | Tewbe | X | X | 33 | 0,692 | X | | 2 | 0,088 |
| 5 | Sebr | X | | 33 | 0,692 | X | | 10 | 0,442 |
| 6 | Cezbe | X | | 1 | 0,021 | X | | 21 | 0,928 |
| 7 | Zuhd | X | X | 27 | 0,566 | X | | 3 | 0,133 |
| 8 | Şeth û Tamat | | X | 8 | 0,168 | X | | 1 | 0,044 |
| 9 | Xaneqâh | X | X | 15 | 0,315 | | | 0 | 0,000 |
| 10 | Sewme'e | X | X | 20 | 0,420 | | | 0 | 0,000 |
| 11 | Rida | X | | 13 | 0,273 | | | 0 | 0,000 |
| 12 | Beqâ-Bâqî, Fenâ-Fânî | X | | 33 | 0,692 | X | | 16 | 0,707 |
| 13 | Melâmet | X | | 16 | 0,336 | X | | 1 | 0,044 |
| 14 | Şâhid | X | | 38 | 0,797 | X | | 20 | 0,883 |
| 15 | Sâqî | X | | 131 | 2,748 | X | | 24 | 1,060 |

⁸⁶¹ Ev riste bi tevahî 'erebî ye. Wate. Nefsa civatekê bi wê (vexwarina badeyê) bi jor ketîye.

| | | | | | | | | | |
|--------------|---|---|--|------------|---------------|---|--|------------|---------------|
| 16 | Tecellî- Cilwe- Firûx-Pertew-Nûr- Ateş (Nâr-Agir) | X | | 81 | 1,699 | X | | 147 | 6,493 |
| 17 | Rind | X | | 108 | 2,266 | X | | 7 | 0,309 |
| Giştî | | | | 706 | 14,810 | | | 283 | 12,500 |

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da, di istilahên ku hatin nirxandin da, di rêza yekem da *sâqî*; 131 car, di rêza duyem da *rind*; 108 car, di rêza sêyem da *xirqe-delq*; 86 car, di rêza çarem da *tecellî*; 81 car û di rêza pêncem da *xerâbât* û *şahîd* 38 caran cih girtine. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di rêza yekem da *tecellî*; 147 car, di rêza duyem da *sâqî*; 24 car, di rêza sêyem da *ava heyatê*; 23 car, di rêza çarem da *cezbe*; 21 car û di rêza pêncem da *şahîd*; 20 caran cih girtîye. Di vê amarê da tê dîtin ku tercîhên herdû şa'iran li ser bikaranîna istilahan ji hev cuda ye. Di nava istilahên ku hatine şîrovekirin da, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *xaneqâh*, *sewme'e* û *rida* cih digirin, lê ev hersê istilah di dîwana Melâyê Cizîrî da cih nagirin. Ev jî cudahîyeke din e derbarê tercîha li ser bikaranîna istilahan.

Ferqa herî mezin di navbera herdû şa'iran da hebûna istilahên menfî û musbet in. Di dîwana Melâyê Cizîrî da hemû istilah musbet in. Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da ji istilahên ku hatin rave kirin; *şeth- tamat* bi tevahî menfî ye. *Xirq-delq*, *tewbe*, *zuhd*, *xaneqâh* û *sewme'e* hem bi alîyê menfî û hem bi alîyê musbet cih digirin.

İstîlâh, di Diwana Hâfîzê Şîrâzî da, musbet û menfîbûna xwe ji kesayetên werdigirin. Eger istilah remz û nîşana kesayetên menfî be, yan têkîliyê di navbera wan da hebe, menfî ne. Eger istilah remz û nîşana kesayetên musbet be, an têkîliyê di navbera istilah û kesayetên musbet hatibe avakirin, istilah bi alîyê musbetbunîyê vediguhêze.

Ava heyatê, di dîwanên herdû şa'iran da bi heman hejmarê cih bigire jî rêjeya Melâyê Cizîrî (%1,104) ji rêjeya Hâfîzê Şîrâzî zêdetir e (%0,524). Xala hevpar ya herî girîng ev e ku di nêrîna herdû şa'iran da *ava heyatê* istilaheke musbet e. *Ava heyatê*, di dîwanên herdû şa'iran da hem ji bo ravekirina mijarên tesewufa 'âbidâne û hem ji bo hizrên tesewufa 'âşîqâne cih digire. Hizrên tesewufa 'âşîqâne bêtir berbiçav e. Di nêrîna herdû şa'iran da gotinên ji devê yarê derdikevin hatîye şibandin bi taybetîya zindîmayîna vexwarîna *ava heyatê*. Di malikên fexrîyê da herdû şa'iran jî şî'rên xwe şibandine *ava heyatê*. Herwiha, di pesindarîya memduhên xwe da jî herdû

şa'iran ji *ava heyatê* sûd wergirtine. Ev xalên hevpar in. Bi kurtasî di dîwanên herdû şa'iran da *ava heyatê* di çerçoveya kevneşopîya edebiyata klasîk da cih girtîye.

Di avakirina terkîban da; *âbê heyat, âbê heywan, çeşmei heywan* hevpar in. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, li hember *âbê Xidir, âbê zendegî û âbê zindeganî*, di dîwana Melâyê Cizîrî da *ava heyatê, ava zulûmatê* tê dîtîn. Bi kurtasî terkîbên Hâfizê Şîrâzî ji terkîbên Melâyê Cizîrî bêtir in. Ev jî cudahîyeke ji aliyê avakirina terkîban.

Hâfizê Şîrâzî, di malikên xwe da cihê *ava heyatê*, destnîşan kirîye. Ev nîşan e ku Hâfizê Şîrâzî bi mîtolojîyê ra 'eleqedar e, haya wî ji mîtolojîyê heye û ji mîtolojîyê sud wergirtîye. Di du malikên Hâfizê Şîrâzî da rasterast em fam dikin ku hezkirin û 'eleqeyê mezîn heye hem ji bo welatê xwe û hem ji bo Şîrazê. Ji vê hezkirinê ye ku *ava çemên welatê wî û avên Şîrazê ji ava heyatê* xweştir e. Ev jî nîşan dide ku Hâfizê Şîrâzî welatparêz e. Ev herdû xal di dîwana Melâyê Cizîrî da nayên dîtîn. Di heman demê da ferqeke sereke ye.

Xerâbât, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 38 caran derbas dibe, di dîwana Melâyê Cizîrî da 4 caran derbas dibe. Ji aliyê hejmaran va ferqek mezin di navbera herdû şa'iran da dixuyê. Hem di dîwana Hâfizê Şîrâzî da û hem di dîwana Melâyê Cizîrî da istilaheke musbet e. Ev xaleke hevpar e. Hâfizê Şîrâzî, *xerâbâtê* li dijî xaneqâh û mescîdê bi kar tîne. Ev bikaranîn, ferqa sereke ye di navbera wî û Melâyê Cizîrî da. Lewra di dîwana Melâyê Cizîrî da bikaranîneke bi vî rengî nayê dîtîn. Ji aliyê din, *xerâbât* ku kîneye ye **ji** meyxaneyê, bi wateya tesewufî di herdû şa'iran da xaleke hevpar e.

Xerâbât, bi wateya tesewufî di dîwanên herdû şa'iran da, di hizrên tesewufa 'âşiqâne da cih digire. Ev jî xaleke hevpar e. Di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da yek ji sedemên tercîhkirina tesewufa 'âşiqâne, zûgihîştina meqsed û miradê ye. Dema ku dibêje; *Min rexne neke ji ber ku min terka mescidê kirîye û çûme xerâbâtê, lewra dem hindik maye vê hizra xwe tîne ziman*. Ji ber vê, *xerâbât* navendeke girîng e ji bo tesewufa 'âşiqâne. Melâyê Cizîrî jî di vê mînwalê da dema dibêje; *ew kesê were ber derîyê xerâbâtê, divê xirqeyê softîyê bi meyê veguhezîne*, ji bo tesewufa 'âşiqâne, terkkirina tesewufa 'âbidâne dide ber çavan.

Xirqe û *delq* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 86 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 4 caran derbas dibe. Ji aliyê hejmarê va ferqeke mezin tê dîtîn. *Xirqe* û *delq* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da remz û nîşana cil û bergê sofî û zâhid e. Ji ber vê, bikaranîna *xirqe* û *delq* ji aliyê hejmarî va nêzî bi kar anîna *sofî* û *zâhid* e. *Sofî* û

zâhid 84 caran di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih girtîye. Ji ber vê di pirên malikan da *xirqe-delq* û *zâhid-sofî* bi hev ra cih digirin. Bî vî rengî *xirqe-delq* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da istilaheke menfî ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di her çar malikên ku *xirqe-delq* derbas dibin, tenê di malikekê da *zuhd* cih digire. Di hersê malikên din da, tu têkilî di navbera *xrqe-delq* û *sofî-zâhid* da bi eşkerayî nayê dîtîn. Ji bikaranîna Melâyê Cizîrî em têdigihêjin ku *xirqe-delq* remz û nîşana tesewufa 'âbidâne ye. *Xirqe-delq* bi vê wateyê cil û bergê *sofî-zâhid* e. *Sofî-zâhid* çawa ku di dîwana Melâyê Cizîrî da kesayetên musbet bûn, herwiha *xirqe-delq* jî istilahên musbet in. *Xirqe-delq*, di malikên Melâyê Cizîrî da istilahên musbet bin jî, ji ber ku remz û nîşana tesewufa 'âbidâne ne, ne pesendîde ne, nehatine 'ecibandin. Ev, ji alîyê watedarkirana *xirqe-delq* ferqa sereke ye di navbera herdu şa'iran da.

Li jor hate gotin ku *xirqe-delq* di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi çar şiklan û bi çar wateyan tê dîtîn. *Xirqe-delqê zâhid*, *xirqe-delqê sofî*, *xirqe-delqê hâfiz* û *xirqe-delqê rind*. Di dîwana Melâyê Cizîrî da dabeşkirineke bi vî rengî nayê dîtîn. Ev bikaranîn jî ferqek e di navbera herdu şa'iran da.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, *xirqe-delqê zâhid* û *xirqe-delqê sofî* çawa menfî ye herwiha *xirqe-delqê hâfiz* jî menfî ye. Heman taybetiyên *xirqe-delqê zâhid* û *sofî* di *xirqe-delqê hâfiz* da jî tèn dîtîn. Hâfizê Şîrâzî, di nefsa xwe da *xirqe-delqê sofî* û *zâhidî* rexne dike. Bi vî şiklî *xirqe-delqê hâfiz* rengê menfibunîyê werdigire.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *xirqe-delq*, çî dema dibe cil û bergê rindî, dibe istilaheke musbet. Yanî, *xirqe-delq* menfîbûna xwe û musbetbûna xwe ji kesayetan werdigire. Di eslê xwe da Hâfizê Şîrâzî ne li dîjî *xirqe-delqî* ye. *xirqe-delq* remz û sembola hîn kesayeta ne û menfîbûnî û musbetbûnîya xwe ji kesayetan werdigire. Bikaranîneke bi vî rengî di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn û ev jî ferqeke din e di navbera herdu şa'iran da.

Tewbe, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 33 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. Ji alîyê hejmaran va ferqeke zêde tê dîtîn di navbera herdu şa'iran da. Ji alîyê watedarkirinê *tewbe*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da istilaheke hem musbet û hem menfî ye, yanî istilaheke du layane ye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da istilaheke musbet e. Ev jî cudahîya navbera herdu şa'iran e. *Tewbe*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di hizrên 'âşiqâne da ne istilaheke mênfî be jî, ne pesendîde ye jî. Ev taybetî di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. *Tewbe*, bi sedema ku kar û kiryarên kesayetên wekî 'Âbid, Sofî û Zâhidî ye ji teref Hâfizê Şîrâzî hatîye rexnekirin û di

tenzên wî da cih girtîye. *Tewbe*, di malikên Melâyê Cizîrî da di hestên 'âşiqâne da, bi gotineke din di hizrên tesewufa 'âşiqâne da karekî pîroz hatîye hesibandin. Di heman demê da bikaranîna *tewbeya ser tewbeyê*, bîranîna mercek ji mercên tesewufê ye.

Sebr, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 33 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 10 caran derbas dibe. Ji aliyê hejmaran va ev ferqa sereke ye. *Sebr*, di dîwana herdû şa'iran da istilaheke musbet e. Ev jî xaleke hevpar e. *Sebr*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da hem bi wateya tesewufî, wekî meqamekî tesewufî hatîye destnîşankirin û hem bi wateya ferhengî cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê bi wateya ferhengî cih digire ku ev jî ferqeke ji wateyên *sebrê* yên Hâfizê Şîrâzî re.

Cezbe, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di malikekê da carekê derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *cezbe* tevî bêjeyên ji *cezbeyê* hatine çêkirin 21 carî derbas dibe. Ji aliyê hejmarî, *cezbe*, di dîwana Melâyê Cizîrî da zêdetir cih digire û ev ferqeke di navbera herdû şa'iran da. Ji ber ku di dîwana Hâfizê Şîrâzî da tenê carek *cezbe* derbas dibe û di vê malikê da hizrên tesewufî cih digirin em dikarin bibêjin ku Hâfizê Şîrâzî bi wateyeke tesewufî cih daye *cezbeyê*.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *cezbe*, yek ji bêjeyên kîlîdî ye. Hem di hizrên felsefeya tesewufê da û hem di hizrên 'âşiqâne da cih digire. *cezbe*, di dîwana Melâyê Cizîrî da di mijarên tesewufî da cih bigire jî girîngîyeke mezin di vê babetê da nayê dîtîn. Di mijarên felsefeya tesewufê da *cezbe*, yek ji sedemên afirandina heyînan, mexlûqan e. Di fikren 'âşiqâne da *cezbe*, hissa hezkirina me'şûqê ye. Bi vî rengî di dîwana Melâyê Cizîrî da bi sê wateyan em istilaha *cezbeyê* dibînin û di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi yek wateyê em dibînin. Ev, ferqa bikaranîna di navbera herdû şa'iran da ye.

Zuhd, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 27 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 3 caran tê dîtîn. Ji aliyê hejmarî va Hâfizê Şîrâzî zêde zêde li pêş e ku ev ferqeke sereke ye. *Zuhd*, di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da hem istilaheke musbet e û hem istilaheke menfî ye. Li cem Melâyê Cizîrî istilaheke musbet e. Ev jî, ji layê watedarkirinê ferqa di navbera herdû şa'iran da ye. *Zuhd*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da çî dema têkildarî Sofî û Zâhidî bibe û sifetek ji sifetên wan be, rengê menfibûnîyê li xwe digire. Çî dema ku *zuhd* têkildarî kesayetên musbet be, rengê musbetbûnîyê werdigire. Ev taybetîyên *zuhdê* di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Melâyê Cizîrî, bêtir di hizrên tesewufa 'âşiqâne da cih daye *zuhdê*. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da, di 'îşqê da cihê

zuhdê tune ye. Ji ber vê, kesên ku bixwaze derbasî tesewufa 'âşiqâne bibe divê xwe ji tesewufa 'âbidâne reha bike. Bi gotineke din *zuhd*, di dîwana Melâyê Cizîrî da nîşanek ji nîşanên tesewufa 'âbidâne ye.

Şeth û tamat, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 8 caran cih digire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da *şeth* cih nagire, *tamat* tenê carekê derbas dibe. Ev ferqeke hejmarî ye. Nêrîna Hâfizê Şîrâzî li *şeth û tamatê* nêrîneke menfî ye, lewra *şeth û tamat* kiryarên sofî û zâhidî ye. Hâfizê Şîrâzî, bi nêrîneke tûj *şeth û tamatê* rexne dike. Di nêrîna wî da *şeth* jî *tamat* jî ji xurafeyan e. Nêrîneke bi vî rengî di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Ev jî ferqeke din e. Melâyê Cizîrî *şeth û tamatê* yek ji 'unsûrên tesewufa 'âbidâne dinasîne û di nêrîna wî da tevî hemû 'unsûrên din cihê *şeth û tamatê* di tesewufa 'âşiqâne da tune ye.

Xaneqâh, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 15 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da qet derbas nabe. Ferqa herî mezin di navbera herdû şa'iran da ev e. *Xaneqâh*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji alîyekî musbet e. Di vî alî da *xaneqâh* hatîye şibandin bi meyxaneyê. Bi gotineke din, *xaneqâha* ku di nêrîna Hâfizê Şîrâzî da musbet e, heman meyxane ye ku remza tesewufa 'âşiqâne ye. Ji layê menfîbunîyê *xaneqâh* cih û warê sofî û zâhid e û remza rîyakarî û xwe'ecibandîne ye. Sedema ku Hâfizê Şîrâzî meyxane û *xaneqâhê* bi hev ra miqayese dike nîşandayîna miqayesa ya tesewufa 'âbidâne û tesewufa 'âşiqâne ye.

Sewme'e, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da di 20 malikan da cih digire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da em rastî vê bêjeyê nayên. Ferqa herî mezin ev e. *Sewme'e*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da istilaheke du layane ye. *Sewme'e*, alîyê menfîbunîya xwe ji kevneşopîya edebiyata farsî werdigire ku Hâfizê Şîrâzî jî li ser vê kevneşopîyê wekî 'îbadetgaha Sofîyan dinasîne. Wekî hemû istilahên din, istilahên têkildarî kesayetên menfî, di nezera Hâfizê Şîrâzî da menfî ye. *Sewme'e* bi sedem 'îbadetgaha sofîyan istilaheke menfî ye. *Sewme'e*, alîyê xwe yê musbet ji têkilîya bi istilah û kesayetên musbet werdigire. Sofî, çî dema ku di şexsîyeta Hâfizê Şîrâzî da rengê musbetbunîyê werdigire, *sewme'e* jî dibe istilaheke musbet.

Rida, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di 13 malikan da cih digire. *Rida*, di dîwana Melâyê Cizîrî da cih nagire. Ev, di dîwana herdû şa'iran da ferqa sereke ye. *Rida*, di dîwana Hâfizê Şîrâzî hem bi wateya tesewufî û hem bi wateya kalamî cih digire. Di wateya tesewufî da bi bêjeya *Meqam* wekî *Meqamê rida* yê ku di tesewufê da yek ji maqaman hatîye hesibandin xuya bike jî bi zelalî ne dîyar e. *Rida*, bi bêjeya ixtiyarî

di wateya kelimî da cih digire. Di vê wateyê da, di malika Hâfizê Şîrâzî da tunebûna ixtiyarîyê û qaîlbunîya bi hemû qeda û qederê bê gazindeyan bêhna mezhebê Cebrîyeyê dide.

Dî dîwana Hâfizê Şîrâzî da bêjeyên *beqâ-bâqî* û *fenâ-fânî* 33 caran derbas dibin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 16 caran derbas dibin. Ji alîyê hejmaran Hâfizê Şîrâzî li pêş xuya bike jî, rêjeya Melâyê Cizîrî; % 0,707 di pêşîya Hâfizê Şîrâzî da ye; % 692. Ev, ji alîyê hejmar û rêjeyê cudahîya navbera wan nîşan dide. Di Dîwan Hâfizê Şîrâzî da bêjeyên navborî tenê bi wateyên ferhengî cih girtine. Di dîwana Melâyê Cizîrî da hem bi wateyên ferhengî û hem bi wateyên tesewufî, wekî istilahan tesewufî hatine bikaranîn. Ev jî, cudahîya bikaranînê ye di navbera herdû şa'iran da. Melâyê Cizîrî bi piranî bêjeyên *fenâ* û *beqâ, fânî* û *bâqî* di hundurê yek malikê da ji bo ravekirina mijarê bi hev ra bi kar anîye. Ev, bi sedema têkilîya navbera herdû istilahan e.

Melâmet, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 16 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê carekê derbas dibe. Ji alîyê hejmaran va ev ferqa navbera herdû şa'iran e. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da *melâmet*, hem bi wateya ferhengî û hem bi wateya tesewufî cih digire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da tenê bi wateya tesewufî cih daye xwe. Ji alîyê watedarkirina vê têgihê, Hâfizê Şîrâzî bi berfirehî bi kar anîye. Di dîwana herdû şa'iran da bi wateya tesewufî *melâmet* têkildarî 'îşqê ye. Ev têkilî ji kevneşopîya mijara 'îşqê tê. Wekî di pênaseyê da derbas bû, di nêrîna mutesewifan da 'îşq bêyî *melâmetî* nabe. Yanî yek ji nîşanên 'aşîqî *melâmetîya* wî ye. Nêrînen herdû şa'iran jî li ser nêrînen mutesewifên beriya wan ava bûne. Di malika Hâfizê Şîrâzî da mezmûna; *Wellahî me hezkirina bê melâmet nedîtîye*, di malika Melâyê Cizîrî da bi mezmûna; *Kesekî di tu zemanan da hezkirina bê melâmetî nedîtîye* hatîye ziman. Lazîm e were gotîn malikên 'erebî yên dîwana Hâfizê Şîrâzî bi tevahî ji şa'irên 'ereb yan jî ji şa'irên Îranî yên 'erebîgo hatine wergirtin.⁸⁶² Em nizanin Melâyê Cizîrî ev mezmûn ji şa'irekî 'ereb wergirtîye, ji berhemên tesewufê deranîye yan ji malika Hâfizê Şîrâzî wergirtîye. Ji ber vê em bi asanî nikarin bibêjin di vê mijarê da Melâyê Cizîrî di binê tesîra Hâfizê Şîrâzî da maye.

Sahîd, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da 38 caran û di dîwana Melâyê Cizîrî da 20 caran derbas dibe. Ji alîyê hejmaran Hâfizê Şîrâzî û ji alîyê rêjeyê Melâyê Cizîrî li pêş e. Ev cudahîya hejmarî û amarî ye. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da

⁸⁶² گرمارودی، عربی‌های دیوان حافظ، ص ۸.

şâhid, bi nêrîneke giştî ji bo me'şûqê hatîye bikaranîn. Ev xaleke hevpar e. Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da, di hizrên 'âşiqâne da *şâhid* û *sâqî* bi hevra cih digirin û bi vî şiklî wateya tesewufî jî hildigirin ku ev bikaranîn di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Ev xal jî cudahîyeke di navbera herdû şa'iran da. Melâyê Cizîrî *Şahîd*, di nêrînên xwe yê felsefeya tesewufî da hem ji bo tecellîyatan û hem ji bo Nûra Muhemmedî bi kar tîne ku em watedarkirineke bi vî şiklî di malikên Hâfîzê Şîrâzî da nabînin. Ji aliyê bikaranînê ev jî ferqeke sereke ye.

Sâqî, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 131 carî bi rêjeya %2,748 cih girtîye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da 24 caran bi rêjeya % 1,060 cih girtîye. Hem ji aliyê hejmaran va û hem ji aliyê rêjeyê va di navbera herdu şa'iran da ferqeke mezin tê dîtîn. Ji bikaranîna Hâfîzê Şîrâzî tê famkirin ku *sâqî*, di nezera wî da istilaheke girîng e. Ev girîngî jî helbestên wî yê 'âşiqâne derdikeve holê. Yanî bi nêrîneke giştî *sâqîyê* Hâfîzê Şîrâzî *sâqîyê edebî* ye. *Sâqîyê 'irfânî* di dîwanê da cih bigire jî *sâqîyê edebî* bêtir ber bi çav e. *Sâqîyê 'irfânî* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bi yek wateyê; bi Feyyadê Mutleq cih digire.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da hem *sâqîyê edebî* û hem *sâqîyê 'irfânî* cih digire. *Sâqîyê edebî* heman me'şûq e. Di vê mijarê da di navbera Melâyê Cizîrî û Hâfîzê Şîrâzî da wekhevîyek heye. *Sâqîyê 'Irfânî*, di dîwana Melâyê Cizîrî hem Feyyadê Mutleq e û hem murşîdê kamil e. Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *sâqî* bi wateya murşîdê kamil nayê dîtîn. Bi vî şiklî *sâqî*, di dîwana Melâyê Cizîrî da bêtir watedar bûye nisbet ji ya di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da.

Tecellî, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da hem bi bêjeya *tecellîyê* û hem bi bêjeyên; *cilwe*, *firûx*, *pertew*, *nûr* û *ateş* derbas dibe û bi tevahî 81 carî bi rêjeya %1,699 cih digire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, bi bêjeyên *tecellî*, *tecella*, *cilwe*, *pertew*, *nûr* û *agir* hatîye ziman. Bi tevahî 147 caran û bi rêjeya %6,493 cih digire. Hem ji aliyê hejmaran û hem ji aliyê rêjeyê serdestîyeke Melâyê Cizîrî bi eşkerayî xuya dike. Ev ferqa hejmarî û rêjeyî ye. Ferqeke din jî ev e; di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *tecellî* bi bêjeya *firûxê* hatîye ziman, lê *firûx* di dîwana Melâyê Cizîrî da nayê dîtîn. Hâfîzê Şîrâzî ji bo *tecellîyê* bêjeya *ateş* jî bi kar anîye. Melâyê Cizîrî, ji bo *tecellîyê* bi sê zîmanan bi 'erebî *nar*, bi farsî *ateş* û bi kurdî *agir* 'emilandîye.

Melâyê Cizîrî, ji bo mijara *tecellîya ezeli*, yanî *tecellîya* felsefî helbesteke serbixwe ava kirîye, bêyî malikên perakende ku di dîwanê da têne dîtîn. Di vê helbestê da nêrînên xwe yê derbarê mijarê da bi zelalî, lê di çarçoveya nezmê da

anîye ziman. Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da helbestên serbixwe di derbarê vê mijarê da nayê dîtîn.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da ji cureyên *tecellîya* ber dilê hişyar *tecellîya Zat* û *tecellîya sîfat* derbas dibin. Ev bi me dide famkirin ku Hâfîzê Şîrâzî ji teqşîmkireneke bi vî rengî agahdar e û di heman demê da qebûl kirîye. Ji vê em dikarin bigihêjin vê encamê ku Hâfîzê Şîrâzî derbarê tesewufê da berhem xwendine û haya wî ji mijarên tesewufê heye. Xaleke din jî ev e ku ji malikên Hâfîzê Şîrâzî tê famkirin ku wî bi xwe rewşeke bi vî rengî jîyaye.

Di dîwana Melâyê Cîzîrî da ji bo teqşîmkirina *tecellîya* ber dilê hişyar bi zelalî tu agahî nayê bidestxistin. Melâyê Cîzîrî bi nêrîneke gîştî meseleyê dide ber çavan. Xaleke din ku di dîwana Melâyê Cîzîrî tê dîtîn lê di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da nayê dîtîn *nûr* e. Melâyê Cîzîrî herî zêde ji bo *tecellîyê* bêjeya *nûr* bi kar tîne; 66 caran. Nûr, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da bi wateya *tecellîyê* tenê çar caran derbas dibe.

Wekî ku tê zanîn di felsefeya îşraqî da nûr istilaheke sereke ye.⁸⁶³ Bêjeya nûr, bi vê bikaranîna zêde pirsar; "gelo Melâyê Cîzîrî felsefeya îşraqî pejirandîye?" tîne hişî. Ya rastî, tevî bêjeya nûrê, bikaranîna bêjeya Îşraq⁸⁶⁴ û hin mefhumên ku vê felsefeyê bi bîr tînin, balê dikişîne ser xwe. Gumaneke bi vî şiklî, ji dîwana Hâfîzê Şîrâzî nayê kirin.

Rind, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 108 caran derbas dibe. Di dîwana Melâyê Cîzîrî da 7 caran tê dîtîn. Ji alîyê hejmaran va ferqeke gelek mezin derdikeve holê. *Rind*, bi vê hejmara xwe di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da piştî *sâqî* di rêza duyem da cih digire. Di dîwana melâyê Cîzîrî da di rêza 8an da cih digire. Ev, nîşan dide ku Hâfîzê Şîrâzî ji Melâyê Cîzîrî bêtir girîngî daye bêjeya *rind*.

Di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da *rind* remza tesewufa 'aşîqâne ye. Ji ber vê istilaheke musbet e. Di dîwana Melâyê Cîzîrî da jî, tevî hindik bikaranînê jî, eşkere dixuyê ku *rind*, kesayetê tesewufa 'aşîqâne ye. Ev xal xaleke hevpar e. *Rind*, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da li hember Şêx, Sofî û Zâhidî ku kesayetên tesewufa 'âbidâne ne sekînîye û bi wan ra têkoşînê dike. Ev xal di dîwana Melâyê Cîzîrî da nayê dîtîn. Herdû şa'îr jî xwe *rind* dinasînin. Ev xal jî xaleke hevpar e. Ê ev tiştêkî asayî ye lewra herdû şa'îran jî tesewufa 'aşîqâne pejirandine.

⁸⁶³ Bnr; Türker, Ömer, *İşrâkîlik Ekolü*, İslam Düşüncesinde Teoriler 1, Metafizik içinde, Hazırlayan: Ömer Türker, Ketebe Yayınları, İstanbul 2021, s 126-127.

⁸⁶⁴ Ji bo mijara Îşraqê bnr: tez; 267-268.

Hâfizê Şîrâzî, li ser mîrata van şa'îrên mezin, yên beriya xwe rûniştîye û bingeha wate û taybetîyên *rindê* xwe li ser nêrînên wan ava kirîye. Bi taybet *rindê* dîwana Şems û *rindê* Hâfizê Şîrâzî zêde dişibin hev.⁸⁶⁵ Ev tê wateya ku Hâfizê Şîrâzî ji hemû taybetîyên edebiyata farsî sûd wergirtîye û bi taybet di mijara *rind* û *rindîyê* da ji Mewlana zêdetir îstîfade kirîye. Hetta em dikarin bibêjin di bin tesîra Mewlana da maye. Di dîwana Melâyê Cizîrî da bikaranîn û tesîreke bi vî rengî nayê dîtin. Ev xal cudahîyeke sereke ye di navbera Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da.

5.2 'Unsûrên Tesewufê

5.2.1 Ene'l-Heq (انالحق)

Ene'l-Heq, bêyejeke hevedudanî ye. Ji *ena* 'erebî bi wateya *ez* û *heq* a erebî bi wateya *Xweda* pêk hatîye ku herdû bêje bi hevra wateya *Ez Xweda* me dide. *Ene'l-Heq* gotina Hellacê Mensûr e ku ev gotin ji yek sebebê kuştina wî ye. Di derbarê gotina *Ene'l-Heq* da di nava 'âlimên Islamê da ji serdema Hellacê Mensûr heta dema me behs û fehs hê jî berdewam dike. Di derbarê gotina *Ene'l-Heq* da du nêrîn derketine holê.

Li gorî nêrîna yekem, Hellacê Mensûr li ser fikra Hulûlê⁸⁶⁶ ye û peyrewê Mezhebê Hulûlîyeyê ye. Di nêrîna vî mezhebî da; Zatê Xwedayê Te'ala dikeve bedena însên. Bi vî rengî însan û Xweda dibin yek, ittîhad dîkin. Dîsa di nêrîna vî mezhebî da rihê Xweda di Hezretî Âdem da û di pêxember û îmaman da hulûl dike û di Hezretî 'Elî û zarokên wî da ev hulûl bi dawî dibe.⁸⁶⁷ Hulûl û mezhebê Hulûlê di bawerîya Islamê da nehatîye pejirandin û sebebê kufrê hatîye hesibandin. Gotina Hellacê Mensûr di serdema wî da bi vî rengî hatîye famkirin û ev bûye sedema kuştina wî.

Di nêrîna duyem da gotina Hellacê Mensûr yek ji şethîyyatên wî ne, her çend ku di zâhir da li dijî bawerîya Islamê be, di batin da gotineke rast e wekî hemû şethîyyatên wî û şethîyyatên kesên din. Di nêrîna kesên ku gotina Hellacê Mensûr wekî şethîyat qebûl dîkin, gotina *Ene'l-Heq* pala xwe dide fikra Wehdetu'l-

⁸⁶⁵ Ji bo miqayeseyê bnr: (ابو القاسمی، ص ۵۰۵)

⁸⁶⁶ Hulûl: Wateya ferhengî; derbasbûna muhletê deyn û wacibbûna edakirina deyn e. Wekî istîlâhekî felsefî; qiyama mewcûdekî bi mewcûdê din ji aliyê peyrewîyeyê ye. Yan jî paldayina tişteki bi tişteki din wek paldayina tişteki di mekanekî da. (دهخدا، ج ۶، ص ۹۱۸۶)

⁸⁶⁷ همایی، مولوی نامه، ج ۱، ص ۲۱۵-۲۱۴؛ دهخدا، ج ۶، ص ۹۱۸۷.

wucûdê.⁸⁶⁸ Wehdetu'l-wucûd, bi kurtasî ev e; sirf Zatê Heq Te'ala (Xweda) heye û ji wî pê ve hemû tişt/masîwa, 'eksa tecellîya Wî (Xweda) ye.⁸⁶⁹

Kesên ku gotina Hellâcê Mensûr bi şethîyat qebûl dikin, gotina *Ene'l-Heq* wiha şîrove dikin; Dînê Islamê dînê tewhîdê ye. Yekîtiya Xweda diparêze. Tewhîd du cure ye: Tewhîda 'ilmî û Tewhîda 'Eyanî.⁸⁷⁰ Tewhîda 'Eyanî wiha hatîye ravekirin:

Emma ji bo gihîştina bi merheleya Tewhîda 'Eyanî divê kesek sâlikê rêya Heq be. Ji tarîtiya cismê heywanî reha bibe û ji bilî Xweda her tiştî ji dilê xwe derxe. Di sefheya wucûd, hebûnê da neqşê kesret û duganegîyê nebîne û hebûna xwe ya mecazî di zatê Heq da mehw û fânî bizane. Sâlikê rêya Heq, di vê seyr û sefera me'newî da ku ji xelq bi Heqq e piştî fenâyê digihêje beqâyê yan ji mehwê digihêje sehwe.⁸⁷¹ Di vê astê da zimanê wî zimanê Heqq e û Ene'l-Heq gotin ji sirra sermestîyê ye. Lewra di wî haletî da ji bilî Heq tu hebûnekê nabîne û weka wê darê ye ku Hezretî Mûsa ji wê, gotina; Ez Xweda me bihîst.⁸⁷²

Di nêrîna Mewlana da gotina *Ene'l-Heq* bi rastî di wateya *Huwe'l-Heq* (Ew-Xweda Heqqe) da ye. Ferqa di navbera gotina Hellâcê Mensûr û îddî'aya Fir'ewn ev e ku; îddî'aya Fir'ewn ji înkara Xweda derketîye holê, gotina Hellâcê Mensûr ji îstîxraq û fenâyê di zatê ehedîyyeta Xweda da, derketîye holê. Ji ber vê yekê, mebest ji *Ene'l-Heq* heman *Huwe'l-Heqq* e, ne îddî'aya Xwedatî û Rebbîtiyê ye.⁸⁷³ Bi vî şiklî gotina Hellâcê Mensûr hatîye te'wîl û şerhkirin.

Gotina *Ene'l-Heq* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Di malika Hâfîzê Şîrâzî da zimnen qaîlbûnîyek li ser gotina *Ene'l-Heq* tê dîtin. Yanî Hâfîzê Şîrâzî gotina Hellâcê Mensûr wekî şeth qebûl dike. Di nêrîna Hâfîzê Şîrâzî da kesek heta nebe mezherê cezbeya Xweda ji sirra *Ene'l-Heq* agahdar nabe.

رموز سر انا الحق چه داند آن غافل که منجذب نشد و از جذبه های سبحانی

⁸⁶⁸ Ji bo agahîyên berfireh derbarê Wehdetu'l-wucûdê bnr: (همایی، مولوی نامه، ج ۱، ص ۲۰۵-۲۲۳؛ بخارایی، (ص ۸۸-۸۱؛ کی منش، ج ۱، ص ۱۶۷-۱۸۴.)

⁸⁶⁹ غزنوی، ص ۲۰۸.

⁸⁷⁰ بخارایی، ص ۶۶-۶۷.

⁸⁷¹ Sehwa piştî Mehwe; Yanî sâlik, Heq (Xweda) di hemû mewcûdatan da muşahede dike. Ji vî meqamî ra Ferqa piştî Cem'ê, Ferqa duyem jî tê gotin. (بخارایی، ص ۵۲۷.)

⁸⁷² بخارایی، ص ۶۸-۶۹.

⁸⁷³ زمانی، ج ۲، ص ۳۴۶.

Remzên sirra Ene'l-Heq çi dizane ew xafil, eger ew nehatibe kişandin bi cezbeya Ilâhî. (HŞ 737-19)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Ene'l-Heq* di du malikan da derbas dibe. Di herdû malikên Melâyê Cizîrî da *Ene'l-Heq* û bêjeya Mensûr bi hev ra derbas dibin. Ji ber vê di van malikan da bi hebûna hunera îham, tenasub û telmîhê derdikeve holê ku gotina *Ene'l-Heq* ji teref Hellâcê Mensûr hatîye ziman.

*Ji ene'l-heq bi lebên le'lê xeberdâri bûyîn
Bi gulâbâ serê zulfâ xwe te Menşûri kirin (MC 180-8)*

Hem di malika jorîn da û hem di malika jêrîn da qebûlkirina gotina *Ene'l-Heq* bi eşkerayî tê dîtîn. Yanî Melâyê Cizîrî gotina Hellâcê Mensûr wekî şethîyat qebûl dike. Lê tenê ne ku qebûl dike ew bi xwe jî wê gotinê dibêje û xwe di asta Hellâcê Mensûr da dibîne.

*Hostâyê 'işqê dil hevot Ser tã qedem hingî disot
Remzâ ene'l-heq her digot Bâwer bikin menşûr e dil (MC 165-3)*

5.2.2 Ene'l-lâh (آنا الله)

Ene'l-lah, hemwateya *Ene'l-Heqq* e. Bêjeyeke hevedudanî ya 'erebî ye. Ji *Ena* bi wateya ez û *Ellah* pêkhatîye ku bi wateya *Ez Xweda me* dide. *Ene'l-lah* ji Qur'ânê hatîye wergirtin. Yanî bi gotineke din mulhem û îqtîbasa ayetê ye. Gotina *Ene'l-lah* di Qur'ânê da di sê ayetan da derbas dibe.⁸⁷⁴ Di hersê ayetan da jî bi bûyera Hezretî Mûsa ra têkildar e. Hezretî Mûsa ji bo anîna hinek agir dema berê xwe dide şu'leyê û digihêje nêzîkî ronahîyê dibîne ew şu'le, nûr e û ji darê diçirise. Deng ji darê tê, dibêje; *Ya Mûsa, ez ku heme, ez Xweda me.*⁸⁷⁵

Ene'l-lah, wekî gotina *Ene'l-Heq* yek ji gotinên Hellâcê Mensûr e.⁸⁷⁶ Di edebiyata sofiyane da carinan gotina *Ene'l-lah* ji dêleva gotina *Ene'l-Heq* hatîye bikaranîn. Yek ji wan kesên ku *Ene'l-lah* ji dêleva *Ene'l-Heq* xistîye malikên xwe Mewlana ye.⁸⁷⁷

Ene'l-lah, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di malikekê da em rastî gotina *Ene'l-lah* tên. Di vê malikê da têkilîya bûyera Hezretî Mûsa bi gotina *Ene'l-lah* ra were dîtîn jî şibandina dil bi wê dara li çîyayê

⁸⁷⁴ Bnr; *Qur'âna Pîroz*, Qeses 30, Taha 14, Neml 9.

⁸⁷⁵ *Qur'âna Pîroz*, Qeses 30.

⁸⁷⁶ بقلى شیرازی، ص ۴۱۹.
⁸⁷⁷ ابو القاسمی، ص ۱۱۰.

Tûr ku Hezretî Mûsa gotina *Ene'l-lah* jê bihistîye bêtir balê dikîşîne ser xwe. Dilê Melâyê Cizîrî ji tecelliyatên Xweda heman ew dar e ku banga *Ene'l-lah* jê hatiye. Eger em gotina *Ene'l-lah* wekî gotina *Ene'l-Heq* qebûl bikin, em ê bibêjin ku Melâyê Cizîrî wekî Hellâcê Mensûr *Ene'l-Heq* dibêje. Ev wate û şîrove ji malikê dikare were deranîn. Wekî li jor hate gotin ev malik jî nîşan dide ku hem gotina *Ene'l-Heq* û hem gotina *Ene'l-lah* di nezera Melâyê Cizîrî da gotineke tesewufî ye û ne li dijî bîr û bawerîyên Islamî ne. Gotina *Ene'l-Heq* telmîha Hellâcê Mensûr be jî gotina *Ene'l-lah* wekî şethiyateke Melâyê Cizîrî dikare were qebûlkinin.

Dil ke'be ye mewlā ye lê Nārê kelīm īsāye lê
Bāngê ene'l-lāh daye lê Hem Ke'be û hem Tūr e dil (MC 165-7)

5.2.3 Kenzā Mexfī (کنزاً مخفی)

Di lîteratura tesewufê da ji teref mutesewifan gotina; *Ez gencîneyek veşartî bûm, ji bo ez werim naskirin, min xelq afirandin*⁸⁷⁸ wekî hedîseke qudsî hatiye qebûl kirin.⁸⁷⁹ Ev gotin ji aliyê naveroka xwe, mijara felsefe, 'ilmê kelimê û tesewufê ye. Ehlên tesewufê afirandina kaînatê û hemû heyînên di kaînatê da bi vê gotinê va girêdidin. Li gorî wan;

*Xweda sirf 'işq e û di wê mertebeyê da ye ku mutesewwifan navê Mertebeya Zat lê kirine. Ev mertebe, mertebeyeke meçhul e ku nav, sifata fi'lên Xweda hêja te'eyyun nebûne. Zate Xweda, bi lutf û 'işqa heyîna yekem afirandiye. Ev heyîna yekem, ew mertebe ye ku softî ji wê ra Heqîqeta Muhemmedîye yan Te'eyyuna yekem dibêjin. Di vê mertebeyê da heqîqeta hemû eşya wekî pêşnimûne/prototîp mewcûd bû. Zat, peyderpey bi tecellî kirinê heta 'âlema madde ku mertebeya herî jêr ya 'âlema heyînan e tenezzul dike. Ev dinya tecellîya nav û sifâtên Xweda ye.*⁸⁸⁰

Bi gotineke din ku were gotin; hebûna Xweda, hebûneke veşartî bû. Di vê hebûnê da xweşikahîyeke bê misal hebû. Ji bo ev xweşikahî were dîtîn û bê nasîn

⁸⁷⁸ العجلوني، ج ٢، ص ١٣٢.

⁸⁷⁹ Di derbarê vê gotinê da hem ji aliyê metnê va û hem ji aliyê hedîs e yan ne hedîs e di nava 'âlimên Islamê da nêrînên ciyawaz tên dîtîn. Ji bo nîqaşên derbarê vê gotinê hedîs e yan ne hedîs e bnr; (Ergül, Necmettin, İnsan-ı Kâmil – Güzel Ahlak İlişkisi, *The Journal of Academic Social Science Studies*, Number: 35, Summer I, 2015, r. 262.) Ji bo cudahîyên metn û seneda gotinê bnr: (مهدی & نفی، آریان فر، زاده، حسن، بررسی و نقد سند و متن حدیث کنزی مخفی، علوم حدیث، فصلنامه علمی - پژوهشی، سال شانزدهم، شماره سوم، پاییز ۱۳۹۰، صص ۱۷۱-۱۸۷.)

⁸⁸⁰ Doru, *Melâyê Cizîrî, Hakikat ve Mecaz Arasında bir Sûfi'nin Portresi*, s. 107.

Xweda hemû kaînat û mexlûq afirandin. Hemû kaînat mezherê navek ji navên Xweda ye û însan mezherî hemû sifatek ji navên Xweda ye.

Di edebîyatê da ev gotin bi çend formên cuda derdikeve pêşberî me; bi bêjeyên 'erebî; *Kuntû Kenz, Kenzen Mexfî* û bi bêjeyên 'erebî-farsî wekî bikaranîna Mewlana: *Gencê Mexfî*⁸⁸¹ hatîye bikaranîn.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da ev gotin derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da di malikekê da cih digire. Di vê malikê da pejirandina vê gotinê tê dîtîn. Di heman malikê da dîsa gotinek ku bi nîqaş e, *Lewlake*, ku li jêr em ê li ser wê bisekinin cih digire. Melâyê Cizîrî di navbera herdû gotinan da têkilîyekê ava dike. Di nêrîna Melâyê Cizîrî da; Xweda xwestîye ku were naskirin û ji bo vê jî pêşî *Nûra Muhammedî* afirandîye.

Ger xeberdâr î ji sîrrâ (kuntu kenzen) guh bidêr
Dâ bi sed nûrê beyan kit me'neyê (lewlâki) ruh (MC 88-1)

5.2.4 Lewlâke (لولاك)

Wateya *Lewlake*, “*eger tu nebûya*” ye. *Lewlake*, telmîha gotinekê ye ku mutesewifan ew gotin wekî hedîseke qudsî qebûl kirine û di berhemên xwe da zikir kirine.⁸⁸² Ev gotin bi hinek lefzên cuda di gelek berhemên da were dîtîn jî⁸⁸³ ya herî berbelav; لولاك لما خلقت الافلاك *Eger tu nebûya min felek nediafirandin* e. Ji afirandinê mebest, afirandina hemû kaînatê ye. Yanî; Ya Muhammed! Eger tu nebûya, ne ji bo qedr û xatirê te bûya, min gerdûn û hemû tiştê di gerdûnê da nedixuliqand.

Di nêrîna mutesewifan da; ji tecellîya Xweda nûreke saf derket holê. Ev nûr, bi *Nûra Ehmedî*,⁸⁸⁴ yan *Rûhê Ehmedî* hatîye binavkirin. Kesên mutesewif vê nûrê menşe' û bingeha hemû mexlûqat û heqîqetu'l-heqayîq dizanin. Helbet, eşkere ye ku mebest ji Heqîqeta Muhammedîye ne qalîb û sûretê cismanî yê Hezretî Resûlê Ekrem e (s.a.s.). Ji ber vê di berhemên da bi Te'eyuna Ewwel, 'Eqlê Kul û Rûhê

⁸⁸¹ Bnr: (زمانی، ج ۲، ص ۸۳۸)

⁸⁸² Derbarê çavkanîyên ku dibêjin ev gotin hedîsekê çêkirîye, mewdû' e bnr: (دوسکی، تمحسین نیراهیم، شرحا) (دیوانا ملای جزیری، ب ۲، ر ۱۲۰)

⁸⁸³ العجلوني، ج ۱، ص ۴۶؛ ابن كثير، البداية والنهاية ج ۱، ص ۸۱ و ج ۲، ص ۳۲۲؛ البيهقي، أبو بكر أحمد بن الحسين، دلائل النبوة ومعرفة أحوال صاحب الشريعة، المحقق: عبد المعطي قلعي، دار الكتب العلمية، بيروت لبنان ۱۴۰۸، ج ۵، ص ۴۸۹، السيوطي، جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بكر، الخصائص الكبرى أو كفاية الطالب اللبيب في خصائص الحبيب، المحقق: محمد خليل هراس، دار الكتب الحديثة، مصر ۲۰۱۱، ج ۱، ص ۱۲ و ۱۴. النيسابوري، الحافظ أبي عبد الله الحاكم، المستدرک علی الصحیحین، دار التأسیل، مصر ۱۴۳۵، ج ۲، ص ۶۷۲. أ الدمياطي، أبو بكر عثمان بن محمد شطا، إعانة الطالبين على حل ألفاظ فتح المعين، دار إحياء الكتب العربية، مصر ۱۳۰۰، ج ۱، ص ۱۳، العاملي، السيد بدر الدين بن أحمد الحسيني، الحاشية على أصول الكافي، تحقيق: علي الفاضلي، دار الحديث، قم ۱۳۸۲، ص ۵۸.

⁸⁸⁴ Melâyê Cizîrî jî vê nûrê bi *Nûra Ehmedî* dinasîne:

Nârê ji nûrâ Ehmedî Sîrrâ sîfâtê sermedî (MC 42-2)

'Ezem hatîye te'bîr kirin. Hedîsa ku dibêje; *Xweda, pêşî nûra min afirand*, ji bo vê nêrînê wekî balpişt di berheman da cih girtîye.⁸⁸⁵

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da em rastî telmîha vê gotinê nayên. Di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. Di malikekê da eşkera *Lewlake* tê dîtîn ku bi hunera telmîhê wê hedîsî bi bîr tîne. Di vê malikê da bi têkilîya navbera *Kuntû kenzen* û *Lewlake*, sir û razên afirandinê hatine destnîşankirin.

Ger xeberdâr î ji sirrâ (kuntû kenzen) guh bidêr
Dâ bi sed nûrê beyan kit me'neyê (lewlâki) ruh (MC 88-1)

Di malika jêrîn da wateya heman hedîsê di çarçoveya şî'rê da bi kurdî hatîye wergerandin.

Ger dê Tu nebuyâ nedibû çerxê bi dâir
Sergeşte ji şewqê ne tenê neh felekî ne (MC 220-5)

Melâyê Cizîrî di ne'tên xwe da dema dibêje;

Mîm metle'ê şemsâ ehed âyîne şifet kir (MC 18-3)

û di misraya jêrîn da;

Û xeyrê te nehî der şedefê behrê wicûdê (MC 219-6)

di malîka jêrîn da;

Şems û qemeran şu'le ji ruyê te vedābu
Yelmûm ji te bû mûm û şemāl jê eyisîne (MC 220-2)

zimmen pišta xwe dide wê gotinê ku bi bêjeya *Lewlake* dest pê dike.

5.2.5 Işrāq (اشراق)

Işrāq, mesderek 'erebî ye. Di ferhengan da bi wateya rewşenkirin û reweşenbûnîyê cih girtiye.⁸⁸⁶ *Işraq*, di istilahê ehlê hikmet, felsefeyê da bi wateya keşf û şîhûd, ya zuhûra nûrên 'eqlî û hatina wan nûran li ser nefsê ye.⁸⁸⁷ *Felsefeya Işraqî*, yan *Hikmeta Işraqî* duyemîn mekteba felsefî ye ku di dîroka tefekkura Islamê da derketîye holê û rêyeke nuh di xebatên felsefî da li ber camî'eya Islamê vekirîye. *Felsefeya Işraqî* ji aliyê Şîhabeddîn Suhrewerdî⁸⁸⁸ va hatîye avakirin.⁸⁸⁹ Esasê vê

⁸⁸⁵ زمانى، ج ۲، ص ۲۵۱ و ۲۶۸، ج ۴، ص ۳۱۳.

⁸⁸⁶ دهخدا، ج ۲، ص ۲۶۲۹.

⁸⁸⁷ نصر، سيد حسين، سه حكيم مسلمان، ترجمه: احمد آرام، شركت انتشارات علمى و فرهنگى، چاپ پنجم، تهران ۱۳۸۲، ص، ۶۶.

⁸⁸⁸ Şîhabeddîn Yehya bin Hebeş bin Emîrek Suhrewerdî, li gundê Suhrewerd ku girêdayî bi Zencanê ye di sala 529/1154an da hatîye dinê. Di destpêkê da li Meraxê û paşê li Isfehan xwendina xwe didomîne. Li gelek deverên Îranê gerîyaye û bi gelek mutesewifan têkilî danîye. Di yek geşta xwe da li Helebê bi lawê Selaheddînê Eyyûbî, Melîk Zâhir ra hevdtîninê dike. Li cem Melîk Zâhir dimîne. Bi zext û zora kesên ku li hember fikrên wî radibûn wî dixin zindanê. Di sala 587/1191ê da, di zindanê da rehmet dike. (نصر، ص، ۶۲-۵۹).

felsefeyê li ser tecellîyê û zihûra nûrên 'eqlî li ser nefsa hekîm e ku bi rêya islah û tesfîyekirina nefsê pêkan dibe. Rêya felsefeya Işraqî, rêya 'irfânî û 'eqlî ye. Hem li ser têkoşîna bi nefsê ra hem jî ji bo tesfîyeya nefsê û keşf û şihûdê ava ye û hem pala xwe dide istidlalan, bibingehkirina felsefî.⁸⁹⁰

Di nêrîna Suhrewerdî da hikmeta heqîqî û rastîn bi alîkarîya rêya 'eqlî rêya işraqî - keşf û şuhûd - tê bidestxistin. Hekîmê rastîn ew kes e ku ji herdû rêyan jî xwe bêpar nehêle. 'Eql û qelb bi hev ra alîkarîyê bi wî ra bîke. Li ser vî esasî kesê rêya heqîqetê dişopîne lazime tevî terbiyeya me'newî û seyr û silûka bâtinî bi tehsîla 'ilmê zâhirî jî xwe perwerde bike. Yanî hem berê xwe bide 'eql û mentiqê û hem berê xwe bide 'irfânê.⁸⁹¹ Bi gotineke kurt; Suhrewerdî xwestîye rêya sofîyan ku rêya keşf û şihûdê ye û rêya meşaiyan ku rêya 'eql e bi hev bigihîne.

Bêjeya *Işraq* di dîwana Hâfizê Şirazî da cih nagire. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di du malikan da em rastî bêjeya *Işraqê* dibin. Bêjeya *Işraq*, di dîwana Melâyê Cizîrî da hem bi wateya ferhengî û hem bi istilahî cih digire. Bi wateya ferhengî *Işraq* ronîkirin, nûranîkirin e.

Berqê subbūhī ko işrāqê li sed cānān didit
Ew ko keşfā dil dikit remzek ji esrārê te bī (MC 282-7)

Işraq, wekî istilah di malika Melâyê Cizîrî da qaydeyê felsefeya *Işraqî* tîne ziman. Di *Hikmeta Işraqî* da bêyî guftûgo, bêyî axaftinê, bi rêka dilî têkilî tê avakirin û tiştên di dilî da têtin zanîn. Yanî di *Felsefeya Işraqî* da, du kes, bêyî xebirdanê bi rêya hizirkirinê dikarin bi hev ra biaxivin û bersîva pirsên hev bidin.⁸⁹² Melâyê Cizîrî, di malika xwe da bi rêya *Işraqî* pirsê ji me'şûqa xwe dîke û me'şûqa wî jî bi rêya *Işraqî* bersîva wî dide.

Me bi işrāqī suālek ji lebê xunçe guşā kir
Go bi ilhāmê dīzānī di suālā te cewāb e (MC 197-5)

⁸⁸⁹ Doru, Melâyê Cizîrî, *Hakikat ve Mecaz Arasında Bir Sofî'nin Portresi*, s 37-38.

⁸⁹⁰ Sêherordî, Şehab el-dîn, *Mجموعه مصنفات شیخ اشراق*, تصحیح: سید حسین نصر، جلد سوم، پژوهشگاه علمی انسانی و مطالعات فرهنگی، چاپ دوم، تهران ۱۳۷۳، ص ۳۲.

⁸⁹¹ Sêherordî, *Mجموعه مصنفات شیخ اشراق*, ص ۳۱۹؛ نصر، ص ۸۵؛ بخارایی، ص ۱۰۵.

⁸⁹² Doru, Melâyê Cizîrî, *Hakikat ve Mecaz Arasında Bir Sofî'nin Portresi*, s 39 ; شرحا دیوانا ملائی جزیری، ب ۳، ر ۲۳۹.

5.2.6 Wehdetî Mutleq (وحدت مطلق)

Wehdeti Mutleq, yan bi gotineke din *Wehdetî mutleqe* (وحدت مطلقه) fikra felsefi-tesewufî ya Ibn Seb'în e⁸⁹³ ku li ser fikra *Wehdetu'l-wucûdê* ava kirîye. Di fikra *Wehdeti mutleq* da, di rastîyê da tenê Xweda heye û ji bilî Xweda hertiştê mayî divê tune were hesabkirin.⁸⁹⁴ Ibn Seb'în vê nêrîna xwe bi; *Xweda tenê فقط الله* û *Ji Xweda pêve tu tişt tuneye* ليس الا الله anîye ziman.⁸⁹⁵ *Wehdeti mutleqe*, di meseleyên tecellî, meratîbên wucûd, eqsamên wucûd û daîreya wucûdê da ji *Wehdetu'l-wucûdê* vediqete.⁸⁹⁶ Li gorî vê nêrînê ji bilî hebûna Xweda hemû mexlûqat ne tu tiştekin, 'âlem û her tiştên di 'âlemê da mirî ne. Di heqîqetê da tenê Xweda zindî ye.⁸⁹⁷ Nêrînên Ibn Seb'în zêde nehatibin pejirandin jî wekî ekoleke felsefî di felsefeya Islamê da cihê xwe girtîye.

Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da bêjeya *Wehdet* qet derbas nabe û bêjeya *Mutleq* tenê carekê bi wateya ferhengî cih girtîye. (HŞ 571-2) Ji ber vê em di dîwana Hâfizê Şîrâzî da rastî navên vê ekola felsefî nayên.

Di dîwana Melâyê Cizîrî da *Wehdeti mutleq*, wekî navê ekoleke felsefî-tesewufî di malikekê da derbas dibe. Di vê malikê da *Wehdeti mutleq* hatîye şibandin bi wê nûrê ku qelban sîqal/cîla dike. Tevî vê jî, Melâyê Cizîrî meseleya *Wehdeti mutleq* bi meseleyeke zor û zehmet dinasîne ku ehlên dilan di vê mijarê da dikevin gumanê.

Lêkolînerên ku vê malika Melâyê Cizîrî şîrove dikin û li ser fikra felsefî-tesewufî ya Melâyê Cizîrî radiwestin, di wê bawerîyê da ne ku Melâyê Cizîrî, fikra

⁸⁹³ 'Ebdulheq bin Îbrahîm bin Muhemmed bin Nesr bin Seb'în, di sala 614/1217an da li Mursîye ya Endulusê hatîye dinê. Li Endulusê xwendîye û di 'ilmên muxtelîf wekî, simya, felsefe, tesewuf û fiqhê da pêşketîye. Fikr û bawerîyên Ibn Seb'în di serdema wî da dibûn sebebê rexneyan. Di nav 'âlimên Islamê da kesên ku fikren wî diparêzin, kesên ku fikren wî qebûl nakin û wî bi kufrê tomet dikin tên dîtîn. Di heman demê da kesên ku fikren wî tewîl dikin jî ne hindik in. Rexneyên herî girîng jî derbarê fikra wî ya felsefî ye ku li ser *Wehdetu'l-wucûdê* zêde kirîye. Ji ber fikrên wî ji gelek deveran hatîye qewirandin. Herî dawî çûye Mekkeyê û di sala 669/1270 da li Mekkeyê wefat kirîye. (قرين، فاطمه دوست، «ابن سبعين بر نردبان وحدت وجود يا وحدت مطلقه وجود»، نيمسالنامه تخصصي پژوهشنامه ادیان، سال چهارم، شماره هشتم، پاییز و زمستان ۱۳۷۹، ص ۲۸-۲۴)

⁸⁹⁴ Bozkurt, Birgül, *Molla Ahmed-i Ceziri'nin Divan'ında Vahdet-i Vücut Anlayışı*, Uluslararası Şırnak ve Çevresi Sempozyomu Bildirileri, Editör: M. Nesim Doru, Şırnak Üniversitesi Yayınları, Şırnak 210, s 627.

⁸⁹⁵ قرين، ص ۳۰.

⁸⁹⁶ قرين، ص ۳۱-۳۴.

⁸⁹⁷ Bozkurt, hb, s 627.

xwe ya felsefî-tesewufî bi *Wehdeti mutleq* bi nav dike.⁸⁹⁸ Dîsa di wê bawerîyê da ne ku Melâyê Cizîrî fikra *Wehdeti mutleq* ya Ibn Seb'in naparêz e.⁸⁹⁹

Wehdeti mutleq Melâ *Nûr e di qelbân celâ*
Zori di vê mes'elê *Ehlê dilân şubhe mâ* (MC 21-5)

5.2.7 Berawird û Nirxandin

Tablo 16: 'Unsûrên Tesewufê

| Rêz | 'Unsûrên Tesewufê | Hâfizê Şîrâzî | | Melâyê Cizîrî | |
|--------------|-------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | | Hejmar | Rêje (%) | Hejmar | Rêje (%) |
| 1 | Ene'l-Heq | 1 | 0,021 | 2 | 0,088 |
| 2 | Ene'l-lah | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 3 | Kenza Mexfî | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| 4 | Lewlake | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 5 | Işraq | 0 | 0,000 | 2 | 0,088 |
| 6 | Wehdeti Mutleq | 0 | 0,000 | 1 | 0,044 |
| Gîştî | | 1 | 0,021 | 9 | 0,398 |

'Unsûrên tesewufê ku di 'âlema Islamê da nîqaşên mezîn li ser wan hatine kirin û hêja jî tîn kirin, hinek ji wan wekî êkolên felsefeya tesewufê di felsefeya Islamê da cihê xwe wergirtine. 'Unsûrên tesewufê, di dîwana Melâyê Cizîrî da, di şeş sernavan da hate dîtîn. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da, di sernavekî da em rast hatin. Di navbera Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî da tenê gotina *Ene'l-Heq* hevpar e. Gotina *Ene'l-Heq* di dîwana Melâyê Cizîrî du caran û di dîwana Hâfizê Şîrâzî da tenê carekê derbas dibe. 'Unsûrên din ku di tabloyê da hatine destnîşankirin di dîwana Hâfizê Şîrâzî da cih nagirin.

Tunebûna 'unsûrên tesewufê di dîwana Hâfizê Şîrâzî da nayê wateya ku Hâfizê Şîrâzî ji wan bê agah e. Sedema ku Hâfizê Şîrâzî 'unsûrên tesewufî eşkera nexistîye dîwana xwe bi şert û mercên sîyasî û civakî yên serdema wî va girêdayî ye. Di dîwana wî da malîkên ku fikra Wehdetu'l-wucûdê tînin ziman bi hunera îhamê sergirtî tîn dîtîn. Dema ku Hâfizê Şîrâzî dibêje; *nedîm, mitrib û sâqî hemû Ew e, xiyala av û herîyê di vê rêyê da tenê behane ye* (HŞ 634-8) fikra xwe ya wehdetu'l-wucûdê tîne ziman. Di malîkên ku dibêje; *Ev hemû 'eksa ku di meyê û teswîr û neqşên rengoreng ku xuya dikin, hemû ji pertewek xweşikahîya çehreya sâqîyê ezêlî*

⁸⁹⁸ Doru, *Melâyê Cizîrî, Felsefî ve Tasavvufî Görüşleri*, s 151.

⁸⁹⁹ Doru, *Melâyê Cizîrî, Felsefî ve Tasavvufî Görüşleri*, s 153-154; Bozkurt, hb, s 627.

ye (HŞ 205-3) û *Herdû cîhan yek pertewa (tecellîya) rûyê Wî ye, hem bi dizî û hem eşkera ji bo te dîsa dibêjim* (HŞ 552-6) tecellî û şihûda fikra Işraqî rave dike.

Xwendevanekî ku derbarê 'ilm û felsefeyê da agahîyên wî nebin bi asanî dikare malikên jor yên Hâfizê Şîrâzî û vê malikê; *Herdû cîhan yek pertewa rûyê wî/wê ye* (HŞ 552-6) wekî malikeke 'âşiqâne fam bike, çêjekê ji hunera mubalexeyê werbigire û têkilîya malikan bi tesewufê girênde.⁹⁰⁰

Hâfizê Şîrâzî di navendeke sînordar (tenê li Şîrazê jîyaye û ji Şîrazê derneketîye) jîyaye ku di serdema wî da li Şîrazê û navendên din yên Îranê ji layê exlaq û sîyasî va civak di rewşeke xerab da bû. Tu kes ji 'aqîbeta xwe ne ewle bû, kêwêz bi mirinek tebî'î rehmet dikirin. Bidestxistina aborîyê gelek zehmet bû. Ji bo vê jî kesên zana û edîb ji desthilatdaran ra şellaqî dikirin. Muxalifên her fikrê di derdorê da peyda dibûn. Hâfizê Şîrâzî vê rewşa serdema xwe di malika xwe da wiha tîne ziman: *ji bo vexwarina qurtek şerabê ku azar û zehmetîyê nade tu kesî, ji destê kesên nadan, cahilan min çî zehmetî dîtî qet mepirse.* (HŞ 429-3) Ji ber tunebûna ewlehîyê, hebûna muxalifên fikrên azad, ji bo bidestxistina aborîyê jîyana di binê sîya desthilatdaran da, sedema herî girîng e ku Hâfizê Şîrâzî li ser felsefeyê û ekolên felsefeya tesewufê bi zelalî ranewestîyaye.

Tunebûna nasnameyê 'ilmî jî sedemeke ku Hâfizê Şîrâzî bikaribe fikr û ramanên xwe eşkera bîne ziman, bikaribe wan biparêze û bersîva rexneyan bi nasnameya xwe ya 'ilmî pêşwazî bike.

Melâyê Cizîrî, ji bo xwendinê li gelek deveran gerîyaye. Di gelek medreseyan da ders xwendîye. Bi gelek seyda, 'âlim û feqîyan ra danûstendin kirîye. Ev bûye sebeb ku aşînayê gelek fikr û ramanan bibe. Piştî wergirtina îcazeyê 'ilmî dest bi melâtîyê kirîye. Yanî nasnameya wî ya pêşî *Melâ ye*. Piştî li Cizîrî, bi hêza 'ilmê xwe di medreseya mîr da dest bi dersdayinê kirîye. Nasnameya Melâyê Cizîrî ya duyem *Muderris* e. Melâyê Cizîrî, bi van herdû nasnameyên xwe di 'ilm da otorîte ye. Ji ber vê bê perwa û bê metirsî di her warî da bi eşkerayî dikare fikr û ramanên xwe bîne ziman. Sedema ku di dîwana Melâyê Cizîrî da hebûna 'unsûrên tesewufî û nîrxandina ekolên tesewufî otorîteya wî ya 'ilmî ye, tevî hebûna derdorek aram ji layê sîyasî û civakî va.

⁹⁰⁰ Ji bo agahîyên berfireh bnr: (میریاقری فرد، علی اصغر، فشارکی، محسن محمدی، جلالی، محمداسماعیل، بررسی و نقد نشانه شناختی قرائت وحدت وجودی از شعر حافظ، *ادیان و عرفان*، سال پنجاه و دوم، شماره دوم، پاییز و زمستان ۱۳۹۸، (صص ۳۴۰-۳۶۵؛ مطهری، ص ۹۷-۱۱۶)

Di dîwana Melâyê Cizîrî da hebûna du musaceleyan û di van musaceleyan da nîrxandaina mijarên felsefeya tesewufê nîşan û 'elamet in ku hem navendeke azad ya fikrî heye û hem jî otorîtebûna Melâyê Cizîrî pesend dike.

Li jor me got hin kes di wê bawerîyê da nin ku navê fikra felsefî-tesewufî ya Melâyê Cizîrî; *Wehdeti Mutleq* e. Belkî em bikaribin gotina yekem kesê ku navê Melâyê Cizîrî di berhemeke nivîskî da derbas kirîye, Şêx Ehmedê Xanî; *Wan cumle Ene'l-Heq got, min wâhidê mutleq got*,⁹⁰¹ ji bo vê îddî'ayê wekî palbişt destnîşan bikin. Wê demê em dikarin bibêjîn ku Melâyê Cizîrî xwe di 'ilim da ji wan kesên ku ekolên felsefî ava kirine dihesibîne, otorîte ye û xwestîye di warê tesewufê da felsefeyek nuh ava bike. Û belkî ji teref zanayên felsefeyê û kelmê bi nîrxandîneke berfireh derkeve holê ku Melâyê Cizîrî ji fikra Meşaî, Işraqî û Wehdeti mutleqe felsefeyek nuh ava kirîye û heye ku di dîwana Melâyê Cizîrî da hebûna ûnsurên tesewufî nîşana vê yekê be.

Ene'l-Heq, gotineke girîng e û heta dema me nîqaşên li ser vê gotinê berdewam in. Di dîwana Hâfizê Şîrâzî da carekê derbas dibe. Hâfizê Şîrâzî, gotina *Ene'l-Heq* nerasterast, zimnen qebûl dike. Li dijî vê gotinê dernakeve, lê bi eşkerayî jî qebûlkirinekê nîşan nade. Şert û astê kesên bikaribin sir û razên gotina *Ene'l-Heq* derk bikin nîşan dide. Ev şert ev e; kesek ji bo bikaribe bi rastî û durustî razên gotina *Ene'l-Heq* fam bike divê xwedî cezbeya Ilâhî be. Ji vê gotina wî tê fam kirin ku li dijî vê gotinê dernakeve, lê rasterast jî nikare bibêje ez vê qebûl dikim.

Melâyê Cizîrî, di dîwana xwe da du caran gotina *Ene'l-Heq* bi kar anîye. Di herdu malikan da bêjeya *Mensûr* bi hunera îhamê Hellâcê Mensûr bi bîr tîne. Ya rastî mirov dikare bibêje ku Melâyê Cizîrî ji ber zerûreta şî'rê, yanî di çerçoveya honandina şî'rê da, hem ji bo avakirina hunerên edebî tercîhek bi vî rengî kirîye. Eger em bêjeya *Mensûr* ji malikên Melâyê Cizîrî derxin, bi gotina ku dibêje; *em ji Ene'l-Heq ê bi lîvên te yên sor agahdar bûn*, yan di malika din da; *hostayê 'işqê ewqas dilê me hevot ku ji serê me heta nigê me em hatin sotin, lê dîsa jî dilê mîn her remza Ene'l-Heq digot* dîsa em ê derk û fam bikin ku Melâyê Cizîrî gotina *Ene'l-Heq* qebûl kirîye û diparêze.

Ene'l-lah, di dîwana Hâfizê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. *Ene'l-lah*, bi formeke din heman gotina *Ene'l-Heq* e. Melâyê Cizîrî gotina *Ene'l-lah*, di mijara tecellîyatan da tîne ziman. Têkilîyekê di navbera

⁹⁰¹ ته حسين نيراهيم دۆسكى، شهرح ديوانا ئحممدي خانى، ر ٤٩.

bûyera Hezretî Mûsa û banga Xweda; *Ez Xweda me*⁹⁰² ava dike. Di malika xwe da dilê xwe dişibîne Ke'beyê ku di bawerîya Islamê da wekî *Mala Xweda* tê qebûlkirin. Ew dilê ku hem mala Xweda ye û hem wekî çîyayê Tûr wargeha tecellîyatan e, banga *Ene'l-lah* dide. Ev dil, dilê Melâyê Cizîrî ye. Bi zalalî xuya dike ku Melâyê Cizîrî *Ene'l-lah* bi wateya *Ene'l-heq* di malika xwe da bi cih kîrîye. Bikaranîna gotîna *Ene'l-lah* di forma honandina şîrekê da bi çend hunerên edebî, wekî; îqtîbas, îham, tenasubê hêzek edebî dabe şîrê jî mebesta eslî; qebûlkirina gotina *Ene'l-Heq* e û di encamê da xwe di wê astê da dîtîne ku dikare vê gotinê bibêje. Hebûna gotina *Ene'l-Heq* û gotina *Ene'l-lah* di dîwana Melâyê Cizîrî da û pejirandina van gotinan ji teref Melâyê Cizîrî nîşan û 'elamet e ku ev herdû gotin di nezera Melâyê Cizîrî de şeth in û Melâyê Cizîrî di vê mijarê da peyrewê Hellâcê Mensûr e.

Kenza Mexfî û *Lewlake* du gotin in ku ka ew hedîs in an ne hedîs in, meseleyeke bi nîqaş e. Ev herdu gotin bi hev ra têkildar in û piştî xwe didine fikra Wehdetu'l-wucûdê. Ev herdû gotin di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabin. Di dîwana Melâyê Cizîrî da, di malikekê da bi hev ra cih digirin. Melâyê Cizîrî, gotina *Kenza Mexfî* di malikên xwe da carekê bi kar anîye. Gotina *Lewlake* hem bi forma 'erebî, û hem bi wergera kurdî xistîye malikên xwe. Di heman demê da misrayên ku vê gotinê bi bîr tînin jî têne dîtî. Melâyê Cizîrî, bi van bikaranînên xwe qebûlkirina xwe ya derbarê herdû gotinan tîne ziman. Bi vî şiklî em têdigihêjin ku Melâyê Cizîrî di felsefeya Wehdetu'l-wucûdê da mijarên derdora *Kenza Mexfî* û *Heqîqeta Muhemmedî* ku têkildarî *Lewlake* ye dipejirîne.

Bêjeya *Işraq* di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da du caran derbas dibe. Carekê bi wateya ferhengî cih bigire jî, di malika ku bêjeya *Işraq* derbas dibe bêhna felsefeya tesewufê jî jê ne xalî ye. Di malika din da raste rast behs ji felsefeya *Işraqê* hatîye kirin. Bi van herdû malikan em nikaribin bibêjin ku Melâyê Cizîrî peyrewê avakerê felsefeya *Işraqê* -Şîhabeddîn Suhrewerdî- ye. Lê em dikarin bibêjin ku Melâyê Cizîrî hay ji felsefeya *Işraqê* heye û heta bi hûrgulî ev felsefe vekolaye.

Wehdeti Mutleq, di dîwana Hâfîzê Şîrâzî da derbas nabe. Di dîwana Melâyê Cizîrî da carekê derbas dibe. Melâyê Cizîrî, *Wehdeti Mutleqê* wekî ekoleke felsefî-tesewufî qebûl dike. Dema dibêje; *di dil da wekî cîla ye*, eşkere dike ku ew wê qebûl dike. Di heman demê da, di nêrîna wî da fehm û feraseta felsefeya *Wehdeti Mutleqê*,

⁹⁰² Bnr; *Qur'âna Pîroz*, Qeses 30, Taha 14, Neml 9.

derketina ji nava hûrgulîyên mijarên vê felsefeyê, karekî zehmet e. Ji ber vê zehmetîya fehm û îdraqa meseleyên *Wehdeti mutleq*, gelek kesên li ser wê rawestîyane, li ser rast û durustîya vê felsefeyê, di guman û şubheyan da mane. Bi gotineke din, di nêrîna Melâyê Cizîrî da, nûnerên ekola *Wehdeti mutleqê* prensîbên ekola xwe bi zelalî dîyar nekirine. Kesên ku zêde ne mahir bin, bi asanî prensîbên ku ji bo *Wehdeti Mutleqê* hatine danîn fam nake. Ji ber vê jî bi guman lê dinihêrin. Ji vê tê derxistin ku Melâyê Cizîrî bi nêrîneke rexneyî li ser vê ekolê rawestîyaye. Hem baş ji vê ekolê fam kirîye û hem sedemên ku ev ekol, zêde nehatîye pejirandin jî fam kirîye.

ENCAM

Di dawîya vê xebata muqayeseyî de xalên hevpar û xalên ji hev cuda derketin holê. Herwiha hem di xalên hevpar de hem jî di yên ne hevpar de îstatîstîkên ciyawaz derketin ku me ew di beşên xebatê de peşkeş kirin. Divê em ve yekê jî dubare bikin ku qewareya helbestên Hâfizê Şîrâzî teqrîbî sê qat ji yê Melâyê Cizîrî zêdetir e. Lê dîsa jî em dibînin ku Melâyê Cizîrî bi hostetiya xwe ya şa'irtî û bi şarezatiya xwe ya edebî û zanebûna xwe ya tesewufî, merama xwe di dîwaneke biçûk da ragihandiye û kêmî Hâfizê Şîrâzî nemaye. Vêca bi kurtasî em ê encama teoriya teza xwe wiha serrişte bikin:

Navên Xweda yên Zatî, di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da, hem ji alîyê hejmara navan, hem jî alîyê hejmara giştî û hem ji alîyê rêjeyê va ji Melâyê Cizîrî bêtir hatîye bikaranîn. Tercîha herdû şa'îran, di bikaranîna navan da ji hev cuda ye. Hâfizê Şîrâzî bêtir cih daye *Xweda*, Melâyê Cizîrî zêdetir cih daye *Ellah*.

Amurzigâr û *Kirdigâr* di edebiyata klasîk ya rojhilat da ji zimanê farsî hatîye wergirtin. 'Unsûrên farsî û 'unsûrên kultura Îranê jî yek ji çavkanîyên hizrî yên edebiyata klasîk in. Hâfizê Şîrâzî û Melâyê Cizîrî ji va 'unsûran sîd wergirtine. Çawa ku tê zanîn her netewek bi zimanê xwe hinek nav li *Xweda* kirine. Helbet ev nav, ji

kultura xwe wergirtine. Şa'iran ji kultura netewa xwe ev nav wergirtine û di helbestên xwe da anîne ziman. Hâfîzê Şîrâzî, di dîwana xwe da cih daye du navên Xweda; *Yezdân* û *Îzed*, ku ji kultura Îranê, ji dînê Zerduştî ketîye edebiyata klasîk. Melâyê Cizîrî, di vê mijarê da, ji dînê Zerduştî sûd wernegirtîye, ji kultura xwe cih daye *Baxwê*. Ji aliyê bikaranîna navên Xweda yên zatî di dîwana herdû şa'iran da nêrîneke Islâmî ya ji rêzê tê dîtîn. Navên Xweda yên zatî bêtir jî bo sondxwarin û heyretmayîne cih girtiye.

Nav û Sifetên Xweda, di dîwana herdû şa'iran da cih bigire jî, ferqeke mezin di hejmaran da derdikeve holê. Di Dîwana Hâfîzê Şîrâzî da 13 nav û sifetên xweda bi giştî 27 caran derbas dibin. Di Dîwana Melâyê Cizîrî da 33 nav û sifetên Xweda bi giştî 152 caran derbas dibin. Di helbestên Hâfîzê Şîrâzî da di bikar anîna nav û sifetên Xweda da nêrîneke şa'irane derdikeve pêş me. Hâfîzê Şîrâzî xwestîye bêtir nav û sifetên Xweda di hunerên edebî da ji bo şî'rîyyeta xwe xurt bike, bi kar anîye. Wateya ferhengî û istilâhî zêde bala Hâfîzê Şîrâzî nekişandîye. Di Dîwana Melâyê Cizîrî da, di navbera wateya ferhengî û istilâhî yên nav û sifetên Xweda da guncanîyeke xurt tê dîtîn. Ev jî bingeha xwe ji zanîna Melâyê Cizîrî ya derbarê 'ilmê kelam, felsefe û 'eqayidê werdigire. Di nav û sifetên Xweda da, di malikên Melâyê Cizîrî da helbet hunera şa'irtîyê jî tê dîtîn. Yanî Melâyê Cizîrî bi hunereke şa'irane xwestîye ku nav û sifetên Xweda bi wateya wan ya ferhengî û istilâhî bide ber çavan. Melâyê Cizîrî, di navbera nav û sifetên Xweda yên nêzwate weke; *Wahid*, *Ehed*, yên dîjber weke *Ewwel* û *Axir* nêrînên xwe yên felsefî û kelamî tîne ziman. Di heman demê da, dixwaze derbarê nîqaşên li ser wan jî hizrên xwe bîne ziman û bi vî rengî wan şîrove dike.

Pêxember, di malikên herdû şa'iran da cih bigirin jî derbarê nêrînên herdû şa'iran da tu agahî nayê bidestxistin. Hâfîzê Şîrâzî carek *Nebî* û carek jî *Resûl* di dîwana xwe da bi cih kirîye. Melâyê Cizîrî tenê du caran cih daye *Nebî*. Herdu şa'ir jî di malikên 'âşiqâne da cih dabin van têgihan jî, nêrîna wan ya derbarê vê têgihê da bawerîya mislimanekî ber bi çav e.

Firişte, bi şeş navên xwe 48 caran bi rêjeya %1,007an di Dîwana Hâfîzê Şîrâzî da cih digirin. Di Dîwana Melâyê Cizîrî da 7 navên firişteyan 41 caran bi rêjeya %1,811an cih digire. Ji van amaran derdikeve holê ku Melâyê Cizîrî bêtir cih daye navên firişteyan.

Berhemên Pîroz, bi nav û hejmarên xwe di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da bêtir tê dîtîn. Di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da Qur'ân û Zebûr derbas dibin. Di Dîwana Melâyê Cizîrî da tenê Qur'ân derbas dibe.

Jîyana Axretê bi gelek layên xwe di dîwanên herdû şa'iran da cih digire. Têgihên derbarê jîyana axretê di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da zêde were dîtîn jî ji aliyê rêjeyê Melâyê Cizîrî di pêş da ye. Hâfizê Şîrâzî, bêyî ku bikeve nava kûrahîya mijarê di çarçoveya bawerîya misilmanekî ji rêzê di malikên xwe da cih daye mijarên jîyana axretê.

'Unsûrên dînî yên gîrîng di dîwanên herdû şa'iran da, di çarçoveya edebiyata klasîk da cih digire. Bi taybet bêjeya *dîn* ji bilî wateya ku di edebiyata klasîk da li xwe digire, di Dîwana Melâyê Cizîrî da cihekî taybet werdigire. Melâyê Cizîrî, 'îşqê weke dîn dipejirîne. Hâfizê Şîrâzî, bi mezmûn vê yekê bîne ziman jî, di nêrîna wî da dîn, mezhebek ji mezhebê 'îşqê ye. Melâyê Cizîrî, piştî ku 'îşqê ji xwe re weke dîn dipejirîne, ji bo vî dînî, weke di hemû dînan da tê dîtîn rêç û rêbazên dînê 'îşqê destnîşan dike. Ew, bi xwe bawerîyeke mezin, di 'îşqê da, xwe şêxê duyem û di heman demê da, di serdema xwe da, xwe wek muftîyê 'îşqê dihesibîne. Bi gotineke din em dikarin bibêjin ku Melâyê Cizîrî bi van hizrên xwe nêrînen xwe yên derbarê 'îşqê dide der û serdestîya xwe ya ravekirina mijarên xwe yên derbarê 'îşqê di dîwana xwe da dide ber çavan.

Şeytan, nav û sifetên wî di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi nêrîneke giştî remza xapandinê ye. Bi taybet di xwarina ji fêkîya qedexe û derxistina hezretî Âdem ji behîştê rola Şeytan dide ber çavan. Melâyê Cizîrî, di hizrên felsefî-tesewufî da cih dide Şeytan. Belê, di malikên Melâyê Cizîrî da, di navbera Hezretî Âdem û Şeytan da xapandinek heye, lê yê xapîyayî Şeytan bi xwe ye. Lewra Şeytan, ew sir û raza di Hezretî Âdem da nedîtîye û xapîyaye, lewma neçûye secdeyê.

'Unsûrên 'îbadetê di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji ya Melâyê Cizîrî bêtir cih digirin. Hâfizê Şîrâzî herî zêde cih daye nîmêjê bi 11 caran û piştî cih daye rojîyê bi 6 caran. Hejmara 'unsûrên 'îbadetê di Dîwana Melâyê Cizîrî da nêzî hev in; her yek 2 an 3 caran derbas dibin. Di dîwanên herdû şa'iran da 'unsûrên 'îbadetê di hizrên 'âşîqâne da cih digirin.

Her çar xelîfeyên Islâmê jî di Dîwana Melâyê Cizîrî da cih digirin. Di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji her çar xelîfeyên Islâmê Hezretî 'Elî bi kînaye cih digire.

Navê Pêxemberan hem ji alîyê zêdebunîyê û hem ji alîyê hejmara bikaranînê di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da bêtir cih digirin. Di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da navê 12 pêxemberan 102 caran, di Dîwana Melâyê Cizîrî da navê 11 pêxemberan 47 caran derbas dibin.

Kesayetên tesewufî, di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da bi sê rengan tên dîtîn. Rengê musbet, rengê menfî û rengê musbet-menfî. Di Dîwana Melâyê Cizîrî da bi yek rengî; rengê musbet cih digirin. Hâfizê Şîrâzî jî Melâyê Cizîrî bêtir cih daye kesayetên tesewufî.

Kesayetên Dîrokî yê Tesewufî di Dîwana Melâyê Cizîrî da bêtir cih digirin. Di Dîwana Melâyê Cizîrî da navê 5 kesayetên dîrokî derbas dibe. Di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da navê du kesayetên dîrokî derbas dibe. Hellacê Mensûr di navbera herdû şa'iran da kesayetekî hevpar e. 'Ebdurrehmân Camî ji ber ku pîştî Hâfizê Şîrâzî ye ne pêkane di dîwana wî da cih bigire.

Têgihên tesewufê di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da ji Dîwana Melâyê Cizîrî bêtir cih digirin. Di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da istilahên tesewufî hem bi alîyê musbet, hem bi alîyê menfî û hem bi alîyê musbet-menfî cih digirin. Di Dîwana Melâyê Cizîrî da hemû têgihên tesewufî musbet in.

'Unsûrên tesewufê di Dîwana Melâyê Cizîrî da bêtir cih digirin. Kêmbûna 'unsûrên tesewufê di Dîwana Hâfizê Şîrâzî da metirsîya wî dide ber çavan. Di serdema Hâfizê Şîrâzî da kesek ji ruh û canê xwe ne di ewlehîyê da bû. Tunebûna zemînek ku herkes bikaribe bi serbestî ramanên xwe bîne zîman jî sebebek e ku Hâfizê Şîrâzî li ser mijarên bi nîqaş nesekinîye. Herweha Hâfizê Şîrâzî bi nasnameya xwe ya şa'irtîyê tê nasîn. Tunebûna nasnameyeke 'ilmî jî weke sedemeke nebûna 'unsûrên tesewufî dikare were nîşandayîn.

Melâyê Cizîrî, di biwara 'unsûrên tesewufî da hem cesareta xwe û hem zanebûna xwe nîşan dide. Ji malikên wî xuyaye ku di 'ilmê felsefe-kelam û ekolên tesewufê da xwedî zanîneke mezin e.

Hebûna 'unsûrên dînî û tesewufî nîşan dide ku herdû şa'iran jî di çarçoveya şî'ra klasîk da, ji çavkanîyên hizrî yê edebiyata klasîk sûd wergirtine. Hebûna 'unsûrên tesewufî, ji xeyrê çarçoveya edebiyata klasîk di heman demê da alîyê herdû şa'iran yê tesewufî derdixê holê. Herdû şa'iran jî tesewufa 'âşiqâne pejirandine, lê Melâyê Cizîrî di dîwana xwe da vê yekê bêtir derdixê pêş. Ji xeyrî wekhevî û şibandinên 'unsûrên dînî û tesewufî ku di çarçoveya edebiyata klasîk da, ji çavkanîyên

hizrî yê edebiyata klasîk weke dînê Islâmê û zîman û kultura Îranê hatine wergirtin, wekhevîyeke berbiçav nayê dîtin. Ev jî tê wê wateyê ku Melâyê Cizîrî di bikaranîna 'unsûrên dînî û tesewufî da tesîreke mezin ji Hâfizê Şîrâzî wernegirtîye.

Weke dawî herdu şa'ir jî ji aliyê bikaranîna 'unsûrên dînî û tesewufî têr û tijî ne. Jixwe ev jî tradisyona edebiyata Islâmî ye ku di her têgeh û mustelehekê da wekî hev şîrove neyê dîtin jî, bi gelemperî em dibînin ku herdu şa'iran jî ji heman çavkaniyan sûd wergirtiye û di gelek mijaran da heman mezmûn bi kar anîne. Ji aliyê hunera edebî va jî hostetîya herdu şa'iran ya di helbest û malikên têkilî mijara me da serkeftî ne. Çendîn ku aliyê tesewufî yê Melâyê Cizîrî resentir, aşkeratir û balatir be jî, Hâfizê Şîrâzî jî ji tesewufê ne dûr bûye û hilma tesewufê ji malikên wî jî difûrin. Bi vî awayî jî lihevkirinek heye di dîwanên herdu şa'iran da.

Hêvî heye ku ev xebat, bibe pirek di navbera du edebiyatan de û derîyê gelek xebatên bi vî rengî veke.

JÊDER

Jêderên 'Erebî

- القرآن الكريم.
- إبراهيم، محمد زكي (٢٠٠٦)، *أبجدية التصوف بعض ماله وما عليه*، مطبوعات ورسائل العشيرة المحمدية، الطبعة الخامسة، القاهرة، مصر.
- ابن كثير، عماد الدين أبو الفداء إسماعيل بن عمر، (١٤٠٨)، *قصص الأنبياء*، مكتبة الطالب الجامعي، مكة.
- ابن كثير، عماد الدين أبو الفداء إسماعيل بن عمر، (١٤١٠)، *البداية والنهاية*، تحقيق: عبدالله بن عبدالمحسن التركي، مكتبة المعارف، بيروت.
- ابن منظور، محمد بن مكرم، (١٤١٤)، *لسان العرب*، دار صادر، چاپ سوم، بيروت.
- آلحفنى، عبد المنعم، (١٤٠٧)، *معجم مصطلحات الصوفية*، دار المسيرة، بيروت.
- بن عجيبة، أحمد، (بدون تاريخ)، *معراج التشوف إلى حقائق التصوف و بليه كتاب كشف النقاب عن سر لب الألباب*، تحقيق الدكتور عبد المجيد خيالي، مركز التراث الثقافي المغربي الدار البيضاء.
- البيهقي، أبو بكر أحمد بن الحسين بن علي، (١٣٢٣)، *الجامع لشعب الإيمان*، مكتبة الرشد، رياض.
- البيهقي، أبو بكر أحمد بن الحسين، (١٤٠٨)، *دلائل النبوة ومعرفة أحوال صاحب الشريعة*، المحقق: عبد المعطي قلعجي، دار الكتب العلمية، بيروت لبنان.
- التهانوي، محمد علي، (١٩٩٦)، *كشاف اصطلاحات الفنون والعلوم*، تقديم: رفيق العجم، مكتبة لبنان ناشرون، لبنان.
- الجرجاني، علي بن محمد السيد الشريف، (٢٠٠٤)، *معجم التعريفات*، تحقيق: محمد صديق المنشاوي، دار الفضيلة، مصر.
- الدمياطي، أبو بكر عثمان بن محمد شطا، (١٣٠٠)، *إعانة الطالبين على حل ألفاظ فتح المعين*، دار إحياء الكتب العربية، مصر.
- الدوسكي، مجيد مالك محمد، (٢٠١٦)، *شعر التصوف بين الشيخ الجزيري وابن الفارض*، سبيري، دهوك.
- الزفنيكي، ملا احمد، (١٩٨٧)، *العقد الجوهري في شرح ديوان الشيخ الجزيري*، مطبعة الصباح، دمشق.
- الزهري، محمد بن سعد بن منيع، (١٤٢١)، *الطبقات الكبرى*، محقق: علي محمد عمر، مكتبة الخانجي، القاهرة.

- الزهري، محمد بن سعد، (١٣٢١)، الطبقات الكبرى، تحقيق: علي محمد عمر، مكتبة الخانجي، القاهرة.
- السبكي، أبو نصر عبد الوهاب بن علي بن عبد الكافي، (١٤١٩)، رفع الحاجب عن مختصر ابن الحاجب، المحقق: علي محمد عوض، عادل أحمد عبد الموجود، ج ٢، دار عالم الكتب، بيروت لبنان.
- السلفي، حمدي عبد المجيد - الدوسكي، تحسين إبراهيم، (٢٠٠٨)، معجم الشعراء الكرد، دار سبيريز للطباعة والنشر، دهوك.
- السيوطي، جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بكر، (٢٠١١)، الخصائص الكبرى أو كفاية الطالب اللبيب في خصائص الحبيب، المحقق: محمد خليل هراس، دار الكتب الحديثة، مصر.
- طاهر، ميكائل، (٢٠٠٥)، الشيخ الجزري نهجه وعقيدته من خلال ديوانه، سبيريز، دهوك.
- الطباطبائي، محمد حسين، (١٤١٧)، الميزان في تفسير القرآن، منشورات مؤسسة الاعلمي للمطبوعات، بيروت لبنان.
- الطوسي، أبي نصر عبد الله بن علي السراج، (١٩١٤)، اللمع في التصوف، تحقيق رنولد الن نيكلسون، مطبعة بريل، ليدن.
- العاملي، السيد بدر الدين بن أحمد الحسيني، (١٣٨٢)، الحاشية على أصول الكافي، تحقيق: علي الفاضلي، دار الحديث، قم.
- عتيق، عبدالعزيز، (٢٠١٥)، علم البديع، دار النهضة العربية، بيروت لبنان.
- العجلوني، اسماعيل بن محمد، (١٣٥١)، كشف الخفاء ومزيل الإلباس عما اشتهر من الأحاديث على ألسنة الناس، مكتبة القدس، قدس.
- العجم، رفيق، (١٩٩٩)، موسوعة مصطلحات التصوف الاسلامي، مكتبة لبنان ناشرون، لبنان.
- العسقلاني، علي بن أحمد بن حجر، (٢٠١٠)، فتح الباري شرح صحيح البخاري، المطبعة السلفية ومكتبتها، القاهرة.
- عفيفي، أبو العلا، (٢٠١٥)، الملامتية والصوفية وأهل الفتوة، الجبل، بيروت، لبنان.
- عمر، احمد عمر، (١٤٠٩)، أولو العزم من الرسل، دار حسان، دمشق.
- العيني، بدر الدين محمود، (٢٠٠٩)، عقد الجمان في تاريخ أهل الزمان، دار الكتب والوثائق القومية، ج ١، القاهرة.
- الغزالي، أبو حامد محمد بن محمد، (٢٠٠٣)، المقصد الأسنى في شرح معاني أسماء الله الحسنى، دار ابن حزم، بيروت لبنان.
- القاشاني، كمال الدين عبدالرزاق، (١٣٧٠)، اصطلاحات الصوفية، انتشارات بيدار، قم.
- القشيري، أبو القاسم عبد الكريم بن هوازن، (١٩٨٩)، الرسالة القشيرية، تحقيق: عبد الحلیم محمود. محمود بن شريف، دار الشعب، القاهرة.
- القيرواني، ابن رشيقي، (١٤٠١)، العمدة في محاسن الشعر وآدابه، دار الكتب العلمية، بيروت لبنان.
- الكلاباذي، أبو بكر محمد بن إسحاق، (١٩٦٠)، التعرف لمذهب أهل التصوف، تحقيق وتعليق، محمود، عبد الحلیم & سرور، طه عبد الباقي، مكتبت الثقافة الدينية، القاهرة، مصر.
- الكاشاني، عبدالرزاق، (١٩٩٢)، معجم اصطلاحات الصوفية، تحقيق: عبد العال شاهين، دار المنار، الطبعة الأولى، القاهرة، مصر.
- محمد، يوسف خطار، (١٩٩٩)، الموسوعة اليوسفية في بيان أدلة الصوفية، مكتبة دارالآباب، دمشق، سورية.
- النجدي، محمد الحمود، (١٤١٧)، النهج الأسمى في شرح أسماء الله الحسنى، مكتبة الامام الذهبي، الكويت.
- النووي، محيي الدين أبي زكريا يحيى بن شرف، (١٤٣٦)، رياض الصالحين، دار المنهاج، الطبعة السابعة، لبنان، بيروت.
- النيسابوري، الحافظ أبي عبد الله الحاكم، (١٤٣٥)، المستدرک على الصحيحين، دار التأصيل، مصر.

Jêderên Farsî

- ابو القاسمي، سيده مريم، (١٣٧٣)، اصطلاحات ومفاهيم عرفاني ديوان شمس، سازمان چاپ و انتشارات وزارت فرهنگ و ارشاد اسلامي، تهران
- اردكاني، رضا داوري، (١٣٧٣)، شاعران در زمانه عمسرت، ملاحظاتى در باب شعر حافظ و حقيقت شعر و شاعرى، انتشارات گروس، تهران.
- آريان فر، مهدى & نقى زاده، حسن، (١٣٩٠)، «بررسى و نقد سند و متن حديث كنزى مخفى»، علوم حديث، فصلنامه علمى پژوهشى، سال شانزدهم، شماره سوم، پايز، صص ١٨٧، ١٧١.
- استعلامي، محمد، (١٣٨٣)، درس حافظ (نقد و شرح غزلياتى خواجه شمسدين محمد حافظ)، سخن، چاپ دوم، تهران.
- اسفهانى، اوحدى، (١٣٤٠) كلييات، تصحيح، سعيد نفيسى، همير كبير، تهران.
- آشورى، داربوش، (١٣٨١)، عرفان و زندى در شعر حافظ، نشر مركز، تهران.
- اصلانى، محمد رضا همدان، (١٣٨٥)، فرهنگ واژگان واصطلاحات طنز، انتشارات كاروان، تهران.
- افراسياب پور، على اكبر، (١٣٧٦)، عرفانى جمالى، انتشارات ترفند، تهران.
- اقبال، عباس، (١٣٢١)، سخنى درباره حافظ، كتيخانه تخصصى ادبيات، اسپهان.
- آملی، محمد بن محمد شمس الدين، (١٣٨٠)، نفايس الفنون، گردآورنده: بهروز ثروتیان، انتشارات فردوس، تهران.
- انورى، حسن، (١٣٧٣)، فرهنگ كنايات سخن، سخن، تهران.
- انورى، (١٣٦٤)، ديوان، بكوشش: سعيد نفيسى، سگه، چپروز، چاپ سوم، تهران.
- بامداد، محمدعلى، (١٣٣٩)، حافظ شناسى يا الهامات خواجه، انتشارات كتابفروشى ابن سينا، تهران.
- بخاراىي، احمد على رجايى، (١٣٧٥)، فرهنگ اشعار حافظ، انتشارات علمى، چاپ هفتم، تهران.

- بختیاری، پژمان، (۱۳۵۱)، *عشق در اشعار خواجه*، از مقالاتی درباره شعر و زندگی حافظ، به کوشش: منصور رستگار فسائی، کنگره جهانی سعدی و حافظ ۱۲۸ اردیبهشت ۱۳۵۰، صص ۱۶۵-۱۹۵.
- برقی، سید ابوالفضل، (۱۳۹۵)، *گفتگویی با حافظ: حافظ شکن*، مترجم: سید جمال الدین هروی، موسسه فرهنگی و اطلاع رسانی تبیان، قم.
- بقلی شیرازی، روزبهان، (۱۳۶۰)، *شرح شطحیات*، تصحیح: هنری کرین، کتبخانه طهوری، تهران.
- بهروزی، علی تقی، (۱۳۵۵)، *حافظ را بشناسید: شرح حال حافظ*، کتاب فروش معرفت، شیراز.
- پورنامداریان، تقی، (۱۳۸۲)، *گمشده لب دریا*، سخن، تهران.
- تبریزی، شرف الدین حسین بن الفتی، (۱۳۶۲)، *رشف الاحاط فی کشف الالفاظ*، تصحیح: نجیب مایل هروی، انتشارات مولی، تهران.
- جامی، نورالدین عبد الرحمن بن احمد بن محمد، (۱۳۸۶)، *نفحات الانس من حضرات القدس*، مقدمه، تصحیح و تعلیقات: محمود عابدی، سخن، تهران.
- جاوید، هاشم، (۱۳۷۵)، *حافظ جاوید: شرح دشواری های ابیات و غزلیات دیوان حافظ* - انتشارات فرزانه روز، تهران.
- حالی، الطاف حسین، (۱۳۱۶)، *حیات سعدی*، ترجمه: نصرلله سروش، بنگاه دانش، تهران.
- خالقی، محمدرضا بزرگر، (۱۳۸۹)، *شاخ نبات حافظ*، زوار، چاپ پنجم، تهران.
- خرمشاهی، بهاء الدین، (۱۳۶۶)، *حافظ نامه (شرح الفاظ، اعلام، مفاهیم کلیدی، و ابیات دشوار حافظ)*، انتشارات صدا و سما، تهران.
- خرمشاهی، بهاء الدین، (۱۳۶۷)، *چهارده روایت*، کتاب پرواز، تهران.
- داد، سیما، (۱۳۸۱)، *فرهنگ اصطلاحات ادبی*، انتشارات مروارید، چاپ سوم، تهران.
- دانشپژوه، منوچهر، (۱۳۸۰)، *تفنن ادبی در شعر فارسی*، انتشارات طهوری، تهران.
- درودآبادی، السید حسین همدانی، (۱۳۷۹)، *شرح الأسماء الحسنی*، انتشارات بیدار، قم.
- دشتی، علی، (۱۳۶۵)، *قلمرو سعدی*، انشارات امیر کبیر، چاپ پنجم، تهران.
- دهخدا، علی اکبر، (۱۳۷۷)، *لغت نامه دهخدا*، مؤسسه انتشارات و چاپ دانشگاه تهران.
- دهقان ع، حدیدی خ، احمدی م، (۱۳۹۳)، «بررسی تصوف عابدانه و عرفان عاشقانه در غزلیات حافظ»، *ادبیات عرفانی و اسطوره شناختی (زبان و ادبیات فارسی)*، دانشگاه آزاد اسلامی، واحد تبریز، دوره ۱۰، شماره ۳۷، صص ۱۱۱-۱۴۳.
- ربانی، اصغر حامدی، (۱۳۴۵)، *فرهنگی سعدی لغات فارسی به فارسی*، کتابفروشی سعدی، تهران.
- رضاقلی خان هدایت، محمد هادی، (۱۳۸۵)، *تذکره ریاض العارفین*، بکوشش: سید رضی واحدی و سهراب زارع، پژوهشگاه علوم انسانی و مطالعات فرهنگی، تهران. ایران.
- رضایی، محمد غلام، (۱۳۸۱)، *سبکشناسی شعری فارسی از رودکی تا شاملو*، نشری جامی، تهران.
- رهبر، خلیل خطیب، (۱۳۸۳)، *دیوان حافظ شیرازی*، انتشارات صفی علیشاه، چاپ سی و هفتم، تهران.
- روحانی، بابا مردوخ، (۱۳۸۲)، *تاریخ مشاهیر کرد (ع رفا، علما، ادبا، شعرا)*، به کوشش: محمد ماجد مردوخ روحانی، سروش، تهران.
- زریاب خوبی، عباس، (۱۳۷۴)، *آئینه جام (در باب شرح اصطلاحات و تعبیرات اشعار حافظ)*، چاپ دوم، تهران.
- زرین کوب، عبدالحسین، (۱۳۴۴)، *ارزش مرآت صوفیه*، انتشارات آریا، تهران.
- زرین کوب، عبدالحسین، (۱۳۷۴)، *از کوجه زندان*، (درباره زندگی و اندیشه حافظ) انتشارات سخن، چاپ نهم، تهران.
- زمانی، کریم، (۱۳۸۲)، *شرح جامع مثنوی معنوی*، اطلاعات، تهران.
- ساوجی، سلمان، (۱۳۷۶)، *کلیات سلمان ساوجی*، تصحیح: عباس گلی وفائی، انجمن آسار و مفاخر فرهنگی، تهران.
- سبحانی تبریزی، جعفر، (۱۳۸۵)، *فروع ابیدیت*، بوستان کتاب، ایران.
- سجادی، سید جعفر، (۱۳۸۳)، *فرهنگ اصطلاحات و تعبیرات عرفانی*، انتشارات طهوری، چاپ هفتم، تهران.
- سعادتپور، علی، (۱۳۹۵)، *جمال آفتاب و آفتاب هر نظر: شرحی بر دیوان حافظ*، احیاء کتاب، تهران.
- سعدی شیرازی، ابومحمد مصلح الدین، (۱۳۸۵)، *کلیات سعدی*، به تصحیح: محمدعلی فروغی، هرمس، تهران.
- سهپوردی، شهاب الدین، *عوارف المعارف*، ([http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(52\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(52).php)) (Pêgîhîn:12.10.2021)
- سهپوردی، شهاب الدین، (۱۳۷۳)، *مجموعه مصنفات شیخ اشراق*، تصحیح: سید حسین نصر، جلد سوم، پژوهشگاه علوم انسانی و مطالعات فرهنگی، چاپ دوم، تهران.
- شاملو، احمد، (۱۳۷۰)، *مفاهیم زند و زندی در غزل حافظ*، انتشارات آرش، سوئد.
- شروانی، خاقانی، (۱۳۸۲)، *دیوان*، تصحیح ضیاء الدین سجادی، زوار، تهران.
- شریف کاشانی، ملا حبیب الله، (۱۳۸۳)، *خواص و مفاهیم أسماء الله الحسنی*، ترجمه: محمد رسول دریای، نشر صائب، تهران.
- شریفی، محمد، (۱۳۸۷)، *فرهنگ ادبیات فارسی*، انتشارات معین، چاپ دوم، تهران.
- شفق، صادق رضازاده، (۱۳۴۱)، *تاریخ ادبیات ایران*، وزارت فرهنگ، تهران.
- شمیسا، سیروس، (۱۳۷۰)، *بیان*، انتشارات فردوس، تهران.

- شمیسا، سیروس، (۱۳۷۳)، *کلیات سبک شناسی*، چاپ دوم، انتشارات فردوس، تهران.
- شمیسا، سیروس، (۱۳۷۵)، *فرهنگ تلمیحات (اشارات اساطیری، داستانی، تاریخی، مذهبی در ادبیات فارسی)*، میترا، چاپ پنجم، تهران.
- شمیسا، سیروس، (۱۳۸۰)، *سیر غزل در شعر فارسی (از آغاز تا امروز)*، انتشارات فردوس، تهران.
- شمیسا، سیروس، (۱۳۸۶)، *فرهنگ اشارات (اساطیری، سنن، آداب، اعتقادات، علوم)*، میترا، تهران.
- شوشتری، عباس مهین، (۱۳۳۳)، *تصوف*، ترجمه: مهرداد مهین، کانون معرفت، تهران.
- صبور، داریوش، (۱۳۴۹)، *عشق و عرفان و تجلی ان در شعر فارسی*، زوار، تهران.
- صفا، ذبیح الله، (۱۳۶۹)، *تاریخ ادبیات در ایران*، انتشارات فردوس، چاپ هفتم، تهران.
- صهبا، جواد مجدزاده، (۱۳۲۱)، *سخنی درباره حافظ*، با مقدمه: عباس اقبال آشتیانی، کتبخانه تخصص ادبیات، اسپهان.
- صورنگر، لطفعلی، (۱۳۴۸)، *تجلیات عرفان در ادبیات فارسی*، انتشارات ابن سینا، تهران.
- ضرغامفر، مرتضی، (۱۳۴۵)، *حافظ و قرآن؛ تطبیق ابیات حافظ با آیات قرآن*، نشر صائب، تهران.
- طباطبایی، محمد محیط، (۱۳۶۷)، *چگونه حافظ را باید شناخت*، (مجموعه مقالات و پژوهش درباره حافظ)، تهران.
- طوسی، احمد غزالی، *سوانح*، ([http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(19\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(19).php)) (Pêgihîn:10.04.2021)
- العبادی، ابوالمظفر منصور بن اردشیر، (۱۳۴۷)، *صوفنامه التصفیه فی احوال المتصوفه*، به تصحیح: دکتر غلام حسین یوسفی، بنیاد فرهنگ ایران، تهران.
- عثمان، نیروز موسی، (۱۴۰۰)، *تحلیل تطبیقی تصویر معشوق در اشعار حافظ و ملایی جزیری با تکیه بر تشبیه (مطالعه موردی: ۵۰ شعر از هر شاعر)*، دانشگاه کردستان، دانشکده ی زبان و ادبیات، گروه زبان و ادبیات فارسی، سنندج. (Pêgihîn: 26.08.222) <https://uok.ac.ir/~hiva.hasanpour/thesis>
- عراقی، فخرالدین ابراهیم، *رساله اصطلاحات*، ([http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(23\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(23).php)) (Pêgihîn: 09.10.2021)
- عزالدین کاشانی، محمود بن علی، (۱۳۹۴)، *مصباح الهدایه و مفتاح الکفایه*، تصحیح: جلال الدین همایی، سخن، تهران.
- عطار نیشابوری، فرید الدین محمد، (۱۳۳۹)، *دیوان*، تصحیح: سعید نفیسی، کتابخانه سنایی، چاپ سوم، تهران.
- عطار نیشابوری، فرید الدین محمد، (۱۳۴۶)، *تذکره الاولیاء*، تصحیح: محمد استعلامی، چاپ شانزدهم، زوار، تهران.
- عطار نیشابوری، فرید الدین محمد، (۱۳۶۸)، *دیوان عطار*، تصحیح: تقی تفضلی، انتشارات علمی و فرهنگی، چاپ پنجم، تهران.
- عطائی، مسعود جنتی، (۱۳۴۶)، *سفینه حافظ*، چاپخانه خواجه، تهران.
- عقیقی، رحیم، (۱۳۹۱)، *فرهنگنامه شعری*، چاپ سوم، سروش، تهران.
- عمید، حسن، (۱۳۸۹)، *فرهنگ فارسی عمید*، راه رشد، تهران.
- غزالی، ابو حامد محمد طوسی، (۱۳۸۰)، *کیمیای سعادت*، به کوشش: حسین خدیوچم، شرکت انتشارات علمی و فرهنگی، چاپ نهم، تهران.
- غزنوی، ابی نصر محمد بن قطان، (بی تاریخ)، *سراج القلوب*، انتشارات کتابچی، تهران.
- غزنوی، عبد الباقی هیل من، (۱۳۷۴)، *نکته ها و اصطلاحاتی از عرفان*، مرکز نشرات اسلامی، پیشاور.
- غنی، قاسم، (۱۳۸۳)، *تاریخ عصر حافظ*، بحث در: آثار و افکار حافظ، انتشارات زوار، تهران.
- غنی، قاسم، (۱۳۸۶)، *بحث در آثار و افکار و احوال حافظ*، انتشارات هرمس، تهران.
- فروزپورد، خسرو، (۱۳۷۵)، *نقش آفرینی های حافظ: تحلیل زیبا شناسی و زبان شناختی اشعار حافظ*، صفی علیشاه، تهران.
- فروزانفر، محمد حسن بدیع الزمان، (۱۳۸۱)، *أحادیث و قصص مثنوی*، ترجمه: حسین داودی، انتشارات امیر کبیر، تهران.
- فرید، طاهره، (۱۳۷۷)، *ابهامات دیوان حافظ*، طرح نو، تهران.
- فسائی، منصور رستگار، (۱۳۸۰)، *انواع شعر فارسی*، انتشارات نوید، سراز.
- فسائی، منصور رستگار، (۱۳۸۵)، *حافظ و پیدای و پنهان زندگی*، سخن، تهران.
- قرین، فاطمه دوست، (۱۳۷۹)، «ابن سبعین بر نردبان وحدت وجود یا وحدت مطلقه وجود»، *نیمسالنامه تخصصی پژوهشنامه ادیان*، سال چهارم، شماره هشتم، پاییز و زمستان.
- قشیری، عبدالکریم بن هوازن، (۱۳۷۴)، *رساله قشیری*، مترجم: حسن بن احمد عثمانی، تصحیح: بدیع الزمان فروزانفر، شرکت انتشارات علمی و فرهنگی، تهران، ایران.
- قنادی، حامد حامد، (۱۳۹۵)، *گام به گام با رند شیراز*، موسسه فرهنگی و اطلاع رسانی تبیان، قم.
- کدکنی، محمد رضا شفیعی، (۱۳۸۵)، *صور خیال در شعر فارسی*، انتشارات آگاه، چاپ ششم، تهران.
- کدکنی، محمد رضا شفیعی، (۱۳۹۱)، *موسیقی شعر*، چاپ سیزدهم، آگاه، تهران.
- کرمانی، خواجهی، (۱۳۶۹)، *دیوان اشعار*، به تصحیح: احمد سهیلی خوانساری، انتشارات پازنگ، تهران.
- کی منش، عباس، (۱۳۶۶)، *پرتو عرفان: شرح اصطلاحات عرفانی کلیات شمس*، انتشارات سعدی، تهران.
- گرگانی، حاج محمد حسین شمس العلماء، (۱۳۸۸)، *ابعد البدایع*، انتشارات احراز، تبریز.

- گرمارودی، سیدعلی موسوی، (۱۳۹۶)، *عربی‌های دیوان حافظ: ترکیب‌ها، جمله‌ها، عبارات، مصراع‌ها و بیت‌های عربی در اشعار حافظ*، طهوری، تهران.
- گلاندان، محمد، (۱۳۴۵)، *مقدمه جامع دیوان حافظ، در دیوان خواجه حافظ شیرازی*، تصحیح: ابوالقاسم انجوی شیرازی، انتشارات جاویدان علمی، تهران.
- گوهرین، سید صادق، (۱۳۷۶)، *شرح اصطلاحات تصوف*، چاپ دوم، زوار، تهران.
- گوهرین، سید صادق، (۱۳۸۱)، *فرهنگ لغات و تعبیرات متنوی*، زوار، تهران.
- لاهوری، عبدالرحمان ختمی، (۱۳۷۱)، *شرح عرفانی غزلهای حافظ*، تصحیح و تعلیقات: بهاء‌الدین خرمشاهی، کورش منصوری، حسین مطیعی امین، چاپ چهارم، نشر قطره، تهران.
- لاهیجی، شمس‌الدین محمد، (۱۳۷۱)، *مفاتیح الاعجاز فی شرح گلشن راز*، تصحیح و تعلیقات محمد رضا برزگر خالقی و عفت کرباسی، چاپ چهارم، انتشارات زوار، تهران.
- لکنوی، عبدالشکور، (۱۳۹۳)، *زندگانی خلفای راشدین*، ترجمه: محمد یوسف حسین پور، کتابخانه عقیده، تهران.
- محسنی، منوچهر، (۱۳۴۵)، "تحقیق در احوال اویس قرنی"، نشریه مهر، سال ۱۳۴۵، شماره ۱۲، صفحه از ۷۷۰ تا ۷۷۶.
- محمد صالح، هیمین کریم، (۱۴۰۰)، *مطالعه تطبیقی خمریات در دیوان حافظ شیرازی و دیوان ملای جزیری*، دانشگاه کردستان، دانشکده ی زبان و ادبیات، گروه زبان و ادبیات فارسی، سندج. <https://uok.ac.ir/~hiva.hasanpour/thesis> (Pêgihîn: 26.08.222)
- مصفی، ابو الفضل، (۱۳۶۶)، *طنز و تعریض در شعر حافظ*، در حافظ شناسی، به کشش: سعید نیاز کرمانی، جلد ششم، انتشارات پایزنگ، تهران.
- مصفی، ابو الفضل، (۱۳۸۴)، *با حافظ بیشتر آشنا شویم*، چاپخانه قم، قم.
- مطهری، مرتضی، (۱۳۹۴)، *عرفان حافظ*، انتشارات صدرا، تهران.
- معین، محمد، (۱۳۱۹)، *حافظ شیرین سخن*، بنگاه بازرگانی پروین، تهران.
- معین، محمد، (۱۸۰۸)، *فرهنگ معین*، آدنا، تهران، ۱۳۸۱.
- ملاح، حسین علی، (۱۳۵۱)، *حافظ و موسیقی*، انتشارات وزارت فرهنگ و هنر، طهران.
- مهر، ناهید فرهاد، (۱۳۸۸)، *دیوان حافظ با معنی کامل*، انتشارات گنجینه، تهران.
- مولوی، مولانا جلال‌الدین محمد، (۱۳۷۶)، *کلیات دوان شمس*، بقلم: بدع الزمان فروزانفر، امر کبیر، تهران.
- المیبدی، ابوالفضل رشید‌الدین، (۱۳۸۲)، *کشف الأسرار و عده الابزار*، به سعی و اهتمام: علی اصغر حکمت، انتشارات امیر کبیر، چاپ هفتم، تهران.
- میرباقری فرد، علی اصغر، فشارکی، محسن محمدی، جلالی، محمداسماعیل «بررسی و نقد نشانه شناختی قرائت وحدت وجودی از شعر حافظ»، *ادیان و عرفان*، سال پنجاه و دوم، شماره دوم، پاییز و زمستان ۱۳۹۸، صص ۳۶۵، ۳۴۰.
- نجم‌الدین الرازی، عبدالله بن محمد الدایه، (۱۳۱۲)، *مرصاد العباد من المبدأ إلى المعاد*، بسعی: حسین الحسینی نعمت‌اللهی، مطبعة مجلس، ایران.
- نسفی، عزیزالدین، *انسان کامل*، ([http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(57\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(57).php)) (Pêgihîn: 09.09.2021)
- نصر، سید حسین، (۱۳۸۲)، *سه حکیم مسلمان*، ترجمه: احمد آرام، شرکت انتشارات علمی و فرهنگی، چاپ پنجم، تهران.
- نظیری نیشابوری، محمد حسین، (بی تاریخ)، *دیوان اشعار*، تاجران کتب علوم مشرقی کشمیری بازار پاکستان، لاهور.
- نعمت‌اللهی، رضا نور، (۱۳۵۱)، «نکاتی درباره زندگی و شعر حافظ»، از مقالاتی درباره شعر و زندگی حافظ، به کوشش: منصور رستگار فسائی، کنگره جهانی سعدی و حافظ ۱۲۸ اردیبهشت، صص ۴۸۲، ۴۶۵.
- نیظامی گنجه ای، حکیم، (۱۳۱۳)، *لیلی و مجنون*، مطبعه ارمغان، تهران.
- هجویری، علی بن عثمان، *کشف المحجوب*، ([http://www.sufism.ir/MysticalBooks\(53\).php](http://www.sufism.ir/MysticalBooks(53).php)) (Pêgihîn: 10.08.2021)
- هروی، نجیب مایل، (۱۳۷۷)، *شیخ عبدالرحمان جامی*، نشر طرح نو، تهران.
- همایی، جلال‌الدین، (۱۳۷۶)، *مولوی نامه*، مولوی چه می گوید، نشر هما، چاپ نهم، تهران.
- همایی، جلال‌الدین، (۱۳۴۳)، *مقام حافظ*، کتاب فروشی فروغی، ایران.
- هونکه، زیگرد، (۱۳۶۲)، *فرهنگ اسلام در اروپا*، ترجمه: مرتضا رهبانی، انتشارات دفتر فرهنگ اسلامی، برگ ۱، تهران.
- الهی اردبیلی، حسین بن عبدالحق، (۱۳۷۶)، *شرح گلشن راز*، مرکز نشر دانشگاهی، تهران.
- یغمایی، افسانه، (۱۳۸۲)، *جان دارو: سیری در اندیشه ی سعدی و حافظ*، سروا، تهران.

Jêderên Tirkî

- Alkiş, A. (2014), *Melâyê Cizîrî'nin Dîvânında Tasavvufî Mazmunlar*, Nûbihar, İstanbul.

- Aslan, N. (2017), *17. Yüzyılda Diyarbakır'da Tasavvufi Hayat*, Yayınlanmamış Yüksek Lisans Tezi, Mardin Artuklu Üniversitesi, Sosyal Bilimler Enstitüsü, Tarih Anabilim Dalı, Mardin.
- Benli, M. S, "Miftâhu'l-'ulûm", *DİA*, c 30, r 20-21.
- Bilgin, F. (2012), "Osmanlı Hâkimiyetindeki Cizre'de Siyasal Değişim ve Merkez-Çevre İlişkisi (XVI-XIX)," *Bilim Düşünce ve Sanatta Cizre, Uluslararası Bilim Düşünce ve Sanatta Cizre Sempozyumu Bildirileri*, Editör: M. Nesim Doru, Mardin Artuklu Üniversitesi Yayınları, İstanbul.
- Bozkurt, B. (2010), "Molla Ahmed-i Cezirî'nin Divan'ında Vahdet-i Vücut Anlayışı," *Uluslararası Şırnak ve Çevresi Sempozyumu Bildirileri*, Editör: M. Nesim Doru, Şırnak Üniversitesi Yayınları, Şırnak.
- Cebecioğlu, E. (2010). *Tasavvuf Terimleri Ve Deyimleri Sözlüğü*, Anka Yayınları, İstanbul.
- Çavuşoğlu, M. (2017), *Necati Bey Divanı'nın Tahlili*, Kitapevi, İstanbul.
- Çiçek, H. - Yılmaz, H. (2021), "Gezgin Şair/Düşünür: Feqiyê Teyran", *Van Yüzcüncü Yıl Üniversitesi Sosyal Bilimler Enstitüsü Dergisi*, Sayı37.
- Çiftçi, H. (1996), *'Ubeyd-î Zâkânî Toplumsal Görüşleri, Ahlak ve Felsefesi*, Yayınlanmamış Doktora Tezi, Atatürk Üniversitesi, Sosyal Bilimler Enstitüsü, Doğu Dilleri ve Edebiyatları Anabilim Dalı, Erzurum.
- Demlikoğlu, U, (2018), "XVI. Yüzyılda Siirt'in Sosyo Ekonomik Durumu", *Journal of History Studies*, Volume 10 Issue 1 February 2018, p 61-84.
- Doru, M. N. (2016), *Melâyê Cizirî, Felsefi ve Tasavvufî Görüşleri*, Nûbihar, İstanbul.
- Doru, M. N. (2016), *Melâyê Cizirî, Hakikat ve Mecaz Arasında bir Sûfi'nin Portresi*, Nûbihar, İstanbul.
- Durmuş, İ, "Kazvîni Hatîb", *DİA*, c 25, r 156-157.
- el-İsfehanî, R. (2012), *Mufredât-Kur'an Kavramları Sözlüğü*, Tercüme: Abdülbaki Güneş-Mehmet Yolcu, Çıra Yayınları, 3. Baskı, İstanbul.
- Emiroğlu, İ. (2010), *Sûfi ve Dil (Mevlana Örneği)*, İnsan yayınları, İstanbul.
- Erginli, Z - Karşlı, İ - Köktaş, Y- Ödül, N - Sevinç, R. R - Yavuz, S. S. (2006), *Metinlerle Tasavvuf Terimleri Sözlüğü*, Editor: Zafer Erginli, Kalem Yayınevi, İstanbul.
- Ergül, N. (2015), "İnsan-ı Kâmil – Güzel Ahlak İlişkisi", *The Journal of Academic Social Science Studies*, Number: 35, Summer I.
- ez-Zebîdî, A. B. A. (1993), *Sahîh-i Buhârî Muhtasarı Tecrîdî Sarîh Tercemesi ve Şerhî*, Mutercim: Kâmil Miras, Diyanet İşleri Başkanlığı Yayınları, on ikinci Baskı, Ankara.
- Fayda, M. "Ebû Bekir", *DİA*, c. 10, r. 101-106.
- Fayda, M. "Ömer", *DİA*, c. 34, r. 44-51.
- Fıglalı, E. R. "Ali", *DİA*, c. 32, r. 371-374.
- Gölpınarlı, A. (1992), *Hâfizê Şîrâzî Divanı*, Milli Eğitim Bakanlığı Yayınları, İstanbul.

- Göynük, N. (1975), "XVI. Yüzyılda Güney-Doğu Anadolu'nun Ekonomik Durumu", *Türkiye İktisat Tarihi Semineri, Metinler/Tartışmalar*, Türk Tarih Kurumu Yayınları, Ankara.
- Han, Ş. (1998), *Şerefname - Kürd Tarihi*, Çev: M.Emin Bozarıslan, Deng Yayınları, İstanbul.
- Kavak, A. (2020), *Cumhuriyet Döneminde Ağrı'da Tasavvuf*, İlâhiyât Yayın, Ankara.
- Öz, R. (2019), *Sufinin Akidesi (Molla Ahmed el-Cizîrî Örneği)*, Şırnak Üniversitesi Yayınları, Mardin.
- Özek, A. "el-Keşşâf", *DİA*, c. 25, r. 329-330.
- Pakiř, Ö. "Molla Halil Siirdî", *DİA*, c. 30, r. 250-251.
- Pala, İ. (2017), *Ansiklopedik Divân Şiiri Sözlüğü*, Kapı Yayınları, İstanbul.
- Polat, S. (2013), "XVI. Yüzyılın İkinci Yarısı ve XVII. Yüzyılın İlk Yarısında Osmanlı Devleti'nin Doğu Seferlerinde Cizre'nin Yeri", *Tarih Arařtırmaları Dergisi*, Yıl 2013, Cilt 32, s 249-263.
- Saraç, M.A. Y. (2014), *Klâsik Edebiyat Bilgisi*, Belâgat, Gökkuşbe Yayınları 12. Baskı, İstanbul.
- Timurtaş, A. (2009), "Molla Muhammed Zivingi Ve İlmi Kişiliği", *Şarkiyat İlmi Arařtırmalar Dergisi* -www.e-sarkiyat.com- ISSN: 1308-9633 Sayı: I Nisan 2009, r 104-120.
- Turan, A. (2010), *Melâyê Cizîrî ve Divanı*, Nûbihar, İstanbul.
- Üzüm, İ. "Kirâmen Kâtibîn", *DİA*, c. 26, r. 59-60.
- Yaşın, A. (2011), *Tarih, Kültür ve Cizre*, Kent Işıkları Yayınları, İstanbul.
- Yıldırım, K. (2008), *Ehmedê Xanî Külliyyatı 2- 'Eqîdeya İmanê*, Avesta, İstanbul.
- Yiğit, İ. "Osman", *DİA*, c. 33, r. 438-443.
- Türker, Ö. (2021), *İşrâkîlik Ekolü, İslam Düşüncesinde Teoriler 1*, Metafizik içinde, Hazırlayan: Ömer Türker, Ketebe Yayınları, İstanbul.
- Azarkan, M. Ş. (2021), *Melâyê Cizîrî'nin Divânı'nın tenkitli metni ve Fuzûlî'nin Türkçe Divânı ile şekil bakımından karşılaştırılması*, Yayınlanmamış Doktora Tezi, Dicle Üniversitesi, Sosyal Bilimler Enstitüsü, İslam Tarihi ve Sanatları Ana Bilim Dalı, Türk İslam Edebiyatı Bilim Dalı, Diyarbakır.
- Eminoğlu, N. (2022), *Estetik Di Helbestên Melâyê Cizîrî De*, Teza Doktorayê Neçapbûyî Zanîngeha Bîngolê, Enstîtuya Zimanên Jîndar, Şaxa Makezanista Ziman û Edebiyata Kurdî, Bingol.
- Aytaç, G. (2013), *Karşılaştırmalı Edebiyat Bilimi*, Say Yayınları, 3. Baskı, İstanbul.

Jêderên Kurdî

- بۆره كیی، سدیق سه فی زاده، (۲۰۰۸) مئژوووی ویژهی کوردی، ئاراس، هه ولیر.
- الجزیری، شیخ احمد، (۱۳۴۰)، دیوانا جزیری، طابعی: محمد شفیق الارواسی، اوقاف اسلامیه مطبعسی، استانبول.
- جزیری، مه لایی، (۱۹۷۷)، دیوانا مه لایی جزیری، توئژاندنا صادق بهاء الدین ئامیدی، چاپخانی کۆری زانیاری کرد، بغداد.
- جزیری، مه لایی، (۲۰۱۹)، دیوان، آماده کار: ته حسین ئیبراهیم دۆسکی، نوپهار، ستنبول.

- جزیری، مه‌لایی، (۲۰۲۰). دیوانا مه‌لایی جزیری، هلبژارتن و بهره‌شکرنا ته‌حسین ئیبراهیم دۆسکی، کتیبخانا جزیری، دهۆک.
- چالی، شه‌عبان، (۲۰۰۸)، شیوازی شیعر جزیری، سپرئیز، دهۆک.
- خانی، احمدی، (۲۰۰۹)، مم وزین، آماده‌کرن: حسین شمرخ، وشانئین نوپهاری، استنبۆل.
- خه زنه دار، مارف، (۲۰۰۲)، میژووی ئدی کوردی، ئاراس، هه ولئیر.
- دۆسکی، ته‌حسین ئیبراهیم، (۲۰۲۰)، شه‌رحا دیوانا ئحمه‌دئ خانی، په‌رتوو‌کخانا خانی، دهۆک.
- دۆسکی، ته‌حسین ئیبراهیم، (۲۰۱۸)، شه‌رحا دیوانا ملای جزیری، کۆمه‌لگه‌ها فه‌ره‌نگی یا احمدی خانی، سۆران.
- شرفکندی، عبدالرحمان، (۱۳۹۳)، دیوان ملای جزیری شرح هژار، پانیز، تهران.
- شله‌اشی، ملا محمدی، (۱۳۷۹)، مجلسی ئولیا، انتشارات کردستان، سنندج.
- شوان، ئیبراهیم نُه‌حمد، (۲۰۱۰)، فه‌ره‌نگی سۆفیانیه‌ی جزیری و محوی، چاپخانه‌ی حاجی هاشم، هه‌ولئیر.
- عبدالل، حلیمه‌ خۆرشید، (۲۰۱۱) برآورده‌یه‌کا کیشناسی دناقه‌را عرووزا کردی و فارسی (دیوانئین مه‌لایی جزیری وحافز شیرازی وه‌ک نموونه)، سپرئیز، دهۆک.
- مشختی، کامه‌ران ئیبراهیم، (۲۰۱۱)، سیمیلۆزیای زمانی سۆفیگری له‌ شه‌ره‌کانی مه‌لای جزیری دا، سپرئیز، دهۆک.
- Aqtepi, Ş. A. (2016), *Rewdi 'n-Ne 'im*, Mektebeti Seyda, Diyarbakir.
- Aykaç, Y. (2022), "Miks: Navendeke Dîrokî, 'İlmî", *Tesewifî û Edebî*, The Journal of Mesopotamian Studies, Vol 7 (1) Spring 2022, ss 67-101.
- Bateyî, M. H. (2014), *Mewlûda Nebî*, Werger û Şîkar: M. Xalid Sadînî, Kùltür ve Turizm Bakanlıđı Yayınları, Ankara.
- Bateyî, M. H. (Bê tarîx), *Mewlud'in-Nebî*, Dini Neşriyat Kitabevi, Diyarbakır.
- Bedlîsî, Ş. (2014), *Şerefname- Dîroka Kurdistanê*- Werger: Ziya Avcı, Weşanên Azad, Çapa Taybet, İstanbul.
- Cizîrî, M. (1987), *Dîwan*, Werger: Z. Kaya-M. Emin Narozi, Weşanên Roja Nû, Stockholm/Sweden.
- Cizîrî, M. E. (2018), *Şerha Dîwana Melâyê Cizîrî*, Amadekar: Tehsîn İbrahim Doskî, Weşanên Dara, İstanbul.
- Doskî, T. I. (2020), *Baxê Îrem-Geştek Li Nav Şi'ra Kurmancî ya Klasîk*, Amadekar: M. Zahir Ertekin, Weşanên Dara, Diyarbakır.
- Eminođlu, N. (2015). "Medreseyên Kurdan Ji Destpêkê Heta Îro", *Anemon Muş Alparşan Üniversitesi Sosyal Bilimler Dergisi*, 3 (2), 197-214. DOI: 10.18506/anemon.41955
- Ergün, Z. (2014), *Bajar-Edebiyat û Cizîra Botan*, Nûbihar, İstanbul.
- Ertekin, M. Z. (2021), "Dîwanên Wenda Yên Kurdî", *Nûbihar*, hejmar 157, sal 29, cild 25, payîz.
- Ertekin, N. (2018), "Mela Ehmed Yalar û Dîwana Wî", *Diyarbakır: Âlimler, Arifler, Edipler* (Edt. İbrahim Özçoşar, Ali Karakaş, Mustafa Öztürk ve Ziya Polat), Ensar Neşriyat, İstanbul.
- İzolî, D. (2007), *Ferheng (Kurdî-Tirkî, Tirkî-Kurdî)*, Weşanên Deng, Amed.
- Newayî, M. (2018), *Mela Elîyê Teremaxî (sedsala 16-17)*, *Tesrîfa Teremaxî – Yekemîn Gramera Kurdîya Kurmancî*, Nûbihar, İstanbul.
- Qoxî, E. H. (2004), *Rehberê 'Ewam Şerha Nehcu'l-Enam*, İhsan Yayınları, İstanbul.
- Rehnas, H. M. *Ferhenga Etîmolojî Ya Kurdî*, r 88 (<https://zimannnas.wordpress.com/2016/11/02/3073/>) (Pêgihîn: 06.03.2022)
- Resûl, I. M. (2020), *Melâyê Cizîrî, Hin Tişt Derbarê Jîyan û Berhema Wî De*, Kurmancîya Wê: Ziya Avcı, Weşanxaneyê Lis, Diyarbakır.

- Sadînî, M. X. (2012), *Feqiyê Teyran Jiyan Berhem û Helbestên Wî*, Nûbihar, Îstanbul.
- Sêrtî, M. X. (1988), *Nehcu'l-Enam*, Guhartin ji tîpên erebî: Zeynelabîdîn Kaya, Weşanxana Kurdistan, Stockholm.
- Tek, A. (2019), *Melâyê Cizîrî Jiyan û Tesîra Edebî, Şerha Xezelên Bijartî*, Nûbihar, Îstanbul.
- Xan Budaq, S. (2004), *Dîroka Nijada Şêrwan (Dîroka Mîrekê Şêrwanê)*, Werger: Kerem Soylu, Enstîtuya Kurdî Ya Stenbolê, Stenbol.
- Yazîcî, T. (2022), *Mîrnameya Hekarîyan*, Wergera Ji Farisî: M. Xalid Sadînî, Peywend, Wan.
- Yöyler, C. (2006), *Şîroveya Dîwana Melâyê Cizîrî*, Weşanên Enstîtuya Kurdî Ya Stenbolê, Çapa Yekem, Stenbol.
- Haspolat, Y. K. (2015), *Medreseyên Amedê*, Wergera ji Tirkî: Şivanê Dêrikî, e-pirtûk.
- Yûsuf, A. (1988), *Şairên Klasîkên Kurd*, Weşanên Jîna Nû, Uppsala/Sweden.

Jêderên Ingilîzî

Arberry, L. A. J. (1947), *Fifty Poems Of Hafiz*, At The Universty Cambridge, Lodon.

Malperên Înternetê

[http://www.nefel.com/articles/article_print.asp?ArticleNr=294:](http://www.nefel.com/articles/article_print.asp?ArticleNr=294) (Pêgihîn: 09.01.2021)